# 1

# अर्थशास्त्र क्या है

सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में अर्थशास्त्र को एक विषय के रूप में बहुत महत्व प्राप्त हुआ है। हमारे दैनिक जीवन में हम अनेक आर्थिक अवधारणाओं जैसे वस्तुएं, बाजार, मांग, आपूर्ति, कीमत, मुद्रा स्फीति, बैंकिंग, कर, ऋण देना, ऋण लेना, ब्याज की दर आदि का प्रयोग करते हैं। इसी प्रकार, हम विभिन्न वस्तुओं को खरीदने के लिये अपनी आय के वितरण, कोई कार्य करने के लिये बजट बनाने, कमाने के लिये कोई कार्य करने, बैंक से पैसा निकालने आदि से सम्बन्धित आर्थिक निर्णय लेते हैं। हम अपने समाज अथवा देश, विदेश तथा विश्व की आर्थिक स्थिति पर भी ध्यान रखते हैं तथा सूचना प्राप्त करते हैं।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात आप सक्षम होंगे कि :

- अर्थशास्त्र के अर्थ को जान पायें;
- अर्थशास्त्र की महत्वपूर्ण शाखाओं की व्याख्या कर सकें;
- वास्तविक तथा आदर्श अर्थशास्त्र में भेद कर पायें।

## 1.1 अर्थशास्त्र का अर्थ

अर्थशास्त्र एक अत्यंत विशाल विषय है। इसलिये अर्थशास्त्र की कोई निश्चित परिभाषा अथवा अर्थ देना आसान नहीं है क्योंकि इसकी सीमा तथा क्षेत्र, जो इसमें सम्मिलित हैं, अत्यंत विशाल हैं। जिस समय से यह सामाजिक विज्ञान के अध्ययन की एक पृथक शाखा के रूप में उभर कर आया है, विभिन्न विद्वानों तथा लेखकों ने इसका अर्थ तथा उद्देश्य बताने का प्रयत्न किया है। यह ध्यान देना चाहिये कि समय तथा सभ्यता के विकास के साथ अर्थशास्त्र की परिभाषा में रूपान्तरण तथा परिवर्तन हुए हैं। आइये, हम अर्थशास्त्र के अर्थ से संबंधित निम्न प्रमुख विचारों पर अपना ध्यान केन्द्रित करें :

(i) अठारहवीं शताब्दी के अन्त तथा उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ में अनेक विद्वानों तथा लेखकों का मत था कि **अर्थशास्त्र धन का विज्ञान** है। इन विद्वानों को क्लासिकी अर्थशास्त्री कहते हैं। उनकी दृष्टि में अर्थशास्त्र धन से संबंधित घटनाओं/पदार्थों का अध्ययन करता है जिसमें धन की प्रकृति तथा उद्देश्य, व्यक्तियों तथा देशों आदि द्वारा धन का सृजन करना आदि को शामिल किया जाता है।

(ii) धन की परिभाषा में समस्या थी कि यह उन लोगों के बारे में बात नहीं करती थी जिनके पास धन नहीं होता। धन होना तथा धन नहीं होना ने समाज को धनी तथा निर्धन अथवा गरीब में विभाजित कर दिया। उन्नसवीं शताब्दी के आरम्भ में अनेक विज्ञानों ने सोचा कि अर्थशास्त्र को 'समाज के कल्याण' के विषय पर बात करनी चाहिये न कि केवल धन के बारे में। तदनुसार **अर्थशास्त्र को कल्याण के विज्ञान के रूप में देखा गया**। कल्याण प्रकृति में परिमाणात्मक तथा गुणात्मक दोनों होता है। वस्तुओं एवं सेवाओं का उपभोग, प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि आदि कल्याण के परिमाणात्मक पहलू हैं। शांति से रहना, अवकाश का आनन्द लेना, ज्ञान अर्जित करना आदि कल्याण के गुणात्मक पहलू हैं। कल्याण के विज्ञान के रूप में अर्थशास्त्र का संबंध केवल परिमाणात्मक कल्याण से ही माना गया क्योंकि उसे मुद्रा में मापा जा सकता है।

(iii) अर्थशास्त्र की कल्याण की परिभाषा ने कल्याण के केवल भौतिक पहलुओं की ही व्याख्या की। परन्तु लोगों को भौतिक वस्तुओं तथा अभौतिक सेवाओं दोनों की आवश्यकता होती है। क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अथवा समाज के पास उपलब्ध संसाधन दुर्लभ होते हैं, लोग अपने लक्ष्यों को इन संसाधनों के बैकल्पिक प्रयोग से प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं जो वे उपयुक्त चयन के द्वारा करते हैं। अतः **अर्थशास्त्र को दुर्लभता तथा चयन का विज्ञान** कहा गया। दुर्लभता तथा चयन के विज्ञान के रूप में अर्थशास्त्र मानवीय व्यवहार के उद्देश्यों व उन दुर्लभ साधनों के संबंधों का अध्ययन करता है जिनका वैकल्पिक प्रयोग किया जा सकता है।

यहाँ 'उद्देश्यों' से अभिप्राय 'आवश्यकताएं' तथा 'दुर्लभ संसाधनों' से अभिप्राय 'सीमित संसाधनों' से है। दुर्लभता की परिभाषा के अनुसार, सीमित संसाधनों के वैकल्पिक प्रयोग हो सकते हैं। कपड़ा तथा गेहूँ - दो वस्तुओं के उत्पादन का उदाहरण लीजिये। सीमित संसाधनों से हम कपड़ा तथा गेहूँ की असीमित मात्रा में उत्पादन नहीं कर सकते। इन वस्तुओं का उत्पादन करने के लिये संसाधनों को विभाजित करना पड़ता है। मान लीजिये, इनमें से किसी एक वस्तु जैसे गेहूँ की मांग में वृद्धि हो जाती है, इसलिये इसको अधिक मात्रा में उत्पादन करना पड़ता है जिसके लिये हमें अधिक संसाधनों की आवश्यकता पड़ती है। परन्तु दिया हुआ है कि संसाधन सीमित हैं, हम अधिक गेहूँ का उत्पादन केवल कपड़े के उत्पादन में से कुछ संसाधनों को निकालकर तथा इन्हें गेहूँ के उत्पादन में लगाकर ही कर सकते हैं। परिणामस्वरूप, कपड़े का उत्पादन कम हो जायेगा तथा गेहूँ के उत्पादन में वृद्धि हो जायेगी। इस उदाहरण में हमारे पास दो विकल्प हैं :

(i) कपड़ा तथा गेहूँ का उसी मात्रा में उत्पादन करते रहें।

(ii) गेहूँ की मांग में वृद्धि होने के कारण उसका अधिक उत्पादन करें, इसके कारण कपड़े की कुछ मात्रा कम कर दें।

क्योंकि अर्थव्यवस्था को अधिक गेहूँ की आवश्यकता है, अर्थशास्त्र का अध्ययन हमें बतलाता है कि सीमित संसाधनों से इस समस्या का समाधान कैसे किया जा सकता है।

(iv) बीसवीं शताब्दी में पूरी अर्थव्यवस्था की संवृद्धि तथा विकास प्राप्त करने के उद्देश्य ने गति पकड़ी। आर्थिक संवृद्धि तथा विकास में सरकार की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई। इसलिये अर्थशास्त्र अब केवल व्यक्तिगत निर्णय लेने तथा संसाधनों के प्रयोग तक ही सीमित नहीं रह गया। समय के साथ वस्तुओं के उत्पादन तथा उपभोग को सम्मिलित कर इसके क्षेत्र में विस्तार किया गया ताकि अर्थव्यवस्था में संवृद्धि तथा विकास हो सके।

इसलिये अर्थशास्त्र को **संवृद्धि तथा विकास का विज्ञान** कहा गया है। वास्तव में, यह सत्य है कि आजकल लोग व्यक्तियों तथा पूरे देश के कल्याण के बारे में बात करते हैं। यह समझा जाता है कि किसी व्यक्ति को अपनी आवश्यकताओं की तुष्टि करने के योग्य बनाने के लिये यह आवश्यक है कि पूरी अर्थव्यवस्था में संवृद्धि होनी चाहिये तथा संवृद्धि के लाभों को व्यक्तिगत नागरिकों में वितरित करने के लिये उपयुक्त साधन ढूँढने चाहिए। अतः संसाधनों के प्रयोग तथा वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन तथा वितरण के संबंध में अर्थव्यवस्था का निष्पादन अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। अर्थव्यवस्था को अपने संसाधनों का विभिन्न वैकल्पिक गतिविधियों में आबंटन, कुशल प्रयोग सुनिश्चित करना चाहिये तथा अर्थव्यवस्था के भावी विकास के लिये उनमें संवृद्धि किस प्रकार होगी इसके तरीके ढूँढने चाहिये। इस आधार पर, विश्व की अनेक अर्थव्यवस्थाओं का निष्पादन अच्छा रहा है। उदाहरण के लिये संयुक्त राज्य (USA) यूरोप के देश, जापान आदि को विकसित अर्थव्यवस्थायें कहा जाता है क्योंकि इन्होंने अपने नागरिकों के लिये आय के उच्च स्तर को प्राप्त किया है। हमारी भारतीय अर्थव्यवस्था विकासशील अर्थव्यवस्था है क्योंकि इसके अनेक नागरिक अभी भी गरीब हैं। अर्थशास्त्र का अध्ययन हमें अपनी अर्थव्यवस्था की स्थिति के बारे में ज्ञान कराता है तथा संवृद्धि तथा विकास के ऊँचे स्तर को प्राप्त करने में मार्गदर्शन करता है।

(v) बीसवीं शताब्दी के अन्त के अर्थशास्त्रियों ने भावी पीढ़ियों के कल्याण तथा पर्यावरण की सुरक्षा के विषय में भी बात करना आरम्भ कर दिया है। इसलिये अर्थशास्त्र को **धारणीय विकास** का विज्ञान भी कहा जाता है। संवृद्धि तथा विकास का उच्च स्तर प्राप्त करने के लिये सारे विश्व की अर्थव्यवस्थायें प्राकृतिक संसाधनों का शोषण कर पर्यावरण को प्रदूषित कर रही हैं। वस्तुओं और सेवाओं के उपभोग के परिणामस्वरूप अनेक व्यर्थ पदार्थ भी उत्पन्न हुए हैं। ध्यान दीजिये कि कुछ संसाधनों जैसे खनिज, खनिज-तेल, वन, वर्तमान पीढ़ियों द्वारा उनके बढ़ते हुए उपभोग के कारण उनका तीव्र गति से क्षय हो रहा है। इसलिये भावी पीढ़ियों के लिये संसाधन कम रह जायेंगे अथवा बचेंगे ही नहीं। उपलब्ध दुर्लभ संसाधनों का युक्तिसंगत, कुशलतापूर्वक प्रयोग करना तथा भावी पीढ़ियों का कल्याण सुनिश्चित करना हमारा नैतिक कर्त्तव्य है।

### पाठगत प्रश्न 1.1

1. 'अर्थशास्त्र धन का विज्ञान है।' इसका क्या अभिप्राय है?
2. अर्थशास्त्र कल्याण के विज्ञान के रूप में कल्याण के किस पहलू की बात करता है?

## 1.2 अर्थशास्त्र की शाखाएं

अर्थशास्त्र के अध्ययन को दो भिन्न शाखाओं में विभाजित किया जाता है। वे हैं :

(i) व्यष्टि अर्थशास्त्र

(ii) समष्टि अर्थशास्त्र

### 1.2.1 व्यष्टि अर्थशास्त्र (Micro Economics)

"Micro" शब्द का अर्थ अत्यंत सूक्ष्म होता है। अतः व्यष्टि अर्थशास्त्र अत्यंत सूक्ष्म स्तर पर अर्थशास्त्र के अध्ययन का अर्थ प्रकट करता है। इसका वास्तविक अर्थ क्या है? एक समाज जिसमें सामूहिक रूप से अनेक व्यक्ति सम्मिलित हैं, प्रत्येक अकेला व्यक्ति उसका एक सूक्ष्म भाग है। इसलिये एक व्यक्ति द्वारा लिये गये आर्थिक निर्णय व्यष्टि अर्थशास्त्र की विषय वस्तु हो जाते हैं। एक व्यक्ति द्वारा लिये जाने वाले निर्णय क्या हैं? हम इस संबंध में कुछ उदाहरणों का उल्लेख कर सकते हैं।

(अ) विभिन्न आवश्यकताओं की तुष्टि के लिये व्यक्ति वस्तुएं तथा सेवाएं खरीदता है। वस्तुएं तथा सेवाएं खरीदने के लिये व्यक्ति को अपनी आय की सीमित राशि में से कुछ कीमत का भुगतान करना पड़ता है। इसलिये व्यक्ति को दी गई कीमत पर वस्तु की खरीदी जाने वाली मात्रा के बारे में निर्णय लेना पड़ता है। उसे दी गई आय में खरीदी जाने वाली विभिन्न वस्तुओं के संयोग का भी निर्णय लेना पड़ता है, ताकि क्रेता के रूप में उसे अधिकतम संतुष्टि प्राप्त हो सके।

(ब) एक व्यक्ति विक्रेता के रूप में वस्तुओं तथा सेवाओं का विक्रय भी करता है। यहाँ उसे दी गई कीमत पर वस्तु की आपूर्ति की मात्रा के बारे में निर्णय लेना पड़ता है ताकि वह कुछ लाभ कमा सके।

(स) हम सब किसी वस्तु को खरीदने के लिये कीमत का भुगतान करते हैं। बाजार में इस कीमत का निर्धारण कैसे होता है? व्यष्टि अर्थशास्त्र इस प्रश्न का उत्तर देता है।

(द) किसी वस्तु का उत्पादन करने के लिये एक व्यक्तिगत उत्पादक को निर्णय लेना पड़ता है कि वह उत्पादन के विभिन्न साधनों को किस प्रकार संयोजित करे जिससे कि न्यूनतम लागत पर अधिकतम उत्पादन कर सके।

ये सभी व्यष्टि अर्थशास्त्र के अन्तर्गत अध्ययन के कुछ मुख्य क्षेत्र हैं।

### 1.2.2 समष्टि अर्थशास्त्र (Macro Economics)

'Macro' शब्द का अर्थ है - बहुत बड़ा। एक व्यक्ति की तुलना में समाज अथवा देश अथवा सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था बहुत बड़ी है। इसलिये सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के स्तर पर लिये गये निर्णय समष्टि अर्थव्यवस्था की विषयवस्तु है। सरकार द्वारा लिये गये आर्थिक निर्णयों का उदाहरण लीजिये। हम सभी जानते हैं कि सरकार पूरे देश का प्रतिनिधित्व करती है, केवल एक व्यक्ति का नहीं। इसलिये सरकार द्वारा लिये गये निर्णय सम्पूर्ण समाज की समस्याओं को हल करने के लिये होते हैं। उदाहरण के लिये, सरकार करों को एकत्र करने, सार्वजनिक वस्तुओं पर व्यय करने तथा कल्याण से संबंधित गतिविधियों आदि के बारे में नीतियां बनाती है जो पूरी अर्थव्यवस्था को प्रभावित करती हैं। 'ये नीतियां किस प्रकार कार्य करती है', समष्टि अर्थशास्त्र की विषय-वस्तु है।

व्यष्टि अर्थशास्त्र में हम एक व्यक्ति के व्यवहार का क्रेता तथा विक्रेता के रूप में अध्ययन करते हैं। एक क्रेता के रूप में व्यक्ति वस्तु और सेवाओं पर धन/मुद्रा व्यय करता है जो उसका उपभोग व्यय कहलाता है। यदि हम सभी व्यक्तियों के उपभोग व्यय को जोड़ दें तो हमें सम्पूर्ण समाज के समग्र उपभोग व्यय का ज्ञान प्राप्त होता है। इसी प्रकार, व्यक्तियों की आयों को जोड़कर सम्पूर्ण देश की आय अथवा राष्ट्रीय आय हो जाती है। इसलिये, इन समग्रों जैसे राष्ट्रीय आय, देश का कुल उपभोग व्यय आदि का अध्ययन समष्टि अर्थशास्त्र के अन्तर्गत आते हैं।

समष्टि अर्थशास्त्र का उदाहरण मुद्रा स्फीति अथवा कीमत-वृद्धि है।

मुद्रा स्फीति अथवा कीमत वृद्धि केवल एक व्यक्ति को प्रभावित नहीं करती, बल्कि यह सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को प्रभावित करती है। इसलिये इसके कारणों, प्रभावों को जानना तथा इसे नियंत्रित करना भी समष्टि अर्थशास्त्र के अध्ययन के अन्तर्गत आता है।

इसी प्रकार, बेरोजगारी की समस्या, आर्थिक संवृद्धि तथा विकास आदि देश की सम्पूर्ण जनसंख्या से संबंधित होते हैं, इसलिये समष्टि अर्थशास्त्र के अध्ययन के अन्तर्गत आते हैं।

### पाठगत प्रश्न 1.2

लिखिये कि निम्नलिखित कथन सत्य हैं अथवा असत्य :

(i) मुद्रा स्फीति का अध्ययन व्यष्टि अर्थशास्त्र के अन्तर्गत किया जाता है।

(ii) किसी वस्तु की कीमत का निर्धारण समष्टि अर्थशास्त्र की समस्या है।

(iii) समष्टि अर्थशास्त्र रोजगार तथा बेरोजगारी मुद्दों का अध्ययन करता है।

(iv) व्यष्टि अर्थशास्त्र किसी वस्तु के खरीदने के बारे में व्यक्तिगत निर्णय लेने का अध्ययन करता है।

## 1.3 वास्तविक बनाम आदर्श अर्थशास्त्र

अर्थशास्त्र के अध्ययन में हमारे चारों ओर होने वाली घटनाओं, निर्णय लेने, नियम तथा व्यवस्था बनाने तथा आर्थिक समस्याओं को हल करने के लिये नीतियां लागू करने के सम्बन्ध में वास्तविक तथा आदर्श दोनों पहलू सम्मिलित होते हैं। वास्तविक अर्थशास्त्र '**क्या है**' के विषय में बात करता है जबकि आदर्श अर्थशास्त्र '**क्या होना चाहिए**' के विषय में बात करता है। वास्तविक अर्थशास्त्र आर्थिक विश्व में जो कुछ हो रहा है अथवा हो सकता है, के विषय में बात करता है। आदर्श अर्थशास्त्र चीजों के बारे में नैतिक मूल्यांकन उपलब्ध कराता है और हमें बताता है 'क्या होना चाहिये था'। निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

(i) भारत की जनसंख्या 100 करोड़ की सीमा को पार कर चुकी है। भारत विश्व में दूसरा सबसे बड़ी जनसंख्या वाला देश है।

(ii) भारत को जनसंख्या में इतनी तीव्र गति से बढ़ने की अनुमति नहीं देनी चाहिये। उसे अपनी जनसंख्या पर नियंत्रण रखना चाहिये।

कथन (i) एक घटना का वर्णन करता है जो हो रही है। यह एक वास्तविक कथन है।

कथन (ii) भारत की जनसंख्या का नैतिक मूल्यांकन प्रदान करता है। यह एक आदर्श कथन है।

अब नीचे दिये गये कथनों के एक अन्य समूह पर विचार कीजिये :

(iii) श्रमिक कठिन परिश्रम करेंगे यदि उन्हें अधिक मजदूरी दी जाए।

(iv) कठिन परिश्रम के लिये न्याय प्रदान करने के लिये फैक्ट्रियों को श्रमिकों की मजदूरी की दर में वृद्धि करनी चाहिए।

कथन (iii) एक वास्तविक कथन है। यह एक निश्चित तथ्य के बारे में बताता है। कथन (iv) आदर्श प्रकृति का है क्योंकि यह सही चीज के बारे में बताता है, जो यदि होती है तो समाज के लिये अच्छा होगा।

व्यक्तियों अथवा सरकार अथवा व्यवसायी फर्मों द्वारा आर्थिक निर्णय लेने में चीजों के वास्तविक तथा आदर्श दोनों पहलू सम्मिलित रहते हैं।

उदाहरण के लिये कथन (i) तथा (ii) में दिये गये अनुसार क्योंकि भारत की जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि हो रही है तथा समस्याएं खड़ी हो रही हैं, सरकार परिवार नियोजन तथा अन्य प्रभावशाली उपायों द्वारा जनसंख्या वृद्धि के नियंत्रण के लिये भरसक प्रयत्न कर रही है। इसी प्रकार, क्थन (iii) तथा (iv) के आधार पर सरकार ने न्यूनतम मजदूरी कानूनों को लागू किया है ताकि श्रमिकों को न्याय मिल सके।

## पाठगत प्रश्न 1.3

1. निम्नलिखित कथनों में वास्तविक तथा आदर्श कथन की पहचान कीजियेः
    (i) भारत में बड़ी संख्या में गरीब लोग हैं।
    (ii) सरकार को शिक्षा पर अधिक व्यय करना चाहिये।
    (iii) गरीब लोग आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि के कारण कष्ट उठा रहे हैं।
    (iv) बैंक ने अपनी ब्याज की दर को बढ़ा दिया है।
    (v) लोगों को डाकखाने तथा वाणिज्य बैंकों में बचत करने के लिये प्रोत्साहित करना चाहिये।

## आपने क्या सीखा

- अर्थशास्त्र को, सामाजिक विज्ञान की विषय वस्तु के रूप में इनका विज्ञान कहा गया है - (अ) धन (ब) कल्याण (स) दुर्लभता तथा चयन (द) संवृद्धि तथा विकास तथा (य) धारणीय विकास
- व्यष्टि अर्थशास्त्र तथा समष्टि अर्थशास्त्र अर्थशास्त्र की दो महत्वपूर्ण शाखाएं हैं।
- व्यष्टि अर्थशास्त्र व्यक्तियों तथा संस्थाओं द्वारा निर्णय लेने के बारे में अध्ययन करता है।
- समष्टि अर्थशास्त्र सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के स्तर पर आर्थिक समग्रों का अध्ययन करता है।
- आर्थिक तथ्य तथा अंकों को वास्तविक अर्थशास्त्र कहते हैं।
- आदर्श अर्थशास्त्र 'क्या होना चाहिये' का अध्ययन करता है।

## पाठान्त प्रश्न

1. अर्थशास्त्र दुर्लभता तथा चयन का विज्ञान है। व्याख्या कीजिये।
2. अर्थशास्त्र की धन संबंधी परिभाषा कल्याण संबंधी परिभाषा से किस प्रकार भिन्न है?
3. व्यष्टि अर्थशास्त्र तथा समष्टि अर्थशास्त्र में भेद कीजिये।
4. वास्तविक अर्थशास्त्र तथा आदर्श अर्थशास्त्र में उदाहरण देकर अन्तर स्पष्ट कीजिये।

## पाठगत प्रश्नों के उत्तर

### पाठगत प्रश्न 1.1

1. धन के विज्ञान के रूप में अर्थशास्त्र धन की प्रकृति तथा धन के उद्देश्य, व्यक्तियों तथा देश के द्वारा धन के सृजन की व्याख्या करता है।
2. कल्याण का परिमाणात्मक पहलू

### पाठगत प्रश्न 1.2

(i) असत्य (ii) असत्य (iii) सत्य (iv) सत्य

### पाठगत प्रश्न 1.3

(i) वास्तविक (ii) आदर्श (iii) वास्तविक

(iv) वास्तविक (v) आदर्श

# 2

# मानवीय आश्यकताएं

हम अपने दैनिक जीवन में देखते हैं कि लोग भिन्न-भिन्न प्रकार की गतिविधियों में संलग्न हैं। उदाहरण के लिये, कुछ लोग कृषिकर्म (खेती) में संलग्न हैं, कुछ कार्यालयों में कार्य करते हैं, कुछ सब्जियाँ बेचते हैं, कुछ के पास विभिन्न प्रकार की दुकाने हैं, कुछ फैक्ट्रियां चला रहे हैं आदि। ये लोग आय के अर्जन के लिये विभिन्न प्रकार की गतिविधियों में संलग्न हैं। उन्हें आय का अर्जन करना पड़ता है, क्योंकि उन्हें अनेक आवश्यकताओं की तुष्टि करनी पड़ती है।

आय के अर्जन के लिये लोग मानव निर्मित अथवा प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग करते हैं। आवश्यकताएं असीमित हैं परन्तु संसाधन सीमित/दुर्लभ हैं।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- आवश्यकताओं के अर्थ की व्याख्या कर पायेंगे;
- आवश्यकताओं का उदय तथा उनमें प्रसार कैसे होता है, की व्याख्या कर पायेंगे;
- सभी आवश्यकताओं की तुष्टि नहीं की जा सकती, यह समझ पायेंगे;
- आवश्यकताओं की विशेषताएं बता पायेंगे;
- संसाधन कैसे आवश्यकताओं की तुष्टि करते हैं, जान पायेंगे;
- आर्थिक तथा गैर आर्थिक आवश्यकताओं में भेद कर पायेंगे;
- विकास के साथ-साथ आवश्यकताओं में परिवर्तन और परिवर्धन होता है, व्याख्या कर पायेंगे;
- आवश्यकताओं को सीमित करने के भारतीय दर्शन को समझ पायेंगे।

## 2.1 आवश्यकताओं का अर्थ

अनेक वस्तुओं की अभिलाषा करना मनुष्य का स्वभाव है। ऐसी अभिलाषाओं की एक अन्तहीन सूची होगी। इन अभिलााषाओं को हम 'इच्छाएं' कह सकते हैं। कोई भी अच्छे मकान, कार,

कम्प्यूटर, अच्छा भोजन, शानदार वस्तु तथा अन्य बहुत सी वस्तुओं की इच्छा कर सकता है। कोई इन सब वस्तुओं को कैसे प्राप्त कर सकता है? कोई इन सभी वस्तुओं को प्राप्त कर सकता है यदि उसके पास पर्याप्त धन हो। यदि किसी के पास पर्याप्त धन नहीं है तो इनमें से केवल एक या दो वस्तुओं अथवा इनमें से कुछ भी नहीं खरीद सकेगा। हमारी कौन सी आवश्यकताएं पूरी होंगी, ये हमारी भुगतान करने की क्षमता अथवा क्रय शक्ति पर निर्भर करता है। यही कारण है कि हमारी सभी आवश्यकताएं पूरी नहीं हो सकती क्योंकि उनकी तुष्टि के लिये हमें धन की आवश्यकता होती है। **केवल वही इच्छाएं जिनकी तुष्टि के लिये हमारे पास पर्याप्त धन हो और जिन पर हम खर्च करने को तत्पर हों, हमारी आवश्यकताएं कहलाती हैं।** एक भिखारी के मन में भी कार की इच्छा हो सकती है परन्तु उसकी इस इच्छा को हम आवश्यकता नहीं कह सकते हैं, क्योंकि उसके पास कार खरीदने के लिये पर्याप्त धन नहीं होता है। परन्तु यदि एक अमीर आदमी कार की इच्छा करे और उस पर धन खर्च करने को तैयार हो तो उसकी यही इच्छा एक आवश्यकता का रूप धारण कर लेती है।

किसी वस्तु या सेवा के लिये इच्छा + क्रय करने के लिये धन तथा क्रय करने की तत्परता

उस वस्तु अथवा सेवा की आवश्यकता

## 2.2 आवश्यकताओं का उदय तथा प्रसार किस प्रकार होता है?

आवश्यकताएं हमारे जीवन का अंग है। हमारे जीवन के साथ ही वे भी उत्पन्न हो जाती हैं। आदि मानव जंगल में रहने में ही संतुष्ट था, वह सरिताओं का जल पीता था और भूख लगने पर पेड़ों के फल या पशुओं का मांस खा लेता था। उसकी आवश्यकताएं केवल भोजन, आवास और वस्त्रों की आवश्यकताओं तक ही सीमित थीं। हाँ, समय के साथ-साथ इन आवश्यकताओं में अत्यंत वृद्धि हो गयी है। ये कैसे हुआ?

आग की खोज के बाद मानव ने भोजन पकाना आरम्भ कर दिया। फिर तो नई-नई खाद्य सामग्रियां जुटाई जाने लगी। इस प्रकार मनुष्य के स्वाद का प्रसार प्रारंभ हो गया। अब तो आपको अनेक प्रकार के रंग, गंध, आकार के खाद्य पदार्थ सहज ही मिल जाते हैं।

परिधान के मामले में भी पशुओं की खाल लपेटने या बड़े पत्तों से तन ढांकने के प्रयास से हम बहुत आगे निकल कर विभिन्न प्रकार के वस्त्रों की ओर आ गये हैं। अपने जीवन को और बेहतर बनाने के प्रयास में मनुष्य ने नये-नये वस्त्रों की खोज की है। जैसे-जैसे हमारा ज्ञान, इच्छाएं और सौंदर्य बोध विकसित होता है, हम नई-नई सामग्रियों का प्रयोग कर नित नूतन परिधानों की रचना कर रहे हैं।

इसी ढंग से आवास की आवश्यकता में भी आश्चर्यजनक परिवर्तन हुआ है। गुफाओं से चल कर मनुष्य झोंपड़ों के रास्ते चल पक्की ईंटों के बने घरों तक पहुंचा है। आजकल लकड़ी से बने मकान, पक्के मकान, बंगले तथा महलों का प्रयोग हो रहा है, जिनमें सुन्दर सुसज्जित दरवाजे-खिड़कियां और अनेक प्रकार के सौंदर्यवर्धक साज-समान होते हैं।

परन्तु कुछ आवश्यकताएं जीवन के अस्तित्व के लिये आवश्यक होती हैं। उदाहरण के लिये भोजन, वस्त्र तथा आवास। इन्हें **मूलभूत आवश्यकताएं अथवा अनिवार्यताएं** कहते हैं। कुछ अन्य आवश्यकताएं हैं जो हमारे जीवन को सरल तथा सुखमय बनाती हैं। इन्हें **सुविधाएं** कहते हैं। सुविधाओं के उदाहरण हैं कूलर, स्कूटर आदि। कुछ वस्तुएं हमें आनन्द की अनुभूति कराती हैं परन्तु वे अत्यंत कीमती होती हैं। उदाहरण के लिये, विलासी कार, हीरे के आभूषण आदि। इन वस्तुओं को हम **विलासिताएं** कहते हैं।

## 2.3 आवश्यकताओं की तुष्टि

क्या हमारी सभी आवश्यकताओं की तुष्टि हो जाती हैं? नहीं, जैसे ही एक आवश्यकता की तुष्टि होती है तो दूसरी आवश्यकता उत्पन्न हो जाती है। हमारी आवश्यकताओं में वृद्धि होती है क्योंकि हम बेहतर तथा सुखमय जीवन व्यतीत करने की इच्छा करते हैं। जैसे ही नई वस्तुओं तथा सेवाओं का विकास होता है हमें उनकी आवश्यकता प्रतीत होने लगती है। आवश्यकताओं की तुष्टि वस्तुओं और सेवाओं के द्वारा होती है। वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन संसाधनों की सहायता से किया जा सकता है। **भूमि, श्रम, पूंजी तथा उद्यम को संसाधन कहते हैं**, जो वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में सहायता करते हैं। आवश्यकताएं अनंत हैं परन्तु उनकी तुष्टि करने वाले संसाधन दुर्लभ हैं। जैसे ही किसी एक आवश्यकता की तुष्टि होती है, दूसरी उत्पन्न हो जाती है। इन आवश्यकताओं में से कुछ की तुष्टि मनुष्य अपनी सीमित आय से कर सकता है, जब कि अन्य की तुष्टि करने में वह समर्थ नहीं हो सकता। इसलिये हमारी सभी आवश्यकताओं की तुष्टि करना संभव नहीं है, यद्यपि एक आवश्यकता की तुष्टि संभव है।

## 2.4 आवश्यकताओं की विशेषताएं

आवश्यकताओं की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं :

### (i) आवश्यकताएं असीमित हैं

प्रसिद्ध अर्थशास्त्री मार्शल ने सत्य ही कहा है कि मानवीय आवश्यकताएं संख्या में अनंत है और उनके अनेक स्वरूप हैं। एक आवश्यकता पूरी होते ही कोई और आवश्यकता जन्म ले लेती है। आवश्यकताओं का यह अनन्त चक्र जीवन पर्यन्त चलता रहता है। उदाहरण के लिये, जिस व्यक्ति ने कभी पंखा प्रयोग नहीं किया है, वह पंखा पाने के लिये लालायित रहता है। पंखा मिलते ही उसके मन में एयर कूलर, स्कूटर आदि की कामना उत्पन्न हो जाती है। जब इन आवश्यकताओं की तुष्टि हो जाती है तो वह एयर कण्डीशनर, कार आदि अनेक वस्तुओं की कामना करने लगता है। इस प्रकार, हमारी आवश्यकताएं कभी समाप्त नहीं होती।

### (ii) किसी एक आवश्यकता की तुष्टि सम्भव है

यदि किसी एक आवश्यकता पर विचार करें, तो उसकी तुष्टि सम्भव होती है। यह ठीक ही कहा गया है कि एक विशेष आवश्यकता की एक सीमा होती है। उदाहरण के लिये, यदि किसी व्यक्ति को प्यास लगी है तो उसे एक, दो या तीन गिलास पानी पीकर बुझाया जा सकता है और उसके पश्चात उस समय उसे पानी पीने का मन नहीं होता।

### (iii) कुछ आवश्यकताएं बार-बार अनुभव होती हैं

हमारी अधिकांश आवश्यकताएं हमें बार-बार अनुभव होती रहती हैं। यदि उनकी एक बार तुष्टि हो जाती है, तो वे एक निश्चित समय के बाद फिर उत्पन्न हो जाती हैं। हम खाना खाकर भूख की तुष्टि कर लेते हैं, परन्तु कुछ घण्टे ही बाद हमें फिर भूख सताने लगती है और हमें अपनी भूख की तुष्टि फिर से खाना खाकर करनी पड़ती है। इस प्रकार, भूख, प्यास आदि ऐसी आवश्यकताएं हैं जो बार-बार अनुभव होती हैं।

### (iv) आवश्यकताओं की विविधतापूर्ण प्रकृति

आवश्यकताओं में समय, स्थान और व्यक्ति के अनुसार परिवर्तन होते रहते हैं। वे अनेक कारकों जैसे आय, रिवाज, फैशन और विज्ञापन आदि द्वारा भी प्रभावित होती हैं। उदाहरण के लिये, हमें दवाओं की आवश्यकता केवल तब होती है, जब हम बीमार होते हैं। बर्फ की आवश्यकता केवल गर्मियों में ही पड़ती है। श्रीनगर जैसे स्थानों पर तो गर्मी के महीनों में भी ऊनी कपड़ों की आवश्यकता पड़ती है। इसी प्रकार, लोगों की आय में वृद्धि तथा फैशन में परिवर्तन के कारण टी.वी., मोबाइल फोन, कारों आदि अनेक विलासिता की वस्तुओं का उपयोग लगातार बढ़ता जा रहा है। अतः देश के आर्थिक विकास के साथ-साथ आवश्यकताओं में परिवर्तन और वृद्धि होते रहते हैं।

### (v) वर्तमान आवश्यकताएं भावी आवश्यकताओं से अधिक महत्वपूर्ण होती हैं

हम अपनी वर्तमान आवश्यकताओं को ही अधिक महत्व देते हैं। व्यक्ति अपने अधिकतर सीमित साधनों को वर्तमान आवश्यकताओं की तुष्टि करने में ही प्रयोग करता है। वह अपनी भविष्य की आवश्यकताओं की इतनी चिंता नहीं करता क्योंकि भविष्य अनिश्चित होता है तथा भविष्य की आवश्यकताएं इतनी आवश्यक नहीं होती। उदाहरण के लिये, वर्तमान में बच्चों की अच्छी शिक्षा की व्यवस्था करना, भविष्य में वृद्धावस्था निर्वाह के लिये धन का संग्रह करने से अधिक महत्वपूर्ण होता है।

### (vi) आवश्यकताओं में विकास के साथ परिवर्तन और विस्तार होता है

आवश्यकताओं में परिवर्तन किसा प्रकार हो रहे हैं, इसे प्रदर्शित करने के लिये सबसे अच्छा उदाहरण टेलीफोन है। पहले, ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक टेलीफोन नहीं होते थे, परन्तु आज यह अपने सगे सम्बन्धियों से संपर्क बनाये रखने का सभी के लिये आवश्यक साधन बन गया है। जो लोग पहले टेलीफोन का प्रयोग करते थे अब वे मोबाइल फोन का प्रयोग करने लगे हैं। अब उन्हें मोबाइल फोन में भी अधिक सुविधाएं जैसे कि कैमरा, इंटरनेट आदि की आवश्यकता हो रही है।

## पाठगत प्रश्न 2.1

1. इच्छा आवश्यकता से किस प्रकार भिन्न होती है?
2. आवश्यकताओं में उदय और प्रसार होता है, इसे प्रदर्शित करने के लिये एक उदाहरण दीजिये।
3. सभी आवश्यकताओं की तुष्टि क्यों संभव नहीं होती?
4. आवश्यकताओं की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिये।
5. कोई इच्छा आवश्यकता कब बन जाती है?

## 2.5 संसाधन आवश्यकताओं की तुष्टि कैसे करते हैं

जैसा कि हम पहले ही कह चुके हैं, आवश्यकताओं की तुष्टि वस्तु और सेवाओं के द्वारा होती है। इन वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करने के लिये संसाधनों का प्रयोग किया जाता है। बढ़ती हुई आवश्यकताओं के साथ-साथ हम संसाधनों का भी अधिक प्रयोग कर रहे हैं। संसाधन प्राकृतिक तथा मानव-निर्मित दोनों हो सकते हैं। सारे संसाधनों को भूमि, श्रम, पूंजी तथा उद्यम में वर्गीकृत किया जा सकता है। उदाहरण के लिये गेहूँ के उत्पादन में हम भूमि, श्रम, ट्रैक्टर, पम्पसैट (पूंजी) का प्रयोग करते हैं। कृषक (उद्यमी) गेहूँ का उत्पादन करने के लिये इन सभी साधनों को संगठित करता है। इस प्रक्रिया में वह बीज, खाद तथा उर्वरक आदि का भी प्रयोग करता है। इस प्रकार गेहूँ के उत्पादन में संसाधनों का प्रयोग किया जाता है। इसी प्रकार अन्य सभी वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में संसाधनों का प्रयोग होता है। क्या आवश्यकताओं की भांति हमारे संसाधन भी असीमित हैं? इसका उत्तर है - नहीं। अपनी आवश्यकताओं की तुष्टि करने के लिये हम जिन संसाधनों का प्रयोग करते हैं वे सीमित/दुर्लभ हैं। विकास के साथ-साथ नई-नई वस्तुओं का अविष्कार होता है, जिससे हमारी आवश्यकताओं में वृद्धि होती है। परन्तु हमारे संसाधन उस अनुपात में नहीं बढ़ते। इससे हमारे संसाधन समाप्त हो सकते हैं।

## 2.6 आर्थिक तथा गैर-आर्थिक आवश्यकताएं

अब तक हम यह पढ़ चुके हैं कि आवश्यकताएं असीमित होती हैं। उनका स्वरूप प्रत्येक व्यक्ति के लिये अलग हो सकता है। जैसा कि आप जानते हैं कि हमारी अधिकांश आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये अनेक वस्तुएं एवं सेवाएं प्रयोग होती हैं। उन वस्तुओं और सेवाओं को हम बाजार से उनकी कीमत चुका कर खरीद लाते हैं। जिन आवश्यकताओं की तुष्टि इस प्रकार की वस्तुओं तथा सेवाओं द्वारा की जाती है, उन्हें **आर्थिक आवश्यकताएं** कहते हैं।

हम अपनी कुछ आवश्यक वस्तुएं बिना बाजार से खरीदारी किये ही प्राप्त कर लेते हैं। ऐसी आवश्यकताएं **गैर-आर्थिक आवश्यकताएं** कहलाती हैं। उदाहरणार्थ, हमें सांस लेने के लिये वायु, खेतों की सिंचाई के लिये वर्षा के जल आदि की आवश्यकता होती है। जब हमें खाना बनाने के लिये नौकरानी चाहिये तो ये हमारी आर्थिक आवश्यकता है। परन्तु, यदि खाना मां बनाती हैं तो ये हमारी गैर-आर्थिक आवश्यकता बन जाती है।

### पाठगत प्रश्न 2.2

1. गेहूँ के उत्पादन में प्रयोग किये जाने वाले संसाधनों के नाम लिखो।
2. निम्नलिखित में से किसकी आपूर्ति दुर्लभ है?

   (क) संसाधन      (ख) आवश्यकताएं
3. आर्थिक आवश्यकताओं के दो उदाहरण लिखिये।
4. गैर-आर्थिक आवश्यकताओं के दो उदाहरण लिखिये।

## 2.7 आवश्यकताओं में विकास के साथ परिवर्तन और विस्तार होता है

प्राचीन काल में, मानव भोजन, वस्त्र तथा आवास आदि की साधारण वस्तुओं से संतुष्ट था। परन्तु विकास के साथ-साथ इन आवश्यकताओं की प्रकृति तथा इनकी संख्या में वृद्धि हुई है। हमारे खाने के भोजन की आवश्यकता में परिवर्तन हुआ है। हमें केवल बेहतर तथा पौष्टिक भोजन की ही नहीं, बल्कि भिन्न-भिन्न प्रकार के व्यंजनों की भी आवश्यकता होने लगी है। इसी प्रकार, हम पहनने के लिये केवल एक जोड़ी कपड़ों से ही काम नहीं चलाना चाहते, बल्कि फैशन के अनुसार हमें भिन्न-भिन्न प्रकार के तथा नई-नई डिजाइन के कपड़े चाहिये। हमें आधुनिक सुविधाओं जैसे एयर कन्डीशनर, गीजर आदि से युक्त बेहतर मकान की आवश्यकता है। आप सभी जानते हैं कि बातचीत करने के लिये हमें केवल एक सादा टेलीफोन की ही आवश्यकता नहीं है बल्कि हमें अपने सुविधाओं जैसे कैमरा, इंटरनेट, वीडियों-रिकार्डिंग आदि से युक्त मोबाइल फोन की आवश्यकता है। अतः मनुष्य की लगातार बढ़ती हुई तथा परिवर्तित होती हुई आवश्यकताओं ने अनेक अविष्कारों को जन्म दिया है जिनसे नई-नई और बेहतर वस्तुएं एवं सेवाएं अस्तित्व में आई हैं।

## 2.8 आवश्कताओं को सीमित करने का भारतीय दर्शन

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि हमारी आवश्यकताएं अनंत हैं परन्तु इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये संसाधन सीमित हैं। इसलिये यदि हम अपनी आवश्यकताओं को असीमित बना लें और लगातार उनमें वृद्धि करते रहें तो हम सीमित संसाधनों में सभी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पायेंगे। इससे बहुत ही असंतोष उत्पन्न हो जाएगा। परन्तु दूसरी ओर, यदि हम अपनी आवश्यकताओं को सीमित कर लें तो हम अपने सीमित संसाधनों से अपनी अधिकतर आवश्यकताओं की तुष्टि कर पायेंगे तथा इससे हमें कहीं अधिक संतोष की अनुभूति होगी। भारतीय विचारकों का सदैव आग्रह रहा है कि **आवश्यकताएं सीमित रखने से ही जीवन में संतोष और सुख की वृद्धि होती है**। इससे हमें एक सुखी जीवन व्यतीत करने में सहायता मिलती है क्योंकि हमें ऐसी आवश्यकताएं जिनकी तुष्टि नहीं हुई है उनके कारण अप्रसन्नता का सामना नहीं करना पड़ता। हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी भी सदैव आवश्यकताएं सीमित करने का आग्रह करते थे। उनका कहना था कि तभी हमारा जीवन संतोषमय बनेगा और यह संतोष ही हमें गलत तरीकों से अपनी असीमित आवश्यकताओं को पूरा करने से रोकेगा। कुछ अन्य महान विचारकों ने भी इस प्रकार के विचार व्यक्त किये हैं।

### पाठगत प्रश्न 2.3

1. सीमित संसाधनों द्वारा आवश्यकताओं की तुष्टि के सम्बन्ध में भारतीय दर्शन क्या है?
2. आवश्यकताओं में विकास के साथ परिवर्तन और विस्तार होता है, यह सिद्ध करने के लिए संचार प्रणाली का एक उदाहरण दीजिये।

## आपने क्या सीखा

- वे इच्छाएं जिनके लिये हमारे पास पर्याप्त धन हो और जिन पर हम खर्च करने को तत्पर हों, आवश्यकताएं कहलाती हैं।
- आवश्यकताओं की तुष्टि वस्तु और सेवाओं द्वारा होती है।
- आर्थिक आवश्यकताओं की तुष्टि उन वस्तुओं और सेवाओं से होती हैं जो बाजार से कीमत चुका कर खरीदी जाती है।
- गैर-आर्थिक आवश्यकताओं की तुष्टि उन वस्तु और सेवाओं से हाती है जो कीमत चुका कर बाजार से नहीं खरीदी जाती।
- नये-नये अविष्कारों के साथ-साथ नई-नई आवश्यकताओं का उदय होता है और उनमें वृद्धि होती है।
- कुछ आवश्यकताएं जीवन के अस्तित्व के लिये आवश्यक होती हैं। इन्हें अनिवर्यताएं कहते हैं।
- ऐसी आवश्यकताएं जो हमारे जीवन को सरल तथा सुखमय बनाती हैं सुविधाएं कहलाती हैं।
- कुछ आवश्यकताएं हमें आनन्द की अनुभूति कराती हैं परन्तु उनकी तुष्टि कीमती वस्तुओं द्वारा होती है, विलासिताएं कहलाती हैं।
- यद्यपि एक आवश्यकता की तुष्टि सम्भव है, संसाधनों की दुर्लभता के कारण सभी आवश्यकताओं की तुष्टि सम्भव नहीं है।
- आवश्यकताओं की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएं हैं :

  आवश्यकताएं असीमित हैं, किसी एक आवश्यकता की तुष्टि सम्भव है, कुछ आवश्यकताएं बार-बार अनुभव होती हैं, आवश्यकताओं में समय, स्थान तथा व्यक्ति के अनुसार परिवर्तन होता है, वर्तमान आवश्यकताएं भावी आवश्यकताओं से अधिक महत्वपूर्ण होती हैं, आवश्यकताओं में विकास के साथ परिवर्तन और विस्तार होता है।
- आवश्यकताओं में विकास के साथ परिवर्तन और विस्तार होता है।
- भारतीय विचारकों का सदैव आग्रह रहा है कि अधिक से अधिक संतोष प्राप्त करने के लिये हम अपनी आवश्यकताओं को सीमित करें।

## पाठान्त प्रश्न

1. इच्छाओं को आवश्यकताओं में बदलने के लिये दो उदाहरण दीजिये।
2. आवश्यकताओं का उदय और प्रसार किस प्रकार होता है? एक उदाहरण की सहायता से समझाइये।

3. सभी आवश्यकताओं की तुष्टि सम्भव नहीं है। समझाइये क्यों?
4. आवश्यकताओं की चार मुख्य विशेषताओं का उल्लेख कीजिये।
5. वर्तमान आवश्यकताएं भावी आवश्यकताओं से अधिक महत्वपूर्ण होती हैं, एक उदाहरण द्वारा सिद्ध कीजये।
6. संसाधन आवश्यकताओं की तुष्टि कैसे करते हैं?
7. आर्थिक तथा गैर-आर्थिक आवश्यकताओं में भेद कीजिये।
8. 'आवश्यकताओं में विकास के साथ परिवर्तन और विस्तार होता है' समझाइये।
9. हमें अपनी आवश्यकताओं को सीमित क्यों करना चाहिये?

## पाठगत प्रश्नों के उत्तर

### पाठगत प्रश्न 2.1

1. वे इच्छाएं जिनकी तुष्टि करने के लिये हमारे पास पर्याप्त मुद्रा हो और हम जिन पर खर्च करने को तत्पर हों, आवश्यकताएं कहलाती हैं।
2. आग की खोज के बाद मानव ने भोजन पकाना आरम्भ कर दिया जिससे नई-नई खाद्य सामग्रियों में वृद्धि हुई।
3. संसाधनों की दुर्लभता के कारण सभी आवश्यकताओं की तुष्टि सम्भव नहीं है।
4. (i) आवश्यकताएं असीमित हैं।
   (ii) कुछ आवश्यकताएं बार-बार अनुभव होती हैं।
5. एक इच्छा आवश्यकता बन जाती है जब उसकी तुष्टि के लिये पर्याप्त मुद्रा हो तथा जिस पर हम खर्च करने को तत्पर हों।

### पाठगत प्रश्न 2.2

1. भूमि, श्रम, पूंजी (मशीन), बीज, खाद, उर्वरक आदि
2. (क)
3. (i) पैन (ii) पुस्तक
4. (i) सांस लेने के लिये वायु (ii) खेती के लिये वर्षा का जल

# 3

# वस्तुएँ और सेवाएँ

यह तो आप पढ़ चुके हैं कि मानवीय आवश्यकताएं असीमित होती हैं तथा उनकी कभी पूर्ण तृप्ति नहीं होती। प्रश्न उठता है कि हमारी कितनी आवश्यकताओं की पूर्ति या तुष्टि हो सकती है? और हम उन्हें किस प्रकार तुष्ट कर सकते हैं?

मानवीय आवश्यकताओं की तुष्टि वस्तु और सेवाओं से होती है जो अनेक अर्थिक क्रियाओं अथवा गतिविधियों से गुजरती हैं। इस पाठ में आप इन्हीं वस्तुओं और सेवाओं के विषय में विस्तार से जानकारी प्राप्त करेंगे। हम इनके प्रकारों तथा उत्पादन, उपभोग, निवेश और मानवीय आवश्यकताओं के संदर्भ में इनके महत्व पर भी चर्चा करेंगे।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप कर सकेंगे :

- वस्तु और सेवा शब्दों की व्याख्या;
- विभिन्न प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं की पहचान;
- वस्तुओं और सेवाओं में भेद;
- विभिन्न प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं के वर्गीकरण का आधार;
- निःशुल्क तथा आर्थिक वस्तुओं व सेवाओं की जानकारी;
- उपभोक्ता वस्तुओं तथा उत्पादक वस्तुओं और सेवाओं में भेद;
- वस्तुएं एकल उपयोगी तथा दीर्घोपयोगी कैसे हो सकती हैं;
- सार्वजनिक वस्तुओं तथा निजी वस्तुओं में भेद।

## 3.1 वस्तुएँ और सेवाएँ

अपने दैनिक जीवन में हमारा अनेक वस्तुओं और सेवाओं से सामना होता है। भूख लगने पर हम खाना खाते हैं। जब हमें प्यास लगती है तो हम पानी पीते हैं। इसी प्रकार हम लिखने के लिये पैन और कागज, रहने के लिये मकान, बैठने के लिये कुर्सी, कपड़े धोने की मशीन तथा

मनोरंजक कार्यक्रम देखने के लिये टेलीविजन आदि का प्रयोग करते हैं। ये सब उन वस्तुआं के उदाहरण है जो हमारी आवश्यकताओं की तुष्टि करती हैं।

किन्तु हमारी आवश्यकताएं केवल वस्तुओं से ही पूरी नहीं हो जाती। विभिन्न कार्यों में हमें विभिन्न व्यक्तियों की सेवाओं की भी आवश्यकता पड़ती है। उदाहरण के लिये, नाई हमारे बाल संवारता है, डाक्टर हमारी चिकित्सा करता है, दर्जी हमारे कपड़े सीता है और इसी प्रकार मोची हमारे जूते, चप्पल ठीक करता है। ये सब उन सेवाओं के उदाहरण हैं जो हमारी आवश्यकताओं की तुष्टि करती हैं। वस्तुएं तथा सेवाएं दोनों ही मानवीय आवश्यकताओं की तुष्टि करती हैं। इन वस्तुओं और सेवाओं में भी हमारी आवश्यकताओं की भांति ही विविधता पाई जाती है।

## 3.2 वस्तुओं और सेवाओं में भेद

यह तो हम जान ही चुके हैं कि मानवीय आवश्यकताओं की तुष्टि के लिये वस्तुएं और सेवाएं दोनों ही महत्वपूर्ण हैं। आइये, अब इन दोनों के अन्तर को समझने का प्रयास करें। इनके बीच निम्नलिखित मुख्य अन्तर हैं :

### वस्तुएं

1. ये **दृश्य** होती हैं - इन्हें देखा और छुआ जा सकता है।
2. इनके **उत्पादन और उपभोग में समय का अन्तर होता है**। पहले इनका उत्पादन होता है और फिर इनका उपभोग।
3. **इनका संग्रह किया जा सकता है**। जब आवश्यक हो तो इनका प्रयोग किया जा सकता है।
4. इन्हें **एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानान्तरित किया जा सकता है।**

आइये, हम एक वस्तु (कुर्सी) का उदाहरण लेकर इन बातों को स्पष्ट करें। आप कुर्सी को देख और छू सकते हैं। इसे बढ़ई ने अपनी कार्यशाला में बनाया था। आप बाजार से खरीद लाए और इसका प्रयोग कर रहे हैं। अतः इसके उत्पादन और उपभोग में समय का अन्तर आ जाता है। यदि कुछ समय तक आपको इसकी आवश्यकता नहीं हो तो आप इस कुर्सी को किसी गोदाम में रख सकते है। जब आवश्यकता हो फिर गोदाम से निकालकर प्रयोग कर सकते हैं। आप इसे किसी अन्य व्यक्ति को उपहार में दे सकते हैं, चाहें तो बेच भी सकते हैं।

### सेवाएं

1. सेवाएं **अदृश्य** होती है अर्थात इन्हें देखा या छुआ नहीं जा सकता।
2. इनके **उत्पादन और उपभोग के बीच समय का अन्तर नहीं होता**। यही कारण है कि इनके उत्पादन और उपभोग साथ-साथ चलते हैं।
3. सेवाओं का **संग्रह नहीं हो सकता** है।
4. सेवाओं का **हस्तांतरण भी सम्भव नहीं होता**।

किसी डॉक्टर की चिकित्सा सेवा का उदाहरण उपर्युक्त चारों विशेष लक्षणों को स्पष्ट कर देता है। मरीज की जांच कर दवा लिखने में ही डाक्टर की चिकित्सा सेवा प्रदान हो जाती है। ये सेवा हमें दिखाई नहीं देती। इसे हम छू भी नहीं सकते। जाँच करते ही सेवा पूरी हो जाती है, मरीज द्वारा उस सेवा का उपभोग भी हो जाता है। अतः सेवा के उत्पादन और उपभोग के बीच कोई समय अन्तराल नहीं होता। इस सेवा को भण्डार में रखना या किसी अन्य को हस्तांतरित करना भी संभव नहीं होता।

## पाठगत प्रश्न 3.1

1. इन में से किस-किस को वस्तु कहा जाता है?
   (क) कार (ख) मोबाइल फोन
   (ग) यात्रियों का परिवहन (घ) जूते ठीक करना
2. इनमें से कौन सी वस्तुओं की विशेषताएं हैं?
   (क) वस्तुओं को देखा-छुआ जा सकता है।
   (ख) वस्तुओं का हस्तांतरण नहीं हो सकता।
   (ग) वस्तुओं के उत्पादन और उपभोग में समय अन्तराल नहीं होता।
3. इनमें से कौन सी सेवाओं की विशेषताएं है?
   (क) सेवाओं को देखा-छुआ जा सकता है।
   (ख) सेवाओं के उत्पादन और उपभोग में समय अन्तराल नहीं होता।
   (ग) सेवाओं का संग्रह किया जा सकता है।
4. मानवीय आवश्यकताएं इनके उपयोग से संतुष्ट होती हैः
   (क) वस्तुएं (ख) सेवाएं
   (ग) वस्तुएं और सेवाएं (घ) इनमें से कोई नहीं

## 3.3 वस्तुओं और सेवाओं का वर्गीकरण

हम जानते हैं कि विभिन्न प्रकार के उद्यम विभिन्न प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करते हैं। उन सब का अलग-अलग अध्ययन कर पाना तो संभव नहीं होता पर उन्हें कुछ एक बड़े वर्गों में बांटकर उनका विधिवत अध्ययन संभव हो पाता है। यह वर्गीकरण कई प्रकार से किया जा सकता है। वर्गीकरण से विभिन्न वस्तुओं के सापेक्ष आर्थिक महत्व को भी समझा जा सकता है। हम निम्नलिखित प्रकार से वर्गीकरण का अध्ययन करेंगेः

1. निःशुल्क वस्तुएं और आर्थिक वस्तुएं
2. निःशुल्क सेवाएं और आर्थिक सेवाएं
3. उपभोक्ता वस्तुएं और उत्पादक वस्तुएं

4. उपभोक्ता सेवाएं और उत्पादक सेवाएं
5. एकल उपयोगी वस्तुएं तथा दीर्घोपयोगी वस्तुएं
6. निजी वस्तुएं तथा सार्वजनिक वस्तुएं

## 1. निःशुल्क वस्तुएं और आर्थिक वस्तुएं

मान लो कि आप किसी रेगिस्तान में हैं और वहां रेत का एक बोरा भर लेते हैं। इसके लिये आपको कोई कीमत नहीं देनी पड़ती। किन्तु यदि आप शहर में रेत का बोरा पाना चाहें तो निश्चित ही इसके लिये आपको कीमत चुकानी पड़ेगी। यह उदाहरण निःशुल्क और आर्थिक वस्तुओं का भेद स्पष्ट करता है। **निःशुल्क वस्तुएं प्रकृति की दी हुई उपहार है।** वे प्रचुरता में उपलब्ध हैं - उनकी आपूर्ति मांग से बहुत अधिक होती है। उन्हें पाने के लिये आपको कोई कीमत नहीं देनी पड़ती। इसीलिये उन्हें निःशुल्क वस्तुएं कहा जाता है। संक्षेप में, **निःशुल्क वस्तुएं वे है जिनमें उपयोगिता तो है पर जो दुर्लभ नहीं है।**

दूसरी ओर, हम अनेक वस्तुएं अपने दैनिक जीवन में प्रयोग करते हैं जैसे कि टूथपेस्ट, साबुन, शेविंग क्रीम, जूते, डबल रोटी आदि। ये सभी मानव निर्मित वस्तुएं हैं। इनकी आपूर्ति असीमित नहीं है। इसी तरह हम कई प्रकार की मशीनों, बसें, मेज, कुर्सी, पुस्तकें, पंखे, टेलीविजन आदि का प्रयोग भी करते हैं। ये भी मानव निर्मित हैं और इनकी आपूर्ति असीमित नहीं होती। हम अपने घर में पानी का कई कार्यो के लिये प्रयोग करते हैं। रेत का प्रयोग निर्माण कार्यो में तथा अनेक खनिजों का भी भांति-भांति प्रकार से प्रयोग करते हैं। यहाँ ये वस्तुएं प्रकृति की देन हैं, मानव निर्मित नहीं। किन्तु **इनकी आपूर्ति मांग की अपेक्षा सीमित रहती है**। इसी कारण **ये निःशुल्क नहीं रहती, इनके लिये कीमत चुकानी पड़ती है। ये आर्थिक वस्तुएं हैं।**

अतः आर्थिक वस्तुएं वे (मानव निर्मित अथवा प्रकृति प्रदत्त) वस्तुएं हैं जिनकी मांग आपूर्ति से अधिक होती है। उनकी कीमत चुका कर उन्हें बाजार से खरीदा जा सकता है।

## 2. निःशुल्क सेवाएं और आर्थिक सेवाएं

निःशुल्क और आर्थिक का विभाजन सेवाओं पर भी लागू हो सकता है। स्नेह तथा आपसी सम्बन्धों पर आधारित सेवाओं का कोई बाजार नहीं होता। उदाहरण के लिये माता-पिता द्वारा बच्चों के लालन-पालन की सेवाएं। **वे सब सेवाएं जिनका बाजार में क्रय-विक्रय होता है, आर्थिक सेवाएं कहलाती हैं**। जैसे, डाक्टर, इंजीनियर आदि की सेवाएं। हमारे आगे के चार वर्ग केवल आर्थिक वस्तुओं और सेवाओं पर ही लागू होते हैं।

## 3. उपभोक्ता वस्तुएं और उत्पादक वस्तुएं

यह वर्गीकरण वस्तुओं के उपयोग पर निर्भर है। **जिन वस्तुओं से प्रत्यक्ष रूप से उपभोक्ता की आवश्यकताओं की तुष्टि की जाती है उन्हें उपभोक्ता वस्तु कहते हैं।** उदाहरण के लिये डबल रोटी, फल, दूध, वस्त्र आदि।

**उत्पादक वस्तुएं वे वस्तुएं होती हैं जो अप्रत्यक्ष रूप से उपभोक्ता की आवश्यकताओं को पूरा करती हैं।** चूंकि ये दूसरी वस्तुओं के उत्पादन में सहायक होती हैं, इसीलिये उन्हें उत्पादक वस्तुएं

कहते हैं। उदाहरण के लिये, मशीन, औजार, कच्चा माल, बीज, खाद, ट्रैक्टर आदि सभी उत्पादक वस्तुओं के उदाहरण हैं।

### 3 (क) मध्यवर्ती वस्तुएं

अन्तिम वस्तुओं तथा सेवाओं के उत्पादन में उत्पादक द्वारा प्रयोग किये जाने वाला कच्चा माल, बिजली, ईंधन आदि को मध्यवर्ती वस्तुएं कहते हैं। उदाहरण के लिये बेकरी में डबल रोटी के उत्पादन में प्रयोग किया जाने वाला गेहूँ का आटा मध्यवर्ती वस्तु है।

## 4. उपभोक्ता सेवाएं तथा उत्पादक सेवाएं

यहाँ भी वर्गीकरण का आधार वस्तुओं की भांति प्रयोग ही है। **जिन सेवाओं का उपयोग सीधे ही उपभोक्ता या परिवार करते हैं, उन्हें उपभोक्ता सेवाएं कहते हैं।** उदाहरणतया, दर्जी द्वारा आपकी कमीज की सिलाई, डाक्टर द्वारा आपकी चिकित्सा, नलके वाले मिस्त्री द्वारा आपके नल की मरम्मत आदि।

दूसरी ओर **उत्पादक सेवाएं वे सेवाएं होती हैं जिनका उपयोग दूसरी वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में किया जाता है।** ये अप्रत्यक्ष रूप से उपभोक्ता की आवश्यकताएं तुष्ट करती है। उदाहरणतया दर्जी द्वारा किसी वस्त्र निर्माता के लिये कपड़ों की सिलाई, बिजली विभाग के मिस्त्रियों द्वारा आपूर्ति लाइन की मरम्मत, ट्रक द्वारा किसी फैक्ट्ररी को कच्चे माल का परिवहन आदि।

## 5. एकल उपयोगी और दीर्घोपयोगी वस्तुएं

सभी प्रकार की वस्तुओं, चाहे वे उपभोक्ता वस्तुएं है अथवा उत्पादक वस्तुएं, को एकल उपयोगी तथा दीर्घोपयोगी वस्तुओं में वर्गीकृत किया जाता है। **एकल उपयोगी वस्तुएं वे हैं जिनका हम एक बार ही उपयोग कर सकते हैं।** उसी में उनकी सारी उपयोगिता काम आ जाती है। उदाहरणतः, डबलरोटी, मक्खन, अण्डा, दूध आदि एकल उपयोगी उपभोक्ता वस्तुएं हैं। इसी प्रकार एकल उपयोगी उत्पादक वस्तुएं भी एक ही बार उत्पादन प्रक्रिया में प्रयोग हो सकती हैं। उदाहरणतः, कोयला, कच्चा माल, बीज, खाद आदि। चीनी के उत्पादन में गन्ना कच्चा माल है। उसका एक बार ही प्रयोग हो सकता है।

**दीर्घोपयोगी वस्तुएं वे वस्तुएं होती है जिनका लम्बे समय तक बार-बार प्रयोग होता है।** यहाँ भी उपभोक्ता और उत्पादक वर्ग की दीर्घोपयोगी वस्तुएं होती हैं। दीर्घोपयोगी उपभोक्ता वस्तुएं हैं: कपड़े, फर्नीचर, टेलीविजन, स्कूटर आदि। उपभोक्ता इन्हें बार-बार प्रयोग कर सकता है। दीर्घोपयोगी उत्पादक वस्तुएं उत्पादन प्रक्रिया में बार-बार प्रयोग होती हैं। उदाहरणतः, मशीनें, औजार, ट्रैक्टर आदि। बार-बार प्रयोग से भी ये वस्तुएं पूरी तरह अप्रभावित रहती हों, ऐसी बात नहीं है। वास्तव में, इन वस्तुओं के लगातार प्रयोग से इनके मूल्य में ह्रास हो जाता है।

## 6. निजी और सार्वजनिक वस्तुएं

वस्तुओं का स्वामित्व के आधार पर भी वर्गीकरण हो सकता है **जिनका स्वामित्व निजी हो और जिन्हें उनके स्वामी ही स्वयं प्रयोग करते हैं, उन्हें हम निजी वस्तुएं कहते हैं।** आपकी सभी अपनी

वस्तुएं निजी कहलाएंगी। जैसे घड़ी, पैन, स्कूटर, मेज, कुर्सी, किताबें, बिस्तर, कपड़े आदि। यदि आप किसी फैक्ट्री के मालिक हैं तो उसकी मशीनें, औजार आदि भी आपकी निजी वस्तुएं होगी।

इनके विपरीत **सार्वजनिक वस्तुएं वे वस्तुएं होती हैं जिन पर सारे समाज का सांझा स्वामित्व होता है और सभी लोग उनका उपयोग भी करते हैं।** उदाहरणार्थ, सड़कें, पार्क, टाउनहाल आदि। ये समाज के सभी सदस्यों को बिना भेदभाव के सुलभ रहते हैं अर्थात इनका उपयोग किसी के लिये भी वर्जित नहीं होता। सरकार तथा निजी उद्यमी दोनों ही सार्वजनिक वस्तुओं का उत्पादन कर सकते हैं।

## पाठगत प्रश्न 3.2

निम्नलिखित में से सही कौन है?

1. आर्थिक वस्तुएं वे वस्तुएं है :
   (क) जो दुर्लभ हों
   (ख) जिनकी कीमत हों
   (ग) जो दुर्लभ हों तथा जिनकी कीमत हो।
2. उपभोक्ता वस्तुएं वे वस्तुएं हैं :
   (क) जो आगे उत्पादन में सहायता करती हैं
   (ख) जो प्रत्यक्ष रूप से मानवीय आवश्यकताओं की तुष्टि करें
   (ग) इनमें से कोई नहीं।
3. उत्पादक वस्तुओं के उदाहरण हैं :
   (क) मशीनें (ख) ट्रैक्टर
   (ग) डबलरोटी (घ) कच्चा माल
4. इनमें से कौन से कथन सत्य हैं?
   (क) निःशुल्क वस्तुएं वे है जिनकी आपूर्ति मांग से अधिक होती है।
   (ख) एकल उपयोगी वस्तुएं वे हैं जिनका केवल एक बार प्रयोग होता है।
   (ग) दीर्घोपयोगी वस्तुओं का बार-बार प्रयोग हो सकता है।
   (घ) सार्वजनिक वस्तुएं वे वस्तुएं हैं जिनका स्वामी सारा समाज होता है।

## 3.4 अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं की भूमिका तथा महत्व

वस्तुओं और सेवाओं की अर्थव्यवस्था में बहुमुखी भूमिका होती है। इनकी भूमिका इनके संदर्भ में समझाई जा सकती है :

### 1. मानवीय आवश्यकताएं

आप पढ़ चुके हैं कि मानवीय आवश्यकताएं असीमित होती हैं और उनमें हमेशा वृद्धि होती रहती है। इससे अभिप्राय है कि यदि वस्त्र, जूते, फर्नीचर, बर्तन, टेलीविजन, स्कूटर, फल, सब्जियां, अनाज आदि वस्तुओं तथा डाक्टर, नलके के तथा बिजली के मिस्त्रियों की सेवाओं आदि की उपलब्धता में वृद्धि हो जाये तो इनसे अधिक मानवीय आवश्यकताओं की तुष्टि होगी।

### 2. उत्पादन

बढ़ती हुई मानवीय आवश्यकताओं की तुष्टि करने के लिये हमें उपभोक्ता वस्तुओं और सेवाओं की आवश्यकता पड़ती है। परन्तु इन उपभोक्ता वस्तुओं की उपलब्धता में वृद्धि अधिक उत्पादक वस्तुओं और सेवाओं की उपलब्धता पर निर्भर होती है। यदि हमारे पास अधिक और बेहतर मशीने, कच्चामाल, ट्रैक्टर, बीज, खाद आदि हैं तो हम अधिक उत्पादन कर पायेंगे। इसी प्रकार हमें अधिक परिवहन, बैंक, बीमा आदि सेवाओं की भी आवश्यकता पड़ती है। अतः उत्पादक वस्तुओं और सेवओं की मात्रा और गुणवत्ता ही बाजार में उपभोक्ता वस्तुओं और सेवाओं की उपलब्धता का निर्धारण करती है।

### 3. निवेश

वस्तु और सेवाओं के उत्पादन की वृद्धि ही निवेश के स्तर की निर्धारक है। इस उत्पादन का एक अंश ही मानवीय आवश्यकताओं की तुष्टि करने में काम आता है। उपभोग से बचा भाग ही आगे उत्पादन वृद्धि में काम आता है क्योंकि इसी से अर्थव्यवस्था में पूंजी निर्माण होता है। यदि वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन अधिक हो तो उपभोग व निवेश दोनों में वृद्धि करना सम्भव हो जाता है। यही अतिरेक (उत्पादन-उपभोग) जितना अधिक होगा, अर्थव्यवस्था की उत्पादन क्षमता उतनी ही अधिक बढ़ जाएगी।

## पाठगत प्रश्न 3.3

प्रत्येक कथन के सामने सत्य/असत्य लिखें :

1. वस्तु और सेवाओं का उपभोग मानवीय आवश्यकताओं की तुष्टि में सहायक है। [ ]
2. वस्तु और सेवाओं की उपलब्धता उत्पादक वस्तुओं की उपलब्धता पर निर्भर है। [ ]
3. अधिक उत्पादन से अभिप्राय है - अधिक उपभोग तथा अधिक निवेश। [ ]

## आपने क्या सीखा

- मानवीय आवश्यकताएं अनन्त हैं। वस्तुएं और सेवाएं उन्हें संतुष्ट कर सकती हैं।
- निःशुल्क वस्तुएं वे वस्तुएं हैं जो बहुलता में उपलब्ध हैं और जिनके लिये बाजार में कोई कीमत नहीं चुकानी पड़ती।

- आर्थिक वस्तुओं की आपूर्ति मांग की अपेक्षा सीमित होती है। बाजार में उनकी कीमत भी होती है।
- निःशुल्क सेवाएं स्नेह और प्रेम पर आधारित होती हैं। इन्हें बाजार में खरीदा नहीं जा सकता।
- आर्थिक सेवाएं वे हैं जिनहें बाजार में खरीदा जा सकता है।
- उपभोक्ता वस्तुएं वे होती हैं जो प्रत्यक्ष रूप से उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं की तुष्टि करती हैं।
- अप्रत्यक्ष रूप से उपभोक्ता की आवश्यकता पूरी करने वाली वस्तुएं उत्पादक वस्तुएं हैं।
- उपभोक्ता और उत्पादक वस्तुओं को एकल एवं दीर्घोपयोगी वस्तुओं में बांटा जा सकता है। इनके विभाजन का आधार होता है - केवल एक बार काम आने वाली वस्तु एकल उपयोगी तथा बार-बार प्रयोग आने वाली वस्तुएं दीर्घोपयोगी वस्तुएं कहलाती हैं।
- उपभोक्ता सेवाएं प्रत्यक्ष रूप से उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं की तुष्टि करती है जबकि उत्पादक सेवाएं वस्तुओं और सेवाओं के आगे उत्पादन करने में सहायता करती हैं।
- वस्तुओं और सेवाओं की गुणवत्ता तथा परिमाण उत्पादन, निवेश, उपभोग तथा मानवीय आवश्यकताओं की संतुष्टि का स्तर निर्धारित करती हैं।

## पाठान्त प्रश्न

1. वस्तुओं और सेवाओं में भेद कीजिये।
2. आर्थिक और निःशुल्क वस्तुओं में भेद कीजिये।
3. उपभोक्ता वस्तुओं तथा उत्पादक वस्तुओं में अन्तर स्पष्ट कीजिये।
4. एकल उपयोगी तथा दीर्घोपयोगी वस्तुओं में अन्तर बताइये।
5. अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं का महत्व और भूमिका बताइये।

## पाठगत प्रश्नों के उत्तर

### पाठगत प्रश्न 3.1

1. क, ख  2. क  3. ख  4. ग

### पाठगत प्रश्न 3.2

1. ग  2. ख  3. क, ख, घ  4. क, ख, ग, घ

### पाठगत प्रश्न 3.3

1. सत्य  2. सत्य  3. सत्य

## मॉड्यूल 2: अर्थव्यवस्था के विषय में

4. अर्थव्यवस्था - अभिप्राय तथा प्रकार
5. अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याएं
6. मूल आर्थिक गतिविधियां

# 4

# अर्थव्यवस्था - अभिप्राय तथा प्रकार

प्रत्येक अर्थव्यवस्था का उद्देश्य समाज के पास उपलब्ध तथा ज्ञात दुर्लभ संसाधनों को प्रयोग करके मानवीय आवश्यकताओं की तुष्टि करना है। इन आवश्यकताओं की तुष्टि वस्तु एवं सेवाओं के उत्पादन तथा उपभोग द्वारा की जा सकती है। उत्पादन के लिये, उत्पादन के साधन कुछ आर्थिक गतिविधियों में संलग्न होते हैं। इन आर्थिक गतिविधियों से आर्थिक इकाइयों को आय प्राप्त होती है, जिसे या तो उपभोग कर लिया जाता है अथवा बचत कर लिया जाता है अथवा निवेश कर दिया जाता है। इन लाभदायक गतिविधयों तथा संचित कमाई के कारण कुछ देशों में तीव्र गति से संवृद्धि होती है, जबकि अन्य इतनी उच्च संवृद्धि की दर प्राप्त नहीं कर सकते हैं। परिणामस्वरूप कुछ अर्थव्यवस्थाएं विकसित अर्थव्यवस्थाओं की स्थिति प्राप्त कर लेती हैं जबकि अन्य अल्प विकसित अथवा विकासशील अर्थव्यवस्थाएं रह जाती हैं। इन्हें धनी तथा निर्धन अर्थव्यवस्थाएं भी कहा जाता है। हम अर्थव्यवस्थाओं को संसाधनों के स्वामित्व के आधार पर भी देख सकते हैं। उपलब्ध संसाधन निजी स्वामित्व अथवा सामूहिक स्वामित्व में हो सकते हैं। इस प्रकार अर्थव्यवस्था तथा इसके विकास के स्तर पर विभिन्न दृष्टियों से विचार किया जा सकता है। इस पाठ में हम इन सभी पदों की सरल प्रकार से व्याख्या करेंगे ताकि आप एक अर्थव्यवस्था के अर्थ और प्रकृति को समझ सकें तथा भेद कर सकें और इनके विभिन्न प्रकारों को समझ सकें।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात आप इस योग्य होंगे कि :

- अर्थव्यवस्था के अर्थ की व्याख्या कर सकें;
- विभिन्न प्रकार के आर्थिक संगठनों में स्वामित्व तथा संसाधनों के नियंत्रण के आधार पर तथा विकास के स्तर के आधार पर भी अन्तर कर सकें;
- आर्थिक विकास तथा आर्थिक संवृद्धि का अर्थ समझ सकें;
- आर्थिक विकास तथा आर्थिक संवृद्धि में भेद कर सकें;
- आर्थिक विकास के महत्वपूर्ण निर्धारकों को समझ सकें।

## 4.1 अर्थव्यवस्था का अर्थ

अर्थव्यवस्था मानवीय आवश्यकताओं की संतुष्टि करने के लिये एक मानव निर्मित संगठन है। ए.जे. ब्राउन के अनुसार, **"अर्थव्यवस्था एक ऐसी पद्धति है जिसके द्वारा लोग जीविका प्राप्त करते हैं।"** जिस विधि से मनुष्य जीविका प्राप्त करने का प्रयास करता है वह समय तथा स्थान के सम्बन्ध में भिन्न होती है। प्राचीनकाल में, 'जीविका प्राप्त करना' सरल था परन्तु सभ्यता के विकास के साथ यह अत्यंत जटिल हो गया है। यहां यह ध्यान देना अत्यंत महत्वपूर्ण है कि जिस विधि से व्यक्ति जीविका अर्जन करता है वह वैध तथा न्यायपूर्ण होनी चाहिए। अन्यायपूर्ण तथा अवैध कार्य जैसे लूटपाट, तस्करी से भी किसी को आय अर्जित हो सकती है परन्तु इसे लाभदायक आर्थिक गतिविधि अथवा जीविका प्राप्त करने की पद्धति की श्रेणी में नहीं लेना चाहिये। इसलिये यह कहना उपयुक्त होगा कि अर्थव्यवस्था एक संरचना है जहां सारी आर्थिक गतिविधियां पूरी होती है।

**अर्थव्यवस्था की कुछ मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं :**

1. आर्थिक संस्थाएं मानव निर्मित होती है। अतः अर्थव्यवस्था वैसी ही होती है, जैसी हम उसे बनाते हैं।
2. आर्थिक संस्थाएं सृजित, विघटित, प्रतिस्थापित अथवा परिवर्तित हो सकती हैं। उदाहरण के लिये यू.एस.एस.आर. में 1917 में साम्यवाद ने पूंजीवाद को विस्थापित कर दिया तथा 1989 में भूतपूर्व यू.एस.एस.आर. में आर्थिक सुधारों की श्रृंखला के माध्यम से साम्यवाद ध्वस्त हो गया। भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात 1947 में आर्थिक तथा सामाजिक सुधारों द्वारा हमने जमींदारी पद्धति का उन्मूलन कर दिया तथा अनेक भूमि सुधार लागू किये।
3. आर्थिक गतिविधियों के स्तर में परिवर्तन होता रहता है।
4. उत्पादक तथा उपभोक्ता समान व्यक्ति होते हैं। इस प्रकार उनकी भूमिका दोहरी होती है। उत्पादकों के रूप में वे कार्य करते हैं तथा कुछ वस्तुओं तथा सेवाओं का उत्पादन करते हैं और उसी को उपभोक्ताओं के रूप में उपभोग करते हैं।
5. उत्पादन, उपभोग तथा निवेश अर्थव्यवस्था की अति आवश्यक गतिविधियां होती हैं।
6. आधुनिक जटिल अर्थव्यवस्थाओं में हम मुद्रा को विनिमय के माध्यम के रूप में प्रयोग करते हैं।
7. आजकल अर्थव्यवस्था मे सरकारी हस्तक्षेप को अवांछनीय समझा जाता है तथा सभी प्रकार की अर्थव्यवस्थाओं में कीमतों एवं बाजार शक्तियों की स्वतंत्र रूप से कार्य करने की वरीयता में वृद्धि हो रही है।

## 4.2 अर्थव्यवस्था के प्रकार

जैसा कि आप जानते हैं, अर्थव्यवस्था एक मानव-निर्मित संगठन है, जिसका समाज की आवश्यकताओं के अनुसार सृजन, विघटन तथा उसमें परिवर्तन किया जाता है। हम विभिन्न प्रकार की आर्थिक पद्धतियों में निम्नलिखित मानदण्डों के आधार पर भेद कर सकते हैं।

### 4.2.1 उत्पादन के साधनों अथवा संसाधनों के स्वामित्व तथा नियंत्रण के आधार पर

संसाधनों पर निजी व्यक्तियों का पूर्ण स्वामित्व हो सकता है। उन्हें इनका प्रयोग कर मन चाहा लाभ कमाने की छूट हो सकती है। अथवा ये सामूहिक स्वामित्व (सरकारी नियंत्रण) में हो सकते हैं तथा सम्पूर्ण समाज के सामूहिक कल्याण के लिये इनका उपयोग किया जा सकता है। व्यक्तिगत स्वतंत्रता के स्तर तथा लाभ के उद्देश्य की कसौटी के आधार पर अर्थव्यवस्थाओं का नामकरण इस प्रकार हो सकता हैः

(अ) पूंजीवादी अथवा स्वतंत्र उद्यम अर्थव्यवस्था

(ब) समाजवादी अथवा केन्द्रीय नियोजित अर्थव्यवस्था

(स) मिश्रित अर्थव्यवस्था

अब हम इनकी मुख्य विशेषताओं की संक्षेप में चर्चा करेंगे।

### (अ) पूंजीवादी अर्थव्यवस्था

पूंजीवादी या स्वतंत्र उद्यम अर्थव्यवस्था अर्थव्यवस्थाओं का प्राचीनतम स्वरूप है। प्राचीन अर्थशास्त्री आर्थिक मामलों में 'पूर्ण स्वतंत्रता' के पक्षधर थे। वे आर्थिक कार्यों में सरकारी हस्तक्षेप न्यूनतम स्तर तक सीमित रखना चाहते थे। पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं;

#### (i) निजी संपत्ति

पूंजीवादी प्रणाली में प्रत्येक व्यक्ति को संपत्ति का स्वामी होने का अधिकार होता है। व्यक्ति अपनी संपत्ति को पाकर उसे अपने परिवार के लाभार्थ प्रयोग करने को स्वतंत्र होते हैं। भूमि, मशीनों, खानों, कारखानों के स्वामित्व, लाभ कमाने और धन संग्रह करने पर कोई रूकावट नहीं लगाई जाती है। व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात उसकी संपत्ति उसके कानूनी उत्तराधिकारियों के नाम अन्तरित हो जाती है। इस प्रकार उत्तराधिकार का नियम निजी संपत्ति व्यवस्था को जीवित रखता है।

#### (ii) उद्यम की स्वतंत्रता

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में सरकार नागरिकों की उत्पादक गतिविधियों में समन्वय लाने का प्रयास नहीं करती। सभी व्यक्ति अपना व्यवसाय चुनने को स्वतंत्र होते हैं। उद्यम की स्वतंत्रता का अर्थ है कि सभी फर्में संसाधन प्राप्त कर उन्हें अपनी किसी वस्तु और सेवा के उत्पादन में लगाने के लिये स्वतंत्र होती हैं। ये फर्में अपने इच्छित बाजारों में अपना उत्पादन बेचने को भी स्वतंत्र होती हैं। इसी प्रकार प्रत्येक श्रमिक अपना रोजगार और रोजगारदाता चुनने को स्वतंत्र रहता है। छोटी व्यवसायिक इकाइयों में उनके मालिक स्वयं ही उत्पादन से जुड़े जोखिम उठाते हैं तथा लाभ अथवा हानि उठाते हैं। किन्तु आधुनिक निगमित व्यवसाय में जोखिम अंशधारियों के हिस्से में आते हैं और व्यवसाय का संचालन वेतनभोगी 'निदेशक' करते हैं। अतः लाभ कमाने के लिये अपनी पूंजी को प्रयोग कर अपना ही नियंत्रण होना आवश्यक नहीं रह गया है। सरकार या कोई अन्य संस्था श्रमिकों के किसी उद्योग में आने या उससे बाहर जाने पर कोई बंधन नहीं लगाती। प्रत्येक श्रमिक वही रोजगार चुनता है जहां से उसे अधिकतम आय प्राप्त हो सके।

### (iii) उपभोक्ता प्रभुत्व

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में उपभोक्ता राजा के समान होता है। उपभोक्ता अधिकतम संतुष्टिदायक वस्तुओं और सेवाओं पर अपनी आय खर्च करने को पूरी तरह स्वतंत्र होते हैं। पूंजीवादी व्यवस्थाओं में उत्पादन कार्य उपभोक्ताओं द्वारा किये गये चयनों के अनुसार किये जाते हैं। उपभोक्ता की निर्बाध स्वतंत्रता को ही उपभोक्ता की सत्ता का नाम दिया जाता है।

### (iv) लाभ का उद्देश्य

पूंजीवाद में मार्गदर्शन करने का सिद्धान्त स्वयं का हित होता है। उद्यमी जानते हैं कि अन्य उत्पादक साधनों को भुगतान के बाद लाभ अथवा हानि उनकी होगी। अतः वे सदैव लागत को न्यूनतम और आगम को अधिकतम करने का प्रयास करते रहते हैं ताकि उनको मिलने वाला अन्तर (लाभ) अधिकतम हो जाए। इसी से पूंजीवादी अर्थव्यवस्था कुशल और स्वयं नियंत्रित अर्थव्यवस्था बन जाती है।

### (v) प्रतियोगिता

पूंजीवादी पद्धति में किसी व्यवसाय में फर्मों के प्रवेश और उसकी निकासी पर कोई प्रतिबंध नहीं होता है। प्रत्येक वस्तु और सेवा के बहुत से उत्पादक बाजार में वस्तु की आपूर्ति कर रहे होते हैं। इस कारण कोई फर्म सामान्य से अधिक लाभ नहीं कमा पाती। प्रतियोगिता पूंजीवाद की एक आधारभूत विशेषता है और इसी के कारण उपभोक्ता का शोषण से बचाव होता है। यद्यपि आजकल फर्मों के बड़े आकार और उत्पाद विभेदन के कारण बाजार में कुछ एकाधिकारी प्रवृत्तियां पनप रही हैं, फिर भी फर्मों की बड़ी संख्या और उनके बीच कड़ी प्रतियोगिता साफ दिखाई पड़ जाती है।

### (vi) बाजारों और कीमतों का महत्व

पूंजीवाद की निजी संपत्ति, चयन की स्वतंत्रता, लाभ का उद्देश्य और प्रतियोगिता की विशेषताएं ही बाजार की कीमत प्रणाली के सुचारू रूप से काम करने के लिये उपयुक्त परिस्थितियों का निर्माण करती हैं। पूंजीवाद मूलतः बाजार आधारित व्यवस्था है जिसमें प्रत्येक वस्तु की एक कीमत होती है। उद्योगों में मांग और आपूर्ति की शक्तियां ही कीमत का निर्धारण करती हैं। जो फर्में उस निश्चित कीमत के अनुसार अपने उत्पादन को ढाल पाती हैं वही समान्य लाभ कमाने में सफल रहती हैं। अन्यों को उद्योग से पलायन करना पड़ता है। प्रत्येक उत्पादक उन्हीं वस्तुओं का उत्पादन करेगा जिनसे उसे अधिकतम लाभ मिल सके।

### (vii) सरकारी हस्तक्षेप का अभाव

स्वतंत्र बाजार अथवा पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में समन्वयकारी संस्था का कार्य कीमत प्रणाली करती है। सरकारी हस्तक्षेप और सहारे की कोई आवश्यकता नहीं होती। सरकार की भूमिका बाजार व्यवस्था के स्वतंत्र और कुशल संचालन में सहायता करती है।

### आज के विश्व में पूंजीवाद

आजकल विश्व में शुद्ध रूप से पूंजीवाद देखने को नहीं मिलता है। यू.एस.ए. (USA), यू.के. (UK), फ्रांस, नीदरलैण्ड, स्पेन, पुर्तगाल, आस्ट्रेलिया आदि की अर्थव्यवस्थाओं को आर्थिक विकास में उनकी अपनी सरकारों की सक्रिय भूमिका सहित पूंजीवादी देशों के रूप में जाना जाता है।

## (ब) समाजवादी अर्थव्यवस्था

समाजवादी या केन्द्रीय नियोजित अर्थव्यवस्थाओं में समाज के सभी उत्पादक संसाधनों पर समाज के बेहतर हितों की पूर्ति के लिये सरकार का स्वामित्व और नियंत्रण रहता है। सारे निर्णय किसी केन्द्रीय योजना प्राधिकरण द्वारा लिये जाते हैं। एक समाजवादी अर्थव्यवस्था की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं:

### (i) उत्पादन के संसाधनों का सामूहिक स्वामित्व

समाजवादी अर्थव्यवस्था में जनता की ओर से उत्पादन के संसाधनों पर सरकार का स्वामित्व होता है। यहां निजी संपत्ति का अधिकार समाप्त हो जाता है। कोई व्यक्ति किसी उत्पादक इकाई का स्वामी नहीं हो सकता। वह धन संग्रह कर उसे अपने उत्तराधिकारियों को भी नहीं सौंप सकता। परन्तु लोगों को व्यक्तिगत प्रयोग के लिये कुछ दीर्घोपयोगी उपभोक्ता पदार्थ अपने पास रखने की छूट होती है।

### (ii) समाज के कल्याण का ध्येय

सरकार, समष्टि स्तर पर, सभी निर्णय निजी लाभ नहीं बल्कि अधिकतम सामाजिक कल्याण की प्राप्ति के उद्देश्य से करती है। मांग और आपूर्ति की शक्तियों की भूमिका इतनी महत्वपूर्ण नहीं होती। सभी निर्णय ध्यानपूर्वक कल्याण के उद्देश्य से प्रेरित होकर लिये जाते हैं।

### (iii) केन्द्रीय नियोजन

आर्थिक नियोजन समाजवादी अर्थव्यवस्था की एक मूलभूत विशेषता है। केन्द्रीय योजना प्राधिकरण संसाधनों की उपलब्धता का आकलन कर उन्हें राष्ट्रीय वरीयताओं के अनुसार आबंटित करता है। सरकार ही वर्तमान और भावी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए 'उत्पादन, उपभोग और निवेश संबंधी सभी आर्थिक निर्णय लेती है। योजना अधिकारी प्रत्येक क्षेत्र के लक्ष्यों का निर्धारण करते हैं और संसाधनों का कुशल प्रयोग सुनिश्चित करते हैं।

### (iv) विषमताओं में कमी

पूंजीवादी अर्थव्यवस्थाओं में आय और संपत्ति की विषमताओं का मूल कारण निजी संपत्ति और उत्तराधिकार की व्यवस्थाएं हैं। इन दोनों व्यवस्थाओं को समाप्त कर एक समाजवादी आर्थिक व्यवस्था आय की विषमताओं को कम करने में समर्थ होती है। यह ध्यान रहे कि किसी भी व्यवस्था में आय और संपत्ति की पूर्ण समानता को न तो वांछनीय माना जाता है और न ही यह व्यवहारिक है।

### (v) वर्ग संघर्ष की समाप्ति

पूंजी अर्थव्यवस्थाओं में श्रमिकों और प्रबंधकों के हित भिन्न होते हैं। ये दोनों वर्ग ही अपनी आय और लाभ को अधिकतम करना चाहते हैं। इसी से पूंजीवाद में वर्ग संघर्ष उत्पन्न होता है। समाजवाद में वर्गों में कोई प्रतियोगिता नहीं होती। सभी व्यक्ति श्रमिक होते हैं इसलिये कोई वर्ग संघर्ष नहीं होता। सभी सह-कर्मी होते हैं।

### आज के विश्व में समाजवाद

रूस, चीन तथा पूर्वी यूरोप के अनेक देशों को समाजवादी देश कहा जाता है। परन्तु अब उनमें परिवर्तन हो रहा है तथा आर्थिक विकास के लिये वे अपने देशों में उदारीकरण को प्रोत्साहित कर रहे हैं।

## (स) मिश्रित अर्थव्यवस्था

मिश्रित अर्थव्यवस्था में समाजवाद और पूंजीवाद की सबसे अच्छी विशेषताओं को सम्मिलित किया जाता है। अतः इनमें पूंजीवादी स्वतंत्र उद्यम और समाजवादी सरकारी नियंत्रणें के कुछ तत्व मिले रहते हैं। मिश्रित अर्थव्यवस्था में निजी और सार्वजनिक क्षेत्रकों का सह-अस्तित्व रहता है। मिश्रित अर्थव्यवस्था की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं :

### (i) निजी तथा सार्वजनिक क्षेत्रकों का सह-अस्तित्व

निजी क्षेत्रक में वे उत्पादन इकाइयां आती हैं जो निजी स्वामित्व में होती हैं तथा लाभ के उद्देश्य के लिये कार्य करती हैं। सार्वजनिक क्षेत्रक में वे उत्पादन इकाइयां सम्मिलित की जाती हैं जो सरकार के स्वामित्व में होती हैं तथा सामाजिक कल्याण के लिये कार्य करती हैं। सामान्यतः दोनों क्षेत्रकों के आर्थिक कार्य क्षेत्रों का स्पष्ट विभाजन रहता है। सरकार अपनी लाइसेंस, करारोपण, कीमत, मौद्रिक और राजकोषीय नीतियों द्वारा निजी क्षेत्रक के कार्यो पर नियंत्रण और उनका नियमन करती है।

### (ii) व्यक्तिगत स्वतंत्रता

व्यक्ति अपनी आय को अधिकतम करने के लिये आर्थिक क्रियाओं में संलग्न रहते हैं। वे अपना व्यवसाय और उपभोग चुनने के लिये स्वतंत्र होते हैं। परन्तु उत्पादकों को श्रमिकों और उपभोक्ताओं का शोषण करने की छूट नहीं दी जाती है। जन-कल्याण की दृष्टि से सरकार उन पर कुछ नियंत्रण लागू करती है। उदाहरणार्थ, सरकार हानिप्रद वस्तुओं के उत्पादन और उपभोग पर रोक लगाती है। परन्तु सरकार द्वारा जनहित में बनाये गये कानूनों और प्रतिबंधों के दायरे में रहते हुए निजी क्षेत्र 'पूर्ण स्वतंत्रता का उपयोग' कर सकता है।

### (iii) आर्थिक नियोजन

सरकार दीर्घकालीन योजनाओं का निर्माण कर अर्थव्यवस्था के विकास में निजी एवं सार्वजनिक उद्यमों के कार्यक्षेत्रों व दायित्वों का निर्धारण करती है। सार्वजनिक क्षेत्र पर सरकार का प्रत्यक्ष नियंत्रण रहता है अतः वही उसके उत्पादन लक्ष्यों और योजनाओं का निर्धारण भी करती है। निजी क्षेत्र को प्रोत्साहन, समर्थन, सहारा तथा आर्थिक सहायताओं आदि के माध्यम से राष्ट्रीय वरीयताओं के अनुसार कार्य करने के लिये प्रेरित किया जाता है।

### (iv) कीमत प्रणाली

कीमतें संसाधनों के आबंटन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। कुछ क्षेत्रकों में निर्देशित कीमतें भी अपनाई जाती हैं। सरकार लक्ष्य समूहों के लाभ के लिये कीमतों में आर्थिक सहायता भी प्रदान करती है। सरकार का ध्येय जनसामान्य का हित संवर्धन होता है। जो व्यक्ति बाजार कीमतों पर आवश्यक उपभोग सामग्री खरीदने की स्थिति में नहीं होते, सरकार उन्हें रियायती कीमतों पर (या निःशुल्क भी) वस्तुएं उपलब्ध कराने का प्रयास करती है।

अतः एक मिश्रित अर्थव्यवस्था में जन सामान्य को तथा समाज के कमजोर वर्गों के हित-सवंर्धन में सरकार द्वारा व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सहारा, दोनों ही उपलब्ध रहते हैं।

भारतीय अर्थव्यवस्था मिश्रित अर्थव्यवस्था समझी जाती है क्योंकि यहां आर्थिक नियोजन के साथ-साथ निजी व सार्वजनिक क्षेत्रकों के आर्थिक कार्य क्षेत्र स्पष्टतया परिभाषित हैं। यू.एस.ए., यू.के. आदि देश भी जो पूंजीवादी देश कहे जाते थे, आर्थिक विकास में इनकी सरकारों की सक्रिय भूमिका के कारण अब मिश्रित अर्थव्यवस्था कहलाते हैं।

## पाठगत प्रश्न 4.1

1. निम्नलिखित में से कौन से कथन सत्य/असत्य हैं?
   (i) संसाधनों के स्वामित्व के आधार पर हम अर्थव्यवस्थाओं को अमीर और गरीब वर्गों में बांट सकते हैं।
   (ii) समाजवादी अर्थव्यवस्था का लक्ष्य सामाजिक कल्याण को अधिकतम करना है।
   (iii) चयन की स्वतंत्रता, लाभ अधिकतम करना और निजी संपत्ति एक समाजवादी अर्थव्यवस्था की विशेषताएं हैं।
   (iv) एक मिश्रित अर्थव्यवस्था में निजी और सार्वजनिक क्षेत्रों का सह-अस्तित्व होता है।
2. कोष्ठक में दिये गये शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरें।
   (i) पूंजीवादी/मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था में कीमत प्रणाली ...................... भूमिका निभाती है। (बहुत महत्वपूर्ण/बहुत सीमित)
   (ii) पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में चयन की स्वतंत्रता को ...................... कहते हैं। (उपभोक्ता का प्रभुत्व/उपभोक्ता का अतिरेक)
   (iii) समाजवादी अर्थव्यवस्थाएं ...................... अर्थव्यवस्थाएं हैं। (केन्द्रीय नियोजित/विकेन्द्रीकृत)
   (iv) ...................... अर्थव्यवस्था में जनता धन संग्रह कर उसे अपने कानूनी उत्तराधिकारियों को दे सकती है। (समाजवादी/पूंजीवादी)
   (v) एक मिश्रित अर्थव्यवस्था में सार्वजनिक और निजी क्षेत्रकों का ...................... होता है। (सह-अस्तित्व/अस्तित्व नहीं होता)

3. विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं की निम्न विशेषताओं को वर्गीकृत कर उन्हें उपयुक्त खानों में लिखेः

लाभ का ध्येय, केन्द्रीय नियोजन, उपभोक्ता का प्रभुत्व, सार्वजनिक और निजी क्षेत्रक, उत्तराधिकार के कानून, सामाजिक कल्याण, सरकारी नियमन, आर्थिक सहायता, प्रतियोगिता, कीमत प्रणाली, विषमताएं, वर्ग संघर्ष का अभाव, आर्थिक नियोजन, चयन की सीमित स्वतंत्रता

| पूंजीवादी अर्थव्यवस्था | समाजवादी अर्थव्यवस्था | मिश्रित अर्थव्यवस्था |
|---|---|---|

### 4.2.2 विकास के स्तर के आधार पर अर्थव्यवस्थाओं के प्रकार

विकास के स्तर के आधार पर हम अर्थव्यवस्ताओं को दो वर्गों में विभाजित कर सकते हैंः

(i) विकसित अर्थव्यवस्था

(ii) विकासशील अर्थव्यवस्था

किसी अर्थव्यवस्था को उसके वास्तविक राष्ट्रीय आय, तथा उसकी जनसंख्या की प्रति व्यक्ति आय और जीवन के निर्वाह स्तर के आधार पर उसे विकसित या अमीर और विकासशील अथवा गरीब देश कहा जाता है। विकासित देशों में राष्ट्रीय और प्रतिव्यक्ति आय तथा पूंजी निर्माण अर्थात बचत और निवेश के स्तर उच्च होते हैं। उनके मानवीय संसाधन अधिक शिक्षित होते हैं। वहां जन सुविधाओं, चिकित्सा-स्वास्थ्य तथा स्वच्छता प्रबंध सुविधाएं, बेहतर होती हैं और मृत्यु दर, शिशु मृत्यु दर निम्न होती हैं। साथ ही वहां औद्योगिक और सामाजिक आधारिक संरचना तथा पूंजी और वित्त बाजार भी विकसित होते हैं। संक्षेप में, विकसित देशों में जीवन स्तर उन्नत होता है।

विकासशील देश विकास की सीढ़ी पर काफी नीचे होते हैं। उन्हें कई बार अल्प विकसति, पिछड़े या गरीब देश भी कहा जाता है। परन्तु अर्थशास्त्री उन्हें विकासशील कहना बेहतर मानते हैं क्योंकि इस शब्द से गतिशीलता का भास होता है। इन देशों में राष्ट्रीय तथा प्रति व्यक्ति आय निम्न होती हैं। इनके कृषि और उद्योग पिछड़े होते हैं, बचत, निवेश और पूंजी निर्माण का स्तर निम्न होता है। यद्यपि इन देशों में निर्यात से आय होती है पर अधिकांशतः ये प्राथमिक और कृषि उत्पाद ही निर्यात कर पाते हैं। संक्षेप में निम्न जीवन स्तर के इन देशों में उच्च शिशु मृत्यु दर, जन्म एवं मृत्यु दरें और स्वास्थ्य, स्वच्छता प्रबंध तथा आधारिक संरचना का स्तर भी निम्न होता है। अतः आर्थिक विकास अनेक कारकों पर निर्भर करता है - इसके कई अलग-अलग अर्थ भी हो सकते हैं। यद्यपि आप पहले ही पढ़ चुके हैं परन्तु अगले कुछ पृष्ठों में आर्थिक विकास और इसके निर्धारकों पर चर्चा करना लाभदायक होगा। साथ ही हम आर्थिक विकास और आर्थिक संवृद्धि का भेद भी स्पष्ट करेंगे।

टिप्पणी

## 4.3 आर्थिक विकास का अर्थ

आर्थिक संवृद्धि राष्ट्रीय आय में निरन्तररूप से होने वाली वृद्धि है। यह आर्थिक विकास से भिन्न है। जनसंख्या में अन्तरों का ध्यान में रखते हुए यह प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि के रूप में दिखाई पड़ती है (प्रति व्यक्ति आय = राष्ट्रीय आय ÷ कुल जनसंख्या)

यद्यपि राष्ट्रीय आय की वृद्धि में प्रतिवर्ष उतार-चढ़ाव अथवा अल्पकालिक परिवर्तन हो सकते हैं, पर राष्ट्रीय आय की दीर्घकालिक वृद्धि ही आर्थिक संवृद्धि कहलाती है।

दूसरी ओर, आर्थिक विकास में आर्थिक संवृद्धि के साथ-साथ देश में जीवन की गुणवत्ता और जीवन स्तर को सुधारने वाले आर्थिक परिवर्तन भी सम्मिलित होते हैं। यदि आर्थिक संवृद्धि के साथ-साथ किसी देश में गरीबी और बेरोजगारी में कमी, आय और संपत्ति की विषमताओं में कमी, साक्षरता दर में सुधार, स्वास्थ्य-जनस्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार, जनसंख्या वृद्धि की दर में कमी पर्यावरणीय मानकों में सुधार जैसे आर्थिक परिवर्तन आते हैं जिनसे जीवन की गुणवत्ता में सुधार होता है, तो हम इस संवृद्धि को आर्थिक विकास कहते हैं। जन-समान्य के जीवन स्तर को सकारात्मक रूप से प्रभावित करने वाले ये आर्थिक परिवर्तन आर्थिक विकास के लिये आवश्यक हैं। अन्यथा आर्थिक संवृद्धि के बावजूद भी लोगों का जीवन स्तर सुधर नहीं पायेगा। यदि समाज का अमीर वर्ग ही संवृद्धि के सभी लाभों को हस्तगत कर ले तो अमीर और अधिक अमीर तथा गरीब पहले से अधिक गरीब हो जायेंगे। स्पष्ट है कि आर्थिक विकास की अवधारणा आर्थिक संवृद्धि की तुलना में बहुत अधिक विस्तृत है। इसमें केवल आर्थिक संवृद्धि ही नहीं बल्कि जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करने वाले अन्य अनेक आर्थिक परिवर्तन भी समाहित रहते हैं।

## 4.4 आर्थिक विकास के निर्धारक

आर्थिक विकास की प्रक्रिया पर अनेक आर्थिक और गैर-आर्थिक कारकों का प्रभाव पड़ता है।

कुछ प्रमुख आर्थिक कारक इस प्रकार हैं :

(i) **प्राकृतिक संसाधनः** प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता आर्थिक संवृद्धि और विकास को सुगम बनाती है और इनकी गति में वृद्धि करती है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि इन साधनों की मात्रा तथा गुणवत्ता संवृद्धि दर को प्रभावित करती है।

(ii) **मानवीय संसाधनः** समाज के मानवीय संसाधनों अथवा जनसंख्या की मात्रा और गुणवत्ता भी आर्थिक विकास का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है। अन्य बाते समान रहने पर शिक्षित और तकनीकि प्रशिक्षित जनशक्ति उच्च संवृद्धि दर की प्राप्ति में सहायक रहती है। दूसरी ओर, निरक्षर एवं अकुशल जनसंख्या के कारण आर्थिक संवृद्धि मन्द हो जाती है।

(iii) **पूंजी निर्माणः** पूंजीगत पदार्थों के भण्डार का तीव्र आर्थिक संवृद्धि पर निर्णायक प्रभाव पड़ता है। इस भण्डार को बढ़ाने के लिये उच्च दर से बचत आवश्यक है। इन बचतों का निवेश भी होना चाहिये। बचत और निवेश दरों के साथ-साथ संवृद्धि दर पूंजी उत्पाद अनुपात

पर भी निर्भर करेगी। यदि किसी विकासशील देश में आंतरिक बचत की दर पर्याप्त नहीं हो तो सरकार पूंजी निर्माण तथा संवृद्धि दर में वृद्धि के लिये विदेशी सहायता भी ले सकती है।

### (iv) प्रौद्योगिकी

प्रौद्योगिकी का आर्थिक विकास में बहुत बड़ा योगदान हो सकता है। प्रौद्योगिकी प्रगति निरंतर शोध और विकास पर निर्भर करती हैं। प्रौद्योगिकी प्रगति के सहारे कोई देश प्राकृतिक संसाधनों की कमी और निम्न उत्पादकता की बाधाओं को पार कर सकता है। विकसित अर्थव्यवस्थाएं अपने मानव संसाधनों में निवेश करती हैं।

इन आर्थिक कारकों के अतिरिक्त अनेक गैर-आर्थिक कारक भी हैः (i) जाति प्रथा, (ii) परिवार का प्रकार, (iii) वंशानुगत कारक और (iv) सरकारी नीतियां। इन सबका भी आर्थिक संवृद्धि और विकास की दर पर पभाव पड़ता है। आर्थिक विकास को मापना तथा उसका केवल एक सूचक बनाना बहुत कठिन कार्य है। आर्थिक विकास के सर्वाधिक प्रचलित सूचक प्रति व्यक्ति आय में अनेक गंभीर त्रुटियां पाई गई हैं। इस सूचक में प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग और पर्यावरण के पतन के समायोजन की कोई व्यवस्था नहीं होती। जैसे उद्योगों के धुंए, उनके जल-प्रदूषक प्रवाहों तथा अन्य जल और वायु को हानि पहुंचाने वाले सह-उत्पाद वनों को काटना तथा इमारती लकड़ी के विक्रय से प्राप्त आय को एक आर्थिक गतिविधि मान लिया जाएगा तथा आय को राष्ट्रीय आय के आंकड़ों में जोड़ दिया जाएगा परन्तु इस गतिविधि से बन सम्पदा को हुई हानि की कोई ऋणात्मक प्रविष्टि राष्ट्रीय लेखे के आंकड़ों में नहीं की जाती। आजकल अनेक अर्थशास्त्री गंभीरतापूर्वक ऐसे नये विकास सूचक की रचना पर कार्य कर रहे हैं जिसमें समाज की पर्यावरण लागतों का लेखा भी संभव हो तथा उसे समाज के कल्याण के सूचक के रूप में प्रयोग किया जा सके।

## 4.5 आर्थिक विकास और आर्थिक संवृद्धि में अन्तर

आर्थिक संवृद्धि एक अल्पकालिक माप है तथा इससे अभिप्राय राष्ट्रीय तथा प्रति व्यक्ति वास्तविक आय में वार्षिक परिवर्तनों से है। परन्तु आय सूचक राष्ट्रीय आय के वितरण के विषय में कोई जानकारी नहीं देता। एक अन्य बात यह है कि आय विधि में अनुत्पादक और निरर्थक संवृद्धि तथा सामाजिक दृष्टि से उत्पादक एवं सार्थक संवृद्धि में भी कोई भेद नहीं किया जाता। दूसरी ओर, आर्थिक विकास एक दीर्घकालिक माप है। आर्थिक विकास से अभिप्राय जीवन स्तर में हुए कुल सुधार तथा जीवन की गुणवत्ता में सुधार से है। इसमें आयसूचक के अतिरिक्त कुछ गैर-आर्थिक सूचकों को भी समाहित किया जाता है। ये हैं : जन्म के समय उच्च जीवन प्रत्याशा, निम्न शिशु मृत्यु दर तथा उच्च साक्षरता दर। इन गैर-आर्थिक सूचकों में सुधार सूचित करता है कि जीवन की गुणवत्ता में भी सुधार हुआ है। संयुक्त राष्ट्र शिक्षा एंव सामाजिक आयोग (UNESCO) तथा अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) जैसी विश्व संस्थाएं अब मूलभूत आवश्यकता आधारित संकल्पनाओं जैसे भोजन, वस्त्र और आवास, पेयजल, स्वच्छता, परिवहन सुविधाओं,

चिकित्सा तथा शिक्षा की उपलब्धता को आर्थिक विकास के सूचक के रूप में सम्मिलित कर रही हैं। अतः विकास का उद्देश्य, विशाल जन सामान्य की आवश्यकताओं को पूरा करना है। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम, प्रति व्यक्ति आय, शैक्षणिक उपलब्धियों और जीवन प्रत्याशा पर आधारित मानव विकास सूचक पर बल देता है। इसलिये यह आर्थिक और सामाजिक सूचकों का एक समन्वित सूचक है। अतः लोगों के जीवन की गुणवत्ता में हुए सर्वव्यापी सुधार को देखने के लिये आर्थिक विकास एक अधिक व्यापक संकल्पना है।

## पाठगत प्रश्न 4.2

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:

1. विकास के स्तर के आधार पर अर्थव्यवस्थाओं के दो वर्ग कौन से हैं?
2. आर्थिक विकास का सरल अर्थ लिखिये।
3. आर्थिक विकास के निर्धारकों के आर्थिक कारक दीजिये।
4. विकास को प्रभावित करने वाले गैर-आर्थिक कारक क्या हैं?
5. विकास मापन की आय विधि में सबसे गंभीर त्रुटि क्या है?
6. आर्थिक संवृद्धि तथा आर्थिक विकास में भेद कीजिये।
7. आर्थिक संवृद्धि के लिये पूंजी निर्माण किस प्रकार महत्वपूर्ण होता है?

## आपने क्या सीखा

- इस पाठ में हमने अर्थव्यवस्था का अर्थ जाना है। यह सामाजिक एवं कानूनी रूप से मान्य उन गतिविधियों की पद्धति है जिसके अनुरूप चलकर समाज अपनी आजीविका कमाता है। इसे मानवीय आवश्यकताओं की तुष्टि के लिये बनाई गई सहयोग व्यवस्था भी कहते हैं।
- आधुनिक जटिल अर्थव्यवस्था में, 'तुम मेरे लिये यह करो' 'मैं तुम्हारे लिये वह करूंगा' का सहयोग पर्याप्त नहीं रहता। अब तो देश की सीमाओं के आर-पार भी सहयोग आवश्यक हो गया है। अतः अर्थव्यवस्था को परस्पर सहयोग और विनिमय की व्यवस्था भी माना जा सकता है।
- उत्पादन के संसाधनों के स्वामित्व और नियंत्रण के आधार पर अर्थव्यवस्थाएं तीन प्रकार की होती हैं :

(i) पूंजीवादी अर्थव्यवस्था

(ii) समाजवादी अर्थव्यवस्था

(iii) मिश्रित अर्थव्यवस्था

- विकास के स्तर के अनुसार अर्थव्यवस्थाओं को दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है :

  (i) विकसित अर्थव्यवस्था

  (ii) विकासशील अर्थव्यवस्था

- पूंजीवादी अर्थव्यवस्था वैयक्तिक स्वतंत्रता और प्रतियोगिता को अधिक महत्व देती है। उपभोक्ता 'राजा' के समान है तथा वह कीमत प्रणाली, लाभ के उद्देश्य और बाजार के माध्यम से संसाधनों के आबंटन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- समाजवादी अर्थव्यवस्था सामूहिक स्वामित्व, सामाजिक हित और आर्थिक नियोजक पर बल देती है। यहां विषमताएं कम होती हैं तथा वर्ग संघर्ष से बचा जा सकता है।
- मिश्रित अर्थव्यवस्था दोनों प्रणालियों के सदगुणों को महत्व देती है। यहां सार्वजनिक तथा निजी क्षेत्रकों का सह-अस्तित्व रहता है। सार्वजनिक क्षेत्रक समाजवादी अर्थव्यवस्था और निजी क्षेत्र पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के आधार पर कार्य करता है।
- विकसित देशों की प्रति व्यक्ति आय और उनका जीवन स्तर उच्च होता है।
- दूसरी ओर, अल्पविकसित अथवा गरीब देशों में आय, बचत तथा निवेश का स्तर निम्न होता है, इसलिये इनका जीवन स्तर भी निम्न होता है।
- आर्थिक विकास की प्रक्रिया के अनेक आर्थिक और गैर-आर्थिक निर्धारक होते हैं।
- आर्थिक विकास और संवृद्धि में एक अन्तर है। सामान्यतः आर्थिक संवृद्धि से अभिप्राय कुछ क्षेत्रकों तथा चरों में अल्पकालिक सुधार से होता है। दूसरी ओर, आर्थिक विकास राष्ट्रीय आय, प्रति व्यक्ति आय तथा जीवन की गुणवत्ता सुधारने वाले अनेक कारकों में दीर्घकालिक सुधार की अवधारणा है।

## पाठान्त प्रश्न

1. अर्थव्यवस्था से क्या अभिप्राय है? एक पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की प्रमुख विशेषताएं बताइये।
2. 'अर्थव्यवस्था पारस्परिक सहयोग और विनिमय की व्यवस्था है'। विवेचना कीजिये।
3. उत्पादन के साधनों पर स्वामित्व तथा नियंत्रण के आधार पर अर्थव्यवस्थाओं के प्रकार समझाइये।

4. आर्थिक विकास तथा आर्थिक संवृद्धि में भेद कीजिये।

5. आर्थिक विकास के प्रमुख निर्धारक क्या होते है?

## पाठगत प्रश्नों के उत्तर

### पाठगत प्रश्न 4.1

1. (i) असत्य (ii) सत्य (iii) असत्य (iv) सत्य

2. (i) बहुत महत्वपूर्ण (ii) उपभोक्ता की सत्ता (iii) केन्द्रिय रूप से प्रायोजित
   (iv) पूंजीवादी (v) सह-अस्तित्व

3.

| पूंजीवादी अर्थव्यवस्था | समाजवादी अर्थव्यवस्था | मिश्रित अर्थव्यवस्था |
|---|---|---|
| लाभ का ध्येय<br>उपभोक्ता का प्रभुत्व<br>उत्तराधिकार का नियम<br>प्रतियोगिता<br>कीमत प्रणाली<br>विषमताएं | केन्द्रीय नियोजन<br>सामाजिक हित<br>वर्ग संघर्ष का अभाव | सार्वजनिक व निजी क्षेत्रक<br>सरकारी नियमन<br>आर्थिक आयोजन<br>आर्थिक सहायता<br>चयन की सीमित स्वतंत्रता |

### पाठगत प्रश्न 4.2

1. विकसित अर्थव्यवस्था तथा विकासशील अर्थव्यवस्था।
2. आर्थिक विकास की प्रक्रिया में अर्थव्यवस्था की वास्तविक राष्ट्रीय आय में दीर्घकालिक वृद्धि होती है।
3. प्राकृतिक संसाधन, मानवीय संसाधन, पूंजी निर्माण, प्रौद्योगिकी।
4. जाति प्रथा, परिवार का प्रकार, वंशानुगत।
5. इसमें पर्यावरणीय लागतों तथा संसाधनों के क्षय को ध्यान में नहीं रखा जाता है।
6. आर्थिक संवृद्धि वास्तविक आय में अल्पकालिक सुधार है जबकि आर्थिक विकास में दीर्घकालिक आय में वृद्धि के साथ-साथ जीवन स्तर और गुणवत्ता में भी सुधार होते हैं।
7. पूंजी उत्पाद अनुपात स्थिर रहने पर पूंजी निर्माण संवृद्धि दर को निर्धारित करता है।

# 5

# अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याएं

जैसा कि आप जानते हैं, हमारी आवश्यकताएं अनन्त है परन्तु उनकी पूर्ति करने के संसाधन सीमित हैं। विभिन्न आवश्यकताओं की तुष्टि करने के लिये हमें भिन्न-भिन्न वस्तुओं एवं सेवाओं की आवश्यकता पड़ती है। परन्तु संसाधनों की दुर्लभता के कारण, हम अर्थव्यवस्था में सभी के लिये एक साथ और सभी भिन्न-भिन्न प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन नही कर सकते। दुर्लभता के कारण ही, हम संसाधनों को नष्ट भी नहीं होने दे सकते। इसलिये प्रत्येक अर्थव्यवस्था को इन समस्याओं के हल ढूँढने चाहिये।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- चयन करने की आवश्यकता के बारे में समझ पायेंगे;
- दुर्लभ संसाधनों के वैकल्पिक प्रयोग को जान पायेंगे;
- अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याओं से परिचित हो पायेंगे;
- विभिन्न प्रकार की अर्थव्यवस्थाओं में संसाधनों के आबंटन को समझ पायेंगे;
- अर्थव्यवस्था की संवृद्धि तथा संसाधनों की संवृद्धि में सम्बन्ध की व्याख्या कर सकेंगे।

## 5.1 दुर्लभता तथा चयन

मान लीजिये, आप एक कमीज, पुस्तक तथा अपने मित्र के लिए एक उपहार क्रय करना चाहते हैं। आप सिनेमा हाल में चलचित्र भी देखना चाहते है। ऐसी अनेक आवश्यकताएं हैं जिनकी आपको तुष्टि करनी है। लेकिन आपके पास केवल 110 रु. हैं। मान लें कि एक कमीज 150 रु. में पुस्तक 95 रु. में उपलब्ध है, उपहार की कीमत 90 रु. है तथा चलचित्र की टिकट 100 रु. में खरीदी जा सकती है। इस प्रकार इन सभी वस्तुओं की कीमत कुल मिलाकर 435 रु. है जो आपके पास नहीं हैं। स्पष्ट रूप से, आप सभी वस्तुओं को नहीं खरीद सकते क्योंकि आपके पास सीमित मुद्रा अथवा संसाधन हैं। आप क्या करेंगे? 110 रु. में आप एक कमीज नहीं खरीद सकते क्योंकि इसकी कीमत जो मुद्रा आपके पास है, उससे अधिक है। लेकिन आप या तो पुस्तक अथवा उपहार अथवा चलचित्र का टिकट खरीदने पर विचार कर सकते हैं। यहां आपको चयन करना पड़ेगा कि इनमें से कौन सी एक वस्तु आप खरीदना चाहते हैं।

चयन की समस्या क्यों उत्पन्न होती है? यदि आपके पास एक जादू की छड़ी अथवा जादू का चिराग होता तो आप के पास अपनी आवश्यकताओं की तुष्टि करने के लिये सब कुछ हो सकता था और चयन करने की समस्या भी उत्पन्न नहीं होती। यह एक कल्पित स्थिति है जो कभी नहीं हो सकती। आपके पास 110 रु. है, 435 रु. नहीं जिसका अर्थ है कि आपके पास संसाधन (इस स्थिति में मुद्रा) सीमित अथवा दुर्लभ हैं। क्योंकि आप अपने दुर्लभ संसाधन से केवल एक वस्तु ही खरीद सकते हैं, आप इस समस्या का सामना करते हैं कि अपनी आवश्यकता की तुष्टि के लिये यथार्थ में आपको कौन सी वस्तु खरीदनी है। जब आप चयन करते हैं कि आपको कौन सी वस्तु खरीदनी है तो एक अन्य महत्वपूर्ण बात पर भी ध्यान दीजिये। वह है, संसाधनों के वैकल्पिक प्रयोग संभव है। कैसे? यदि आप इन सभी वस्तुओं को नहीं भी खरीद पाते हैं, आप पुस्तक अथवा उपहार अथवा चलचित्र की टिकट तो खरीद ही सकते हैं। इस प्रकार, संसाधनों के वैकल्पिक प्रयोग हो सकते हैं।

इसी प्रकार, अर्थव्यवस्था को यह भी निश्चय करना है कि किन वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन किया जाए तथा संसाधनों को किस प्रकार प्रयोग किया जाए। अतः चयन की समस्या उत्पन्न होती है क्योंकि (क) संसाधन सीमित हैं तथा (ख) संसाधनों के अनेक वैकल्पिक प्रयोग हो सकते हैं।

## पाठगत प्रश्न 5.1

1. निम्नलिखित वस्तुओं के वैकल्पिक प्रयोग क्या हो सकते हैं?

   (अ) बस  (ब) कमरा

   (स) भवन  (स) कम्प्यूटर

## 5.2 अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याएं

हम तीन मुख्य समस्याओं की सूची बना सकते हैं जिनका किसी अर्थव्यवस्था को सामना करना पड़ता है। ये हैं:

1. संसाधनों के आबंटन की समस्या
2. संसाधनों के उपयोग की समस्या
3. संसाधनों में संवृद्धि की समस्या

### 5.2.1 संसाधनों का आबंटन

किसी अर्थव्यवस्था को तीन आधारभूत आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है:

1. किन वस्तुओं तथा सेवाओं का तथा कितनी मात्राओं में उत्पादन किया जाए?
2. वस्तु और सेवाओं का उत्पादन कैसे किया जाए?
3. वस्तु और सेवाओं का उत्पादन किसके लिये किया जाए?

**किन वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन किया जाए तथा कितनी मात्राओं में**? प्रत्येक समाज को चयन की समान समस्या का सामना करना पड़ता है, परन्तु प्राथमिकताएं भिन्न-भिन्न हो सकती हैं। अल्प-विकसित अर्थव्यवस्थाओं में, खाद्यान्नों की फसलों के उत्पादन तथा साइकिलों के विनिर्माण के बीच चयन करना पड़ सकता है। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में, शापिंग माल तथा अधिक कारों के उत्पादन में चयन करना पड़ सकता है।

**वस्तु और सेवाओं का उत्पादन कैसे किया जाए?** यह उस विधि से सम्बन्धित है जिसके द्वारा इनका उत्पादन किया जाना है। एक बार जब यह निश्चित हो जाता है कि किन वस्तुओं का उत्पादन होना है, तो समस्या है कि उनका उत्पादन कैसे किया जाए? किन साधनों की आवश्यकता है, कितनी भूमि तथा कितने श्रमिकों की आवश्यकता है? वस्तुओं को बनाने की विभिन्न विधियां होती हैं। उदाहरण के लिये, कपड़ों का उत्पादन अधिक श्रम तथा कम मशीनें लगाकर अथवा अधिक मशीने तथा कम श्रम लगाकर किया जा सकता है। यदि वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन अधिक श्रम तथा कम पूंजी लगाकर किया जाता है तो उसे उत्पादन की **श्रम-गहन विधि** कहते हैं। जब वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन अधिक पूंजी (मशीनें आदि) तथा कम श्रम लगाकर किया जाता है तो इसे उत्पादन की **पूंजी-गहन विधि** कहते हैं।

**वस्तु और सेवाओं का उत्पादन किसके लिये किया जाए?** उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं का उपभोग किसे करना है तथा कौन इनका लाभ प्राप्त करेगा? दुर्लभता के कारण प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकताओं की तुष्टि करना संभव नहीं है, इसलिये यह निश्चित किया जाना चाहिये कि किसकी आवश्यकताओं की तुष्टि करनी है? अर्थव्यवस्था को खाद्यान्न फसलों का अधिक उत्पादन करना चाहिये अथवा कम्प्यूटरों का? किसकी आवश्यकताओं का ध्यान रखा जाए, अधिक गरीब लोगों का अथवा अधिक धनवान लोगों का? क्या कुल उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं में प्रत्येक को समान हिस्सा मिलना चाहिये, यद्यपि कुछ लोगों को दूसरों की अपेक्षा उनकी अधिक आवश्यकता है। ये सभी निर्णय समाज में आय एवं सम्पत्ति के वितरण से सम्बन्धित होते हैं।

### पाठगत प्रश्न 5.2

1. एक कारण दीजिये, जिससे आर्थिक समस्याएं उत्पन्न होती है?
2. अर्थव्यवस्था की तीन केन्द्रीय समस्याओं के नाम लिखिये।

### 5.2.1.1 पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में संसाधनों का आबंटन

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था एक ऐसी आर्थिक प्रणाली है जिसमें उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व होता है तथा वस्तु और सेवाओं का उत्पादन अधिकतम लाभ कमाने के उद्देश्य से किया जाता है। पूंजीवादी अर्थव्यवस्था (बाजार-अर्थव्यवस्था) में वस्तुओं तथा सेवाओं के चयन के मार्गदर्शन के लिये कोई केन्द्रीय अधिकारी नहीं होता। उत्पादन व्यक्तियों

- कृषक, विनिर्माताओं, उत्पादकों, सेवाएं प्रदान करने वाले तथा अन्य व्यक्तियों के हाथों में होता है। संसाधन जैसे भूमि, श्रम पूंजी आदि लोगों के निजी स्वामित्व में होते हैं। यह सभी व्यक्ति बाजार के लिये उत्पादन करते हैं तथा इनका मार्गदर्शन लाभ के उद्देश्य द्वारा होता है। वे केवल उन वस्तुओं का उत्पादन करते है जिनकी मांग उपभोक्ताओं द्वारा होती है। वे वस्तुओं का उत्पादन सबसे सस्ती विधियों द्वारा करते हैं ताकि वे अधिकतम लाभ कमा सकें। ये व्यक्तिगत उत्पादक उन वस्तुओं के उत्पादन से जिन्हें लोग नहीं खरीदते है अपने संसाधनों को हटाकर उन वस्तुओं के उत्पादन में लगाते हैं जिन्हें लोग खरीदना पसंद करते हैं। वस्तुएं उन लोगों के लिये होती हैं जो ऐसी वस्तुओं की मांग करते हैं तथा उन्हें खरीदने में समर्थ हैं।

> राजन एक व्यवसायी है जो कमीजों का उत्पादन करता है। उसने अनुभव किया कि उसकी बहुत सारी कमीजें बिना बिकी रह जाती हैं। उसने ध्यान दिया कि युवा लड़के तथा लड़कियां आजकल टी-शर्ट पहन रहे हैं। ये युवा लोग आजकल कमीजों की अपेक्षा टी-शर्टों पर धन खर्च करने के इच्छुक हैं। क्योंकि राजन का लाभ कम होने लगा है, वह कमीजों की बजाय टी-शर्टों का उत्पादन करने का निर्णय लेता है। क्योंकि उसके संसाधन सीमित हैं, वह युवा लोगों की मांग को संतुष्ट करने के लिये अपने संसाधनों को टी-शर्टों के उत्पादन में लगा देता है। राजन 2 सिलाई की मशीनें तथा अपने सभी 10 श्रमिकों को लगाकर अब टी-शर्टो का उत्पादन कर सकता है। इस प्रक्रिया में उसे प्रत्येक टी-शर्ट की लागत 100 रु. आती है। राजन के पास दूसरा विकल्प 5 मशीनें तथा केवल 8 श्रमिक लगाकर टी-शर्ट का उत्पादन करने का है जिससे उसकी प्रति टी-शर्ट की लागत 125 रु. हो जायेगी। राजन प्रथम और सबसे सस्ती विधि का चयन करेगा क्योंकि वह टी-शर्टों के बेचने से अधिक से अधिक लाभ कमाना चाहता है। अब राजन की टी-शर्ट युवा लोगों में अत्यंत लोकप्रिय हैं। उसे कमीजों के उत्पादन करने में जितना लाभ हो रहा था उसकी अपेक्षा अब वह काफी अधिक लाभ कमाता है। युवा लोग जो 100 रु. का भुगतान करने में समर्थ हैं, वे सभी राजन के द्वारा उत्पादित टी-शर्ट पहन रहे हैं।

इस प्रकार, किसी पूंजीवादी आर्थिक प्रणाली की महत्वपूर्ण विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

- केवल उन वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन होता है जो उपभोक्ता चाहते हैं।
- न्यूनतम प्रति इकाई लागत पर वस्तुओं की अधिकतम मात्रा का उत्पादन होता है।
- वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन उन सभी के लिये होता है जों उनके लिये भुगतान कर सकते हैं।

### 5.2.1.2 नियोजित आर्थिक प्रणाली में संसाधनों का आबंटन

नियोजित आर्थिक प्रणाली में, सरकार का एक केन्द्रीय आयोजन अधिकारी होता है जो क्या उत्पादन किया जाए, कैसे उत्पादन किया जाए तथा किसके लिये उत्पादन किया

जाए का निर्णय लेता है। योजना अधिकारी उत्पादन के लक्ष्यों को निर्धारित करता है। सरकार लक्ष्यों को निर्धारित करती है तथा फर्म लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयत्न करती है। जब लक्ष्यों पर सहमति हो जाती है, तो फर्म उत्पादन आरम्भ कर देती है। यह बाजार अर्थव्यवस्थाओं की भांति नहीं होती जहां वे लोग जिनके पास धन है अपनी आवश्यकताओं की तुष्टि कर सकते हैं तथा वे लोग जिनके पास धन नहीं हैं, अपनी आवश्यकताओं को संतुष्ट करने के लिये वस्तुएं खरीदने में समर्थ नहीं होते। नियोजित प्रणाली में सरकार सभी को समान बनाना चाहती है। वह उन वस्तुओं का उत्पादन करती है जिनकी आवश्यकता सभी को होती है तथा जिनमें प्रत्येक का बराबर हिस्सा हो। ऐसा नहीं है कि जो लोग व्यय करने में समर्थ हैं उनके पास अधिक वस्तुएं हों। कम से कम सेवाओं जैसे स्वास्थ्य तथा शिक्षा, सड़कें तथा आवास के मामले में उनकी व्यय क्षमता का विचार किये बिना प्रत्येक को समान अवसर मिलने चाहिये। अतः नियोजित अर्थव्यवस्थाओं में, सरकार उन वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन करने का निर्णय लेती है जिनके बारे में वह सोचती है कि ये लोगों के पास होनी चाहिये, न कि लोग सोचते हैं कि वे उनके पास होनी चाहिये। इस प्रकार सरकार जनसाधारण की आवश्यकताओं की तुष्टि के लिये वस्तु और सेवाओं का उत्पादन करती है।

क्योंकि सरकार विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन और उनकी मात्राओं का निर्धारण करती है, यह सम्भव है कि सरकार अधिक कार तथा ट्रैक्टरों का उत्पादन करे जबकि उपभोक्ता स्कूटरों की मांग करते हैं। कैसे उत्पादन किया जाए के सम्बन्ध में, केन्द्रीय नियोजन अधिकारी इतनी सारी वस्तुओं की लागत की गणना करने में समर्थ नहीं हो सकता तथा इस बात का खतरा रहता है कि संसाधनों का आदर्श ढंग से बंटबारा न हो। समाजवादी अर्थव्यवस्था लोगों की मूल आवश्यकताओं जैसे भोजन, परिधान तथा आवास की आवश्यकताओं को संतुष्ट किया जाना चाहिये के आधार पर 'किसके लिये उत्पादन किया जाए' समस्या को हल करती है। प्रत्येक के साथ समान व्यवहार किया जाता है तथा किसी एक को भी दूसरे से प्राथमिकता नहीं मिलती। परन्तु यह कहा जाता है कि नियोजित आर्थिक प्रणाली संसाधनों का आबंटन अधिक आदर्श ढंग से नहीं करती क्योंकि यह लोगों के चयन तथा वरीयता पर आधारित नहीं होता। यह सरकार के निर्णय पर आधारित होता है। परन्तु यह प्रणाली सामाजिक कल्याण के सिद्धान्त पर आधारित होती है।

### 5.2.1.3 मिश्रित अर्थव्यवस्था में संसाधनों का आबंटन

मिश्रित अर्थव्यवस्था सरकारी नियोजन को बाजार अर्थव्यवस्था के साथ जोड़ती है। विश्व में कोई भी अर्थव्यवस्था न तो पूरी तरह से केन्द्रीय नियोजित और न ही पूरी तरह से बाजार अर्थव्यवस्था है। आज अधिकतर अर्थव्यवस्थाएं मिश्रित अर्थव्यवस्थाएं है। मिश्रित आर्थिक प्रणाली में निजी क्षेत्र द्वारा वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन का चयन लाभ के उद्देश्य के आधार पर निर्भर करता है। सरकार द्वारा वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन का चयन लोगों की आवश्यकताओं तथा आकांक्षाओं के आधार पर निर्भर करता है।

यह उत्पादन की कार्यक्षमता को वितरण के औचित्य से जोड़ता है; सरकार के स्वामित्व में वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन के लिये वे दुर्लभ संसाधन होते हैं जिनके बारे में वे सोचते हैं कि उनके देश और लोगों को उनकी आवश्यकता है। निजी क्षेत्र में अधिक से अधिक धन कमाने के उद्देश्य से लोगों तथा फर्मो के स्वामित्व में भी कुछ दुर्लभ संसाधन होते हैं। इस प्रकार मिश्रित आर्थिक प्रणाली बाजार आर्थिक प्रणाली के लाभों को आयोजित आर्थिक प्रणाली के लाभों के साथ जोड़ने का प्रयास करती है।

## पाठगत प्रश्न 5.3

1. वस्तुओं और सेवओं के उत्पादन का मुख्य उद्देश्य क्या है?
   (अ) बाजार अर्थव्यवस्था में
   (ब) नियोजित अर्थव्यवस्था में
2. बाजार अर्थव्यवस्था में वस्तु और सेवाओं का उत्पादन किसके लिये होता है?

हमने चर्चा की है कि कुल संसाधन सीमित होते हैं तथा संसाधन विभिन्न वस्तुओं का उत्पादन करने में सक्षम होते हैं। क्या तथा कितनी मात्रा में उत्पादन किया जाए के निर्णय करने में, अर्थव्यवस्था को हजारों विभिन्न सम्भावित वस्तुओं में संसाधनों के आबंटन से सम्बन्धित निर्णय लेने पड़ते हैं। मान लीजिये, कि अर्थव्यवस्था केवल दो वस्तुओं गेहूँ तथा साइकिलों का उत्पादन कर रही हैं। सभी संसाधनों की सीमितता के साथ, यदि सभी संसाधनों का गेहूँ के उत्पादन में प्रयोग किया जाता है तो 20 क्विंटल गेहूँ का उत्पादन हो सकता है और एक भी साइकिल का उत्पादन नहीं होगा। यदि अधिकतम संसाधनों को हटाकर साइकिल के उत्पादन में लगा दिया जाए तो गेहूँ के उत्पादन के लिये बहुत कम संसाधन ही बच पायेंगे। इसी प्रकार, यदि सभी संसाधनों को साइकिलों के उत्पादन में प्रयोग किया जा रहा है तो 100 साइकिलों का उत्पादन हो सकता है तथा गेहूँ के उत्पादन के लिये कुछ भी संसाधन नहीं बचेंगे।

**सारणी 1: उत्पादन सम्भावनाएं**

| उत्पादन सम्भावनाएं | गेहूँ (क्विंटल) | साइकिल |
|---|---|---|
| अ | 20 | 0 |
| ब | 8 | 30 |
| स | 5 | 60 |
| द | 2 | 75 |
| य | 0 | 100 |

उपर्युक्त सारणी दो वस्तुओं, गेहूँ तथा साइकिल के विभिन्न संयोगों की कुछ उत्पादन सम्भावनाओं के उदाहरण को प्रदर्शित करती है। केवल पांच सम्भावनाएं हैं। अनेक अन्य सम्भावनाएं हो सकती हैं। यदि गेहूँ की कुछ मात्रा का त्याग कर दिया जाए तो हम अधिक साइकिलों का उत्पादन कर सकते है; यदि कुछ साइकिलों का त्याग कर दिया जाए तो अधिक गेहूँ का उत्पादन हो सकता है। इसलिये, वैकल्पिक उत्पादन सम्भावनाओं के लिये दुर्लभ संसाधनों को विभिन्न संयोगों में लगाया जाता है।

### 5.2.2 संसाधनों का पूर्ण उपयोग

किसी अर्थव्यवस्था की एक अन्य समस्या संसाधनों - भूमि, श्रम तथा पूंजी के पूर्ण प्रयोग से सम्बन्धित है। आप देख चुके हैं कि गेहूँ की कुछ मात्रा का त्याग करके आपके पास अधिक साइकिलें हो सकती हैं। यदि अर्थव्यवस्था में सभी संसाधनों को पूर्ण रोजगार मिल जाए तो केवल अन्य वस्तु की कुछ मात्रा का त्याग करके ही किसी वस्तु की मात्रा में वृद्धि की जा सकती है। ऐसा तब होता है जब उत्पादन पूर्ण कुशलता से होता है। परन्तु वास्तव में, अधिकतर उत्पादन कुशलतापूर्वक नहीं होता। साधनों को पूर्ण रोजगार नहीं मिलता तथा उत्पादन अर्थव्यवस्था की सर्वश्रेष्ठ क्षमता से कम होता है। आपने देखा होगा कि आपके परिवार के कुछ सदस्य अथवा मित्र शिक्षित होने के बावजूद भी बेरोजगार हैं। इसी प्रकार, हम अपनी कृषिभूमि में आज भी वर्ष में केवल एक फसल उगाते हैं। यह अच्छा संकेत नहीं है, क्योंकि संसाधन तो पहले ही दुर्लभ हैं। यदि इन दुर्लभ संसाधनों का भी पूर्ण उपयोग नहीं किया जाता है, तो यह संसाधनों को नष्ट करना है। अतः यह सुनिश्चित करना एक अर्थव्यवस्था का कर्त्तव्य है कि दुर्लभ संसाधन बिना प्रयोग के अथवा अल्प प्रयोग में न रहें।

### 5.2.3 संसाधनों में संवृद्धि

यदि संसाधनों जैसे श्रम, पूंजी तथा तकनीकी में एक समय अवधि में संवृद्धि हो तो दुर्लभता की व्याख्या की जा सकती है। इस प्रकार, किसी अर्थव्यवस्था की संवृद्धि के लिये, अर्थव्यवस्था में उपलब्ध संसाधानों में वृद्धि होनी चाहिये। संसाधनों के प्रभावशाली संवर्धन के द्वारा ही समाज उच्च जीवन स्तर का आनन्द उठा सकता है। इसी प्रकार देशों का विकास हुआ है। यदि संसाधनों में वृद्धि नहीं होती है तो देश अल्पविकसित ही बने रहते है। अतः अर्थव्यवस्थाओं को प्रयत्न करने चाहिये ताकि बढ़ती हुई आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिये उनके संसाधनों में धीरे-धीरे संवृद्धि होती रहे।

### पाठगत प्रश्न 5.4

1. संसाधनों के अपूर्ण उपयोग का एक उदाहरण दीजिये।
2. संसाधनों की संवृद्धि के दो उदाहरण दीजिए।

## आपने क्या सीखा

- चयन की समस्या उत्पन्न होती है, क्योंकि (अ) संसाधन दुर्लभ हैं तथा (ब) संसाधनों के अनेक वैकल्पिक प्रयोग हो सकते हैं।
- किसी अर्थव्यवस्था को तीन आधारभूत समस्याओं का सामना करना पड़ता है, किन वस्तुओं व सेवाओं का उत्पादन किया जाए, कैसे उत्पादन किया जाए तथा किसके लिये उत्पादन किया जाए?
- पूंजीवादी अर्थव्यवस्था वह आर्थिक प्रणाली होती है जिसमें उत्पादन के साधन निजी स्वामित्व में होते हैं तथा वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन अधिकतम लाभ कमाने के उद्देश्य से होता है।
- नियोजित आर्थिक प्रणाली में सरकार का एक केन्द्रीय नियोजन अधिकारी होता है जो क्या उत्पादन किया जाए, कैसे उत्पादन किया जाय तथा किसके लिये उत्पादन किया जाए, का निर्णय लेता है।
- मिश्रित आर्थिक प्रणाली सरकारी नियोजन को स्वतंत्र बाजार अर्थव्यवस्था से जोड़ती है।
- किसी अर्थव्यवस्था की संवृद्धि के लिये उपलब्ध संसाधनों जैसे श्रम, पूंजी तथा तकनीकी में संवृद्धि होनी चाहिये।
- यदि अर्थव्यवस्था में सभी संसाधनों को पूर्ण रोजगार मिल जाए तो केवल अन्य वस्तु की कुछ मात्रा का त्याग करके ही किसी वस्तु की मात्रा में वृद्धि की जा सकती है। ऐसा तब होता है जब उत्पादन पूर्ण कुशलता से होता है।
- यदि दुर्लभ संसाधनों का पूर्ण उपयोग नहीं होता है तो यह संसाधनों को नष्ट करना है। अतः यह सुनिश्चित करना एक अर्थव्यवस्था का कर्त्तव्य है कि दुर्लभ संसाधन बेरोजगार अथवा अल्प रोजगार में न रहें।

## पाठान्त प्रश्न

प्रश्न सं. 1 तथा प्रश्न सं. 2 में ठीक उत्तर चुनियेः

1. अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याएं उत्पन्न होती हैं, क्योंकि :

   I. बाजार में अनेक वस्तुओं का विक्रय होता है।

   II. सरकार निर्णय लेती है।

   III. श्रम की कमी

   IV. आवश्यकताओं की बहुतायत तथा संसाधनों की दुर्लभता

2. आर्थिक व्यवहार में चयन आधारभूत होती है, क्योंकि

    I. लोगों को यह चयन करना कठिन होता है कि वे क्या चाहते हैं?

    II. लोगों की आवश्यकताओं की तुलना में संसाधन दुर्लभ हैं।

    III. लोग विवेकयुक्त व्यवहार करते हैं।

    IV. वस्तु की कीमत चयन पर निर्भर करती है।

3. दुर्लभता तथा चयन एक साथ कैसे चलते हैं? व्याख्या कीजिये।
4. ऐसा क्यों कहा जाता है कि स्वतंत्र बाजार आर्थिक प्रणाली सबसे कुशल संसाधनों के बंटबारे को सुनिश्चित करती हैं।
5. प्रत्येक की एक उपयुक्त उदाहरणसहित तीन केन्द्रीय समस्याओं की व्याख्या कीजिए।

## पाठगत प्रश्नों के उत्तर

### पाठगत प्रश्न 5.2

1. संसाधनों की दुर्लभता
2. (i) क्या उत्पादन किया जाए

    (ii) कैसे उत्पादन किया जाए

    (iii) किसके लिये उत्पादन किया जाए।

### पाठगत प्रश्न 5.3

1. (अ) लाभ का उद्देश्य

    (ब) जनसाधारण की आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए।
2. जो इनके लिये भुगतान कर सकते हैं।

### पाठगत प्रश्न 5.4

1. श्रम की बेरोजगारी
2. जनसंख्या वृद्धि से कुशल तथा अकुशल श्रमिकों की संख्या में वृद्धि।

# 6

# मूल आर्थिक गतिविधियां

उत्पादन, उपभोग तथा पूंजी निर्माण किसी अर्थव्यवस्था की मूल आर्थिक गतिविधियां कहलाती हैं। हमारी आवश्यकताओं की तुष्टि के उद्देश्य से वस्तु और सेवाओं के उत्पादन में दुर्लभ संसाधनों का प्रयोग किया जाता है। भूमि, श्रम, पूंजी तथा उद्यम आदि साधनों को जुटा कर वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन किया जाता है। साधनों को उनकी उत्पादक सेवाओं के लिये लगान, मजदूरी, ब्याज तथा लाभ का भुगतान किया जाता है। उपभोग में, व्यक्तिगत अथवा सामूहिक आवश्यकताओं की प्रत्यक्ष रूप से तुष्टि के लिये वस्तु और सेवाओं के प्रयोग को शामिल किया जाता है। भविष्य में उत्पादन क्षमता में वृद्धि करने के लिये प्रत्येक वर्ष विद्यमान पूंजीगत स्टाक जैसे मशीनें, इमारतें आदि में वृद्धि करने के लिये वर्तमान उत्पादन का कुछ भाग भविष्य के लिये बचा लिया जाता है। इस प्रकार, जितना उत्पादन होता है उसे या तो उपभोग अथवा पूंजी निर्माण अथवा दोनों में बांट दिया जाता है।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- उत्पादन तथा उसके लक्ष्य को समझ पायेंगे;
- उत्पादन के साधन तथा साधन आय को जान पायेंगे;
- उपभोग के विषय में जान पायेंगे;
- उपभोग के लिये उत्पादित वस्तुओं से परिचित हो पायेंगे;
- उत्पादन तथा उपभोग, पूंजी निर्माण में कैसे सहायता करते हैं? समझ पायेंगे;
- आर्थिक गतिविधियों के चक्रीय प्रवाह को समझ पायेंगे।

## 6.1 उत्पादन

पिछले अध्याय में आप संसाधनों की दुर्लभता तथा चयन करने के विषय में पढ़ चुके हैं। इन दुर्लभ संसाधनों को वस्तु और सेवाओं का उत्पादन करने में प्रयोग किया जाता है। उत्पादन का लक्ष्य हमारी आवश्यकताओं की तुष्टि करना है। इन उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं को बाजार

में बेचा जाता है अथवा नाम मात्र की कीमत पर सरकार द्वारा जनता को प्रदान किया जा सकता है। इसलिये **उत्पादन को उपयोगिता का सृजन करने के रूप में परिभाषित किया जाता है।**

उत्पादन गतिविधियों में वस्तु और सेवाओं के बनाने को सम्मिलित किया जाता है। जो लोग इन वस्तु और सेवाओं को बनाकर बाजार में बेचते हैं, उन्हें उत्पादक कहते है। उत्पादक विभिन्न वस्तु और सेवाओं को बनाने के लिये कच्चे माल के साथ साधनों जैसे भूमि, श्रम, पूंजी तथा उद्यम को जुटाते हें। भूमि, श्रम, पूंजी तथा उद्यम उत्पादन के साधन कहलाते हैं। उत्पादक उत्पादन के साधनों के विभिन्न संयोगों का प्रयोग करके अधिकतम मात्रा में वस्तु और सेवाओं का उत्पादन करने का प्रयास करते हैं। आइये, अब हम उत्पादन के इन साधनों के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करें।

### 6.1.1 भूमि

**भूमि प्रकृति का उपहार है।** इसमें समतल भू-भाग, पर्वत तथा पठार को शामिल किया जाता है। समतल भू-भाग कृषि तथा औद्योगिक गतिविधियों के लिये उपयोगी होता है। पर्वत समतल भू-भाग में नदियों के प्रवाह को बनाये रखते हैं तथा पर्यटन के लिये सुविधाएं प्रदान करते हैं। पठारों में खनिजों के भण्डार, जीवाश्म, ईंधन तथा जंगल पाये जाते हैं। खाद्यान्नों, सब्जियों, फलों आदि के लिये समतल भू-भाग में कृषि योग्य भूमि की आवश्यकता होती है। इसके साथ-साथ लोग पशुपालन, मत्स्य पालन तथा वान्यिकी आदि में भी संलग्न होते हैं, जिन्हें सम्बन्धित क्रिया कलाप कहते हैं। भारत में, ग्रामीण क्षेत्र को कृषि तथा सम्बन्धित क्रिया कलापों के लिये जाना जाता है। समतल भू-भाग में भूमि के कुछ क्षेत्र को उद्योग तथा शहरी क्षेत्र जैसे कस्बे तथा नगर स्थापित करने के लिये विशेष रूप से विकसित किया जाता है।

### 6.1.2 श्रम

साधारणतया **श्रम से अभिप्राय वस्तु और सेवाओं के उत्पादन में शारीरिक तथा मानसिक मानवीय प्रयत्नों से है।** खेतों में काम करने वाले व्यक्ति के बारे में कहा जा सकता है कि वह शारीरिक श्रम करता है जबकि पुस्तक के किसी लेखक के बारे में कहा जा सकता है कि वह मानसिक श्रम करता है। ऐसे लोग जो श्रम प्रदान करते हैं, मानवीय संसाधन कहलाते हैं। उत्पादन गतिविधियों के लिये कुशल तथा अकुशल दोनों प्रकार के श्रम की आवश्यकता होती है। केवल शारीरिक श्रम जैसे बोझा उठाना और बोझा उतारने में, खेत जोतने में किसी विशेष कुशलता की आवश्यकता नहीं होती। परन्तु एक इंजीनियर, डाक्टर, अध्यापक, वकील, कारीगर, बिजली के सामान की मरम्मत करने वाला अथवा दर्जी आदि बनने के लिये व्यक्ति को शिक्षा और प्रशिक्षण के द्वारा कुशलता अर्जित करनी पड़ती है।

### 6.1.3 पूंजी

**पूंजी से हमारा अभिप्राय उत्पादन में प्रयोग किये जाने वाली सभी मानव निर्मित वस्तुओं तथा सभी प्रकार के धन से है।** पूंजी में मशीनों, औजारों, भवनों तथा पदार्थों आदि को सम्मिलित किया जाता है। जबकि भूमि एक प्राकृतिक संसाधन है, पूंजी एक मानव निर्मित संसाधन है।

पूंजी का उपयोग उत्पादन के अन्य साधनों जैसे भूमि और श्रम की कार्यक्षमता में वृद्धि करने के लिये किया जाता है। बेहतर सिंचाई की सुविधाओं तथा मशीनों के द्वारा भूमि की कार्यक्षमता को बढ़ाया जा सकता है। लेकिन, पूंजी उत्पादन का एक निष्क्रिय साधन है तथा कार्य करने के लिये बिना श्रम को लगाये इसका प्रयोग संभव नहीं है। पूंजी का एक सीमित जीवनकाल होता है तथा एक निश्चित अवधि के बाद इसका अप्रचलन हो जाता है। छोटे-छोटे औजार जैसे पेचकस, केलकुलेटर से लेकर भारी मशीन जैसे इंजिन, ट्रैक्टर, जलयान आदि सभी अचल (स्थिर) पूंजी के उदाहरण हैं, क्योंकि अनेक वर्षों तक इनका उत्पादन में उपयोग किया जा सकता है। अचल पूंजी में भवनों तथा भारी मशीनों को भी सम्मिलित किया जाता है। कार्यशील पूंजी में कच्चा माल जैसे सूत, मिट्टी, बीज, उर्वरक आदि को सम्मिलित किया जाता है जिनका उत्पादन प्रक्रिया में प्रयोग कर लिया जाता है।

### 6.1.4 उद्यम

भूमि, श्रम तथा पूंजी को उचित अनुपात में लेकर वस्तु और सेवाओं की उत्पादन प्रक्रिया को आरम्भ करने के लिये किसी को तो सूत्रपात करना ही पड़ता है। उचित प्रकार की भूमि, श्रम तथा पूंजी का चयन करने के लिये तथा उत्पादन की मात्रा के बारे में, साधन तथा कच्चे माल पर व्यय करने, उत्पादित माल को बेचने आदि के निर्णय के लेने के लिये वही उत्तरदायी होगा। उद्यम उत्पादन गतिविधि को संगठित करने की कला है। वह व्यक्ति जो उत्पादन प्रक्रिया के बारे में निर्णय लेता है, उस पर नियंत्रण रखता है तथा उत्पादन में निहित जोखिम तथा अनिश्चितताओं को वहन करता है, उद्यमी कहलाता है। उसे विद्वान, साहसी होना चाहिये तथा उसमें नेतृत्व के गुण होने चाहिये। उद्यमी का उद्देश्य दिये गये संसाधनों का उपयोग करके अधिकतम उत्पादन करना तथा अन्तिम वस्तुओं के विक्रय के लिये उचित प्रबंध करना होता है। वह उत्पादन के अन्य साधनों को भुगतान करने के लिये भी उत्तरदायी होता है।

वह, साधनों की उत्पादन में सेवाओं के बदले में श्रमिकों को मजदूरी, भूस्वामी को लगान तथा पूंजी के स्वामी को ब्याज का भुगतान करता है। इसी प्रकार, उद्यमी अपनी उत्पादक गतिविधि के लिये लाभ का अर्जन करता है। क्योंकि ये भुगतान-लगान, मजदूरी, ब्याज तथा लाभ साधनों को उनकी उत्पादन में सेवाओं के लिये प्राप्त होते हैं, इन्हें साधन आय कहते हैं।

## पाठगत प्रश्न 6.1

1. नीचे कुछ साधनों की सूची दी गई है जिन्हें कमीजों के उत्पादन में प्रयोग किया जाता है। इन्हें प्राकृतिक संसाधन, मानवीय संसाधन, अचल पूंजी तथा कार्यशली पूंजी में समूहीकृत कीजिये:

   सूत, मशीनें, दर्जी, फैक्ट्ररी की भूमि, लकड़ी के दरवाजे, रंग, रंगने का पदार्थ, भवन, सिलाई की मशीन, टेलीफोन, क्रय-विक्रय प्रबंधक, विज्ञापन प्रबंधक, पैकिंग करने वाली मशीन, कैंची, बटन, बैंक ऋण, नकद मुद्रा।

2. निम्नलिखित में से कौन सी भूमि की विशेषता नहीं है:

(क) गतिशील (ख) प्रकृति का उपहार

(ग) मात्रा में सीमित (घ) अविनाशी

## 6.2 साधन आय

उत्पादन के साधन लोगों के पास होते हैं। भूमि का स्वामी भू-स्वामी, श्रम का स्वामी श्रमिक, पूंजी के स्वामी वे लोग जिन्होंने पूंजीगत वस्तुओं का उपार्जन किया है तथा उद्यम का स्वामी उद्यमी होता है। उत्पादन के साधनों के स्वामियों को उनकी उत्पादक सेवाओं के बदले में भुगतान किया जाता है। जब आप कोई भूमि का टुकड़ा किराये पर लेते हैं तो आप भूमि की सेवाओं के प्रयोग के लिये भू-स्वामी को लगान का भुगतान करते हैं। अतः किरायेदार भूमि की सेवाओं के लिये लगान का भुगतान करता है। श्रम से अभिप्राय श्रमिकों द्वारा दी गई सेवाओं से है। इससे अभिप्राय हाथ से कार्य करने वाले, तकनीकी कार्य करने वाले श्रमिक आदि सभी प्रकार के श्रमिकों से है। जब एक नियोक्ता को किसी श्रमिक की सेवाओं की आवश्यकता होती है तो वह उसकी सेवाओं के लिये भुगतान करने के लिये तत्पर रहता है। किसी श्रमिक को किराये पर लेने का वास्तव में अर्थ है उसकी सेवाओं को किराये पर लेना। जब एक ट्रैक्टर, बीज, मशीन आदि खरीदने के लिये किसी बैंक से ऋण लिया जाता है तो उस बैंक को ब्याज का भुगतान किया जाता है। अतः भू-स्वामियों को लगान, श्रमिकों को मजदूरी, पूंजीगत संसाधनों के स्वामियों को ब्याज तथा उद्यमियों को लाभ का भुगतान किया जाता है। चूंकि इन सभी को इनकी साधन सेवाओं के बदले में भुगतान किया जाता है, इन्हें साधन भुगतान कहते हैं तथा उनकी आय को साधन आय कहते हैं।

## पाठगत प्रश्न 6.2

राम सिंह हरियाणा के एक गांव में कृषक है जिसके पास 2 हैक्टेयर भूमि है। वह और उसकी पत्नी रानी दोनों खेत में काम करते हैं। पहले इन्होंने अपनी भूमि पर केवल चावल उगाया था। अब वे बेहतर किस्म के बीज तथा सिंचाई का उपयोग कर दो फसलें उगाकर अपनी भूमि की उत्पादकता में वृद्धि करना चाहते हैं। वे दो फसलों चावल तथा आलू का उत्पादन करना चाहते हैं। इसके लिये उन्हें अच्छी किस्म के बीज तथा उर्वरक खरीदने के लिये धन की आवश्यकता है। चूंकि उनके पास पर्याप्त धन नहीं है, वे दोनों किसी अन्य के खेतों में श्रमिकों की भांति कार्य करते हैं। वे कुछ धन उर्वरक, बीज, पम्प सैट आदि पर व्यय करते हैं। कठिन परिश्रम करके वे किसी प्रकार चावल और आलू दोनों की अच्छी फसल उगाने में सफल हो जाते हैं। वे अपने खेतों में उगाये गये चावल तथा आलू में से कुछ अपने उपयोग के लिये रख लेते हैं तथा शेष को बेच देते हैं। अपनी फसलों को बेचने से उन्होंने 12000 रु. कमाये।

- इस कहानी में उत्पादन के साधनों को पहचानिये।
- इस उदाहरण में प्रयोग की गई पूंजीगत वस्तुएं क्या हैं?

## 6.3 उपभोग

उत्पादन का उद्देश्य उपभोग के लिये वस्तु और सेवाओं का उत्पादन करना है। **उपभोग गतिविधि में व्यक्तिगत अथवा सामूहिक मानवीय आवश्यकताओं की प्रत्यक्ष रूप से तुष्टि के लिये वस्तु और सेवाओं के उपयोग को सम्मिलित किया जाता है।** अपनी आवश्यकताओं की तुष्टि करने के लिये परिवार अनेक प्रकार की वस्तुओं जैसे साइकिल, फर्नीचर, टेलीविजन, कार, फ्रिज, खाद्यान्न, दूध, तेल, साबुन आदि तथा सेवाएं जैसे नाई, अध्यापक, डाक्टर, बैंक, बीमा कम्पनियों आदि की सेवाओं का क्रय करते हैं। सेवाओं के उत्पादन तथा उपभोग में समय का कोई अन्तराल नहीं होता है। सेवाओं का उत्पादन तथा उपभोग साथ-साथ होता है। जैसे ही उनका उत्पादन होता है, उनका उपभोग भी हो जाता है। जैसे, डाक्टर, वकील, अध्यापक आदि की सेवाएं। जैसे ही आप किसी डाक्टर के पास चिकित्सा के विषय में सलाह लेने जाते हैं, आप उसकी सेवाओं का उपभोग कर लेते हैं। वस्तुओं के बारे में ऐसा नहीं है। वस्तुओं के उत्पादन तथा उपभोग में समय का अन्तराल होता है। वस्तुओं का उपभोग तब मान लिया जाता है जब उनका क्रय किया जाता है। परन्तु कुछ दीर्घोपयोगी वस्तुएं जैसे फर्नीचर, साइकिल आदि अनेक वर्षों तक सेवाएं प्रदान करती रहती हैं, फिर भी जब उनका क्रय किया जाता है तो उनका उपभोग हो गया है, मान लिया जाता है।

## 6.4 पूंजी निर्माण

किसी अर्थव्यवस्था की तीसरी महत्वपूर्ण गतिविधि पूंजी निर्माण है। जैसा कि आप पढ़ चुके हैं कि साधनों के स्वामी अपनी उत्पादक सेवाओं के बदले में साधन आय प्राप्त करते हैं। वे अपनी आय के एक बड़े भाग को वस्तुओं और सेवाओं जैसे भोजन सामग्री, कपड़े, फर्नीचर, आवास, साइकिल, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि पर व्यय कर देते हैं। परन्तु वे अपनी सारी आय को इन वस्तुओं और सेवाओं पर व्यय नहीं करते हैं। वे अपनी कुछ आय को बचाकर उसे भविष्य के लिये बैंक में जमा कर देते हैं। उदाहरण के लिये, यदि किसी व्यक्ति की आय 500 रु. है और वह इस सारी आय को व्यय कर लेता है तो कुछ भी बचत नहीं है। इसके विपरीत, यदि वह अपने उपभोग पर कुछ प्रतिबंध लगाकर 300 रु. तक कर ले तो उसने 200 रु. की बचत की है और इसे वह भविष्य के लिये बैंक में जमा करने के लिये प्रयोग कर सकता है। बैंक इस मुद्रा का उपयोग किसी व्यवसायी को अपने व्यवसाय के विस्तार के लिये निवेश करने के लिये ऋण देने में कर सकता है। वर्तमान उपभोग पर रोक लगाकर ही पूंजी निर्माण किया जाता है। यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि बचत यदि व्यर्थ पड़ी रहे तो पूंजी निर्माण का हिस्सा नहीं बन सकती। यदि कोई व्यक्ति बचत करके अपने घर में उसे ताले में बंद कर देता है तो कोई पूंजी निर्माण नहीं होता है। यदि बची हुई मुद्रा को पूंजीगत वस्तुओं में लगा दिया जाए, केवल तब ही पूंजी निर्माण होता है जिससे भविष्य में उत्पादन तथा उपभोग सुगम हो जाता है। अतः वर्तमान उपभोग का त्याग किया जाता है तथा भविष्य में उत्पादन क्षमता में विस्तार करने के लिये प्रत्येक वर्ष विद्यमान पूंजीगत वस्तुओं जैसे मशीन, भवन आदि के स्टाक में वृद्धि करने में प्रयोग किया जाता हे। **एक वर्ष में पूंजीगत वस्तुओं के स्टाक में ये वृद्धि पूंजी निर्माण अथवा निवेश कहलाती है।** इसी प्रकार, देश के उत्पादन के एक भाग को उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं की तुष्टि करने में प्रयोग न करके उसे मशीन तथा उपस्कर के प्रावधान करने में लगाया जाता है जिससे उत्पादन होता रहे

और उसमें विस्तार किया जा सके। इस प्रकार, जितना भी उत्पादन होता है वह या तो उपभोग के लिये अथवा पूंजी निर्माण के लिये अथवा दोनों के लिये प्रयोग कर लिया जाता है।

ये तीनों गतिविधियां, उत्पादन, उपभोग तथा पूंजी निर्माण अन्तर्सम्बन्धित हैं। वस्तु और सेवाओं के उत्पादन में वृद्धि से उपभोग तथा पूंजी निर्माण के स्तर में वृद्धि होती है। उपभोग में वृद्धि लोगों के जीवन स्तर में सुधार का सूचक है तथा पूंजी निर्माण में वृद्धि अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि देश की आर्थिक संवृद्धि इस पर निर्भर होती है। अधिक उपभोग सम्भव है यदि अधिक उत्पादन हो तथा अधिक उत्पादन सम्भव है यदि अधिक पूंजी निर्माण हो। अतः देश को विकास के मार्ग पर आगे ले जाने में तीनों आर्थिक गतिविधियों का एक दूसरे पर प्रभाव पड़ता है।

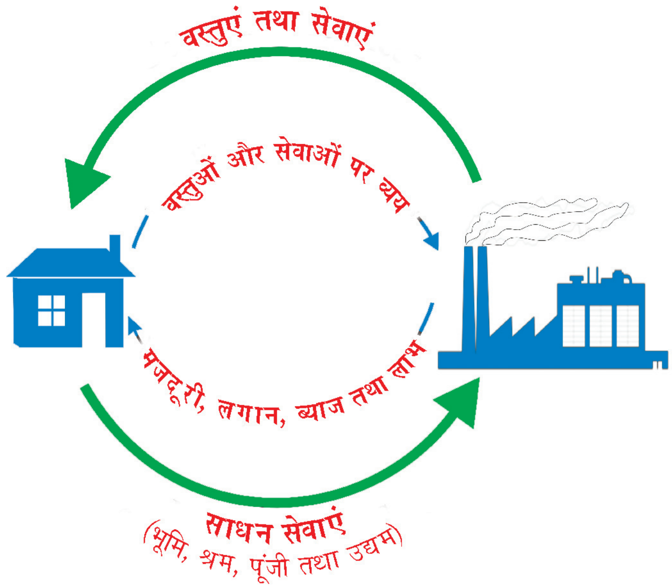


चक्रीय प्रवाह का चित्र

## पाठगत प्रश्न 6.3

1. दीर्घोपयोगी वस्तुओं, एकल उपयोगी वस्तुओं तथा सेवाओं के दो-दो उदाहरण दो।
2. एक वर्ष में उत्पादन का उपभोग पर आधिक्य है। यह कहाँ जाता है?
3. उत्पादन, उपभोग तथा पूंजी निर्माण को कैसे सुगम बनाता है?

## आपने क्या सीखा

- उत्पादन, उपभोग तथा पूंजी निर्माण, तीन आर्थिक गतिविधियां हैं।
- उत्पादन से अभिप्राय उपयोगिता का सृजन करने से है।

- भूमि, श्रम, पूंजी तथा उद्यम, ये चार उत्पादन के साधन हैं।
- फर्म द्वारा उत्पादन के साधनों को किये जाने वाले साधन भुगतान मजदूरी, ब्याज, लगान तथा लाभ हैं। साधन सेवााओं के स्वामियों के लिये इन्हें ही साधन आय कहते है।
- उपभोग से अभिप्राय व्यक्तिगत तथा सामूहिक आवश्यकताओं की प्रत्यक्ष रूप से तुष्टि के लिये वस्तु और सेवाओं के प्रयोग से है।
- पूंजी निर्माण एक समय अवधि में उत्पादन का उपभोग पर आधिक्य है।

## पाठान्त प्रश्न

1. कृषि भूमि एक अचल संसाधन है। उसकी उत्पादिता को कैसे बढ़ाया जा सकता है?
2. श्रम की उत्पादिता में वृद्धि कैसे की जा सकती है?
3. उद्यमी के मुख्य कार्य क्या हैं?
4. पूंजी श्रम की उत्पादिता में कैसे वृद्धि करती है?
5. यदि किसी वर्ष में उत्पादन का उपभोग पर आधिक्य है, यह कहाँ जाता है? ऐसी दो वस्तुओं के भी नाम लिखिये जो अर्थव्यवस्था में पूंजी निर्माण में सहायता करती हैं।
6. तीन मुख्य आर्थिक गतिविधियों के नाम लिखिये ओर चित्र द्वारा उनमें अन्तर्सम्बन्ध प्रदर्शित कीजिये।
7. एक परिवार द्वारा साइकिल का क्रय है-

   (क) पूंजी निर्माण (ख) परिवार द्वारा उत्पादन

   (ग) उपभोग (घ) स्व-उपभोग के लिये उत्पादन
8. निम्नलिखित में से कौन से कथन सत्य/असत्य हैं?

   (क) पूंजी निर्माण देश की पूंजी में वृद्धि करता है।

   (ख) घर के बगीचे में सब्जी उगाना उत्पादन का भाग नहीं है।

   (ग) एक कृषक द्वारा, स्वउपभोग के लिये उत्पादन किया गया गेहूँ, उत्पादन का भाग है।

   (घ) एक अध्यापक द्वारा विद्यालय में पढ़ाना उत्पादन है।

   (च) एक छात्र द्वारा स्टेशनरी का प्रयोग उत्पादन है।

   (छ) एक परिवार के सदस्यों द्वारा अपने खेत में कुआँ खोदना पूंजी निर्माण का भाग है।

   (ज) एक ट्रक द्वारा किसी गांव से पड़ोस के कस्बे के बाजार में गेहूँ ढ़ोकर ले जाना उत्पादन का भाग है।

9. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजियेः
   (क) सरकार द्वारा सड़कों का निर्माण है ……………… (उत्पादन/पूंजी निर्माण)
   (ख) एक कृषक द्वारा ट्रैक्टर का क्रय ……………… का एक भाग है। (उत्पादन/उपभोग)
   (ग) किसी व्यक्ति द्वारा एक नये मकान का क्रय ……………… है। (उत्पादन/उपभोग)
   (घ) एक डाक्टर द्वारा किसी मरीज को देखना ……………… है। (उत्पादन/उपभोग)
   (च) एक छात्र का किसी विद्यालय में पढ़ना ……………… है। (उत्पादन/उपभोग)

## पाठगत प्रश्नों के उत्तर

### पाठगत प्रश्न 6.1

1. प्राकृतिक संसाधन - फैक्ट्री की भूमि
   मानवीय संसाधन - दर्जी, क्रय-विक्रय प्रबंधक, विज्ञापन प्रबंधक
   अचल पूंजी - मशीने, लकड़ी के दरवाजे, भवन, सिलाई की मशीन, टेलीफोन, पैकिंग करने वाली मशीन तथा कैंची
   कार्यशील पूंजी - सूत, रंगने का पदार्थ, बटन, बैंक ऋण, नकद मुद्रा
2. (क)

### पाठगत प्रश्न 6.3

1. दीर्घोपयोगी वस्तुएं - टेलीविजन, फ्रिज, कपड़े धोने की मशीन आदि
   एकल उपयोगी वस्तुएं - डबल रोटी, मक्खन, दूध, आटा
   सेवाएं - नाई (हज्जाम) की सेवाएं, अध्यापक की सेवाएं, डाक्टर की सेवाएं
2. ये पूंजी निर्माण में चला जाता है।
3. वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में वृद्धि से उपभोग तथा पूंजी निर्माण के स्तर में वृद्धि होती है। अधिक उपभोग केवल तभी संभव है जब अधिक उत्पादन हो तथा अधिक पूंजी निर्माण तभी संभव है जब उत्पादन उपभोग से अधिक हो।

## मॉड्यूल 3: वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करना

7. उत्पादन
8. लागत तथा आगम

# 7

# उत्पादन

अपनी आवश्यकताओं को संतुष्ट करने के लिए हमें विभिन्न प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करना पड़ता है। वस्तुओं का उत्पादन कृषि फार्मों, फैक्ट्रियों, उत्पादन इकाइयों, उद्योगों आदि में होता है और सेवाओं का उत्पादन दुकानों, कार्यालयों, अस्पतालों, विद्यालयों, महाविद्यालयों, होटलों, बैंकों और बहुत से अन्य स्थानों पर होता है। किसी अर्थव्यवस्था में, लाखों उत्पादन इकाईयाँ हो सकती है जो वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करती हैं। उत्पादन, उत्पादन के चार साधनों, भूमि, श्रम, पूंजी और उद्यमशीलता के संयुक्त प्रयासों का प्रतिफल है। इन्हें आगत अथवा संसाधन भी कहा जाता है। आगतों और निर्गतों के सम्बन्ध पर ही संसाधनों का सर्वश्रेष्ठ उपयोग, अधिकतम संभावित स्तर का उत्पादन करना तथा उत्पादन के स्तर में वृद्धि लाना आदि, निर्भर करते हैं।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप कर पाएंगे :

- उत्पादन फलन की अवधारणा की व्याख्या;
- वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में प्रयोग की जाने वाली तकनीकों और विधियों का विश्लेषण;
- कुल उत्पाद, औसत उत्पाद और सीमान्त उत्पाद पदों (शब्दों) की व्याख्या;
- सीमान्त उत्पाद ह्रास नियम की जानकारी;
- उत्पादन प्रक्रिया की व्याख्या और उत्पादन क्रिया की व्यवस्था;
- उत्पादन के साधनों की भूमिका को समझना;
- अर्थव्यवस्था में विभिन्न प्रकार के उत्पादकों की पहचान।

## 7.1 उत्पादन फलन की अवधारणा

**उत्पादन को, आगतों को निर्गतों में परिवर्तित करने के रूप में परिभाषित किया जाता है।** उत्पादन में प्रयुक्त संसाधन, आगत कहलाते हैं तथा उत्पादित वस्तुएं और सेवाएं निर्गत कहलाती हैं। उदाहरण के लिए, चावल कहलाने वाली निर्गत का उत्पादन करने के लिए हमें, कृषि भूमि, बीज,

खाद, हल, पानी, कीटनाशक तथा ट्रैक्टर आदि चलाने के लिए डीजल जैसी आगतों की आवश्यकता होती है। चावल की किसी मात्रा का उत्पादन करने के लिए इन सभी आगतों को एक निश्चित मात्रा में जोड़ा जाता है। **उत्पादन फलन हमें किसी फर्म की आगतों और निर्गतों के तकनीकी सम्बन्ध को बताता है। यह हमें बताता है कि दी गई आगतों की मात्राओं की सहायता से निर्गत की अधिकतम मात्रा का उत्पादन कैसे किया जा सकता है।**

संक्षेप में, निर्गत की मात्रा, भूमि, श्रम, पूंजी, उद्यमशीलता और आवश्यक कच्चा माल आदि आगतों का फलन है। आगतों की मात्रा तथा उत्पादित निर्गत की मात्रा में प्रत्यक्ष सम्बन्ध है। आगतों में वृद्धि, किसी सीमा तक, निर्गत में वृद्धि लाती है और विलोमतः प्रत्येक उत्पादक का उद्देश्य दी गई आगतों की सहायता से अधिकतम उत्पादन करना होता है। किसी विशेष प्रकार की निर्गत का उत्पादन करने के लिए, आगतों को विशेष ढ़ंग से मिलाया जाना चाहिए। एक दर्जी की दुकान का उदाहरण लीजिए। इसे एक निपुण कारीगर चाहिए जो माप के अनुसार कपड़ा काट सके और एक सिलाई मशीन के लिए एक व्यक्ति जो कारीगर द्वारा काटे गए कपड़े को सिलकर एक कमीज या पैन्ट आदि बना सके। यदि कार्य का भार अधिक है तो एक अन्य मशीन और व्यक्ति को कार्य करने के लिए रखा जा सकता है। **प्रौद्योगिकी और उत्पादन विधि से अभिप्राय इस अनुपात से है जिसमें निर्गत का उत्पादन करने के लिए आगतों को जोड़ा जाता है।** इसलिए, उत्पादन फलन को उस तकनीकी सम्बन्ध के रूप में भी परिभाषित किया जाता है जो हमें आगतों के विभिन्न संयोगों द्वारा उत्पादन को अधिकतम करने के बारे में बताता है।

### पाठगत प्रश्न 7.1

1. आगतों की परिभाषा दीजिए।
2. निर्गत की परिभाषा दीजिए।
3. उत्पादन फलन को परिभाषित कीजिए।

## 7.2 उत्पादन की विभिन्न तकनीकी

वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन एक से अधिक तरीके से हो सकता है। उदाहरण के लिए कपड़े का उत्पादन या तो हथकरघे की सहायता से किया जा सकता है अथवा शक्ति द्वारा चालित करघे की सहायता से। पहली, उत्पादन की श्रम गहन तकनीकी है तथा दूसरी उत्पादन की पूंजी गहन तकनीकी है।

जब एक किसान खाद्यान्नों के उत्पादन के लिए लकड़ी का हल और बैलों का प्रयोग करता है तो वह उत्पादन की श्रम गहन तकनीकी का प्रयोग करता है। दूसरी ओर जब वह खाद्यान्नों के उत्पादन में ट्रैक्टर, पम्पसैट और कटाई-दराई की मशीन का प्रयोग करता है तो वह उत्पादन की पूंजी गहन तकनीकी का प्रयोग करता है। इस प्रकार उत्पादन तकनीकी दो प्रकार की हो सकती है।

1. श्रम गहन तकनीकी (विधि)
2. पूंजी गहन तकनीकी (विधि)

**श्रम गहन तकनीकी:** जब हम अपनी वस्तु के उत्पादन में प्रति इकाई उत्पाद श्रम का अधिक प्रयोग करते हैं और पूंजी का कम, तो वह श्रम गहन तकनीकी कहलाती है। इस प्रकार की तकनीकी का प्रयोग, पारिवारिक उद्यमों और उन उद्यमों में किया जाताा है जो स्वउपभोग के लिए अथवा छोटे पैमाने पर उत्पादन करते हैं।

**पूंजी गहन तकनीकी:** जब हम अपनी वस्तु के उत्पादन में प्रति इकाई उत्पाद, पूंजी का अधिक प्रयोग करते है और श्रम का कम, तो वह पूंजी गहन तकनीकी कहलाती है। इस प्रकार की तकनीकी का प्रयोग तब होता है जबकि उत्पादन बड़े पैमाने पर, बाजार में बिक्री के लिए, लाभ कमाने के उद्देश्य से किया जाता है। निगमों और सरकारी उद्यमों में प्रायः उत्पादन की पूंजी गहन तकनीकी का प्रयोग होता है क्योंकि वहाँ वस्तुओं और सेवाओं का बड़े पैमाने पर उत्पादन होता है।

उत्पादन प्रक्रिया की व्यवस्था करने का दूसरा पहलू श्रम विभाजन है। श्रम विभाजन श्रमिकों की कार्यकुशलता में वृद्धि करता है जिसके कारण बड़े पैमाने पर उत्पादन करना सम्भव हो जाता है, श्रम विभाजन से अभिप्राय उत्पादन क्रिया को कई प्रक्रियाओं में बांटने तथा प्रत्येक प्रक्रिया को विभिन्न श्रमिकों में उनके कौशल और योग्यता के अनुसार बाँटने से है। श्रम विभाजन निम्न दो प्रकार का होता है।

1. **उत्पाद आधारित श्रम विभाजन: यदि एक श्रमिक किसी एक वस्तु अथवा सेवा के उत्पादन में दक्षता प्राप्त करता है तो उसे उत्पाद आधारित श्रम विभाजन कहते हैं।** किसी गांव में, एक छोटे किसान, कुम्हार, मोची, बढ़ई आदि के विषय में हम उत्पाद आधारित श्रम विभाजन का प्रयोग देखते हैं। भारत जैसे विकासशील देश में परिवारिक उद्यमों में यह आम तौर से पाया जाता है। जब उत्पादन स्वउपभोग के लिए अथवा छोटे पैमाने पर किया जाता है तो उत्पाद आधारित श्रम विभाजन का प्रयोग होता है। उदाहरण के लिए हमारे देश में अधिकतर किसान खाद्यान्नों का उत्पादन मुख्य रूप से स्वउपभोग के लिए करते हैं। वे सभी उत्पाद आधारित श्रम विभाजन का प्रयोग करते हैं।

2. **प्रक्रिया आधारित श्रम विभाजन:** बड़ी उत्पादन इकाइयों में जैसे निगम और सरकारी उद्यमों में, जहाँ बड़े पैमाने पर उत्पादन किया जाता है, प्रक्रिया आधारित श्रम विभाजन का प्रयोग किया जाता है। **जब किसी वस्तु का उत्पादन बहुत सी प्रक्रियाओं में बांट दिया जाता है और एक श्रमिक एक या दो प्रक्रियाओं में दक्षता प्राप्त करता है तो वह प्रक्रिया आधारित श्रम विभाजन कहलाता है।** उदाहरण के तौर पर ब्रिटेनिया ब्रैड कम्पनी डबल रोटी बनाती है। डबल रोटी के लिए कच्चा माल गेहूँ का आटा है। गेहूँ के आटे से डबल रोटी बनाने का कार्य तीन या चार प्रक्रियाओं से होकर गुजरता है। आटे का गूँथा जाता है तथा गूँथे हुए आटे को पकाने के लिए साँचो में डाला जाता है। साँचों को भट्टी में रखा जाता है जिससे डबल रोटी तैयार होती है। तैयार डबल रोटी को उचित आकार में काटकर पैक किया जाता है। डबल रोटी के निर्माण में ये सभी प्रक्रियाएं भिन्न-भिन्न श्रमिकों द्वारा पूरी की जाती हैं। कोई एक श्रमिक यह दावा नहीं कर सकता है कि उसने डबल रोटी बनाई है। वह केवल यही कह सकता है उसने डबल रोटी के तैयार करने में एक या दो प्रक्रियाओं में भाग लिया है।

सरकारी क्षेत्रक में भी, किसी एक वस्तु अथवा सेवा की आपूर्ति प्रक्रिया आधारित श्रम विभाजन पर निर्भर करती है। उदाहरण के लिए किसी नवनिर्मित ग्रुप हाउसिंग काम्पलेक्स में सड़कों पर बिजली उपलब्ध कराने का कार्य लेते है। इसमें कई प्रक्रियाएं जुड़ी है। पहली सड़क पर बिजली के खम्भे लगाने की प्रक्रिया है। दूसरी प्रक्रिया सभी खम्भों को बिजली के तारों से जोड़ने की है। तीसरे, बिजली के बल्ब और ट्यूब लगाने की प्रक्रिया है और अन्तिम प्रक्रिया सब-स्टेशन द्वारा बिजली की आपूर्ति करने की है। ये सभी प्रक्रियाएं विभिन्न श्रमिकों द्वारा की जाती हैं। व्यवस्था कार्य में कोई गड़बड़ी आने पर रखरखाव विभाग का एक दूसरा दल होता है जो व्यवस्था को ठीक रखता है।

श्रम विभाजन से श्रमिकों की कार्यकुशलता में वृद्धि होती है। इसमें कार्य की पुनरावृत्ति होने से नई खोज और आविष्कार होते रहते हैं। यह मानवीय श्रम के स्थान पर मशीनों के प्रयोग को प्रोत्साहित करता है। यह पूंजी गहन तकनीकी के प्रयोग को भी प्रोत्साहित करता है।

### पाठगत प्रश्न 7.2

1. श्रम गहन तकनीकी को परिभाषित कीजिए।
2. पूंजी गहन तकनीकी की परिभाषा दीजिए।
3. उत्पाद आधारित और प्रक्रिया आधारित श्रम विभाजन दोनों का एक-एक उदाहरण दीजिए।

## 7.3 कुल उत्पाद, औसत उत्पाद और सीमान्त उत्पाद

किसी वस्तु के उत्पादन से सम्बन्धित मुख्य रूप से तीन अवधारणाएं हैं।

(i) कुल उत्पाद, जिसे TP द्वारा निर्दिष्ट किया जाता हैं।

(ii) औसत उत्पाद, जिसे AP द्वारा निर्दिष्ट किया जाता है।

(iii) सीमान्त उत्पाद, जिसे MP द्वारा निर्दिष्ट किया जाता है।

1. **कुल उत्पाद (TP):** कुल उत्पाद से अभिप्राय किसी वस्तु के उस कुल उत्पादन से है जो एक आगत जैसे श्रम के रोजगार के एक निश्चित स्तर द्वारा प्राप्त होता है, जबकि अन्य आगतों की मात्रा अपरिवर्तित रहती है। कुल उत्पाद को श्रम की इकाईयों को बढ़ाने और घटाने से बढ़ाया और घटाया जा सकता है। इस प्रकार कुल उत्पादन श्रम के रोजगार से प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित है। क्योंकि इसे परिवर्तित किया जा सकता है इसलिए श्रम एक परिवर्तनशील साधन है।

2. **औसत उत्पाद (AP):** एक परिवर्तनशील आगत जैसे श्रम का प्रति इकाई उत्पाद औसत उत्पाद कहलाता हैं इसे, कुल उत्पाद को परिवर्तनशील साधन की इकाइयों से भाग देकर प्राप्त किया जा सकता है।

$$\text{औसत उत्पाद} = \frac{\text{कुल उत्पाद}}{\text{श्रम की इकाइयाँ}} \quad \text{अथवा} \quad AP = \frac{TP}{L}$$

जहां L = श्रम की इकाइयों की संख्या

3. **सीमान्त उत्पाद (MP):** श्रम की एक अतिरिक्त इकाई के लगाने से कुल उत्पाद में होने वाली वृद्धि अथवा कमी को सीमान्त उत्पाद के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जबकि शेष सभी आगतों को अपरिवर्तित रखा जाता है। उत्पादन या कुल उत्पाद को बढ़ाने के लिए हमें श्रमिकों के रोजगार में एक या अधिक इकाइयों की वृद्धि करनी पड़ती है। न्यूनतम संख्या जिसकी वृद्धि श्रम में की जा सकती है, एक है। क्योंकि सीमान्त से अभिप्राय बहुत छोटे से है, इसके अनुसार हम कह सकते हैं कि सीमान्त उत्पाद श्रम की आखिरी इकाई द्वारा उत्पादन में योगदान है।

$$MP = TP_L - TP_{L-1}$$

**उदाहरण:** एक श्रमिक एक सिलाई मशीन द्वारा दो कमीजें सिलता है। एक और श्रमिक लगाया जाता है और दोनों मिलकर 6 कमीजें सिल सकते हैं। सीमान्त उत्पाद की गणना कीजिए।

**उत्तर:** सीमान्त उत्पाद $= TP_L - TP_{L-1} = TP_2 - TP_{2-1} = 6 - 2 = 4$ कमीजें

यहाँ L श्रम की रोजगार युक्त इकाइयाँ हैं अथवा परिवर्तनशील साधन अर्थात श्रम के रोजगार का स्तर है। इसे संख्यात्मक रूप में इस प्रकार दिया जाता है जैसे 0, 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9 और इसी प्रकार।

$L = 0$ से अभिप्राय श्रम को कोई रोजगार नहीं दिया गया है।

$L - 1$ रोजगार का पूर्व स्तर है, जिसे L से दिया गया है। उदाहरण के लिए यदि $L = 3$ तो $L - 1 = 2$ और इसी प्रकार।

कुल उत्पाद, औसत उत्पाद और सीमान्त उत्पाद की तीनों अवधारणाओं को निम्न संख्यात्मक उदाहरण की सहायता से समझा जा सकता है।

### सारणी 7.1 कुल उत्पाद, औसत उत्पाद और सीमान्त उत्पाद

| श्रम की इकाइयाँ (L) | कुल उत्पाद (TP) (इकाइयाँ) | औसत उत्पाद (AP) (इकाइयाँ) | सीमान्त उत्पाद (MP) (इकाइयाँ) |
|---|---|---|---|
| 0 | 0 | - | - |
| 1 | 10 | 10 | 10 |
| 2 | 22 | 11 | 12 |
| 3 | 36 | 12 | 14 |
| 4 | 44 | 11 | 8 |
| 5 | 50 | 10 | 6 |
| 6 | 54 | 9 | 4 |
| 7 | 56 | 8 | 2 |
| 8 | 56 | 7 | 0 |
| 9 | 54 | 6 | –2 |
| 10 | 50 | 5 | –4 |

उपर्युक्त सारणी में, L = श्रम की इकाइयाँ = 0, 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9 और 10

जब $L = 1$, तो श्रम की इकाइयाँ अथवा श्रम के रोजगार का स्तर 1 है। इस स्तर पर कुल उत्पाद 10 है। हम जानते हैं कि $AP = TP/L = 10/1 = 10$

जब $L = 2$, $TP = 22$ इसलिए $AP = 22/2 = 11$

जब $L = 9$, $TP = 54$ इसलिए $AP = 54/9 = 6$

आइये, अब ऊपर दिए गए सूत्र $MP = TP_L - TP_{L-1}$ के आधार पर सीमान्त उत्पाद की गणना करें।

$L = 1$ पर सीमान्त उत्पाद की गणना करें

यहाँ $TP_L$ से अभिप्राय $L = 1$ पर कुल उत्पाद से है जो 10 है।

$L - 1$ से अभिप्राय श्रम के रोजगार का पूर्व स्तर क्योंकि $L - 1 = 1 - 1 = 0$

$TP_{L-1}$ से अभिप्राय शून्य रोजगार की मात्रा पर कुल उत्पाद से है।

सारणी में, श्रम की शून्य इकाई पर $TP = 0$ इसलिए $TP_L - TP_{L-1} = 10 - 0 = 10$ इसलिए जब श्रम की इकाई 1 है तो सीमान्त उत्पाद (MP) = 10 इसी प्रकार जब श्रम की 8 इकाइयाँ हैं तो $MP = TP_8 - TP_{8-1} = TP_8 - TP_7 = 56 - 56 = 0$

क्योंकि सीमान्त उत्पाद कुल उत्पाद के दो क्रमागत मूल्यों का अन्तर है यह ऋणात्मक भी हो सकता हैं। सारणी में श्रम की 9 इकाइयों पर सीमान्त उत्पाद –2 है। इसे $TP_9 - TP_{9-1}$.द्वारा प्राप्त किया गया है।

$$TP_9 - TP_8 = 54 - 56 = -2$$

## पाठगत प्रश्न 7.3

1. सीमान्त उत्पाद को परिभाषित कीजिए।
2. निम्न सारणी की सहायाता से औसत उत्पाद और सीमान्त उत्पाद की गणना कीजिए।

| श्रम की इकाइयाँ | कुल उत्पाद | औसत उत्पाद | सीमान्त उत्पाद |
|---|---|---|---|
| 0 | 0 | | |
| 1 | 10 | | |
| 2 | 18 | | |
| 3 | 24 | | |
| 4 | 28 | | |
| 5 | 30 | | |
| 6 | 24 | | |

## 7.4 श्रम का सीमान्त उत्पाद ह्रास नियम

सारणी 7.1 में श्रम की विभिन्न इकाइयों पर सीमान्त उत्पाद का मूल्य देखें। श्रम की इकाइयों में 1 से आगे वृद्धि के साथ और प्रत्येक दशा में 1 इकाई की वृद्धि से सीमान्त उत्पाद पहली तीन इकाइयों तक बढ़ता है अर्थात L = 1 पर 10 से L = 2 पर 12 और L = 3 पर 14 हो जाता है। तब श्रम की अगली 4 इकाइयों तक सीमान्त उत्पाद घटता है अर्थात L = 3 पर 14 से L = 4 पर 8, L = 5 पर 6, L = 6 पर 4, L = 7 पर 2, L = 8 पर 0 हो जाता है। अन्त में L = 9 पर सीमान्त उत्पाद का मूल्य ऋणात्मक हो जाता है। दूसरे शब्दों में कुछ समय तक अस्थायी रूप से बढ़ने पर, श्रम का सीमान्त उत्पाद घटने लगता है। **सामान्य रूप में हम कह सकते हैं कि परिवर्तनशील साधन, श्रम की इकाइयों में लगातार वृद्धि करने से, इसका सीमान्त उत्पाद एक निश्चित बिन्दु पर पहँचने तक आरम्भ में बढ़ता है किन्तु इसके पश्चात यह घटेगा और ऋणात्मक भी हो सकता है यदि अन्य सभी कारक अपरिवर्तित रहते हैं।** यह श्रम के सीमान्त उत्पाद ह्रास नियम के रूप में प्रसिद्ध है।

इसे ठीक प्रकार समझने के लिए कल्पना करो कि श्रम और पूंजी उत्पादन के दो साधन हैं, जहाँ पूंजी मशीन के रूप में है। मान लो श्रम परिवर्तनशील साधन है जिसे उत्पादन वृद्धि करने के लिए बढ़ाया जा सकता है ओर पूंजी स्थिर साधन है जिसे स्थिर रखा जाता है। आरम्भ में, केवल एक श्रमिक कार्य कर रहा है। हो सकता है कि मशीन का प्रयोग पूर्ण दक्षता से करने के लिए एक श्रमिक पर्याप्त नहीं हो। इसलिए श्रम की इकाइयाँ बढ़ाकर 2 और फिर 3 कर दी जाती है। आरम्भ में, जब हम श्रम में वृद्धि करते है तो यह लाभदायक सिद्ध हो सकता है क्योकि श्रमिक कार्यों को अपनी रूचि और कार्यकुशलता के अनुसार कर सकते हैं। इसलिए श्रम की अतिरिक्त इकाई का उत्पाद बढ़ता है। किन्तु श्रमिक को बढ़ाने की एक सीमा होती है क्योंकि उसके पश्चात् हमें दूसरी मशीन की आवश्यकता हो सकती है। किन्तु मशीन एक स्थिर साधन है जिसे बढ़ाया या घटाया नहीं जा सकता। इसलिए केवल एक परिवर्तनशील साधन, श्रम के बढ़ाने पर मशीन का आवश्यकता से अधिक उपयोग होने लगता है। और मशीन का कार्य बढ़ाए गए श्रमिकों द्वारा भी नहीं किया जा सकता। इसलिए प्रत्येक श्रम की अतिरिक्त इकाई का उत्पाद अर्थात श्रम का सीमान्त उत्पाद, एक सीमा के पश्चात्, घटने लगता है।

यहाँ प्रश्न यह उठता है कि परिवर्तनशील साधन को किस सीमा तक बढ़ाया या रोजगार दिया जा सकता है? इसका उत्तर जानने के लिए सारणी 7.1 को दोबारा देखें। जब श्रम को 9 इकाई तक बढ़ाया जाता है तो सीमान्त उत्पाद ऋणात्मक होना आरम्भ हो जाता है। श्रम की 9वीं इकाई को रोजगार देने पर सीमान्त उत्पाद (–) 2 है और श्रम की 10वीं इकाई का सीमान्त उत्पाद (–) 4 है। इसके कारण कुल उत्पाद भी घटने लगता है। इससे स्पष्ट रूप से संकेत मिलता है कि श्रम को 9वीं इकाई और उससे आगे नहीं बढ़ाना चाहिए। श्रम का रोजगार 9 इकाई से पहले रोक देना चाहिए। इसका अभिप्राय यह है कि श्रम को 8 इकाई तक बढ़ाया जाना चाहिये। देखिए, जब श्रम की 8 इकाइयों को रोजगार दिया जाता है तो सीमान्त उत्पाद न्यूनतम हो जाता है। इस बिन्दु पर सीमान्त उत्पाद 0 है और कुल उत्पाद अधिकतम हो जाता है जो कि 56 है।

इसलिए हम जानते हैं कि परिवर्तनशील साधन में वृद्धि उस समय तक की जानी चाहिए जहाँ सीमान्त उत्पाद न्यूनतम हो और सीमान्त उत्पाद के ऋणात्मक होने से पहले ही रोजगार बन्द कर देना चाहिए।

### पाठगत प्रश्न 7.4

1. सीमान्त उत्पाद ह्रास नियम का उल्लेख कीजिए।
2. कुल उत्पाद के किस स्तर पर सीमान्त उत्पाद न्यूनतम होता है?
3. उत्पादक को श्रमिकों को अधिक रोजगार देना कब बन्द कर देना चाहिए?

## 7.5 उत्पादन प्रक्रिया

उत्पादन प्रक्रिया में, साधनों के स्वामियों से उत्पादन के साधनों को प्राप्त करना या उनकी व्यवस्था करना, साधनों का उचित संयोग तैयार करना, उत्पादन में प्रयोग के लिए कच्चे माल की मालसूची तैयार करना या खरीदना, वस्तु का उत्पादन करना, उसका भंडारण करना और अंत में उत्पादन को बेचना शामिल होता है।

उत्पादन क्रिया को व्यवस्थित करने की किसी को पहल करनी चाहिए। वह व्यक्ति जो इसका उत्तरदायित्व लेता है उद्यमी कहलाता है। पाठ 6 में आप ने पढ़ा कि उद्यमी एक उत्पादन इकाई का व्यवस्थापक होता है। उद्यमशीलता, उद्यमी द्वारा किसी उत्पादन गतिविधि को व्यवस्थित करने की एक कला है। उसे मजदूरी देकर श्रम को लाने का प्रयास करना पड़ता है। इसी प्रकार भूमि, इमारत, जमीन आदि को ऋण लेकर खरीदना पड़ता है या क्रमशः किराया और ब्याज देकर प्राप्त करना पड़ता है। उद्यमी स्वयं अपने समस्त प्रयासों के लिए, लाभ के रूप में एक अंश अपने पास रख लेता है।

### पाठगत प्रश्न 7.5

1. उत्पादन प्रक्रिया की परिभाषा दो।
2. उत्पादन क्रिया की व्यवस्था कौन करता है?

## 7.6 फर्म और उद्योगों की भूमिका और महत्व

एक फर्म एक व्यक्तिगत उत्पादन इकाई है जो वस्तुओं ओर सेवाओं का उत्पादन बाजार में बिक्री के लिए करती है। कुछ उत्पादन इकाइयाँ, जैसे धमार्थ स्कूल, धमार्थ अस्पताल और सरकारी इकाइयाँ आदि ऐसी हैं जो अपनी सेवाएं लाभ कमाने के उद्देश्य से उपलब्ध नहीं कराती। वे सामाजिक कल्याण के लिए कार्य करती हैं। आमतौर पर किसी फर्म का सम्बन्ध एक वस्तु के उत्पादन से होता है।

उद्योग ऐसी सभी फर्मों का एक समूह है जो एक जैसी वस्तुओं का उत्पादन करती हैं। उदाहरण के लिए बाटा शू कम्पनी एक फर्म है किन्तु जूता उद्योग में जूतों का उत्पादन करने वाली सभी फर्म शामिल होती हैं। इसलिए, बाटा, एक्शन, लिबर्टी, आदिदास, नाइक और रिबोक आदि मिलकर जूता उद्योग बनाती हैं।

विभिन्न प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं की आपूर्ति हमें विभिन्न प्रकार के उद्योगों द्वारा की जाती है। उदाहरण के लिए कृषि उद्योग हमें, खाद्यान्न, सब्जियाँ, फल, कपास, दालें, दूध मक्खन आदि की आपूर्ति करता है। इन वस्तुओं की हम सबको आवश्यकता होती है। इसी प्रकार, अन्य उद्योग बहुत सी अन्य वस्तुओं और सेवाओं जैसे कपड़े, टेलीविजन, कम्प्यूटर, स्कूटर, फ्रिज, एयर कण्डीशनर, कार आदि की आपूर्ति करते हैं। इस प्रकार इन सभी उद्योगों की हमारे दैनिक जीवन में एक मुख्य भूमिका होती है।

फर्म और उद्योग के महत्व की संक्षेप में व्याख्या निम्न प्रकार से की जा सकती है।

1. **उपभोग के लिए वस्तुओं और सेवाएं:** आजकल मानवीय आवश्यकताएं तीव्र गति से बढ़ रही हैं। इन आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए हमारे दैनिक उपभोग के लिए विभिन्न प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं की आवश्यकता होती है। ये सभी वस्तुएं तथा सेवाएं फर्म तथा उद्योगों द्वारा उपलब्ध करायी जाती हैं।

2. **निवेश के लिए वस्तुएं:** हमें निवेश के लिए विभिन्न प्रकार की वस्तुओं की आवश्यकता होती है। हमें, मशीनों, संयन्त्र, परिवहन, वाहन जैसे बस, ट्रक, रेलवे, हवाई जहाज, समुद्री जहाज तथा अनेक अन्य वस्तुओं की निवेश के लिए आवश्यकता होती है। इन सभी वस्तुओं का उत्पादन फर्म तथा उद्योगों द्वारा किया जाता है।

3. **बहुत से लोगों को रोजगार:** फर्म तथा उद्योग लोगों के लिए रोजगार का स्रोत हैं। बहुत से लोग फर्म तथा उद्योगों में रोजगार प्राप्त करते हैं जिसके द्वारा उन्हें अपनी आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए आय प्राप्त होती है। हम रोजगार के बिना नहीं रह सकते। इसलिए फर्म तथा उद्योग के महत्व को आसानी से समझा जा सकता है।

4. **देश के विकास के लिए आधारिक संरचना:** वे, हमें ऊर्जा, परिवहन संचार, स्वास्थ्य, शिक्षा तथा गृह सेवाएं प्रदान करते हैं जो देश की आधारिक संरचना के लिए मौलिक आवश्यकता है। आधारिक संरचना के विकास के बिना, देश का सर्वांगीण विकास सम्भव नहीं है। इसलिए हम फर्म और उद्योग के महत्व और भूमिका को नकार नहीं सकते।

### पाठगत प्रश्न 7.6

1. फर्म क्या होती है?
2. उद्योग का अर्थ बताओ।

## 7.7 अर्थव्यवस्था में विभिन्न प्रकार के उत्पादकों की पहचान करना

स्वामित्व के आधार पर उत्पादन इकाइयों को विस्तृत रूप से निम्न श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है:

(i) देशीय उत्पादन इकाइयाँ

(ii) विदेशी उत्पादन इकाइयाँ

आइये, इनकी एक एक करके व्याख्या करते हैं।

### 7.7.1 देशीय उत्पादन इकाइयाँ

**जो उत्पादन इकाइयाँ, किसी देश में स्थापित हैं और वहीं के निवासियों के स्वामित्व में हैं, देशीय उतपादन इकाइयाँ कहलाती हैं।** हमारे चारों ओर अधिकतर उत्पादन इकाइयाँ देशीय हैं। हमारे गाँवों में फार्म-हाउस, दुकानें, छोटी फैक्ट्रियाँ, बड़ी फैक्ट्रियाँ, अस्पताल, विद्यालय, महाविद्यालय, सिनेमा घर, रैस्टोरैन्ट, डेरी फार्म, सरकारी कार्यालय, स्वनियोजित डाक्टर, वकील और अध्यापक आदि सभी देशीय उत्पादन इकाइयों के उदाहरण हैं। उत्पादन इकाइयों को आगे निजी और सरकारी उत्पादन इकाइयों में वर्गीकृत किया जाता है। देशीय उत्पादन इकाइयों को भी निम्न में वर्गीकृत किया जाता है।

(i) निजी उत्पादन इकाइयाँ

(ii) सरकारी उत्पादन इकाइयाँ

### 7.7.1.1 निजी उत्पादन इकाइयाँ

अधिकतर दुकानें, कार्यालय, फैक्ट्रियाँ निजी व्यक्तियों, समूहों या परिवारों के स्वामित्व में होते हैं। वे वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन बाजार में बिक्री के लिए, लाभ कमाने के उद्देश्य से करते हैं। निजी उत्पादन इकाइयों को स्वामियों की संख्या के आधर पर आगे वर्गीकृत किया जा सकता है। अधिकतर छोटी इकाइयाँ जैसे श्रमिक, धोबी, मोची, दर्जी, दूध बेचने वाला आदि एक व्यक्ति के स्वामित्व में होती हैं। किन्तु कुछ उत्पादन इकाइयाँ एक से अधिक व्यक्तियों के स्वामित्व में होती हैं। व्यक्तियों की संख्या 2, 20, 100, 1000 या एक लाख या इससे भी अधिक हो सकती है। स्वामियों की संख्या के आधार पर निजी क्षेत्र की उत्पादन इकाइयों को निम्न श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है।

(अ) एकल स्वामित्व

(ब) साझेदारी

(स) कम्पनी या निगम

(द) सहकारी समिति

(य) निजी गैर लाभकारी संगठन

**(अ) एकल स्वामित्व :** ऐसी उत्पादन इकाइयाँ एक व्यक्ति के स्वामित्व में होती है। वह उत्पादन इकाई के लाभ और हानि के लिये उत्तरदायी होता है। वह उत्पादन इकाई की व्यवस्था और संचालन के लिए उत्तरदायी होता है।

**(ब) साझेदारी :** ऐसी उत्पादन इकाइयाँ दो या अधिक व्यक्तियों के स्वामित्व में होती हैं। अधिकतम संख्या 20 होती है। इन उत्पादन इकाइयों के स्वामी फर्म के साझीदार कहलाते हैं। सभी साझीदार संयुक्त रूप से उत्पादन इकाई के संचालन और व्यवस्था के लिए उत्तरदायी होते हैं। लाभ और हानि का भाग साझीदारों में साझेदारी फर्म बनाते समय किए गए समझौते के अनुसार बाँट दिया जाता है।

(स) **कम्पनी या निगम :** इस प्रकार की उत्पादन इकाई बहुत से व्यक्तियों के स्वामित्व में होती हैं। कम्पनी में निवेश की गई पूंजी अंशों में बांट दी जाती है। इन अंशों को खरीदने वाले अंशधारी कहलाते हैं। वे सभी कम्पनी के स्वामी होते हैं। निजी कम्पनी में अंशधारियों की न्यूनतम संख्या 2 और अधिकतम संख्या 50 होती है। किन्तु सार्वजनिक कम्पनी में न्यूनतम संख्या 7 और अधिकतम संख्या की कोई सीमा नहीं होती। ये अंशधारी कुछ व्यक्तियों को कम्पनी की व्यवस्था के लिए चुनते हैं। जो कम्पनी के निदेशक कहलाते हैं। इन कम्पनियों की स्थापना कम्पनी अधिनियम 1956 के अन्तर्गत होती है। कम्पनी का लाभ अंशधारियों में, उनके पास होने वाले अंशों के आधार पर बांट दिया जाता है। टाटा आयरन व स्टील कम्पनी, रिलायन्स उद्योग लिमिटेड, बजाज आटो लिमिटेड, लिपटन इण्डिया लिमिटेड, कम्पनियों के कुछ उदाहरण हैं।

(द) **सहकारी समिति :** यह भी बहुत से व्यक्तियों द्वारा व्यवस्थित एक उत्पादन इकाई होती है। यह पारस्परिक लाभ के लिए गठित एक एच्छिक संस्था है। इसके उद्देश्यों की प्राप्ति पारस्परिक एवं सांझे प्रयासों के माध्यम से होती है। कुछ विषयों में यह कम्पनी के समान ही है। इसमें स्वामी भी अंशधारी कहलाते हैं। यह सहकारी समिति अधिनियम 1912 के अनुसार कार्य करती है। अंशधारियों की न्यूनतम संख्या 10 होती है परन्तु ऊपरी सीमा कोई नहीं है। अंशधारी अपनों में से ही कुछ व्यक्तियों को समिति की व्यवस्था के लिए चुन लेते हैं। समिति के लाभ अंशधारियों में उनके पास होने वाले अंशों के आधार पर बांट दिए जाते हैं। सहकारी भण्डार जो उपभोक्ताओं को विभिन्न प्रकार की वस्तुएं उचित मूल्य पर बेचते हैं और सहकारी गृह निर्माण समितियाँ जो अपने सदस्यों को मकान या फ्लैट उपलब्ध कराती हैं, सहकारी समितियों के उदाहरण हैं। केन्द्रीय भण्डार, जो उपभोक्ताओं को विभिन्न प्रकार की वस्तुएं उपलब्ध कराता है, एक बहुत बड़ी सहकारी समिति है।

(य) **निजी गैर लाभकारी संगठन :** कुछ निजी उत्पादन इकाइयाँ ऐसी है जो ट्रस्ट, समिति आदि संस्थाओं द्वारा चलाई जाती हैं जैसे धर्मार्थ अस्पताल, धर्मार्थ विद्यालय, कल्याण समितियाँ आदि। ऐसी उत्पादन इकाइयाँ अपनी सेवाएं मुख्य रूप से समिति के सदस्यों की सेवा के लिए बिना लाभ कमाने के उद्देश्य के उपलब्ध कराती हैं।

### 7.7.1.2 सरकारी उत्पादन इकाइयाँ

सरकार बहुत सी सेवाएं उपलब्ध कराती है जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य सुरक्षा, कानून और व्यवस्था, डाक व तार, परिवहन, दूरसंचार, प्रसारण आदि। इन सेवाओं को उपलब्ध कराने वाले कुछ संगठन सरकारी विभागों और मंत्रालयों द्वारा चलाए जाते हैं। वे विभागीय उद्यम कहलाते हैं। विभागीय उद्यमों के कुछ उदाहरण रेलवे मंत्रालय के आधीन भारतीय रेलवे, आकाशवाणी और दूरदर्शन जो कि सूचना और प्रसारण आदि मंत्रालय के आधीन प्रसार भारती के उद्यम हैं। इस प्रकार के उद्यमों के संचालन पर सरकार का प्रत्यक्ष नियन्त्रण होता है।

सरकारी उत्पादन इकाइयों का एक और प्रकार भी है जिन्हें सरकार का समर्थन तथा वित्त की व्यवस्था भी प्राप्त होती है किन्तु वे स्वतंत्र रूप से कार्य करते हैं। वे बड़े निगम होते हैं और प्रकृति में स्वायत्त होते हैं। ये इकाइयाँ गैर विभागीय उद्यम होती हैं और इन्हें सार्वजनिक क्षेत्रक

के उद्यम कहा जाता है। सार्वजनिक क्षेत्रक के उद्यमों के कुछ उदाहरण इंडियन एयरलाइन्स, भारतीय मशीन टूल्स (HMT), धातु व खनिज व्यापार निगम (MMTC), जीवन बीमा निगम (LIC), साधारण बीमा निमग (GIC), भारतीय तेल निगम (IOC) आदि हैं।

### 7.7.1.3 विदेशी उत्पादन इकाइयाँ

**विदेशी उत्पादन इकाई देश में स्थित होती है किन्तु इसका स्वामित्व विदेशियो अथवा देश के गैर निवासियों के हाथ में होता है।** इस प्रकार की उत्पादन इकाइयों में विदेशियों का योगदान कुल पूंजी का 50 प्रतिशत से अधिक होना चाहिए।

विदेशी उत्पादन इकाइयों का आगे इनमें वर्गीकरण किया जाता है।

(i) बहुराष्ट्रीय निगम

(ii) विदेशी सहयोग

(i) **बहुराष्ट्रीय निगम : ये वे निगम हैं जिनका मुख्य कार्यालय एक देश में होता है किन्तु इनकी व्यवसायिक क्रियाएं कई देशों में फैली होती हैं।** इन्हें बहुराष्ट्रीय निगम इसलिए कहा जाता है क्योंकि ये अपने मूल देश के अलावा एक से अधिक देशों में कार्य करते हैं। भारत में बहुराष्ट्रीय निगम के कुछ उदाहरण हैं, कोका कोला, पैप्सी कोला, जॉनसन एण्ड जानसन, माइक्रोसॉफ्ट, नौकिया, सोनी, सैमसंग, नैस्ले, वोडाफोन, एयरटैल, एलजी, गूगल, फोर्ड मोटर्स, हुण्डई आदि।

(ii) **विदेशी सहयोग : ये ऐसी उत्पादन इकाइयाँ है जिनमें विदेशी और घरेलू उद्यमी संयुक्त रूप से भाग लेते हैं।** इस प्रकार की उत्पादन इकाइयाँ आंशिक रूप से देशीय तथा आंशिक रूप से विदेशी होती हैं। स्वामित्व के आधार पर इन्हें विदेशी उत्पादन इकाइयाँ मान लिया जाता है, यदि इनकी कुल पूंजी में विदेशियों या गैर निवासियों का योगदान 50 प्रतिशत से अधिक होता है। विदेशी कम्पनी के सहयोग वाली भारतीय कम्पनी का एक अच्छा उदाहरण मारूति-सुजुकी लिमिटेड है।

### पाठगत प्रश्न 7.7

सही उत्तरों पर (√) का चिन्ह लगाइये।

1. एक व्यक्ति के स्वामितव में उत्पादन इकाइ कहलाती हैः

   (अ) साझेदारी (ब) एक निजी कम्पनी

   (स) एकल स्वामित्व (द) एक सार्वजनिक उत्पादन इकाई

2. एक साझेदारी में साझेदारों की अधिकतम संख्या हैः

   (अ) 5 (ब) 10

   (स) 15 (द) 20

3. भारतीय रेलवे है एकः

   (अ) निजी इकाई  (ब) सार्वजनिक इकाई

   (स) एकल स्वामित्व  (द) साझेदारी

4. एक सहकारी समिति में सदस्यों की न्यूनतम संख्या हैः

   (अ) 20  (ब) 15

   (स) 10  (द) 5

5. एक सार्वजनिक कम्पनी में अंशधारियों की अधिकतम संख्या हैः

   (अ) 10,000  (ब) 15,000

   (स) 20,000  (द) कोई सीमा नहीं

6. कम्पनी अधिनियम 1956 के अन्तर्गत पंजीकृत एक सरकारी उत्पादन इकाई हैः

   (अ) एक वैद्यानिक निगम  (ब) सरकारी कम्पनी

   (स) विभागीय उद्यम  (द) इनमें से कोई नहीं

7. एक निजी कम्पनी में स्वामियों की न्यूनतम संख्या हैः

   (अ) 7  (ब) 10

   (स) 2  (द) 20

8. किस स्थिति में एक उत्पादन इकाई एक विदेशी उत्पादन इकाई नहीं समझी जाती?

   (अ) कुल पूंजी गैर निवासियों द्वारा निवेश की जाती है।

   (ब) कुल पूंजी का 50 प्रतिशत से अधिक गैर-निवासियों द्वारा निवेश किया जाता है।

   (स) निवासियों की 50 प्रतिशत से अधिक पूंजी होती है।

   (द) निवासियों द्वारा 20 प्रतिशत से कम निवेश किया जाता है।

## आपने क्या सीखा

- उत्पादन प्रक्रिया एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें आगतों को जोड़कर, उनकी सेवाओं का प्रयोग कर, वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन किया जाता है।
- उद्यमी उत्पादन क्रिया की व्यवस्था करता है जिसके लिए वह लाभ अर्जित करता है अथवा हानि उठाता है।
- उत्पादन की दो प्रकार की तकनीकी होती है (i) श्रम गहन जिसमें हम श्रम का अधिक और पूंजी का कम प्रयोग करते हैं (ii) पूंजी गहन जिसमें हम पूंजी का अधिक और श्रम का कम प्रयोग करते हैं।

- श्रम विभाजन दो प्रकार का होता हैः
  - (i) उत्पाद आधारित श्रम विभाजन जिसमें एक श्रमिक एक वस्तु के उत्पादन में दक्षता प्राप्त करता है
  - (ii) प्रक्रिया आधारित श्रम विभाजन जिसमें किसी वस्तु के उत्पादन को विभिन्न प्रक्रियाओं में बांट दिया जाता है और एक श्रमिक एक या दो प्रक्रियाओं में दक्षता प्राप्त करता है।
- उत्पादन, सभी चार साधनों अर्थात भूमि, श्रम, पूंजी और उद्यमशीलता के संयुक्त प्रयासों का प्रतिफल है।
- कुल उत्पाद से अभिप्राय किसी एक आगत जैसे श्रम के एक निश्चित रोजगार के स्तर पर किसी वस्तु के उत्पादन की कुल मात्रा से है जबकि शेष सभी आगतों का रोजगार अपरिवर्तित रहता है।
- औसत उत्पाद, प्रति इकाई परिवर्तनशील आगत जैसे श्रम का उत्पाद है।
- सीमान्त उत्पाद को, श्रम की एक अतिरिक्त इकाई लगाने पर कुल उत्पाद में होने वाली वृद्धि या कमी के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।
- श्रम का सीमान्त उत्पादन ह्रास नियम यह बताता है कि परिवर्तनशील साधन श्रम में लगातार वृद्धि करने पर इसका सीमान्त उत्पाद आरम्भ में एक निश्चित बिन्दु तक बढ़ता है किन्तु इसके पश्चात यह घटेगा और ऋणात्मक हो सकता है यदि शेष सभी साधनों को अपरिवर्तित रखा जाय।
- फर्म एक उत्पादन इकाई है जो वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन बाजार में बिक्री के लिए, लाभ कमाने के उद्देश्य से करती है। उद्योग ऐसी सभी फर्मों का समूह है जो एक जैसी वस्तु का उत्पादन करती हैं। फर्म तथा उद्योग दोनों देश में आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं।
- स्वामित्व के आधार पर, उत्पादन इकाइयाँ देशीय और विदेशी उत्पादन इकाइयों में वर्गीकृत की जाती हैं। देशीय इकाइयाँ देश के निवासियों के स्वामित्व में होती है और विदेशी उत्पादन इकाइयाँ गैर निवासियों के स्वामित्व में होती हैं।
- देशीय इकाइयाँ निजी और सार्वजनिक क्षेत्रक की उत्पादक इकाइयों में वर्गीकृत की जाती हैं। निजी इकाइयाँ निजी व्यक्तियें और संस्थाओं के स्वामित्व में होती हैं। सार्वजनिक क्षेत्रक की इकाइयाँ सरकार के स्वामित्व में होती हैं।

  निजी क्षेत्रक की उत्पादन इकाइयों को (i) एकल स्वामित्व (ii) साझेदारी (iii) कम्पनी (iv) सहकारी समिति तथा (v) निजी गैर लाभकारी संगठन में वर्गीकृत किया जाता है।
- एक कम्पनी का निर्माण कम्पनी अधिनियम 1956 के अन्तर्गत होता है। सार्वजनिक कम्पनी में अंशधारियों की न्यूनतम संख्या 7 होती है। अधिकतम संख्या की कोई सीमा नहीं होती।
- सहकारी समिति का निर्माण सहकारी समिति अधिनियम 1912 के अन्तर्गत होता है। अंशधारियों की न्यूनम संख्या 10 होती है। अधिकतम संख्या की कोई सीमा नहीं है।

- सरकारी उत्पादन इकाइयाँ (i) विभागीय और (ii) गैर-विभागीय उद्यमों में वर्गीकृत की जाती है। विभागीय उद्यम किसी मंत्रालय के प्रत्यक्ष नियन्त्रण में होते हैं। गैर विभागीय उद्यम स्वायत्त होते हैं जिन्हें सार्वजनिक क्षेत्रक के उद्यम या निगम कहा जाता हैं
- विदेशियों के स्वामित्व में उत्पादन इकाइयाँ विदेशी उत्पादन इकाइयाँ कहलाती हैं। कुछ बहुराष्ट्रीय निगम होते हैं और कुछ विदेशी सहयोग में होते हैं। बहुराष्ट्रीय निगम का मुख्य कार्यालय किसी एक देश में होता है किन्तु इसकी उत्पादन इकाइयाँ कई देशों में होती हैं। विदेशी सहयोग संयुक्त रूप से निवासियों और गैर निवासियों के स्वामित्व में होते हैं।

## पाठान्त प्रश्न

1. उत्पादन प्रक्रिया की परिभाषा दीजिए।
2. एक उद्यमी एक उत्पादन इकाई की व्यवस्था कैसे करता है।
3. श्रम गहन और पूंजी गहन, उत्पादन की तकनीकी में भेद कीजिए।
4. उत्पाद आधारित और प्रक्रिया आधारित श्रम विभाजन में भेद कीजिए।
5. देशीय और विदेशी उत्पादन इकाईयों में भेद कीजिए।
6. निजी क्षेत्रक और सार्वजनिक क्षेत्रक की उत्पादन इकाइयों में भेद कीजिए।
7. एकल स्वामित्व और साझेदारी में अन्तर कीजिए।
8. एक कम्पनी और सहकारी समिति में भेद कीजिए।
9. विभागीय और गैर विभागीय उद्यमों में भेद कीजिए।
10. स्वायत्त निगम और सरकारी कम्पनियों में भेद कीजिए।
11. बहुराष्ट्रीय निगम और विदेशी सहयोग में अन्तर कीजिए।
12. फर्म और उद्योग में भेद कीजिए।
13. फर्म और उद्योगों की भूमिका और महत्व की व्याख्या कीजिए।

## पाठगत प्रश्नों के उत्तर

### पाठगत प्रश्न 7.1

1. उत्पादन में प्रयुक्त संसाधन आगत कहलाते हैं।
2. आगतों का प्रयोग करके वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन निर्गत कहलाता है।

3. उत्पादन फलन को, एक फर्म की आगतों और निर्गतों के तकनीकी सम्बन्ध के रूप में परिभाषित किया जाता है।

### पाठगत प्रश्न 7.2

1. हमारी वस्तु के उत्पादन में, प्रति इकाई उत्पाद में, श्रम का अधिक प्रयोग तथा पूंजी का कम प्रयोग, श्रम गहन तकनीकी कहलाता है।
2. हमारी वस्तु के उत्पादन में, प्रति इकाई उत्पाद में, पूंजी का अधिक प्रयोग तथा श्रम का कम प्रयोग, पूंजी गहन तकनीकी कहलाता है।
3. (i) उत्पाद आधारित : मिट्टी के बर्तन बनाना

   (ii) प्रक्रिया आधारित : डबल रोटी बनाना

### पाठगत प्रश्न 7.3

1. सीमान्त उत्पाद को शेष सभी आगतों को अपरिवर्तित रखने पर, श्रम की एक इकाई के परिवर्तन करने पर कुल उत्पाद में होने वाली वृद्धि अथवा कमी के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।
2.

| श्रम की इकाइयाँ | कुल उत्पाद (TP) | सीमान्त उत्पाद (MP) | औसत उत्पाद (AP) |
|---|---|---|---|
| 0 | 0 | - | - |
| 1 | 10 | 10 | 10 |
| 2 | 18 | 8 | 9 |
| 3 | 24 | 6 | 8 |
| 4 | 28 | 4 | 7 |
| 5 | 30 | 2 | 6 |
| 6 | 24 | -6 | 4 |

### पाठगत प्रश्न 7.4

1. सीमान्त उत्पाद ह्रास नियम के अनुसार, परिवर्तनशील साधन में लगातार वृद्धि करने पर, सीमान्त उत्पाद आरम्भ में, किसी विशेष बिन्दु तक बढ़ेगा किन्तु इसके पश्चात् यह घटेगा और ऋणात्मक भी हो सकता है, यदि शेष सभी साधनों को अपरिवर्तित रखा जाय।
2. कुल उत्पाद अधिकतम होगा।
3. जब सीमान्त उत्पाद ऋणात्मक हो जाता है।

### पाठगत प्रश्न 7.5

1. आगतों को प्राप्त करना, उनकी सेवाएं का प्रयोग करके, वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन की प्रक्रिया को, उत्पादन प्रक्रिया कहते हैं।
2. उद्यमी

### पाठगत प्रश्न 7.6

1. किसी वस्तु की एक व्यक्तिगत उत्पादन इकाई फर्म कहलाती है।
1. उद्योग उन सभी फर्मों का समूह है जो एक जैसी वस्तुओं का उत्पादन करती हैं।

### पाठगत प्रश्न 7.7

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. (स) | 2. (द) | 3. (ब) | 4. (स) |
| 5. (द) | 6. (ब) | 7. (स) | 8. (स) |

# 8

# लागत तथा आगम

एक उत्पादक को किसी वस्तु अथवा सेवा का उत्पादन करने के लिये कठिन परिश्रम करना पड़ता है। उसे इस प्रक्रिया में अनेक प्रयत्न करने पड़ते हैं। आरम्भ में, उत्पादन गतिविधि को संगठित करने के लिये उत्पादक को मुद्रा का प्रबंध करना पड़ता है। हम पहले ही कह चुके हैं कि किसी वस्तु का उत्पादन करने के लिये भूमि, श्रम तथा पूंजी के रूप में विभिन्न साधनों की आवश्यकता होती है। ये साधन निःशुल्क उपलब्ध नहीं होते। उत्पादक को उत्पादन में काम आने वाले इन साधनों को उचित मात्रा में क्रय करना पड़ता है। इसी प्रकार, कच्चे माल तथा अन्य वस्तुओं का भी क्रय करके संग्रह करना पड़ता है। इन वस्तुओं का क्रय करने के लिये उत्पादक को इनके लिये कीमत चुकाने के लिये तैयार रहना चाहिए।

एक बार जब वस्तु अथवा सेवाओं का उत्पादन हो जाता है तो उत्पादक उन्हें बाजार में विभिन्न उपभोक्ताओं को बेचता है। इस समय, वस्तु और सेवाओं को क्रय करने के लिए उपभोक्ता उत्पादक को कीमत का भुगतान करते हैं। इसके साथ ही उत्पादक मुद्रा अर्जित करना आरम्भ करता है। इस प्रकार, वस्तु और सेवाओं का उत्पादन करने के लिये, उत्पादन के साधनों का क्रय करने के लिये उत्पादक पहले व्यय करता है और फिर उपभोक्ताओं को वस्तुएं तथा सेवाएं बेचकर उनसे मुद्रा प्राप्त करता है।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- विभिन्न प्रकार की लागतों के बारे में जान पायेंगे;
- विभिन्न प्रकार की लागतों की गणना कर पायेंगे;
- आगम की अवधारणा को समझ पायेंगे।

## 8.1 लागत का अर्थ

लागत का अर्थ समझने के लिये एक कृषक का उदाहरण लेते हैं जो चावल/धान का उत्पादन कर रहा है। आप जानते हैं कि चावल के उत्पादन में सामान्यतः 5 से 6 महीने लगते हैं। चावल के उत्पादन में निम्नलिखित सम्मिलित हैं :

(i) फसल उगाने के लिये भूमि प्राप्त करना।

(ii) भूमि को तैयार करने के लिये श्रम का प्रयोग करना तथा इसे फसल उगाने के लिये उपयुक्त बनाना। इसमें खेत को जोतना, बीज बोना, खाद और उर्वरक डालना तथा भूमि की सिंचाई करना तथा अन्त में फसल काटना सम्मिलित हैं।

(iii) चावल को गोदाम/मण्डी तक ले जाना।

कृषक भूमि कैसे प्राप्त करता है? यह संभव है कि कृषक के पास अपने पूर्वजों की भूमि है। अन्यथा उसे लगान/किराया देकर दूसरों से भूमि किराये पर लेनी पड़ती है। उसके पास भारी राशि का भुगतान करके भूमि क्रय करने का भी विकल्प है। इस उदाहरण में हम मान लेते हैं कि कृषक ने 5 एकड़ भूमि किराये पर ली है।

मान लीजिये, जितने समय के लिये वह भूमि का उपयोग करता है उस पूरे समय के लिये उसे भू-स्वामी को 5000 रु. लगान का भुगतान करना पड़ता है।

कृषक को 5 महीने के लिये भूमि पर कार्य करने के लिये श्रमिकों की भी आवश्यकता पड़ती है। हम मान लेते हैं कि कृषक 4 श्रमिक मजदूरी पर रख लेता है। पहले दो महीनों में वह श्रमिकों का प्रयोग भूमि को जोतने, बीज बोने, पौधों को ढोकर लाने, उन्हें लगाने, उर्वरक डालने तथा खेत की सिंचाई करने के लिये करता है। श्रमिकों को मजदूरी पर रखने के लिये कृषक को मजदूरी का भुगतान करना पड़ता है। मान लीजिये, बाजार में औसत प्रचलित मजदूरी की दर 75 रु. प्रति श्रमिक प्रति दिन है। खड़ी फसल की देखरेख करने के लिये कृषक ने दो महीने के लिये केवल दो श्रमिकों का प्रयोग किया। जब फसल काटने का समय आता है तो वह फिर से 15 दिन के लिये 4 श्रमिकों को मजदूरी पर रख लेता है। कृषक द्वारा श्रमिकों को कुल कितनी राशि का भुगतान किया गया। सर्वप्रथम, 4 श्रमिकों ने 2 महीने अथवा 60 दिन कार्य किया। इस प्रकार 75 रु. प्रति श्रमिक प्रति दिन के हिसाब से यह $75 \times 4 \times 60 = 18000$ रु. होता है। फिर 2 श्रमिकों ने दो महीने कार्य किया। इस प्रकार यह $75 \times 2 \times 60 = 9000$ रु. हुआ। अन्त में, 4 श्रमिकों ने 15 दिन कार्य किया। यह $75 \times 4 \times 15 = 4500$ रु. हुआ। श्रमिकों को कुल भुगतान $18000 + 9000 + 4500 = 31{,}500$ रु. हुआ।

फसल उगाने में कृषक कुछ कच्चे माल जैसे - बीज, जल, उर्वरक, कीट नाशक आदि का प्रयोग करता है जिसके लिये उसने मान लीजिये 3000 रु. का व्यय किया है। उसने ट्रैक्टर का प्रयोग भी किया है जिसके लिये वह 2500 रु. किराये का भुगतान करता है। फसल काटने पर कृषक, मान लीजिये, 30 क्विंटल चावल का उत्पादन करता है।

अव, चावल के उत्पादन में कृषक द्वारा किय गये कुल व्यय की गणना कीजिये। उसे हम निम्नलिखित ढंग से कर सकते हैं :

| मद | व्यय (रु.) |
|---|---|
| भू-स्वामी को लगान का भुगतान | 5,000 |
| श्रमिक को मजदूरी | 31,500 |
| कच्चा माल | 3,000 |
| ट्रैक्टर की सेवाएं | 2,500 |
| **कुल** | **42,000** |

हम कह सकते हैं कि कृषक ने 30 क्विंटल चावल का उत्पादन करने में 42000 रु. का व्यय किया है।

### लागत की परिभाषा

**लागत से अभिप्राय वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में उत्पादक द्वारा उत्पादन के साधनों तथा कच्चे माल के क्रय अथवा उनकों किराये पर लेने में किये जाने वाले मुद्रा के व्यय से है।**

एक प्रकार से लागत से अभिप्राय उत्पादक द्वारा किये गये त्याग से है। उपर्युक्त उदाहरण में त्याग भुगतान करने के रूप में किया गया था; जैसे श्रमिकों को मजदूरी, भूमि का लगान तथा ट्रैक्टर उपयोग के लिये किराया तथा कच्चे माल आदि पर किये गये व्यय।

### पाठगत प्रश्न 8.1

1. कृषक द्वारा उत्पादन के साधनों को किये गये भुगतानों के नाम लिखो।
2. लागत को कौन वहन करता है?

## 8.2 लागत के प्रकार

उपरोक्त उदाहरण के आधार पर हम निम्नलिखित प्रकार की लागतों में भेद कर सकते हैं:

(क) स्थिर लागत

(ख) परिवर्ती लागत

(ग) स्पष्ट लागत

(घ) अस्पष्ट लागत

अब हम इनकी एक-एक करके चर्चा करेंगे।

(क) **स्थिर लागत :** उपर्युक्त उदाहरण में हमने बताया कि कृषक ने भू-स्वामी को 5000 रु. लगान के रूप में भुगतान किया। एक बार जब कृषि के लिये भूमि प्राप्त कर ली गई तो कृषक को उसके लिये लगान का भुगतान करना ही पड़ेगा चाहे वह उस पर कोई उत्पादन करे या न करे। यहाँ भूमि उत्पादन का एक स्थिर साधन है। क्योंकि चाहे कृषक पूरी 5 एकड़ भूमि पर कृषि करे या न करे उसे पूरी 5 एकड़ भूमि के लगान का भुगतान करना ही पड़ेगा। यह स्थिर है। अतः **स्थिर लागत से अभिप्राय उस व्यय से है जो स्थिर साधनों/आगतों को किराये पर लेने अथवा क्रय करने पर किया जाता है, जो अनिवार्य है तथा वस्तु एवं सेवाओं के उत्पादन की मात्रा पर निर्भर नहीं करता।** इसी प्रकार, ट्रैक्टर के उपयोग के लिये किराये का भुगतान भी एक स्थिर लागत है।

(ख) **परिवर्ती लागत :** उपर्युक्त उदाहरण में, कृषक ने 31500 रु. श्रमिकों की मजदूरी तथा 3000 रु. कच्चे माल के क्रय के लिये भुगतान किया। कितनी मजदूरी का भुगतान किया गया यह इस बात पर निर्भर करता है कि कृषक ने कितने श्रमिकों को मजदूरी पर लगाया।

उत्पादन के साधन के रूप में श्रम को परिवर्तित किया जा सकता है। उदाहरण में, हमने बताया कि उत्पादक ने प्रथम दो महीने के लिये 4 श्रमिक तथा अगले दो महीने के लिए केवल 2 श्रमिकों का प्रयोग किया। ऐसा इसलिये है क्योंकि आरम्भ में कार्य का भार अधिक था तथा अधिक श्रमिकों की आवश्यकता थी। तदनुसार, मुद्रा की अधिक राशि अर्थात 18000 रु. का भुगतान किया गया। लेकिन जब अगले दो महीनों में कार्य का भार कम था केवल 2 श्रमिकों को मजदूरी पर लगाया गया और तदनुसार मजदूरी का बिल भी घटकर 9000 रु. हो गया। इसलिये, मजदूरी के भुगतान में परिवर्तन किया जा सकता है। इसी कारण इसे परिवर्ती लागत कहते हैं। **परिवर्ती लागत से अभिप्राय परिवर्ती साधनों/आगतों जैसे श्रम पर किये जाने वाले व्यय से है, जिसमें परिवर्तन किया जा सकता है।**

(ग) **स्पष्ट लागत :** कृषक द्वारा लगान तथा मजदूरी दोनों का भुगतान तथा उसके द्वारा कच्चे माल पर किए गये व्यय को स्पष्ट लागत भी कहते हैं। स्पष्ट लागत को उत्पादक द्वारा दोनों स्थिर तथा परिवर्ती साधनों तथा कच्चे माल आदि पर किये जाने वाले मौद्रिक व्यय के रूप में परिभाषित किया जाता है। ये प्रत्यक्ष भुगतान होते हैं तथा इनकी उचित गणना की जाती है और इनका पृथक लेखा किया जाता है। उत्पादक के पास इनसे सम्बन्धित बिल, रसीद आदि प्रमाण होते हैं।

(घ) **अस्पष्ट लागत :** वस्तु और सेवाओं का उत्पादन करने में उत्पादन के साधन तथा कच्चा माल क्रय करने के अतिरिक्त उत्पादक अपने निजी साधनों तथा सामग्री का भी प्रयोग करता है। इनके लिये वह स्वयं को मुद्रा का कोई भुगतान नहीं करता है, बल्कि वह इस व्यय का भार अप्रत्यक्ष रूप से वहन करता है। मान लीजिये, एक कृषक भूमि को जोतने के लिये अपने ट्रैक्टर का प्रयोग करता है। यदि उसने ट्रैक्टर किसी अन्य से किराये पर लिया होता तो उसे उसके लिये किराये का भुगतान करना पड़ता। इस स्थिति में इसे कृषक की स्पष्ट लागत कहा जाता। हम मान लें कि ट्रैक्टर की सेवाओं को एक विशेष समय के प्रयोग के लिये किराया 3000 रु. है। इस प्रकार यदि कृषक अपने ट्रैक्टर को किराये पर देता है तो वह 3000 रु. कमा सकता है। अन्यथा, यदि वह इसका उपयोग स्वयं करता है तो वह उत्पादन में 3000 रु. के मूल्य का उपयोग करेगा। इस स्थिति में, इसे कृषक की अस्पष्ट लागत कहा जायेगा। इस प्रकार अस्पष्ट लागत स्वयं के द्वारा आपूर्ति किये जाने वाले साधनों की लागत है। इस प्रकार के लागत के मूल्य की गणना बाजार मूल्य के आधार पर की जाती है।

## 8.3 कुल तथा औसत लागत

कुल लागत कुल स्थिर लागत तथा कुल परिवर्ती लागत का योग होती है। जिनका भुगतान स्पष्ट रूप से किया गया है। औसत कुल लागत अथवा औसत लागत, कुल लागत तथा उत्पादन की कुल मात्रा का अनुपात होती है। हम इसे इस प्रकार से भी लिख सकते हैं:

$$\text{कुल लागत (TC)} = \text{कुल स्थिर लागत} + \text{कुल परिवर्ती लागत}$$

$$\text{औसत लागत (AC)} = \frac{\text{कुल लागत}}{\text{उत्पादन की कुल मात्रा}}$$

औसत लागत उत्पादन की प्रति इकाई लागत होती है।

### सीमान्त लागत (MC)

यदि उत्पादक उत्पादन में वृद्धि करना चाहता है तो उसे श्रम की अतिरिक्त इकाइयां कार्य पर लगानी होगी। श्रम की अतिरिक्त इकाइयों से श्रम की मजदूरी के भुगतान पर अतिरिक्त व्यय होगा। परिणाम स्वरूप, उत्पादन की कुल लागत में वृद्धि हो जाएगी। संक्षेप में, उत्पादन की कुल मात्रा में वृद्धि से उत्पादन की कुल लागत में वृद्धि हो जाएगी। इस संदर्भ में, सीमान्त लागत को उत्पादन में एक अतिरिक्त इकाई की वृद्धि करने पर कुल लागत में होने वाली वृद्धि के रूप में परिभाषित किया जाता है।

**उदाहरण :** मान लीजिये एक दर्जी कुल लागत 1110 रु. लगाकर 10 कमीज तैयार करता है। फिर वह 11 कमीजों का उत्पादन करता है जिसके लिये उसने कुल लागत के रूप में 1199 रु. व्यय किये। सीमान्त लागत कितनी है?

उत्तरः यहाँ उत्पादन में वृद्धि 11 – 10 = 1 इकाई है। उत्पादन में 1 इकाई की वृद्धि के कारण कुल लागत में वृद्धि 1199 – 1110 = 89 रु. है। अतः यहाँ सीमान्त लागत 89 रु. है।

### पाठगत प्रश्न 8.2

1. यदि किसी वस्तु की 48 इकाइयों का उत्पादन किया जाता है तथा कुल स्थिर लागत 180 रु. और कुल परिवर्ती लागत 300 रु. है तो उत्पादन की औसत लागत कितनी होगी?
2. स्पष्ट लागत की परिभाषा लिखिये।
3. प्रश्न 1 में यदि उत्पादन बढ़कर 49 इकाई हो जाए जिसके कारण कुल परिवर्ती लागत 307 रु. हो जाती है तो सीमान्त लागत कितनी है?

## 8.4 सीमान्त लागत तथा औसत लागत की तुलना

उपरोक्त उदाहरण में, जैसा कि ऊपर गणना की गई है, सीमान्त लागत का एक मूल्य है, लेकिन हम औसत लागत के दो विभिन्न मूल्यों की गणना कर सकते हैं।

औसत लागत का प्रथम मूल्य 10 कमीजों के उत्पादन पर कुल लागत 1110 रु. से सम्बन्धित है।

अतः $$AC = \frac{1110}{10} = 111 \text{ रु.}$$

औसत लागत का द्वितीय मूल्य 11 कमीजों के उत्पादन पर कुल लागत 1199 रु. से सम्बन्धित है

यहाँ $$AC = \frac{1199}{11} = 109 \text{ रु.}$$

इससे हम कह सकते है कि औसत लागत की गणना उत्पादन के दिये गये प्रत्येक स्तर पर होती है। दूसरी ओर, सीमान्त लागत की गणना तब की जाती है जब उत्पादन के स्तर में एक इकाई

की वृद्धि होती है। अर्थात सीमान्त लागत की गणना उत्पादन के दो आनुक्रमिक स्तरों के बीच में की जाती है।

हम उपर्युक्त उदाहरण को नीचे दी गई तालिका के रूप में भी व्यक्त कर सकते हैं:

| उत्पादन की इकाइयां (कमीज) | कुल लागत (रु.) | औसत लागत (रु.) | सीमान्त लागत (रु.) |
|---|---|---|---|
| 10 | 1110 | 111 | - |
| 11 | 1199 | 109 | 89 |

## 8.5 आगम

अर्थशास्त्र में आगम एक अन्य बहुत महत्वपूर्ण अवधारणा है। वास्तव में, यदि हम आगम के बारे में बात न करे तो लागत का अध्ययन पूर्ण नहीं होगा। आगम क्या है?

### आगम की परिभाषा

**आगम को एक विक्रेता द्वारा वस्तु की एक निश्चित मात्रा के विक्रय से प्राप्त राशि के रूप में परिभाषित किया जाता है।**

आप जानते हैं कि किसी वस्तु का क्रय एक निश्चित राशि का भुगतान करने पर किया जा सकता है। इस प्रकार आगम की गणना वस्तु की मात्रा को उसकी कीमत से गुणा करके की जा सकती है। अतः हम लिख सकते हैं :

आगम = वस्तु की कीमत × वस्तु की मात्रा

दी गई समय अवधि में, विक्रेता वस्तु की एक निश्चित मात्रा का विक्रय करता है। इस प्रकार उस समय अवधि में विक्रेता द्वारा प्राप्त कुल मौद्रिक राशि को कुल आगम कहते हैं। इसे हम TR द्वारा सूचित करते है। जहाँ TR कुल आगम है। यदि हम कीमत को P तथा मात्रा को Q द्वारा सूचित करें तो हम लिख सकते हैं:

कुल आगम = कीमत × मात्रा

अथवा $TR = P \times Q$

उदाहरण : 'लागत' वाले भाग में कृषक के उदाहरण पर फिर से दृष्टि डालें। सोचिये कि कृषक ने 30 क्विंटल चावल का उत्पादन किया। हम मान लें कि बाजार में चावल की कीमत 1600 रु. प्रति क्विंटल है। यदि कृषक अपने सारे चावल को बेच देता है तो वह 1600 × 30 = 48000 रु. अर्जित करेगा। इस प्रकार उसका कुल आगम 48000 रु. होगा।

इस उदाहरण से हम यह भी कह सकते कि आगम उत्पादक अथवा विक्रेता द्वारा अपने उत्पादन के विक्रय से प्राप्त धन राशि है।

कुल आगम के लिये प्रयोग किये जाने वाला अन्य शब्द कुल विक्रय प्राप्ति है, क्योंकि आगम किसी वस्तु के विक्रय से प्राप्त होता है। इसे उस वस्तु से कुल विक्रय-प्राप्ति भी कहते है।

## पाठगत प्रश्न 8.3

1. एक विक्रेता 1 क्विंटल गेहूँ का विक्रय करता है। गेहूँ की कीमत 15 रु. प्रति कि. ग्रा. है। उसका कुल आगम कितना है?

आपको ध्यान रखना चाहिये कि प्रत्येक वस्तु की अपनी कीमत होती है। एक खुदरा विक्रेता, क्रेताओं को विभिन्न वस्तुओं का विक्रय करता है। एक विक्रेता प्रोविजन स्टोर में अनेक वस्तुओं का विक्रय करता है; जैसे चावल, गेहूँ, गेहूँ का आटा, विभिन्न किस्मों की दाल बिस्कुट, खाद्य तेल आदि। आपको चावल की भी अनेक किस्में मिल सकती हैं, जैसे बासमती, परमल, सेला आदि; खाद्य तेल भी विभिन्न प्रकार के होते हैं; जैसे रिफाइन्ड, वनस्पति तेल, सनफ्लावर तेल, सरसो का तेल, सोयाबीन तेल आदि। एक खुदरा विक्रेता अनेक प्रकार की वस्तुओं तथा एक ही वस्तु की अनेक किस्मों का विक्रय करता है। इस प्रकार एक निश्चित अवधि में जैसे एक सप्ताह में उसका कुल आगम कितना होगा? उत्तर बहुत सरल है। सर्वप्रथम, उस सप्ताह में उसके द्वारा विक्रय की जाने वाली वस्तुओं की कीमतों की एक सूची तैयार कीजिये। द्वितीय, सम्बन्धित वस्तुओं की मात्राओं की एक सूची तैयार कीजिये। तृतीय, दिये गये सप्ताह के लिये दुकानदार का कुल आगम प्राप्त कीजिये। इसे हम निम्न प्रकार से स्पष्ट कर सकते हैं।

**उदाहरण :** विचार कीजिये कि दुकानदर ने 100 कि.ग्रा. चावल, 70 लीटर सनफ्लावर तेल, 100 पैकेट बिस्कुट तथा 150 कि.ग्रा. गेहूँ के आटे का इस दिये गये सप्ताह में विक्रय किया। कीमतें इस प्रकार हैं - बासमती चावल 35 रु. प्रति कि.ग्रा., सनफ्लावर तेल 90 रु. प्रति लीटर, बिस्कुट 10 रु. प्रति पैकेट तथा गेहूँ का आटा 22 रु. प्रति कि.ग्रा.।

दुकानदार के कुल आगम की गणना हम निम्नलिखित ढंग से कर सकते हैं:

(i) चावल से कुल आगम = 35 × 100 = 3500 रु.

(ii) तेल से कुल आगम = 90 × 70 = 6300 रु.

(iii) आटे से कुल आगम = 22 × 150 = 3300 रु.

(iv) बिस्कुट से कुल आगम = 10 × 100 = 1000 रु.

सभी वस्तुओं से कुल आगम = 14,100 रु.

इस प्रकार सभी वस्तुओं से दुकानदार का कुल आगम 14,100 रु. है।

## 8.6 औसत आगम तथा सीमान्त आगम

### औसत आगम (AR)

औसत आगम को AR द्वारा सूचित किया जाता है। इसकी गणना कुल आगम से की जाती है। औसत आगम के लिये सूत्र है:

$$\text{औसत आगम} = \frac{\text{कुल आगम}}{\text{विक्रय की गई मात्रा}}$$

$$\text{सांकेतिक रूप में,}\quad AR = \frac{TR}{Q}$$

अकेली वस्तु की स्थिति में, हम जानते है कि $TR = P \times Q$

$$\text{इस प्रकार}\quad AR = \frac{P \times Q}{Q} = P$$

किसी वस्तु का औसत आगम तथा उसकी कीमत समान ही होते हैं।

### सीमान्त आगम (MR)

सीमान्त आगम को उत्पादन की मात्रा के विक्रय में एक इकाई की वृद्धि करने पर कुल आगम में होने वाली वृद्धि के रूप में परिभाषित किया जाता है।

निम्न उदाहरण पर विचार कीजिये। यदि विक्रेता बिक्री को 21 कि.ग्रा. कर देता है तो इस स्थिति में कुल आगम अथवा TR $50 \times 21 = 1050$ रु. हो जाता है। पहले जब कि बिक्री 20 कि. ग्रा. थी तो TR = 1000 रु. था। इसलिये MR = 1050 – 1000 = 50. रु.।

इसे हम निम्न तालिका द्वारा प्रदर्शित कर सकते हैं:

| विक्रय की मात्रा (कि.ग्रा.) | कीमत अथवा AR (प्रति कि.ग्रा.) | TR (रु.) | MR (रु.) |
|---|---|---|---|
| 20 | 50 | 1000 | - |
| 21 | 50 | 1050 | 50 |

### AR तथा MR की तुलना

यह स्मरण रखना चाहिये कि औसत आगम की गणना वस्तु के विक्रय के दिये गये प्रत्येक स्तर के लिये की जाती है जबकि सीमान्त आगम की गणना वस्तु के विक्रय के दो आनुक्रमिक स्तरों के बीच की जाती है। (यह पूर्व की भांति ही औसत लागत तथा सीमान्त लागत के समान है)

### एक महत्वपूर्ण ध्यान देने योग्य बात

दिये गये उदाहरण में हम देख सकते हैं कि यदि विक्रेता वस्तु की दी गई आनुक्रमिक मात्राओं को दी गई अथवा समान कीमत पर बेच सकता है तो AR तथा MR समान होंगे। यह सूचित करता है कि यदि बाजार में वस्तु की विभिन्न मात्राओं के लिये कीमत में परिवर्तन होगा तो AR तथा MR एक दूसरे से भिन्न होंगे।

**उदाहरण :** 1 कि.ग्रा. अमरूद की कीमत 50 रु. है। विक्रेता ने 2 दिन में 20 कि.ग्रा. अमरूद बेचे। उसका औसत आगम कितना है?

**उत्तर :** कुल आगम $50 \times 20 = 1000$ रु. है, जब मात्रा 20 कि.ग्रा. है।

इस प्रकार $AR = \frac{1000}{20} = 50$ रु.

(यहाँ कीमत 50 रु. प्रति कि.ग्रा. है, इसलिये AR = 50 रु.)

**उदाहरणः** उपर्युक्त उदाहरण को जारी रखते हुए यदि विक्रेता 21 कि.ग्रा. अमरूद उसी कीमत पर बेच सकता है तो सीमान्त आगम कितना होगा?

**उत्तरः** अब, $TR = 50 \times 21 = 1050.$ रु.

पहले, $TR = 1000.$ रु.

इस प्रकार $MR = 1050 - 1000 = 50$ रु.

उदाहरणः एक दुकानदार 10 कि.ग्रा. चावल 30 रु. प्रति कि.ग्रा. तथा 11 कि.ग्रा. चावल 29 रु. प्रति कि.ग्रा. की दर से बेचता है। सीमान्त आगम कितना है?

उत्तरः पहली स्थिति में $TR = 10 \times 30 = 300$ रु.

दूसरी स्थिति में $TR = 11 \times 29 = 319$ रु.

इस प्रकार $MR = 319 - 300 = 19$ रु.

## पाठगत प्रश्न 8.4

1. किसी वस्तु के औसत आगम तथा उसकी कीमत में क्या अन्तर होता है?
2. कुल आगम तथा औसत आगम कैसे सम्बन्धित हैं?

## 8.7 आगम तथा लागत का उपयोग

अर्थशास्त्र में आगम तथा लागत दोनों ही महत्वपूर्ण अवधारणाएं हैं। जबकि लागत उत्पादन प्रक्रिया में किसी वस्तु अथवा सेवा के उत्पादन करने में किया गया व्यय है, आगम उस वस्तु अथवा सेवा के विक्रय से उत्पादक को प्राप्त मुद्रा है। इस प्रकार लागत उत्पादक के द्वारा किये गये त्याग को प्रकट करती है तथा आगम उत्पादक की प्राप्तियों को प्रकट करता है। वस्तु के विक्रय से आवश्यक आगम प्राप्त करने से उत्पादक उस लागत को पुनः प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है जो उसने पहले लगाई है। उस स्थिति में हम कहते हैं कि उत्पादक ने अपना उचित हिस्सा अर्जित किया है जिसे हम लाभ कहते हैं। हम लाभ को उत्पादन की कुल लागत पर कुल आगम के आधिक्य के रूप में परिभाषित कर सकते हैं।

लाभ = कुल आगम – कुल लागत

## पाठगत प्रश्न 8.5

1. यदि उत्पादन 50 इकाई, कीमत 10 रु. प्रति इकाई, स्थिर लागत 110 रु., परिवर्ती लागत 150 रु. है तो लाभ कितना है?

## आपने क्या सीखा

- लागत उत्पादन प्रक्रिया में किसी वस्तु अथवा सेवा के उत्पादन करने में किया गया व्यय है।
- स्थिर लागत उत्पादन के स्थिर साधनों पर किया गया व्यय है।
- परिवर्ती लागत उत्पादन के परिवर्ती साधनों पर किया गया व्यय है।
- स्पष्ट लागत उत्पादन में उत्पादक द्वारा किया गया मौद्रिक व्यय होता है।
- अस्पष्ट लागत स्वयं द्वारा आपूर्ति किये गये साधनों की लागत होती है।
- औसत लागत उत्पादन की प्रति इकाई लागत होती है।
- आगम विक्रेता द्वारा प्राप्त वह राशि है जो उसे दी गई कीमत पर वस्तु की निश्चित मात्रा के विक्रय से प्राप्त होती है।
- औसत आगम $= \dfrac{\text{कुल आगम}}{\text{विक्रय की मात्रा}}$
- सीमान्त आगम वस्तु की मात्रा की बिक्री में एक इकाई का परिवर्तन होन पर कुल आगम में होने वाला परिवर्तन है।
- लाभ = कुल आगम – कुल लागत

## पाठान्त प्रश्न

1. स्थिर लागत तथा परिवर्ती लागत में भेद कीजिये।
2. स्पष्ट लागत तथा अस्पष्ट लागत में अन्तर लिखिये।
3. आप कुल लागत तथा औसत लागत की गणना कैसे कर सकते हैं?
4. आप कुल आगम तथा औसत आगम की गणना कैसे कर सकते हैं?
5. आगम तथा लागत में अन्तर लिखिये। उत्पादक को इनकी गणना क्यों करनी चाहिये?

## पाठगत प्रश्नों के उत्तर

### पाठगत प्रश्न 8.1

1. भूमि - लगान
   श्रम - मजदूरी
   ट्रैक्टर की सेवा - लगान
   तथा कच्चे माल के लिये भुगतान
2. उत्पादक लागत वहन करता है।

### पाठगत प्रश्न 8.2

1. TC = TFC + TVC

$= 180 + 300$

$= \text{Rs } 480$

$$AC = \frac{TC}{TQ}$$

$$= \frac{480}{48} = 10 \text{ रु. प्रति इकाई}$$

2. स्पष्ट लागत से अभिप्राय किसी वस्तु के उत्पादन में उत्पादक द्वारा किये जाने वाले मौद्रिक व्यय से है।

3. TC = 180 + 307

$= 487$ रु.

MC = 487 – 480

$= 7$ रु.

### पाठगत प्रश्न 8.3

1. कुल आगम = 100 कि.ग्रा. × 15 रु. = 1500 रु.

### पाठगत प्रश्न 8.4

1. औसत आगम प्रति इकाई आगम होता है।

   वस्तु की कीमत वस्तु की प्रत्येक इकाई से उत्पादक को मिलने वाली राशि होती है।

   तथापि, AR = कीमत

2. TR = Q × P

$$AR = \frac{TR}{Q}$$

$$= \frac{Q \times P}{Q}$$

$= P$

अतः औसत आगम = कीमत

### पाठगत प्रश्न 8.5

1. लाभ = 240 रु.

# मॉड्यूल 4 : वस्तुओं और सेवाओं का वितरण

9. मांग
10. आपूर्ति
11. कीमत और मात्रा का निर्धारण
12. बाजार
13. कीमत और मात्रा के निर्धारण में सरकार की भूमिका

# 9

# मांग

हम पहले ही पाठ 2 में आवश्यकताओं के बारे में पढ़ चुके हैं। इन आवश्यकताओं की संतुष्टि करने के लिये, हम बाजार से वस्तुओं एवं सेवाओं का क्रय करते हैं। हम वस्तुओं एवं सेवाओं को भिन्न-भिन्न कीमते चुका कर खरीदते है। आज कल बाजार अनेक प्रकार की वस्तुओं से भरा पड़ा है। इसलिये किसी वस्तु को खरीदने से पहले हमें चयन करना पड़ता है। लेकिन केवल चयन करना अथवा किसी विशेष वस्तु को क्रय करने के लिए चुनना ही काफी नहीं है। जब हम बाजार जाते है तो हम कुछ मुद्रा अपने साथ ले जाते हैं जिसे हम वस्तु और सेवाओं के खरीदने में प्रयोग करते हैं। एक उपभोक्ता के रूप में हम वस्तुओं अथवा सेवाओं की कितनी मात्रा अथवा उनके किस संयोग का क्रय करेंगे, यह हमारे पास मुद्रा की मात्रा, कीमत जो हमें चुकानी है, वस्तुओं की हमारी रूचि आदि पर निर्भर करता है। इन सभी चीजों को मांग के अध्ययन में सम्मिलित किया जाता है जो बाजार में हमारे उपभोक्ता के रूप में व्यवहार को प्रदर्शित करता है।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- मांग की अवधारणा की व्याख्या कर पायेंगे;
- किसी वस्तु की व्यक्तिगत मांग तथा बाजार मांग में अन्तर समझ पायेंगे;
- मांग को प्रभावित करने वाले कारकों को समझ पायेंगे;
- मांग के नियम को बता पायेंगे तथा कीमत और मांगी गई मात्रा में सम्बन्ध स्थापित कर पायेंगे;
- व्यक्तिगत मांग वक्र की रचना कर पायेंगे;
- व्यक्गित मांग वक्र के आकार की व्याख्या कर पायेंगे।

## 9.1 मांग का अर्थ

मान लिजिये, वर्षा गत सप्ताह बाजार गई थी और अपने लिये उसने निम्नलिखित खरीदारी की।

1. 1 कि.ग्रा. चावल, 25 रु. प्रति कि.ग्रा. कीमत पर
2. 0.5 कि.ग्रा. अरहर की दाल, 68 रु. प्रति कि.ग्रा. कीमत पर
3. 1 कि. ग्रा. गेहूँ का आटा, 24 रु. प्रति कि.ग्रा. कीमत पर
4. 2 कि.ग्रा. आम, 50 रु. प्रति कि.ग्रा. कीमत पर

जब भी कोई बाजार में किसी वस्तु का क्रय करता/करती है, उसे उस वस्तु के लिये दी हुई कीमत चुकानी पड़ती है तथा तदनुसार, एक दी गई अवधि में उपभोग के लिये वह उसकी एक निश्चित मात्रा खरीदता/खरीदती है, जैसा कि वर्षा ने किया।

## मांग की परिभाषा

**वस्तु की वह मात्रा जो एक दी गई कीमत पर दिये गये समय में खरीदी जाती है, मांग कहलाती है।**

हम मांग के विभिन्न घटकों को प्रदर्शित करने के लिये उपर्युक्त उदाहरणों को निम्न प्रकार अभिव्यक्त कर सकते हैं:

| क्रम सं. | वस्तु का नाम | कीमत (रु. प्रति कि.ग्रा.) | मात्रा (कि.ग्रा.) | समय अवधि |
|---|---|---|---|---|
| 1. | चावल | 25 | 1.0 | गत सप्ताह |
| 2. | अरहर की दाल | 68 | 0.5 | गत सप्ताह |
| 3. | गेहूँ का आटा | 24 | 1.0 | गत सप्ताह |
| 4. | आम | 50 | 2.0 | गत सप्ताह |

अतः मांग की परिभाषा में तीन घटक सम्मिलित होते हैं:

(अ) वस्तु की कीमत

(ब) वस्तु की खरीदी गई मात्रा

(स) समय अवधि

ध्यान दीजिये कि समय अवधि भिन्न-भिन्न हो सकती हैं। यह सप्ताह, मास, वर्ष आदि हो सकती है।

अतः मांग के उपर्युक्त उदाहरणों को इस प्रकार लिखा जा सकता है:

1. वर्षा ने गत सप्ताह 25 रु. प्रति कि.ग्रा. कीमत पर 1 कि.ग्रा. चावल खरीदा। यह वर्षा की चावल की मांग है।
2. वर्षा ने गत सप्ताह 50 रु. प्रति कि.ग्रा. कीमत पर 2 कि.ग्रा. आम खरीदे। यह वर्षा की आमों की मांग है तथा इसी प्रकार।

अब निम्नलिखित उदाहरणों को पढ़िये :

(i) नितिन ने पिछले महीने 2 जोड़ी जूते खरीदे।

(ii) मि. जाफरी ने 40 रु. प्रति कि.ग्रा. कीमत पर 5 कि.ग्रा. सेब खरीदे।

(iii) श्रीमती हरमीत कौर ने पिछले महीने दूध के लिये 25 रु. प्रति लीटर भुगतान किया।

क्या ये मांग के उदाहरण हैं? नहीं। आप आसानी से देख सकते हैं कि नितिन के मामले में, जूतों के एक जोड़े की कीमत नहीं दी गई है। मि. जाफरी के मामले में, समय अवधि का उल्लेख नहीं किया गया है। अन्त में श्रीमती हरमती कौर के मामले में दूध की उपभोग की गई मात्रा नहीं दी गई है।

### पाठगत प्रश्न 9.1

1. मांग की परिभाषा लिखिये।

2. मांग की परिभाषा में शामिल किये जाने वाले तीन घटकों के नाम लिखिये।

## 9.2 मांग तथा इच्छा में अन्तर

अनेक अवसरों पर लोग इच्छा तथा मांग में भ्रमित हो जाते हैं तथा इनका प्रयोग एक दूसरे के स्थान पर करते हैं। वास्तव में, ये दो भिन्न शब्द हैं। मांग ऐसी इच्छा होती है जिसके पीछे क्रय करने की योग्यता भी हो। इससे तात्पर्य है कि यदि किसी व्यक्ति को एक वस्तु प्राप्त करने की इच्छा है, तो वह उसकी मांग कर सकता है/सकती है यदि उसके पास कीमत चुका कर खरीदने के लिये मुद्रा हो। कोई भी व्यक्ति किसी भी वस्तु अथवा सेवा की इच्छा कर सकता है। परन्तु केवल किसी वस्तु की इच्छा मात्र से ही बिना कीमत चुकाये वह उस वस्तु को प्राप्त नहीं कर सकता। यदि वस्तु की इच्छा करने वाला व्यक्ति उसकी कीमत चुका देता है तो यह उस व्यक्ति द्वारा उस वस्तु की मांग बन जाती है। उपर्युक्त उदाहरण को एक बार फिर से लें - "वर्षा ने गत सप्ताह 50 रु. प्रति कि.ग्रा. कीमत पर 2 कि.ग्रा. आम खरीदे"। यह वर्षा के द्वारा आमों की मांग है। यदि वर्षा आमों की इच्छा करती, परन्तु खरीदने के लिये यदि कीमत नहीं चुका सकती थी, तो इसे वर्षा की आमों की इच्छा कहा जाता न कि मांग।

## 9.3 व्यक्तिगत मांग को प्रभावित करने वाले कारक

**व्यक्तिगत मांग से अभिप्राय किसी वस्तु की उस मात्रा से है जो एक उपभोक्ता प्रति इकाई समय में विभिन्न कीमतों पर खरीदने के लिये तत्पर है।** लेकिन कोई व्यक्ति किसी वस्तु की कितनी मात्रा खरीदने को तत्पर है, निम्नलिखित कारकों पर निर्भर करता है। इन्हें मांग के निर्धारक भी कहते हैं। ये हैं :

(i) वस्तु की कीमत

(ii) संबंधित वस्तुओं की कीमत

(iii) क्रेता की आय

(iv) क्रेता की रूचि तथा अधिमान

आइये, अब हम इन कारकों की एक-एक करके चर्चा करें।

## 1. वस्तु की कीमत

जब आप कोई वस्तु खरीदने के लिये बाजार जाते हैं तो आप उस वस्तु के विक्रेता के पास जाकर सर्वप्रथम उसकी कीमत पूछते हैं। यदि आपके विचार से कीमत उचित है तो आप उस वस्तु की आवश्यक मात्रा खरीद लेते हैं। दूसरी ओर, यदि आपकी दृष्टि में कीमत अधिक है तो आप उस वस्तु को या तो खरीदते ही नहीं हैं अथवा उसकी कम मात्रा खरीदते हैं। सामान्यतः हम किसी वस्तु की कम कीमत पर अधिक तथा अधिक कीमत पर उसकी कम मात्रा खरीदने के लिये तत्पर होते हैं, यदि मांग को प्रभावित करने वाले अन्य सभी कारकों में कोई परिवर्तन न हो।

## 2. संबंधित वस्तुओं की कीमत

किसी वस्तु की मांग उसकी संबंधित वस्तुओं की कीमत द्वारा भी प्रभावित होती है। संबंधित वस्तुएं दो प्रकार की हो सकती हैं: (अ) स्थानापन्न वस्तुएं तथा (ब) पूरक वस्तुएं

**स्थानापन्न वस्तुएं वे वस्तुएं होती हैं जो एक दूसरे के स्थान पर आसानी से प्रयोग की जा सकती हैं।** स्थानापन्न वस्तुओं के उदाहरण हैं - कोक तथा पेप्सी, चाय तथा काफी आदि। यदि काफी की कीमत में वृद्धि हो जाती है तो लोग काफी की मांग कम करेंगे और इसलिये चाय की मांग में वृद्धि हो जायेगी। यदि काफी की कीमत में कमी हो जाये तो लोग काफी की मांग अधिक करेंगे और इस प्रकार चाय की मांग कम हो जाएगी। अतः किसी वस्तु की मांग उसकी स्थानापन्न वस्तुओं की कीमतों से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित होती है।

दूसरी ओर, **पूरक वस्तुएं वे वस्तुएं होती हैं जो किसी विशेष आवश्यकता की संतुष्टि करने में साथ-साथ प्रयोग की जाती हैं।** पूरक वस्तुओं के उदाहरण हैं - कार तथा पेट्रोल, बाल पैन तथा रिफिल आदि। कल्पना कीजिये, यदि हमारे पास कार है तो उसे चलाने के लिये हमें पेट्रोल भी चाहिये। कल्पना कीजिए यदि पेट्रोल की कीमत में वृद्धि हो जाए तो कार की मांग पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा? कार की मांग कम हो जाएगी। यदि इनमें से किसी एक वस्तु की कीमत में वृद्धि होती है तो दूसरी वस्तु की मांग कम हो जाएगी। यदि इनमें से किसी एक वस्तु की कीमत में कमी होती है तो दूसरी वस्तु की मांग में वृद्धि हो जाएगी। अतः किसी वस्तु की मांग तथा उसकी पूरक वस्तुओं की कीमत में विपरीत संबंध होता है।

### 3. क्रेता की आय

किसी वस्तु की मांग क्रेता की आय पर भी निर्भर करती है। जब आपकी आय में वृद्धि हो जाती है तो आप कुछ वस्तुओं जैसे फल, पूर्ण मलाई युक्त दूध, मक्खन आदि पर अधिक खर्च करना चाहेंगे। ऐसी वस्तुओं को **सामान्य वस्तुएं** कहते हैं। सामान्य वस्तुए वे वस्तुएं हैं जिनकी मांग आय बढ़ने पर बढ़ती है। अतः सामान्य वस्तुओं की मांग क्रेता की आय से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित होती है।

लेकिन कुछ वस्तुएं ऐसी भी होती हैं जिनकी मांग क्रेता की आय बढ़ने पर कम हो जाती है, जैसे ज्वार, बाजरा, टोन्ड दूध आदि। इन वस्तुओं को **निकृष्ट वस्तुएं** कहते हैं। क्रेता की आय तथा निकृष्ट वस्तुओं की मांग में विपरीत संबंध पाया जाता है।

### 4. रूचि, वरीयता तथा फैशन

किसी वस्तु की मांग को प्रभावित करने में रूचि, वरीयता तथा फैशन महत्वपूर्ण कारक हैं। उदाहरणार्थ, यदि मोनिका सलवार और कमीज की तुलना में जीन्स तथा टाप को श्रेष्ठ मानती है तो उसकी जीन्स तथा टाप के लिये मांग बढ़ जायेगी। अतः उन वस्तुओं की मांग में वृद्धि हो जाती हैं जिनको क्रेता श्रेष्ठ समझता है अथवा जो फैशन में हैं। दूसरी ओर, उन वस्तुओं की मांग में कमी आती है जिनको क्रेता श्रेष्ठ नहीं समझता अथवा जो फैशन में नहीं है।

## 9.4 व्यक्तिगत मांग अनुसूची

प्रत्येक व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिये कुछ वस्तुओं और सेवाओं की मांग करता है। उपर्युक्त उदाहरण में हमनें एक सप्ताह में वर्षा की चावल, दाल, गेहूँ का आटा तथा आमों की मांग के बारे में चर्चा की। वर्षा की खरीदारी वहीं समाप्त नहीं हो जायेगी। जब भी कभी उसे इन वस्तुओं की आवश्यकता होगी वह इनकी दोबारा खरीदारी करेगी। अगली बार बाजार जाने पर वह इन वस्तुओं की इतनी ही मात्रा में खरीदारी करेगी अथवा नहीं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि वस्तुओं की कीमतें समान ही रही हैं अथवा नहीं। उसके द्वारा उस समय अवधि में एक वस्तु की मांग का विश्लेषण करने के लिये आइये, हम उसके द्वारा केवल एक वस्तु जैसे आम की खरीदारी पर विचार करे। हम यह भी विचार करें कि अन्य वस्तुओं की कीमतें, वर्षा की जेब में मुद्रा तथा उसकी रूचि में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। इस समय अवधि में वर्षा द्वारा आमों की खरीदारी को देखने पर हमें निम्न बातों का पता चलता है।

यदि आमों की कीमत 50 रु. प्रति कि.ग्रा. है तो वर्षा एक सप्ताह के लिये 2 कि.ग्रा. आम खरीदती है। यदि आमों की कीमत बढ़कर 60 रु. प्रति कि.ग्रा. हो जाती है तो वह एक सप्ताह के लिये केवल 1.5 कि.ग्रा. आम खरीदती है। यदि कीमत घटकर 40 रु. प्रति कि.ग्रा. हो जाती है तो वह अधिक अर्थात एक सप्ताह के लिये 2.5 कि.ग्रा. आम खरीदने को तत्पर है। इससे अभिप्राय है, यदि कीमत 50 रु. प्रति कि.ग्रा. है तो वर्षा की आमों की मांग 2 कि.ग्रा. प्रति सप्ताह है, 60 रु. प्रति कि.ग्रा. कीमत पर उसकी मांग केवल 1.5 कि.ग्रा. प्रति सप्ताह है तथा 40 रु. प्रति कि.ग्रा. कीमत पर उसकी मांग 2.5 कि.ग्रा. प्रति सप्ताह है। इसे हम निम्न सारणी 9.1 में प्रस्तुत कर सकते हैं।

सारणी 9.1 वर्षा की आमों की मांग

| आमों की कीमत (रु. प्रति कि.ग्रा.) | आमों की मांगी गई मात्रा प्रति सप्ताह (कि.ग्रा. में) |
|---|---|
| 80 | 0.5 |
| 70 | 1.0 |
| 60 | 1.5 |
| 50 | 2.0 |
| 40 | 2.5 |
| 30 | 3 |

सारणी 9.1 में विभिन्न कीमतों पर प्रति सप्ताह वर्षा द्वारा आमों की मांगी गई विभिन्न मात्राओं को दर्शाया गया है। विभिन्न कीमतों पर किसी वस्तु की मांगी गई विभिन्न मात्राओं को इस प्रकार सारणी द्वारा प्रस्तुतीकरण को व्यक्तिगत मांग अनुसूची कहते हैं। एक व्यक्तिगत क्रेता द्वारा किसी वस्तु की मांग को व्यक्तिगत मांग कहते हैं। व्यक्तिगत मांग किसी वस्तु की वह मात्रा है जो एक व्यक्तिगत क्रेता विभिन्न कीमतों पर प्रति इकाई समय में खरीदने को तत्पर है।

## 9.5 मांग का नियम

मांग का नियम कीमत तथा मांग की मात्रा के बीच सम्बन्ध को व्यक्त करता है, जब वस्तु की कीमत के अतिरिक्त अन्य सभी कारक अपरिवर्तित रहते हैं।

जैसा कि इस पाठ में पहले चर्चा की जा चुकी है कि किसी वस्तु की मांग अनेक कारकों द्वारा प्रभावित होती है जैसे वस्तु की कीमत, संबंधित वस्तुओं की कीमत, क्रेता की आय, रूचि, वरीयता तथा फैशन आदि। इसलिये यह मानते हुए कि अन्य सभी कारक जैसे संबंधित वस्तुओं की कीमत, क्रेता की आय, रूचि, वरीयता तथा फैशन स्थिर हें, मांग का नियम वस्तु की कीमत में परिवर्तन होने पर उसकी मांग की मात्रा पर होने वाले प्रभाव को व्यक्त करता है।

मांग का नियम है, **"अन्य कारक स्थिर रहने पर, यदि किसी वस्तु की कीमत में कमी होती है तो उसकी मांग की मात्रा में वृद्धि होती है तथा यदि कीमत में वृद्धि होती है तो उसकी मांग की मात्रा में कमी हो जाती है।"**

मांग के नियम से अभिप्राय है, मांग को निर्धारित करने वाले अन्य कारकों के स्थिर रहने पर, किसी वस्तु की कीमत तथा उसकी मांग की मात्रा में विपरीत संबंध होता है।

## 9.6 व्यक्तिगत मांग वक्र

जब वस्तु की कीमत तथा मांग की मात्रा के उपरोक्त संबंध को चित्र के रूप में प्रस्तुत किया जाता है तो इसे मांग वक्र कहते हैं। इस प्रकार मांग वक्र मांग के नियम की चित्रात्मक प्रस्तुति है। मांग वक्र विभिन्न कीमतों पर किसी वस्तु की विभिन्न मात्राओं को चित्र के रूप में प्रदर्शित करता है।

सारणी 9.1 की सहायता से हम वर्षा की आमों की मांग (व्यक्तिगत मांग वक्र) की रचना कर सकते हैं। मांग वक्र चित्र 9.1 में देखें।

आमों की मांग की मात्रा X-अक्ष पर तथा आमों की कीमत Y-अक्ष पर लें। Y-अक्ष (ऊर्ध्वाधर) पर 30 रु. से आरम्भ होकर 80 रु. तक कीमतों को अंकित किया गया है। X-अक्ष (क्षैतिज) पर 0.5 से 3 कि.ग्रा. तक आमों की मात्रा को अंकित किया गया है। 80 रु. पर वर्षा ने 0.5 कि.ग्रा. आमों की मांग की है। चित्र 9.1 में दिये गये ग्राफ में इस संयोग को बिन्दु A द्वारा प्रदर्शित किया गया है। इसी प्रकार, सारणी 9.1 में दिये गये आमों की कीमत तथा मात्राओं के अन्य संयोगों को B, C, D, E तथा F बिन्दुओं द्वारा प्रदर्शित किया गया है। इन बिन्दुओं को मिलाकर वर्षा के आमों के मांग वक्र की रचना की गई है।

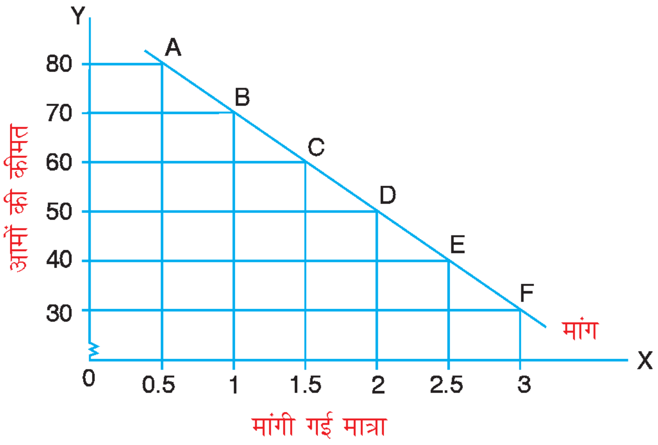


चित्र 9.1 व्यक्तिगत मांग वक्र

इस प्रकार, मांग अनुसूची तथा मांग वक्र दोनों ही वस्तु की कीमत तथा मांग की मात्रा के बीच उसी संबंध का वर्णन करते हैं, परन्तु मांग अनुसूची इसे सारणी के रूप में तथा मांग वक्र चित्र के रूप में वर्णन करता है।

## पाठगत प्रश्न 9.2

1. मांग के नियम का उल्लेख कीजिये।
2. मांग के नियम की मान्यताएं क्या हैं?

3. यह मानते हुए कि आपकी आय, रूचि, अधिमान तथा फैशन आदि पूर्ववत रहते हैं तो आपकी सेबों के लिये मांग पर क्या प्रभाव पड़ेगा यदि सेबों की कीमत 80 रु. प्रति कि.ग्रा. से बढ़कर 100 रु. प्रति कि.ग्रा. हो जाती है।

## 9.7 व्यक्तिगत मांग वक्र की आकृति

मांग के नियम के अनुसार, जब मांग को प्रभावित करने वाले अन्य सभी कारक स्थिर रहते हैं तो क्रेता कम कीमत पर किसी वस्तु की अधिक तथा अधिक कीमत पर उसकी कम मात्रा खरीदता है। **कीमत तथा मांग की मात्रा में इस विपरीत संबंध के कारण मांग वक्र बायें से दायें नीचे की ओर ढालू होता है।** लेकिन प्रश्न उठता है कि क्रेता कम कीमत पर वस्तु की अधिक तथा अधिक कीमत पर कम मात्रा क्यों खरीदता है? दूसरे शब्दों में मांग वक्र बायें से दाये नीचे की ओर ढालू क्यों होता है? कीमत तथा मांग की मात्रा में विपरीत संबंध होने के कुछ महत्वपूर्ण कारणों का यहां उल्लेख किया गया हैं।

1. जब किसी वस्तु की अधिकाधिक इकाइयों का उपभोग किया जाता है तो वस्तु की अगली इकाइयों से मिलने वाली संतुष्टि कम होती जाती है। उदाहरण के लिये, एक भूखे व्यक्ति को पहली चपाती से अधिकतम संतुष्टि प्राप्त होती है, दूसरी चपाती से कम तथा तीसरी चपाती से और भी कम संतुष्टि उसे प्राप्त हाती है तथा इसी प्रकार। यदि उसे अधिक संतुष्टि प्राप्त होती हे तो वह उसके लिये अधिक तथा यदि कम संतुष्टि प्राप्त होती है तो वह उसके लिये कम कीमत देने को तैयार होगा। इससे अभिप्राय है कि वह कम कीमत पर वस्तु की अधिक और अधिक कीमत पर उसकी कम मात्रा का क्रय करने को तत्पर होगा। मांग का नियम भी इसी बात को व्यक्त करता है जिसके कारण मांग वक्र नीचे की ओर ढालू होता है।

2. मान लीजिये, आप बाजार से आम खरीदते हैं। यदि आम की कीमत 40 रु. प्रति कि.ग्रा. है ओर आप इस कीमत पर 2 कि.ग्रा. आम खरीदते हैं। यदि आम की कीमत 40 रु. प्रति कि.ग्रा. से घटकर 20 रु. प्रति कि.ग्रा. हो जाये तो आपकी वास्तविक आय अथवा क्रय शक्ति दोगुनी हो जाती है और अब उतनी ही मौद्रिक आय में आप दोगुनी मात्रा अर्थात 4 कि.ग्रा. आम खरीद सकते हैं। अतः एक क्रेता कीमत कम होने पर किसी वस्तु की अधिक और कीमत बढ़ने पर उसकी कम मात्रा खरीद सकता है जिसके कारण मांग वक्र नीचे की ओर ढालू होता है।

3. जब किसी वस्तु की कीमत कम हो जाती है तो वह अपनी स्थानापन्न वस्तुओं की तुलना में अपेक्षाकृत सस्ती हो जाती है। (यद्यपि स्थानापन्न वस्तुओं की कीमत अपरिवर्तित रहती है)। उदाहरण के लिये, यदि कोक की कीमत कम हो जाती है

तो वह अपनी स्थानापन्न पैप्सी की तुलना में अपेक्षाकृत सस्ती हो जाती है। लोग पैप्सी के स्थान पर कोक खरीदना आरम्भ कर देते हैं। दूसरे शब्दों में पैप्सी को कोक द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया जाता है), इससे कोक की कीमत कम होने पर उसकी मांग बढ़ जाती है। दूसरी ओर जब वस्तु की कीमत बढ़ जाती है तो उसकी मांग कम हो जायेगी। इसके कारण मांग वक्र नीचे की ओर ढालू होगा।

### पाठगत प्रश्न 9.3

1. यदि किसी वस्तु की कीमत कम हो जाये तो उसके क्रेता की वास्तविक आय पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

2. जब कीमत तथा उसकी मांग की मात्रा में विपरीत संबंध है तो मांग वक्र का ढ़ाल कैसा होगा?

3. आपको प्यास लगी है और आप पहले ही एक गिलास पानी पी चुके हैं। दूसरा गिलास पानी पीने पर उससे मिलने वाली संतुष्टि बढ़ेगी अथवा घटेगी?

4. निम्नलिखित आंकड़ों की सहायता से मांग वक्र बनाइये

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कीमत (रु. प्रति इकाई) | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 |
| मांग की मात्रा (इकाइयों में) | 20 | 16 | 12 | 8 | 4 |

## 9.8 वस्तु की बाजार मांग

केवल वर्षा ही बाजार में आमों की क्रेता नहीं है अपितु कुछ अन्य व्यक्ति भी बाजार में आमों की मांग कर सकते हैं। मान लीजिये, दो अन्य क्रेता विभा और सौम्या बाजार में आमों का क्रय करने के लिये तत्पर हैं।

**किसी वस्तु की बाजार में सभी व्यक्तिगत क्रेताओं द्वारा दी गई कीमत पर दिये गये समय में मांगी जाने वाली कुल मात्रा उस वस्तु की बाजार मांग कहलाती है।**

मान लीजिये, बाजार में आम खरीदने वाले वर्षा, विभा और सौम्या केवल तीन ही क्रेता हैं तो बाजार मांग इन तीनों क्रेताओं की व्यक्तिगत मांग अनुसूचियों का योग होगी। अब यदि सारणी 9.1 में हम वर्षा की मांग के साथ विभा तथा सौम्या की मांग को प्रदर्शित करने वाले दो अन्य स्तम्भों को जोड़ दें तो हमें बाजार मांग अनुसूची प्राप्त हो सकती है। इसे निम्न सारणी 9.2 में प्रदर्शित किया गया है।

सारणी 9.2 आमों की बाजार मांग

| आमों की कीमत (रु. प्रति कि.ग्रा.) | आमों की मांगी गई मात्रा प्रति सप्ताह (कि.ग्रा. में) | | | आमों की बाजार मांग प्रति सप्ताह (कि.ग्रा. में) |
|---|---|---|---|---|
| | वर्षा | विभा | सौम्या | |
| 80 | 0.5 | 1.0 | 0 | 1.5 |
| 70 | 1.0 | 1.5 | 0.5 | 3.0 |
| 60 | 1.5 | 2.0 | 1.0 | 4.5 |
| 50 | 2.0 | 2.5 | 1.5 | 6.0 |
| 40 | 2.5 | 3.0 | 2.0 | 7.5 |
| 30 | 3 | 3.5 | 2.5 | 9.0 |

जब आमों की कीमत 80 रु. प्रति कि.ग्रा. है तो वर्षा 0.5 कि.ग्रा. विभा 1.0 कि.ग्रा. आमों की मांग करती है तथा सौम्या इस कीमत पर आमों की कोई मांग नहीं करती। इस प्रकार 80 रु. प्रति कि.ग्रा. कीमत पर आमों की बाजार मांग 0.5 + 1.0 + 0 = 1.5 कि.ग्रा. प्रति सप्ताह है। इसी प्रकार अन्य कीमतों पर भी आमों की बाजार मांग ज्ञात की जा सकती है जैसा कि सारणी 9.2 में प्रदर्शित किया गया है।

## पाठगत प्रश्न 9.4

**1.** यदि बाजार में किसी वस्तु के खरीदने वाले केवल तीन परिवार हैं तो निम्न सारणी में बाजार मांग ज्ञात कीजिये।

| कीमत (रु. प्रति इकाई) | मांग की मात्रा (इकाइओं में) | | | बाजार मांग (इकाइओं में) |
|---|---|---|---|---|
| | परिवार अ | परिवार ब | परिवार स | |
| 5 | 15 | 13 | 30 | – |
| 6 | 12 | 11 | 25 | – |
| 7 | 9 | 9 | 20 | – |
| 8 | 6 | 7 | 15 | – |
| 9 | 3 | 5 | 10 | – |

2. निम्न सारणी को पूरा कीजियेः

| कीमत (रु. प्रति इकाई) | मांगी गई मात्रा (इकाइयों में) | | | बराबर मांग (इकाइयों में) |
|---|---|---|---|---|
| | परिवार अ | परिवार ब | परिवार स | |
| 1 | 10 | 18 | – | 48 |
| 2 | 8 | 15 | – | 40 |
| 3 | 6 | 12 | – | 32 |
| 4 | 4 | 9 | – | 24 |
| 5 | 2 | 6 | – | 16 |

## 9.9 बाजार मांग को प्रभावित करने वाले कारक

जैसा कि पहले कहा गया है कि बाजार मांग किसी वस्तु की वह कुल मात्रा है जो बाजार में सभी व्यक्तिगत क्रेता प्रति इकाई समय में विभिन्न कीमतों पर खरीदने के लिये तत्पर हैं। किसी वस्तु की व्यक्तिगत मांग को प्रभावित करने वाले कारकों के अतिरिक्त बाजार मांग को निम्नलिखित कारक भी प्रभावित करते हैंः

1. **क्रेताओं की संख्या** : किसी वस्तु के क्रेताओं की संख्या बाजार में उस वस्तु की मांग को निर्धारित करती है। जैसा कि आपने आमों की बाजार मांग को प्रदर्शित करने वाली सारणी 9.2 में देखा है कि बाजार में आमों की मांग करने वाले तीन क्रेता वर्षा, विभा तथा सौम्या थे। अब यदि एक और क्रेता आभा भी आम खरीदना आरंभ कर देती है तो आमों की बाजार मांग पर क्या प्रभाव पड़ेगा? आमों की बाजार मांग में अवश्य ही वृद्धि हो जायेगी। अतः यदि किसी वस्तु के क्रेताओं की संख्या अधिक है तो उस वस्तु की बाजार मांग भी अधिक होगी। दूसरी ओर, यदि क्रेताओं की संख्या कम है तो वस्तु की बाजार मांग भी कम होगी।

2. **आय और सम्पत्ति का वितरण** : समाज में आय और सम्पत्ति का वितरण भी किसी वस्तु की बाजार मांग को निर्धारित करता है। यदि आय और सम्पत्ति का वितरण धनी लोगों के अधिक पक्ष में है तो धनी लोगों द्वारा पसंद की जाने वाली वस्तुओं की मांग अधिक होने की संभावना है। दूसरी ओर, यदि आय और सम्पत्ति का वितरण निर्धन व्यक्तियों के अधिक पक्ष में है तो निर्धन व्यक्तियों द्वारा पसंद की जाने वाली वस्तुओं की मांग अधिक होने की संभावना है।

3. **मौसम** : सामान्यतः यह देखा जाता है कि गर्मी के मौसम में बर्फ की मांग बढ़ जाती है। इसी प्रकार वर्षा ऋतु में छातों और बरसातियों की मांग बढ़ जाती है

तथा सर्दियों के मौसम में ऊनी वस्त्रों की मांग में वृद्धि हो जाती है। अतः किसी वस्तु की बाजार मांग मौसम से भी प्रभावित होती है।

## पाठगत प्रश्न 9.5

1. किसी वस्तु की व्यक्तिगत मांग को प्रभावित करने वाले किन्हीं चार कारकों के नाम लिखिये।
2. यदि चीनी की कीमत में वृद्धि हो जाये तो चाय की मांग पर क्या प्रभाव पड़ेगा?
3. यदि पैप्सी की कीमत कम हो जाये तो कोक की मांग पर क्या प्रभाव पड़ेगा?
4. सामान्य वस्तुओं तथा निकृष्ट वस्तुओं में भेद कीजिये।
5. ऐसी कम से कम पांच वस्तुओं की एक सूची बनाइये जो आजकल फैशन में हैं।
6. उपयुक्त शब्दों द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजियेः
   (i) यदि क्रेता की आय में कमी हो जाती है तो निकृष्ट वस्तुओं की मांग में .................... हो जाती है
   (ii) जब स्याही की कीमत में वृद्धि होती है तो फाउन्टेन पैन की मांग में .................... हो जायेगी।
   (iii) बाजार में किसी वस्तु के क्रेताओं की संख्या .................... होने पर उस वस्तु की मांग अधिक होगी।
   (iv) यदि आय और सम्पत्ति का वितरण .................... के पक्ष में अधिक है तो निर्धन व्यक्तियों द्वारा प्रयोग की जाने वाली वस्तुओं की मांग अधिक होगी।

## आपने क्या सीखा

- किसी वस्तु की मांग से अभिप्राय वस्तु की उस मात्रा से है, जो क्रेता दी गई कीमत पर दिये गये समय में खरीदने के लिये तत्पर है।
- व्यक्तिगत मांग, किसी वस्तु की वह मात्रा है जो एक व्यक्तिगत क्रेता दी गई कीमत पर दिये गये समय में खरीदने के लिये तत्पर है।
- बाजार मांग किसी वस्तु की वह कुल मात्रा है जो बाजार में सभी व्यक्तिगत उपभोक्ता दी गई कीमत पर दिये गये समय में खरीदने को तत्पर हैं।
- व्यक्तिगत मांग के निर्धारक हैं - वस्तु की कीमत, संबंधित वस्तुओं की कीमत, क्रेता की आय, रूचि, वरीयता तथा फैशन।

- बाजार मांग के निर्धारक हैं - व्यक्तिगत मांग के निर्धारकों के अतिरिक्त वस्तु को खरीदने वाले क्रेताओं की संख्या, आय तथा सम्पत्ति का वितरण तथा मौसम।
- मांग के नियम के अनुसार यदि मांग को निर्धारित करने वाले अन्य सभी कारक पूर्ववत रहें तो क्रेता किसी वस्तु की कम कीमत पर अधिक और अधिक कीमत पर उसकी कम मात्रा खरीदेंगे।
- मांग वक्र मांग के नियम का चित्र के रूप में प्रस्तुति है।
- किसी वस्तु का मांग वक्र बायें से दायें नीचे की ओर ढालू होता है।

## पाठान्त प्रश्न

1. मांग की परिभाषा लिखिये। व्यक्तिगत मांग तथा बाजार मांग में भेद कीजिये।
2. व्यक्तिगत मांग के निर्धारकों की संक्षेप में व्याख्या कीजिये।
3. उन कारकों का उल्लेख कीजिये जो किसी वस्तु की बाजार मांग को प्रभावित करते हैं।
4. एक काल्पनिक संख्यात्मक उदारहण/अनुसूची द्वारा मांग के नियम का उल्लेख कीजिये तथा उसकी व्याख्या कीजिये।
5. मांग वक्र क्या होता है? एक काल्पनिक मांग अनुसूची की सहायता से एक व्यक्तिगत मांग वक्र बनाइये।
6. मांग वक्र बायें से दायें नीचे की ओर ढालू क्यों होता है?
7. मांग के नियम के क्या कारण हैं?

## पाठगत प्रश्नों के उत्तर

### पाठगत प्रश्न 9.1

1. मांग से अभिप्राय वस्तु की उस मात्रा से है जो क्रेता प्रति इकाई समय में विभिन्न कीमतों पर खरीदने के लिये तत्पर है।
2. (i) वस्तु की कीमत

   (ii) वस्तु की खरीदी जाने वाली मात्रा

   (iii) समय अवधि

## पाठगत प्रश्न 9.2

1. मांग के नियम के अनुसार मांग को प्रभावित करने वाले अन्य सभी कारकों के स्थिर रहने पर, किसी वस्तु की कीमत तथा उसकी मांग की मात्रा में विपरीत संबंध होता है।

2. (i) क्रेता की आय में परिवर्तन नहीं होता।

   (ii) संबंधित वस्तुओं की कीमत में परिवर्तन नहीं होता।

   (iii) रूचि, वरीयता तथा फैशन में परिवर्तन नहीं होता।

3. सेबों की मांग कम हो जायेगी।

## पाठगत प्रश्न 9.3

1. क्रेता की वास्तविक आय बढ़ जायेगी।
2. मांग वक्र बायें से दायें ढालू होगा।
3. घटेगी

## पाठगत प्रश्न 9.4

1. 58, 48, 38, 28, 18
2. 20, 17, 14, 11, 8

## पाठगत प्रश्न 9.5

1. वस्तु की कीमत, संबंधित वस्तुओं की कीमत, क्रेता की आय, रूचि, वरीयता तथा फैशन
2. कम हो जायेगी
3. कम हो जायेगी
4. आय में वृद्धि होने पर सामान्य वस्तुओं की मांग में वृद्धि हो जाती है जबकि क्रेता की आय में वृद्धि होने पर निकृष्ट वस्तुओं की मांग में कमी हो जाती है।
5. जीन्स, टॉप, इलेक्ट्रॉनिक घड़ियां, बाल पैन, मोबाइल फोन
6. (i) वृद्धि (ii) कमी (iii) बढ़ने पर (iv) निर्धन व्यक्ति

# 10

# आपूर्ति

पिछले अध्याय में हम किसी वस्तु की मांग का अर्थ, मांग के निर्धारकों तथा मांग के नियम के बारे में पढ़ चुके हैं। परन्तु क्रेता किसी वस्तु को तभी खरीद सकेंगे जब वह बाजार में उपलब्ध होगी। इसलिये प्रश्न उठता है कि बाजार में वस्तुओं की आपूर्ति कौन करता है? किसी वस्तु के क्रेता के लिये उपलब्ध होने के लिए पहले उसका उत्पादन होना चाहिये, उचित तरीके से उसका संग्रहण होना चाहिये तथा बाजार तक उसे ढ़ोकर लाया जाना चाहिये। क्या आप कभी किसी कृषि फार्म पर गये हैं? क्योंकि कृषक अपने खेतों में खाद्यान्नों, फलों तथा सब्जियों का उत्पादन करते हैं, वे इन वस्तुओं के उत्पादक हैं। इसी प्रकार उपभोक्ता वस्तुओं जैसे कपड़े, साबुन, टूथ-पेस्ट, टूथ-ब्रुश, जूते, पैन आदि का फैक्ट्रियों में विनिर्माण होता है। इन वस्तुओं के उत्पादक विनिर्माता कहलाते हैं। क्रेता इन वस्तुओं को बाजार में विक्रेताओं से खरीदते हैं। बाजार में मूल उत्पादक तथा विक्रेता एक व्यक्ति अथवा भिन्न-भिन्न व्यक्ति हो सकते हैं। यदि वे भिन्न है तो इसका सीधा अर्थ है कि विक्रेताओं ने इन वस्तुओं को बाजार में क्रेताओं को बेचने के लिये मूल उत्पादकों से प्राप्त किया है। अतः कृषक, विनिर्माताएं तथा विक्रेता बाजार में वस्तुओं की आपूर्ति करते हैं। इन सभी को उत्पादक कहते हैं। वह उत्पादन इकाई जिसमें किसी वस्तु का उत्पादन होता है, फर्म कहलाती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि फर्म वस्तुओं की आपूर्ति करती हैं।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात आपः

- स्टॉक तथा आपूर्ति के अर्थ को समझ पायेंगे;
- व्यक्तिगत आपूर्ति तथा बाजार आपूर्ति का अर्थ समझ पायेंगे;
- किसी वस्तु की आपूर्ति के निर्धारकों अथवा आपूर्ति को प्रभावित करने वाल कारकों की व्याख्या कर पायेंगे;
- वस्तु की कीमत तथा उसकी आपूर्ति की मात्रा में संबंध को समझ पायेंगे;
- व्यक्तिगत आपूर्ति वक्र की रचना तथा उसके आकार की व्याख्या कर पायेंगे।

## 10.1 आपूर्ति का अर्थ

हमें 'बाजार में किसी वस्तु की उपलब्धता' तथा 'उस वस्तु की आपूर्ति में संभ्रमित नहीं होना चाहिये। ये एक समान नहीं होती। यदि कोई वस्तु उपलब्ध भी है तो इसका अर्थ यह नहीं है कि इसकी आपूर्ति की गई है। आपूर्ति की परिभाषा निम्न है :

**किसी वस्तु की आपूति वस्तु की वह मात्रा है जिसे एक विक्रेता निश्चित कीमतों पर प्रति इकाई समय में बेचने को तत्पर है।**

आपूर्ति की परिभाषा में निम्नलिखित तीन चीजों को सम्मिलित किया जाता है:

1. वस्तु की मात्रा जो विक्रेता बेचने के लिये तत्पर है।
2. बाजार में दी गई कीमत जिस पर विक्रेता वस्तु की उस मात्रा को बेचने के लिये तत्पर है।
3. समय अवधि जिसमें विक्रेता वस्तु की उस मात्रा को बेचने के लिये तत्पर है।

### आपूर्ति के उदाहरण

- गंगा सिंह ने पिछले सप्ताह में अपनी डेयरी से 25 रु. प्रति लीटर कीमत पर 120 लीटर दूध बेचा।
- फल विक्रेता ने पिछले 15 दिनों में 50 रु. प्रति कि.ग्रा. कीमत पर 600 कि.ग्रा. सेब बेचे।
- एक फर्म 'X' लि. ने एक दिन में 2800 रु. प्रति क्विंटल कीमत पर 8 क्विंटल चीनी बेची।
- अनाज के व्यापारी ने 2300 रु. प्रति क्विंटल कीमत पर अगस्त मास में 300 क्विंटल चावल की आपूर्ति की।

इस बात पर ध्यान दें कि समय अवधि भिन्न-भिन्न हो सकती है। यह एक मास , एक सप्ताह अथवा दो सप्ताह तथा इसी प्रकार कोई भी हो सकती है।

## 10.2 स्टॉक तथा आपूर्ति

**एक निश्चित समय बिन्दु पर विक्रेता के पास किसी वस्तु की उपलब्ध मात्रा स्टॉक कहलाती है।** दूसरी ओर, **आपूर्ति किसी वस्तु के स्टॉक का वह भाग होती है जो विक्रेता एक दी गई समय अवधि में किसी दी गई कीमत पर बेचने को तत्पर होता है।** इसलिये आपूर्ति एक प्रवाह है। स्टॉक को एक निश्चित समय बिन्दु पर मापा जाता है जबकि आपूर्ति को एक समय अवधि में मापा जाता है। उपर्युक्त उदाहरण को ही लें - अनाज के व्यापारी ने अगस्त माह में 2300 रु. प्रति क्विंटल कीमत पर 300 क्विंटल चावल की आपूर्ति की। हम यह मान लें कि व्यापारी ने 1 अगस्त 2011 को 820 क्विंटल चावल

प्राप्त किया। यह 1 अगस्त 2011 को स्टॉक था। यहां 1 अगस्त 2011 एक समय बिन्दु है जिस पर स्टॉक को मापा गया है। अगस्त में 2300 रु. कीमत पर 300 क्विंटल की आपूर्ति प्रवाह था। क्योंकि अगस्त में 31 दिन होते हैं, इसे हम समय अवधि कहते हैं जिसमें आपूर्ति को मापा गया है। इन 31 दिनों में व्यापारी ने प्रत्येक दिन कुछ मात्रा बेची जिसे यदि जोड़ दिया जाये तो मास के अन्त में 2300 रु. दी गई बाजार कीमत पर 300 क्विंटल हो जाता है।

अतः आपूर्ति वस्तु के स्टॉक का एक भाग होती है।

### पाठगत प्रश्न 10.1

1. आपूर्ति की परिभाषा लिखिये।
2. आपूर्ति की परिभाषा में सम्मिलित किये जाने वाले तीन तत्वों के नाम लिखिये।
3. स्टॉक तथा आपूर्ति में भेद कीजिये।

## 10.3 व्यक्तिगत आपूर्ति को प्रभावित करने वाले कारक

व्यक्तिगत आपूर्ति को कौन-कौन से कारक प्रभावित करते हैं? सबसे महत्वपूर्ण कारक निम्नलिखित हैं :

- वस्तु की कीमत
- उत्पादन प्रोद्योगिकी
- आगतों की कीमत
- अन्य संबंधित वस्तुओं की कीमत
- फर्म का उद्देश्य
- सरकारी नीति

(i) **वस्तु की कीमत :** वस्तु की कीमत किसी वस्तु की आपूर्ति का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है। जब कोई उत्पादक किसी वस्तु का उत्पादन करता है तो वह उत्पादन के साधनों, कच्चे माल आदि पर काफी व्यय करता है जिसे हम उत्पादन की लागत कहते हैं। वह इन लागतों को उत्पाद को निश्चित कीमत पर बाजार में बेच कर पुनः प्राप्त करता है। क्योंकि कीमत औसत आगम भी होती है, अधिक कीमत होने पर औसत आगम भी अधिक होगा तथा तदनुसार कुल आगम भी अधिक होगा। इसलिये कीमत वस्तु की आपूर्ति का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है।

(ii) **उत्पादन प्रोद्योगिकी :** उत्पादन की प्रोद्योगिकी में सुधार से वस्तु की प्रति इकाई लागत में कमी आती है जिससे फर्म के लाभ में वृद्धि होती है। यह फर्म को इस सुधारी हुई प्रोद्योगिकी का प्रयोग कर वस्तु की अधिक आपूर्ति करने के लिये प्रेरित करती

है। दूसरी ओर, यदि फर्म पुरानी तथा निम्न कोटि की प्रोद्योगिकी का प्रयोग करती है तो इससे वस्तु की प्रति इकाई लागत में वृद्धि होती है जिससे लाभ में कमी आती है, फलस्वरूप वस्तु की आपूर्ति कम हो जाती है।

(iii) **आगतों की कीमत :** मान लीजिये, एक फर्म आइसक्रीम का उत्पादन कर रही है। यदि दूध की कीमत कम हो जाती है तो आइसक्रीम की प्रति इकाई उत्पादन की लागत कम हो जायेगी। इससे प्रति इकाई लाभ में वृद्धि होगी। इसलिये फर्म आइसक्रीम की आपूर्ति में वृद्धि करेगी। दूसरी ओर यदि दूध की कीमत में वृद्धि हो जाती है तो आइसक्रीम की प्रति इकाई उत्पादन की लागत बढ़ जायेगी। इससे लाभ में कमी आयेगी तथा फर्म आइसक्रीम की आपूर्ति कम कर देगी। इस प्रकार यदि किसी वस्तु के उत्पादन में प्रयोग की जाने वाली आगत की कीमत में कमी आती है तो प्रति इकाई उत्पादन लागत कम हो जायेगी तथा फलस्वरूप वस्तु की आपूर्ति बढ़ जायेगी। दूसरी ओर, किसी वस्तु के उत्पादन में प्रयोग की जाने वाली किसी आगत की कीमत में वृद्धि से उत्पादन की प्रति इकाई लागत में वृद्धि हो जाती है और वस्तु की आपूर्ति कम हो जाती है।

(iv) **अन्य संबंधित वस्तुओं की कीमत :** किसी वस्तु की आपूर्ति अन्य संबंधित वस्तुओं की कीमत से भी प्रभावित होती है। मान लें, एक कृषक दिये गये संसाधनों द्वारा दो वस्तुओं, गेहूँ तथा चावल का उत्पादन करता है। यदि चावल की कीमत बढ़ जाती है तो कृषक को चावल का उत्पादन करना अधिक लाभप्रद हो जायेगा। कृषक गेहूँ के उत्पादन में से संसाधनों को हटाकर चावल के उत्पादन में लगा देगा। फलस्वरूप, चावल की आपूर्ति में वृद्धि हो जायेगी तथा गेहूँ की आपूर्ति में कमी आयेगी। दूसरी ओर, चावल की कीमत में कमी से चावल की आपूर्ति में कमी तथा गेहूँ की आपूर्ति में वृद्धि होगी।

(v) **फर्म का उद्देश्य :** विभिन्न फर्मो के विभिन्न उद्देश्य होते हैं। कुछ फर्मों का उद्देश्य लाभ को अधिकतम करना होता है जब कि कुछ फर्मों का उद्देश्य बिक्री को अधिकतम करना हो सकता है। कुछ अन्य फर्मों का उद्देश्य अपनी प्रतिष्ठा में वृद्धि करना तथा कुछ का उद्देश्य रोजगार के अवसरों में वृद्धि करना हो सकता है। एक फर्म जिसका उद्देश्य विक्रय में वृद्धि करना है, वह कम कीमत पर भी वस्तु की आपूर्ति अधिक कर सकती है। अतः किसी वस्तु की आपूर्ति फर्म द्वारा किसी उद्देश्य को प्राथमिकता देने तथा एक उद्देश्य को दूसरे उद्देश्य के लिये त्याग करने की तत्परता से प्रभावित होती है।

(vi) **सरकारी नीति :** सरकारी नीति भी किसी वस्तु की आपूर्ति को प्रभावित करती है। उदाहरण के लिये यदि सरकार किसी वस्तु पर मूल्य वृद्धि कर (वैट) अथवा बिक्री कर की दर को बढ़ा देती है तो इससे उत्पादन की प्रति इकाई लागत में वृद्धि हो जायेगी जिससे वस्तु की आपूर्ति कम हो जायेगी। दूसरी ओर, किसी वस्तु पर कर में कमी से प्रति इकाई उत्पादन लागत में कमी होगी तथा इससे वस्तु की आपूर्ति में वृद्धि होगी।

## 10.4 वस्तु की व्यक्तिगत आपूर्ति अनुसूची

**किसी वस्तु की एक व्यक्तिगत फर्म द्वारा आपूर्ति को व्यक्तिगत आपूर्ति कहते हैं।** किसी वस्तु की व्यक्तिगत आपूर्ति अनुसूची की रचना करने के लिये हमें विभिन्न कीमतों पर की गई आपूर्ति मात्राओं से सम्बन्धित सूचना की आवश्यकता होती है। इस पाठ में आपूर्ति से सम्बन्धित दिये गये पूर्व के सभी उदाहरणों में हमने किसी वस्तु की केवल एक दी गई अवधि में विशेष कीमत पर आपूर्ति की मात्रा का उल्लेख किया है। हम जानते हैं कि वास्तविकता में वस्तु की कीमत में भी परिवर्तन हो जाता है। अब यदि हम पूछें - क्या होता है यदि किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन हो जाता है? तदनुसार यह आशा की जाती है कि वस्तु की मात्रा में भी परिवर्तन हो जाएगा। आइये, हम एक फर्म X लि. का उदाहरण लें जिसने 2800 रु. प्रति क्विंटल कीमत पर एक दिन में 8 क्विंटल चीनी का विक्रय किया। मान लीजिये, कीमत बढ़कर 2900 रु. प्रति क्विंटल हो गई। यह देखने में आता है X लि. ने इस कीमत पर एक दिन में 9 क्विंटल चीनी का विक्रय किया। इसी प्रकार, जब कीमत बढ़कर 3000 रु. हो गई तो आपूर्ति की मात्रा बढ़ाकर 10 क्विंटल हो गई। इसके अतिरिक्त कीमत 3100 रु. तथा 3200 रु. पर आपूर्ति की मात्रा बढ़कर क्रमशः 12 तथा 15 क्विंटल हो गई। विभिन्न कीमतों पर आपूर्ति की विभिन्न मात्राओं से सम्बन्धित सूचना को निम्न सारणी 10.1 में दर्शाया गया है।

**सारणी 10.1 'X' लि. की चीनी की आपूर्ति**

| कीमत (रु. प्रति क्विंटल) | चीनी की आपूर्ति की मात्रा प्रति दिन (क्विंटल में) |
|---|---|
| 2800 | 8 |
| 2900 | 9 |
| 3000 | 10 |
| 3100 | 12 |
| 3200 | 15 |

**किसी वस्तु की विभिन्न कीमतों पर एक फर्म द्वारा की जाने वाली आपूर्ति की विभिन्न मात्राओं के इस प्रकार सारणी के रूप में प्रस्तुतीकरण को व्यक्तिगत आपूर्ति अनुसूची कहते हैं।**

## 10.5 आपूर्ति का नियम

अभी हमने कहा था कि किसी वस्तु की आपूर्ति को निर्धारित करने वाले पांच महत्वपूर्ण कारक है - वस्तु की कीमत, अन्य संबंधित वस्तुओं की कीमत, आगतों की कीमत, उत्पादन की प्रोद्योगिकी, सरकारी नीति। इन कारकों में से किसी एक अथवा सभी में

परिवर्तन होने से वस्तु की आपूर्ति में परिवर्तन हो सकता है। मान लजिये, हम उस ढ़ंग को जानना चाहते हैं जिसमें इन कारकों में से किसी एक कारक में परिवर्तन के कारण किसी वस्तु की आपूर्ति की मात्रा में परिवर्तन होता है। दूसरे शब्दों में, हम आपूर्ति की मात्रा पर किसी एक कारक में परिवर्तन के प्रभाव को जानने का प्रयास करें। इसे जानने के लिये हमें अन्य सभी कारकों को अपरिवर्तित अथवा स्थिर रखना पड़ेगा। आरम्भ में छः कारकों में से, हम केवल वस्तु की कीमत में परिवर्तन का आपूर्ति की मात्रा पर प्रभाव पर विचार करें। इसे जानने के लिये हमें मानना पड़ेगा कि अन्य कारकों जैसे अन्य संबंधित वस्तुओं की कीमत, आगतों की कीमत, उत्पादन की प्रोद्योगिकी तथा सरकारी नीति आदि स्थिर रहते हैं अथवा इस समय में ये अपरिवर्तित रहते हैं। जब वस्तु की कीमत के अतिरिक्त अन्य सभी कारक स्थिर रहते हैं, कीमत तथा आपूर्ति की मात्रा के बीच संबंध को आपूर्ति के नियम द्वारा व्यक्त किया जाता है।

सारणी 10.1 पर पुनः विचार कीजिये। यह 'X' लि. द्वारा विभिन्न कीमतों पर चीनी की आपूर्ति की मात्राओं को दर्शाती है। सारणी में आप कीमत तथा आपूर्ति की मात्रा से सम्बन्धित केवल दो स्तम्भों को देख सकते हैं। अन्य कारकों से संबंधित कारकों की अनुपस्थिति सूचित करती है कि वे स्थिर रखे गये हैं। आप देख सकते हैं कि चीनी की कीमत जब 3000 रु. प्रति क्विंटल है तो फर्म प्रतिदिन 10 क्विंटल चीनी बेचने को तत्पर है। जब कीमत बढ़कर 3200 रु. प्रति क्विंटल हो जाती है तो यह अधिक अर्थात प्रतिदिन 15 क्विंटल चीनी बेचने को तत्पर है। दूसरी ओर, जब चीनी की कीमत कम होकर 2800 रु. प्रति क्विंटल हो जाती है तो यह कम अर्थात 8 क्विंटल चीनी प्रतिदिन बेचने को तत्पर है। इससे अभिप्राय है कि फर्म अधिक कीमत पर वस्तु की अधिक तथा कम कीमत पर उसकी कम आपूर्ति करती है। हम इसका नियम के रूप में निम्नलिखित ढ़ंग से उल्लेख कर सकते हैं।

**आपूर्ति को निर्धारित करने वाले अन्य कारकों के स्थिर रहने पर वस्तु की कीमत तथा आपूर्ति की मात्रा में प्रत्यक्ष संबंध होता है।**

आपूर्ति का नियम सारणी 10.2 में दिये गये एक अन्य उदाहरण की सहायता से भी समझाया जा सकता है।

**सारणी 10.2 मोहन द्वारा आमों की आपूर्ति**

| आमों की कीमत (रु. प्रति कि.ग्रा.) | आमों की आपूर्ति की मात्रा प्रतिदिन (कि.ग्रा. में) |
|---|---|
| 20 | 100 |
| 30 | 200 |
| 40 | 300 |
| 50 | 400 |
| 60 | 500 |

सारणी 10.2 में आमों के एक विक्रेता मोहन द्वारा विभिन्न कीमतों पर आमों की विभिन्न आपूर्ति की मात्राओं को दिखाया गया है। जब आमों की कीमत 20 रु. प्रति कि.ग्रा. है तो मोहन प्रतिदिन 100 कि.ग्रा. आमों की आपूर्ति करता है। जब कीमत बढ़कर 40 रु. प्रति कि.ग्रा. हो जाती है तो वह 300 कि.ग्रा. आमों की आपूर्ति करने को तत्पर है तथा इसी प्रकार। अतः जैसे-जैसे आमों की कीमत बढ़ती है, आमों की आपूर्ति की मात्रा भी बढ़ती है। यह आपूर्ति के नियम के अनुसार ही है।

## 10.6 आपूर्ति वक्र

सारणी 10.2 में दी गई सूचना को चित्र द्वारा भी प्रदर्शित किया जा सकता है। **आपूर्ति के नियम की चित्र के रूप में प्रस्तुति आपूर्ति वक्र कहलाता है।** अतः आपूर्ति वक्र प्रति इकाई समय में विभिन्न कीमतों पर किसी वस्तु की आपूर्ति की विभिन्न मात्राओं को चित्र के रूप में प्रदर्शित करता है।

हम सारणी 10.2 में दी गई सूचना की सहायता से एक व्यक्तिगत आपूर्ति वक्र की रचना कर सकते हैं। आपूर्ति वक्र चित्र 10.1 में बनाया गया है।

आमों की आपूर्ति की विभिन्न मात्राओं को X-अक्ष पर तथा आमों की कीमत को Y-अक्ष पर लें। Y-अक्ष (उर्ध्वाधर) पर कीमतों को 20 रु. से आरम्भ करके 60 रु. तक अंकित किया गया है। X-अक्ष (क्षैतिज) पर आमों की मात्राओं को 100 से आरम्भ करके 500 कि.ग्रा. तक अंकित किया गया है। मोहन ने 20 रु. पर 100 कि.ग्रा. आमों की आपूर्ति की है। चित्र 10.1 में दिये गये ग्राफ में इस संयोग को बिन्दु A से प्रदर्शित किया गया है। इसी प्रकार सारणी 10.2 में आमों की कीमत तथा आपूर्ति के अन्य संयोगों को B, C, D, E तथा F बिन्दुओं द्वारा प्रदर्शित किया गया है। इन बिन्दुओं को मिलाकर मोहन का आमों का आपूर्ति वक्र प्राप्त किया गया है।

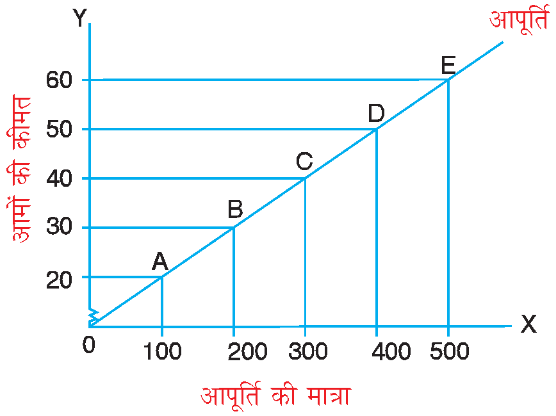


चित्र **10.1** आपूर्ति वक्र

## 10.7 आपूर्ति वक्र की आकृति

आपूर्ति के नियम के अनुसार जब आपूर्ति के निर्धारित करने वाले अन्य कारक स्थिर रहते हैं तो कोई फर्म किसी वस्तु की अधिक कीमत पर वस्तु की अधिक तथा कम कीमत पर उसकी कम मात्रा में बिक्री करने को तत्पर होती है। वस्तु की कीमत तथा आपूर्ति की मात्रा में इस प्रत्यक्ष संबंध के कारण आपूर्ति वक्र ऊपर की ओर ढाल वाला होता है। इससे अभिप्राय है कि आपूर्ति वक्र जो चित्र में एक सीधी रेखा की भांति दिखाई पड़ता है, मूल बिन्दु के समीप के एक बिन्दु से आरम्भ होता है तथा फिर दाहिनी ओर ऊपर की ओर जाता है। अब प्रश्न उठता है कि कोई फर्म किसी वस्तु की अधिक कीमत पर अधिक तथा कम कीमत पर उसकी कम मात्रा में आपूर्ति क्यों करती है? अर्थात आपूर्ति वक्र का ऊपर की ओर ढ़ाल क्यों होता है? आपूर्ति वक्र के ऊपर की ओर ढालू होने के लिए निम्नलिखित कारक उत्तरदायी हैं :

(i) वस्तु की कीमत में वृद्धि से लाभ में वृद्धि होती है, फलस्वरूप फर्म लाभ में वृद्धि करने के लिये वस्तु का अधिक मात्रा में उत्पादन करने के लिये प्रेरित होती है।

(ii) वस्तु की कीमत में वृद्धि विक्रेता को अपने स्टॉक का कम से कम एक भाग बेचने के लिये प्रेरित करती हे। जब वस्तु की कीमत में कमी होती है तो इसके विपरीत होता है।

(iii) वस्तु की कीमत में वृद्धि होने के कारण अधिक लाभ नई फर्मों को बाजार में प्रवेश करने के लिये आकर्षित करता है। इससे आपूर्ति में और वृद्धि होती है जिससे अधिक कीमत पर अधिक मात्रा में वस्तु की आपूर्ति होती है।

### पाठगत प्रश्न 10.2

1. नीचे दिये गये आंकड़ों के आधार पर आपूर्ति वक्र की रचना कीजियेः

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कीमत (रु. प्रति इकाई) | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 |
| आपूर्ति की मात्रा (इकाईयों में) | 50 | 100 | 150 | 200 | 250 |

2. सारणी 10.1 का प्रयोग करके आपूर्ति वक्र बनाइये।

## 10.8 वस्तु की बाजार आपूर्ति

बाजार में चीनी की आपूर्ति करने वाली 'X' लि. ही अकेली फर्म नहीं है। बाजार में चीनी की आपूर्ति करने वाली कुछ अन्य फर्में भी हो सकती हे। बाजार में सभी फर्मों द्वारा एक साथ चीनी की आपूर्ति की मात्रा जानने के लिये हमें केवल प्रचलित कीमत तथा समय अवधि में व्यक्तिगत मात्राओं को जोड़ना पड़ता है। परिणाम में प्राप्त मात्रा चीनी की बाजार आपूर्ति कहलाती है।

टिप्पणी

अतः **बाजार में दी गई कीमत पर दी गई समय अवधि में सभी फर्मों द्वारा वस्तु की आपूर्ति की कुल मात्रा उस वस्तु की बाजार आपूर्ति कहलाती है।**

### उदाहरण

मान लीजिये, बाजार में चीनी की आपूर्ति करने वाली X, Y तथा Z तीन फर्में हैं। 2800 रु. प्रति क्विंटल कीमत पर X, Y तथा Z ने एक दिन में क्रमशः 8, 10 तथा 15 क्विंटल चीनी की आपूर्ति की। इन मात्राओं को जोड़ने पर हमें 33 प्राप्त होता है। अतः 2800 रु. प्रति क्विंटल कीमत पर चीनी की बाजार आपूर्ति 33 क्विंटल प्रति दिन है।

## 10.9 वस्तु की बाजार आपूर्ति अनुसूची

व्यक्तिगत आपूर्ति अनुसूची की भांति किसी वस्तु की बाजार आपूर्ति अनुसूची विभिन्न कीमतों पर बाजार में सभी फर्मों द्वारा की गई आपूर्ति की मात्राओं का योग होती है। हम देख चुके हैं कि एक व्यक्तिगत फर्म/विक्रेता की स्थिति में, आपूर्ति के नियम के अनुसार, जब वस्तु की कीमत में वृद्धि होती है तो उसकी आपूर्ति की मात्रा में वृद्धि हो जाती है तथा जब कीमत में कमी होती है तो आपूर्ति की मात्रा में कमी हो जाती है। इसी प्रकार, बाजार में अन्य सभी फर्म/विक्रेता भी अपनी-अपनी मात्राओं में वृद्धि अथवा कमी कर देंगे। तदनुसार, बाजारमें सभी फर्मों की आपूर्ति एक साथ लेने पर विभिन्न कीमतों पर आपूर्ति की विभिन्न मात्राएं होंगी।

चीनी की आपूर्ति के उदाहरण को जारी रखें। सारणी 10.3 में दी गई चीनी की आपूर्ति अनुसूची का अध्ययन करें।

**सारणी 10.3 चीनी की बाजार आपूर्ति**

| कीमत (रु. प्रति क्विंटल) | चीनी की आपूर्ति की मात्रा प्रति दिन (क्विंटल में) | | | चीनी की बाजार आपूर्ति (क्विंटल में) |
|---|---|---|---|---|
| | फर्म X | फर्म Y | फर्म Z | |
| 2800 | 8 | 10 | 15 | 33 |
| 2900 | 9 | 11 | 16 | 36 |
| 3000 | 10 | 12 | 17 | 39 |
| 3100 | 12 | 14 | 20 | 46 |
| 3200 | 15 | 17 | 25 | 57 |

आप सारणी 10.3 में देख सकते हैं कि चीनी की कीमत जब 2800 रु. प्रति क्विंटल है तो प्रतिदिन फर्म X 8 क्विंटल, फर्म Y 10 क्विंटल तथाा फर्म Z 15 क्विंटल चीनी की आपूर्ति करती है। अतः 2800 रु. प्रति क्विंटल कीमत पर चीनी की बाजार

आपूर्ति 8 + 10 + 15 = 33 क्विंटल प्रतिदिन है। जब कीमत परिवर्तित होकर 2900 रु. हो गई तो X, Y तथा Z की आपूर्ति क्रमशः 9, 11 तथा 16 क्विंटल थी जो 36 क्विंटल होता है। अतः 2900 रु. प्रति क्विंटल पर चीनी की बाजार आपूर्ति 36 क्विंटल थी। इसी प्रकार आप सारणी में क्रमशः 3000 रु. 3100 रु. तथा 3200 रु. कीमतों पर चीनी की व्यक्तिगत बाजार आपूर्ति देख सकते हैं।

## पाठगत प्रश्न 10.3

1. यदि बाजार में किसी वस्तु की आपूर्ति करने वाली अ, ब तथा स केवल तीन फर्में हैं, इनकी नीचे दी गई आपूर्ति अनुसूचियों की सहायता से वस्तु की बाजार आपूर्ति ज्ञात कीजियेः

| कीमत (रु. प्रति इकाई) | आपूर्ति की मात्रा (इकाईयों में) | | | बाजार आपूर्ति (इकाईयों में) |
|---|---|---|---|---|
| | फर्म अ | फर्म ब | फर्म स | |
| 100 | 1000 | 1500 | 2000 | – |
| 200 | 2000 | 2000 | 3000 | – |
| 300 | 3000 | 2500 | 4000 | – |
| 400 | 4000 | 3000 | 5000 | – |
| 500 | 5000 | 3500 | 6000 | – |

2. निम्नलिखित सारणी को पूरा कीजिये (यह मानते हुए कि बाजार में क, ख तथा ग केवल तीन फर्में हैं)

| कीमत (रु. प्रति इकाई) | आपूर्ति की मात्रा (इकाईयों में) | | | बाजार आपूर्ति (इकाईयों में) |
|---|---|---|---|---|
| | फर्म अ | फर्म ब | फर्म स | |
| 10 | 150 | – | 200 | 650 |
| 11 | 200 | – | 300 | 1000 |
| 12 | 250 | – | 400 | 1350 |
| 13 | 300 | – | 500 | 1700 |
| 14 | 350 | – | 600 | 2050 |

## 10.10 बाजार आपूर्ति को निर्धारित करने वाले कारक

वे सभी कारक जो किसी वस्तु की व्यक्तिगत आपूर्ति को प्रभावित करते हैं उसकी बाजार आपूर्ति को भी प्रभावित करते हैं। इन कारकों के अतिरिक्त किसी वस्तु की बाजार आपूर्ति निम्नलिखित दो कारकों से भी प्रभावित होंती हैः

- विक्रेताओं/फर्मों की संख्या
- संभावित भावी कीमत

(i) **विक्रेताओं/फर्मों की संख्या :** बाजार आपूर्ति बाजार में सभी व्यक्तिगत आपूर्ति अनुसूचियों का योग होती है। चीनी की बाजार अनुसूची को दर्शाने वाली सारणी 10.2 पर विचार कीजिये। बाजार में चीनी की आपूर्ति करने वाली X, Y तथा Z तीन फर्में हैं। अब मान लीजिये एक और फर्म W भी बाजार में प्रवेश कर चीनी की आपूर्ति करना आरम्भ कर देती है। चीनी की बाजार आपूर्ति का क्या होगा? चीनी की बाजार आपूति में वृद्धि हो जाएगी। अतः यह स्पष्ट है कि यदि फर्मों की संख्या में वृद्धि हो जाती है तो बाजार आपूर्ति में भी वृद्धि हो जाएगी। दूसरी ओर, यदि फर्मों की संख्या में कमी होती है तो बाजार आपूर्ति में भी कमी हो जाएगी।

(ii) **संभावित भावी कीमत :** यदि निकट भविष्य में किसी वस्तु की कीमत में वृद्धि होने की संभावना है तो फर्म भविष्य में कीमत बढ़ने के कारण अधिक लाभ की आशा में वर्तमान में वस्तु की कम मात्रा की आपूर्ति करेगी। लेकिन यदि निकट भविष्य में वस्तु की कीमत में कमी होने की संभावना है तो फर्म भविष्य में कम लाभ की आशा में वर्तमान में वस्तु की अधिक मात्रा की आपूर्ति करेगी।

## पाठगत प्रश्न 10.4

1. उपयुक्त शब्दों द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजियेः

   (i) किसी वस्तु की आपूर्ति में ..................... जब उसकी कीमत में वृद्धि होती है।

   (ii) एक फर्म जिसका उद्देश्य अपने लाभों को अधिकतम करना है, अधिक कीमत पर वस्तु की ..................... मात्रा की आपूर्ति करेगी।

   (iii) यदि एक फर्म दिये गये संसाधनों द्वारा दो वस्तुओं X तथा Y का उत्पादन करती है तथा यदि वस्तु Y की कीमत में कमी हो जाती है तो वस्तु X की आपूर्ति में ..................... हो जाएगी।

   (iv) मजदूरी दर में कमी होने पर किसी वस्तु की आपूर्ति में ..................... हो जाएगी।

(v) टी.वी. के उत्पादन पर उत्पादन कर में वृद्धि होने से टी.वी. की आपूर्ति में ..................... हो जाएगी।

2. किसी वस्तु की आपूर्ति पर क्या प्रभाव पड़ेगा, जब

(i) वस्तु के उत्पादन में प्रयोग किये जाने वाले कच्चे माल की कीमत में वृद्धि हो जाती है।

(ii) वस्तु की आपूर्ति करने वाली एक और नई फर्म अस्तित्व में आ जाती है।

(iii) उत्पादन की प्रोद्योगिकी में उन्नति हो जाती है।

3. यदि स्टेनलैस स्टील की कीमतों में कमी हो जाए तो स्टेनलैस स्टील के बर्तनों की आपूर्ति पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

## आपने क्या सीखा

- किसी वस्तु की आपूर्ति उस वस्तु की वह मात्रा है जो एक विक्रेता/फर्म प्रति इकाई समय में दी गई कीमत पर बेचने को तत्पर है।
- किसी विशेष समय बिन्दु पर किसी विक्रेता/फर्म के पास किसी वस्तु की उपलब्ध कुल मात्रा स्टॉक कहलाती है। आपूर्ति स्टॉक का वह भाग होती है जिसे विक्रेता दी गई समय अवधि में दी गई कीमत पर बेचने को तत्पर है।
- व्यक्तिगत आपूर्ति अनुसूची किसी वस्तु की उन आपूर्ति की मात्राओं को प्रदर्शित करती है जो एक व्यक्तिगत फर्म विभिन्न कीमतों पर बेचने को तत्पर है।
- व्यक्तिगत आपूर्ति वक्र को व्यक्तिगत आपूर्ति अनुसूची से प्राप्त किया जाता है।
- बाजार आपूर्ति किसी वस्तु की वह कुल मात्रा है जिसे बाजार में सभी फर्म दी गई समय अवधि में तथा दी गई कीमतों पर बेचने के लिये तत्पर हैं।
- व्यक्तिगत आपूर्ति के निर्धारक हैं - वस्तु की कीमत, अन्य संबंधित वस्तुओं की कीमत, उत्पादन की प्रोद्योगिकी में परिवर्तन, आगतों की कीमतों में परिवर्तन, फर्म का उद्देश्य तथा सरकारी नीति।
- बाजार आपूर्ति के निर्धारक हैं - व्यक्तिगत आपूर्ति के निर्धारकों के अतिरिक्त वस्तु की आपूर्ति करने वाली फर्मों की संख्या, संभावित भावी कीमत।
- आपूर्ति के नियम के अनुसार, आपूर्ति को निर्धारित करने वाले अन्य कारक स्थिर रहने पर वस्तु की कीमत तथा आपूर्ति की मात्रा में प्रत्यक्ष संबंध होता है।
- आपूर्ति वक्र आपूर्ति के नियम की चित्र के रूप में प्रस्तुति है।
- आपूर्ति के नियम के अनुसार किसी वस्तु का आपूर्ति वक्र ऊपर की ओर ढालू होता है।

## पाठन्त प्रश्न

1. आपूर्ति की परिभाषा लिखिये। व्यक्तिगत आपूर्ति तथा बाजार आपूर्ति में भेद कीजिये।
2. किसी वस्तु की व्यक्तिगत आपूर्ति को प्रभावित करने वाले कारकों की व्याख्या कीजिये।
3. बाजार आपूर्ति के तीन निर्धारकों की संक्षेप में व्याख्या कीजिये।
4. एक उपयुक्त उदाहरण की सहायता से स्टॉक तथा आपूर्ति में भेद कीजिये।
5. एक संख्यात्मक उदाहरण का प्रयोग करते हुए आपूर्ति के नियम का उल्लेख कीजिये।
6. आपूर्ति वक्र क्या है? एक काल्पनिक आपूर्ति अनुसूची की सहायता से व्यक्तिगत आपूर्ति वक्र की रचना कीजिये।
7. आपूर्ति वक्र ऊपर की ओर ढालू क्यों होता है?
8. आपूर्ति के नियम के क्या कारण हैं?

## पाठगत प्रश्नों के उत्तर

### पाठगत प्रश्न 10.1

1. आपूर्ति से अभिप्राय किसी वस्तु की उस मात्रा से है जो विक्रेता प्रति इकाई समय में विभिन्न कीमतों पर बेचने को तत्पर है।
2. वस्तु की कीमत, आपूर्ति की मात्रा तथा समय अवधि
3. स्टॉक वस्तु की वह कुल मात्रा है जो किसी विशेष समय बिन्दु पर फर्म के पास उपलब्ध है।

   आपूर्ति स्टॉक का वह भाग है जो विक्रेता प्रति इकाई समय में विभिन्न कीमतों पर बेचने के लिये तत्पर है।

### पाठगत प्रश्न 10.3

1. 4500, 7000, 9500, 12000, 14,500
2. 300, 500, 700, 900, 1100

### पाठगत प्रश्न 10.4

1. (i) वृद्धि होती है

(ii) अधिक

(iii) वृद्धि

(iv) वृद्धि

(v) कमी

2. (i) वस्तु की आपूर्ति कम हो जायेगी।

   (ii) वस्तु की आपूर्ति में वृद्धि हो जायेगी।

   (iii) वस्तु की आपूर्ति में वृद्धि हो जायेगी।

3. स्टेनलैस स्टील के बर्तनों की आपूर्ति में वृद्धि हो जायेगी।

# 11

# कीमत और मात्रा का निर्धारण

अध्याय 9 में आप पढ़ चुके हैं कि कीमत में परिवर्तन का किसी वस्तु की मांग पर किस प्रकार प्रभाव पड़ता है। अध्याय 10 में उसी प्रकार का अध्ययन किसी वस्तु की आपूर्ति के विषय में किया गया। वास्तव में मांग और आपूर्ति दोनों पर ही कीमत में परिवर्तन का प्रभाव पड़ता है। किन्तु एक मनोरंजक बात यह ध्यान देने की है कि किसी वस्तु की मांग और आपूर्ति दोनों में परिवर्तन का भी वस्तु की कीमत पर प्रभाव पड़ता है। अब प्रश्न यह उठता है कि बाजार में किसी वस्तु की कीमत कैसे निर्धारित होती है? कौन से कारक वस्तु की कीमत पर प्रभाव डालते हैं। किसी वस्तु की मांग और आपूर्ति में परिवर्तन उसकी कीमत को कैसे प्रभावित करते हैं यह इस पाठ की विषय सामग्री है।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप समझ सकेंगे :

- कीमत निर्धारण से क्या अभिप्राय है;
- मांग और आपूर्ति वक्रों की सहायता से कीमत निर्धारण की व्याख्या;
- संतुलन कीमत को समझना और ग्राफ पर अंकित करना;
- मांग और आपूर्ति में परिवर्तनों का किसी वस्तु की कीमत और मात्रा पर क्या प्रभाव पड़ता है?

## 11.1 कीमत का अर्थ

जब एक विक्रेता वस्तु को बेचता है तो वह उसका मुद्रा से विनिमय करता है। क्रेता वस्तु और सेवाओं के बदले में विक्रेता को मुद्रा का भुगतान करता है। **मुद्रा की वह मात्रा जो एक क्रेता वस्तु या सेवा की एक इकाई के बदले में विक्रेता को भुगतान करता है, वस्तु या सेवा की कीमत कहलाती है**। उदाहरण के लिए एक क्रेता एक लीटर पूर्ण मलाई युक्त दूध के लिए 36 रु. का भुगतान करता है तो पूर्ण मलाई युक्त दूध की कीमत 36 रु. प्रति लीटर होगी।

सामान्यतया विक्रेता का मुख्य उद्देश्य लाभ कमाना होता है। लाभ कुल आगम और कुल लागत का अन्तर होता है। कुल आगम से अभिप्राय उत्पादक की उस कुल मुद्रा प्राप्ति से है जो वह दी हुई उत्पादन मात्रा को बेचकर प्राप्त करता है। कुल लागत से अभिप्राय उस समस्त व्यय से है जो एक उत्पादक वस्तु की उस मात्रा के उत्पादन पर खर्च करता है।

विक्रेता उसके द्वारा आपूर्ति की जाने वाली वस्तु की कीमत निश्चित करता है। किसी वस्तु की बाजार कीमत वह कीमत है जिस पर उसे बाजार में बेचा जाता है। किसी वस्तु की कीमत निश्चित करते समय एक विक्रेता, अधिकतम लाभ कमाने के अतिरिक्त बहुत से कारक अपने ध्यान में रखता है। किसी वस्तु की कीमत को निश्चित करने में कुछ महत्वपूर्ण कारक जो किसी विक्रेता के निर्णय पर प्रभाव डालते हैं, नीचे दिये गए हैं।

(i) **उत्पादन की लागत :** विक्रेता वस्तु की ऐसी कीमत निश्चित करता जो वस्तु की प्रति इकाई उत्पादन लागत से अधिक हो। वस्तु की प्रति इकाई कीमत और प्रति इकाई उत्पादन लागत में अन्तर प्रति इकाई लाभ होता है। इस प्रकार प्रति इकाई कीमत और प्रति इकाई उत्पादन लागत में अन्तर जितना अधिक होगा लाभ की सीमा भी उतनी ही अधिक होगी। इसलिए किसी विक्रेता द्वारा वस्तु की कीमत निश्चित करने में प्रति इकाई उत्पादन लागत बहुत ही महत्वपूर्ण है।

(ii) **अन्य विक्रेताओं द्वारा निश्चित की गई कीमत :** अपनी वस्तु की कीमत निश्चित करने समय, विक्रेता अन्य विक्रेताओं द्वारा उसके समान वस्तु की निश्चित की गई कीमत पर भी विचार करता है। यदि एक विक्रेता अपनी वस्तु की ऐसी कीमत निश्चित करता है, जो अन्य विक्रेताओं द्वारा उसी प्रकार की वस्तु की निश्चित कीमत से बहुत अधिक है तो वह वस्तु की अधिक मात्रा बेचने में सफल नहीं होगा। इसलिए अपनी वस्तु की बिक्री में वृद्धि करने के लिए उसे अपनी वस्तु की कीमत घटानी पड़ेगी। इसलिए एक वस्तु के विक्रेता के लिए यह भी बहुत महत्वपूर्ण है कि वह अधिक लाभ कमाने के लिए अपनी वस्तु की ऐसी कीमत निश्चित करे जो दूसरे विक्रेताओं की कीमत के तुलनीय हो।

(iii) **विभिन्न कीमतों पर वस्तु की संभावित बिक्री :** विक्रेता यह भी ध्यान रखता है कि वह विभिन्न कीमतों पर वस्तु की कितनी मात्रा बेचने में समर्थ होगा। इसलिए उसके द्वारा वस्तु की कीमत ऐसी निश्चित की जानी चाहिए कि वस्तु की बेची गई कुल मात्रा से उसे अधिकतम लाभ प्राप्त हो सके।

## पाठगत प्रश्न 11.1

1. मान लो आप बाजार में टमाटर के विक्रेता हैं। उन कारकों के नाम दो जिन्हें आप अपने द्वारा बेचे जाने वाले टमाटर की कीमत निश्चित करते समय ध्यान में रखोगे।

2. यदि डीजल के कीमत बढ़ने के कारण परिवहन लागत बढ़ जाती है तो आपके द्वारा निश्चित की गई टमाटर की कीमत पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

## 11.2 कीमत का अर्थ और कीमत का निर्धारण

यदि विक्रेता वस्तु की ऊँची कीमत निश्चित करता है तो वस्तु की आपूर्ति की मात्रा उसकी मांग की मात्रा से अधिक हो सकती है और यदि वह वस्तु भी नीची कीमत निश्चित करता है तो वस्तु की मांग की मात्रा उसकी आपूर्ति की मात्रा से अधिक हो सकती है। आप पहले ही पढ़ चुके हैं कि मांग के नियम के अनुसार यदि मांग को प्रभावित करने वाले अन्य सभी कारक स्थिर रहते हैं तो किसी वस्तु का क्रेता कम कीमत पर वस्तु की अधिक मात्रा खरीदता है और ऊँची कीमत पर कम। आपूर्ति के नियम के अनुसार यदि आपूर्ति को प्रभावित करने वाले अन्य कारक स्थिर रहते हैं तो वस्तु का विक्रेता, ऊँची कीमत पर वस्तु की अधिक मात्रा बेचने को तत्पर होता है और  कम कीमत पर कम। क्रेता का उद्देश्य कम से कम खर्च कर अधिक से अधिक संतुष्टि प्राप्त करना होता है और विक्रेता का उद्देश्य अधिकतक लाभ कमाना होता है। यदि किसी कीमत पर वस्तु की मांग की मात्रा तथा आपूर्ति की मात्रा बराबर होती हैं, तो उसे वस्तु की सन्तुलन कीमत कहते हैं। इस प्रकार वस्तु की कीमत बाजार में मांग और आपूर्ति की शक्तियों द्वारा निर्धारित होती है। किन्तु कुछ वस्तुओं की कीमत सरकार द्वारा निश्चित की जाती है जिससे कि उपभोक्ताओं और उत्पादकों के हितों की रक्षा की जा सके। इस अध्याय में हम यह अध्ययन करेंगे कि किसी वस्तु की कीमत मांग और आपूर्ति की शक्तियों द्वारा किस प्रकार निर्धारित होती है।

## 11.3 सन्तुलन कीमत का अर्थ

सन्तुलन का शाब्दिक अर्थ उस स्थिति से है जहां से परिवर्तन की प्रवृत्ति न हो। दूसरे शब्दों में संतुलन वह स्थिति है जहां सन्तुलन को निर्धारित करने वाली शक्तियाँ सन्तुलन में हो या एक दूसरे के बराबर हों। यहाँ सन्तुलन कीमत को निर्धारित करने वाली शक्तियाँ वस्तु की मांग और आपूर्ति की मात्राएं हैं। **जिस कीमत पर किसी वस्तु की मांगी गई मात्रा उसकी आपूर्ति की मात्रा के बराबर हो उसे सन्तुलन कीमत कहते हैं।**

सन्तुलन कीमत पर वस्तु की मांगी गई मात्रा उसकी आपूर्ति की मात्रा के बराबर होती है। वस्तु की यह मात्रा संतुलन मात्रा कहलाती है।

## 11.4 सन्तुलन कीमत का निर्धारण

व्यवहारिक जीवन में जिस कीमत पर एक विक्रेता/फर्म किसी वस्तु को बेचना चाहता है, उसकी आपूर्ति की मात्रा उसकी मांग की मात्रा से अधिक या कम हो सकती है। इसलिए यह कीमत वस्तु की सन्तुलन कीमत नहीं होती। अब प्रश्न यह उठता है कि सन्तुलन कीमत कैसे प्राप्त होती है? सारणी 11.1 में विभिन्न कीमतों पर दी गई बाजार मांग और बाजार आपूर्ति की अनुसूची पर विचार करो। आप पहले ही पाठ 9 और 10 में क्रमशः किसी वस्तु की बाजार मांग और आपूर्ति अनुसूची के विषय में पढ़ चुके हो।

**सारणी 11.1 टमाटर की मांग व आपूर्ति की मात्रा**

| टमाटर की कीमत (प्रति किलो रु. में) | मांग की मात्रा प्रति दिन (कि.ग्रा.) | आपूर्ति की मात्रा प्रति दिन (कि.ग्रा.) |
|---|---|---|
| 20 | 100 | 300 |
| 18 | 150 | 250 |
| **16** | **200** | **200** |
| 14 | 250 | 150 |
| 12 | 300 | 100 |

सारणी 11.1 में आप देख सकते हैं कि जब टमाटरों की कीमत 20 रु. प्रति कि.ग्रा. है तो विक्रेता 300 कि.ग्रा. टमाटर बेचने को तत्पर है किन्तु क्रेता केवल 100 कि.ग्रा. टमाटर खरीदना चाहते हैं। यदि कीमत घटकर 18 रु. प्रति कि.ग्रा. हो जाती है तो मांग की मात्रा बढ़कर 150 कि. ग्रा. किन्तु आपूति की मात्रा घटकर 250 कि.ग्रा. टमाटर रह जाती है। दोनों स्थिति में टमाटर की आपूर्ति की मात्रा उनकी मांग की मात्रा से अधिक है जो टमाटरों की आपूर्ति आधिक्य को दर्शाता है। परिणामस्वरूप टमाटरों की कीमत में और गिरावट होगी।

अब आपूर्ति आधिक्य के कारण, टमाटरों की कीमत घटकर 16 रु. प्रति कि.ग्रा. हो जाती है। इस कीमत पर क्रेता 200 कि.ग्रा. टमाटर खरीदने को तत्पर है और विक्रेता भी टमाटर की वही मात्रा, अर्थात 200 कि.ग्रा. टमाटर बेचने को तत्पर है। सन्तुलन कीमत इसी प्रकार प्राप्त होती है। इस प्रकार 16 रु. प्रति कि.ग्रा. टमाटर की सन्तुलन कीमत होगी जिस पर टमाटरों की मांग की मात्रा उनकी आपूर्ति की मात्रा 200 कि.ग्रा. पर बराबर है।

## 11.5 असंतुलन की स्थितियाँ और संतुलन स्थिति का समायोजन

सारणी 11.1 में देखो कि 12 रु. और 14 रु. कीमत (संतुलन कीमत से कम) पर मांगी गई मात्रा और आपूर्ति की मात्रा बराबर नहीं हैं। इसी प्रकार 20 रु. और 18 रु. कीमत (संतुलन कीमत से अधिक) पर भी मांगी गई मात्रा और आपूर्ति की मात्रा समान नहीं हैं। ये दोनों स्थितियाँ असंतुलन की स्थितियाँ हैं। आओ, अब इसकी व्याख्या करें।

उस स्थिति पर विचार करो जिसमें टमाटरों की बाजार कीमत 12 रु. प्रति किलो ग्राम है। इस कीमत पर क्रेता 300 कि.ग्रा. टमाटर खरीदने के लिए तत्पर हैं जबकि विक्रेता केवल 100 कि. ग्रा. बेचना चाहते हैं। इसी प्रकार जब टमाटरों की कीमत 14 रु. प्रति कि.ग्रा. है तो टमाटरों की मांगी गई मात्रा घटकर 250 कि.ग्रा. रह जाती है और आपूर्ति की मात्रा बढ़कर 150 कि. ग्रा. हो जाती है। दोनों ही स्थितियाँ बाजार में टमाटरों की आधिक्य मांग को दर्शाती हैं। इससे टमाटरों की कीमत में और वृद्धि होगी। टमाटरों की कीमत बढ़ती रहेगी जब तक कि कीमत वहां पहुँच जाये जिस पर टमाटरों की मांगी गई मात्रा उसकी आपूर्ति की मात्रा के बराबर न हो जाये। इस प्रकार टमाटरों की संतुलन कीमत 16 रु. प्रति कि.ग्रा. होगी जिस पर टमाटरों की मांगी गई मात्रा तथा आपूर्ति की मात्रा 200 कि.ग्रा. पर बराबर हैं।

दूसरी ओर, जब टमाटरों की कीमत बढ़कर 18 रु. प्रति कि.ग्रा. हो जाती है तो मांगी गई मात्रा 150 कि.ग्रा. है तथा आपूर्ति की मात्रा 250 कि.ग्रा. है। अर्थात टमाटरों की आपूर्ति की मात्रा उनकी मांगी गई मात्रा से अधिक है। यह टमाटरों की आपूर्ति आधिक्य की स्थिति है। इससे टमाटरों की कीमत घटेगी और कीमत तब तक घटती रहेगी जब तक कि यह 16 रु. संतुलन कीमत पर न पहुँच जाये, जिसपर टमाटरों की मांगी गई मात्रा और आपूर्ति की मात्रा 200 कि.ग्रा. बराबर हैं।

## पाठगत प्रश्न 11.2

1. मान लीजिए, आप एक टमाटरों के विक्रेता हैं और आपके पास बिक्री के लिए 100 कि. ग्रा. टमाटर हैं। टमाटरों की बाजार कीमत 20 रु. प्रति कि.ग्रा. है। इस कीमत पर टमाटर की मांग केवल 60 कि.ग्रा. है। इसका आपके द्वारा टमाटरों की कीमत निर्धारण करनेपर क्या प्रभाव पड़ेगा?
2. प्रश्न न. 1 के समान यदि 20 रु. प्रति कि.ग्रा. कीमत पर टमाटरों की मांग 150 कि.ग्रा. है तो इसका आपके द्वारा टमाटरों की कीमत निर्धारण करने पर क्या प्रभाव पड़ेगा?
3. सही उत्तर पर (√) चिन्ह लगाइये।
   मांग आधिक्य एक ऐसी स्थिति है जहांः
   (अ) किसी वस्तु की मांग की मात्रा इसकी आपूर्ति की मात्रा के बराबर होती है।
   (ब) किसी वस्तु की मांग की मात्रा उसकी आपूर्ति की मात्रा से अधिक होती है।
   (स) किसी वस्तु की आपूर्ति की मात्रा उसकी मांग की मात्रा से अधिक होती है।
4. सही उत्तर पर (√) चिन्ह लगाइये।
   आपूर्ति आधिक्य एक ऐसी स्थिति है जहांः
   (अ) किसी वस्तु की आपूर्ति की मात्रा उसकी मांग की मात्रा के अधिक होती है।
   (ब) किसी वस्तु की आपूर्ति की मात्रा उसकी मांग की मात्रा के बराबर है।
   (स) किसी वस्तु की आपूर्ति की मात्रा उसकी मांग की मात्रा से कम है।
5. सही उत्तर पर (√) चिन्ह लगाइये।
   यदि किसी दी गई कीमत पर किसी वस्तु की मांग की मात्रा उसकी आपूर्ति की मात्रा से अधिक है तोः
   (अ) वस्तु की कीमत नहीं बदलती।
   (ब) कीमत घटने लगती है।
   (स) कीमत बढ़ने लगती है।
6. यदि किसी दी हुई कीमत पर किसी वस्तु की आपूर्ति की मात्रा उसकी मांग की मात्रा से अधिक होती है तो :
   (अ) कीमत घटने लगती है।
   (ब) कीमत अपरिवर्तित रहती है।
   (स) कीमत बढ़ने लगती है।

## 11.6 मांग में परिवर्तन का सन्तुलन कीमत और मात्रा पर प्रभाव

आप पढ़ चुके हैं कि किसी वस्तु की सन्तुलन कीमत वह कीमत है जिस पर वस्तु की मांग की मात्रा उसकी आपूर्ति की मात्रा के बराबर होती है। परन्तु क्या होता है यदि किसी वस्तु की मांग में वृद्धि हो जाती है और आपूर्ति पूर्ववत रहती है। किसी वस्तु की मांग में वृद्धि उसकी सन्तुलन कीमत तथा मांग की मात्रा व आपूर्ति की मात्रा में वृद्धि लाएगी। दूसरी ओर यदि किसी वस्तु की मांग घट जाती है और आपूर्ति पूर्ववत रहती है तो इससे वस्तु की संतुलन कीमत, मांग की मात्रा तथा आपूर्ति की मात्रा में कमी आयेगी।

## 11.7 आपूर्ति में परिवर्तन का सन्तुलन कीमत और सन्तुलन मात्रा पर प्रभाव

जब किसी वस्तु की आपूर्ति की मात्रा में वृद्धि होती है और इसकी मांग पूर्ववत रहती है तो संतुलन कीमत घट जायेगी किन्तु संतुलन मांग व आपूर्ति की मात्रा बढ़ जायेगी। दूसरी ओर जब वस्तु की आपूर्ति घट जाती है और उसकी मांग पूर्ववत रहती है तो इसकी सन्तुलन कीमत बढ़ जायेगी किन्तु सन्तुलन मांग व आपूर्ति की मात्रा घट जायेगी।

### पाठगत प्रश्न 11.3

1. किसी वस्तु की सन्तुलन कीमत पर क्या प्रभाव पड़ेगा, जब
   (अ) इसकी मांग में वृद्धि हो जाती है किन्तु आपूर्ति पूर्ववत रहती है।
   (ब) इसकी आपूर्ति में वृद्धि हो जाती है किन्तु मांग पूर्ववत रहती है।
   (स) इसकी मांग घट जाती है किन्तु आपूर्ति पूर्ववत रहती है।
   (द) इसकी आपूर्ति घट जाती है किन्तु मांग पूर्ववत रहती है।
2. किसी वस्तु की संतुलन मांग व आपूर्ति की मात्रा पर क्या प्रभाव पड़ेगा, जब
   (अ) इसकी मांग बढ़ जाती है और आपूर्ति पूर्ववत ही रहती है।
   (ब) इसकी आपूर्ति बढ़ जाती है और मांग पूर्ववत रहती है।
   (स) इसकी मांग घट जाती है और आपूर्ति पूर्ववत रहती है।
   (द) इसकी आपूर्ति घट जाती है और मांग पूर्ववत रहती है।

### आपने क्या सीखा

- मुद्रा की मात्रा जो एक क्रेता वस्तु या सेवा की एक इकाई के बदले में विक्रेता को देता है, वह वस्तु या सेवा की कीमत कहलाती है।
- सन्तुलन कीमत वह कीमत है जिस पर किसी वस्तु की मांग तथा आपूर्ति की मात्रा दोनों बराबर होती हैं।

- संतुलन कीमत का निर्धारण किसी वस्तु की मांग और आपूर्ति की बाजार शक्तियों के द्वारा होता है।
- मांग आधिक्य एक ऐसी स्थिति है जब एक दी गई कीमत पर किसी वस्तु की मांग की मात्रा उसकी आपूर्ति की मात्रा से अधिक होती है।
- आपूर्ति आधिक्य एक ऐसी स्थिति है जब एक दी गई कीमत पर किसी वस्तु की आपूर्ति की मात्रा उसकी मांग की मात्रा से अधिक होती है।
- जब किसी वस्तु की मांग आधिक्य होती है तो उसकी कीमत बढ़ने लगती है और उस समय तक बढ़ती रहती है जब तक वह संतुलन कीमत पर न पहुँच जाये।
- जब किसी वस्तु की आपूर्ति आधिक्य होती है तो उसकी कीमत घटने लगती है और उस समय तक घटती रहती है जब तक वह संतुलन कीमत पर न पहुँच जाये।
- जब किसी वस्तु की मांग में वृद्धि होती है और आपूर्ति पूर्ववत रहती है तो संतुलन कीमत तथा मांग व आपूर्ति की मात्रा दोनों में वृद्धि होती है।
- जब किसी वस्तु की मांग घटती है और आपूर्ति पूर्ववत रहती है तो संतुलन कीमत तथा संतुलन मांग व आपूर्ति की मात्रा दोनों घट जाती हैं।
- जब किसी वस्तु की आपूर्ति में वृद्धि होती है और उसकी मांग पूर्ववत रहती है तो संतुलन कीमत घटेगी तथा संतुलन मांग व आपूर्ति की मात्रा बढ़ेंगी।
- जब किसी वस्तु की आपूर्ति घट जाती है और उसकी मांग पूर्ववत रहती है तो संतुलन कीमत बढ़ेगी तथा मांग और आपूर्ति की संतुलन मात्रा घट जायेगी।

## पाठान्त प्रश्न

1. कीमत से क्या अभिप्राय है?
2. संतुलन कीमत से क्या अभिप्राय है?
3. संतुलन मात्रा से क्या अभिप्राय है?
4. किसी वस्तु की संतुलन कीमत का निर्धारण कैसे होता है?
5. किसी वस्तु की कीमत पर क्या प्रभाव पड़ता है जब दी हुई कीमत पर
   (अ) किसी वस्तु की मांग की मात्रा उसकी आपूर्ति की मात्रा से अधिक होती है।
   (ब) किसी वस्तु की आपूर्ति की मात्रा उसकी मांग की मात्रा से अधिक होती है।
   (स) किसी वस्तु की मांग की मात्रा उसकी आपूर्ति की मात्रा के बराबर होती है।
6. किसी वस्तु की संतुलन कीमत पर क्या प्रभाव पड़ता है जब उसकी मांग में वृद्धि हो जाती है और आपूर्ति पूर्ववत रहती है।
7. किसी वस्तु की आपूर्ति में कमी का उसकी संतुलन कीमत तथा मांग और आपूर्ति की संतुलन मात्रा पर क्या प्रभाव पड़ता है जब उसकी मांग पूर्ववत रहती है।

## पाठगत प्रश्नों के उत्तर

### पाठगत प्रश्न 11.1

1. (i) उत्पादन लागत

   (ii) समान वस्तु की अन्य विक्रेताओं द्वारा निर्धारित कीमत

   (iii) विभिन्न कीमतों पर वस्तु की संभावित बिक्री

2. टमाटरों की कीमत बढ़ेगी।

### पाठगत प्रश्न 11.2

1. टमाटरों की कीमत घटेगी।
2. टमाटरों की कीमत बढ़ेगी।
3. (ब)
4. (अ)
5. (स)
6. (अ)

### पाठगत प्रश्न 11.3

1. (अ) संतुलन कीमत बढ़ेगी।

   (ब) संतुलन कीमत घटेगी।

   (स) संतुलन कीमत घटेगी।

   (द) संतुलन कीमत बढ़ेगी।

2. (अ) बढ़ेगी

   (ब) बढ़ेगी

   (स) घटेगी

   (द) घटेगी

# 12

# बाजार

हमने पिछले अध्याय में, उत्पादन तथा उत्पादन के साधनों के बारे में अध्ययन किया। उत्पादन के साधनों के संयुक्त प्रयत्नों द्वारा जिन वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है उन्हें बाजार में बेचने के लिये रखा जाता है। जब भी कभी हम कोई वस्तु चाहते हैं, हम बाजार जाते हैं और उस वस्तु को क्रय कर लेते हैं। ये वस्तुएं साबुन, शैम्पू, कपड़े तथा इसी प्रकार की अन्य वस्तुएं हो सकती हैं।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आपः

- बाजार का अर्थ समझ पायेंगे;
- बाजार की संरचना को समझ पायेंगे;
- वितरण के माध्यमों के आधार पर बाजारों में भेद कर पायेंगे;
- 'ऑन लाइन' बाजार का अर्थ समझ पायेंगे।

## 12.1 बाजार का अर्थ

साधारणतया, बाजार से अभिप्राय किसी स्थान से होता है जहां वस्तुओं का क्रय-विक्रय होता है जैसे - बिग बाजार, देहली में चांदनी चौक, मुम्बई में फैशन स्ट्रीट आदि। बाजार किसी विशेष स्थान तक सीमित नहीं होना चाहिए। अर्थशास्त्र में क्रेताओं तथा विक्रेताओं के व्यक्तिगत सम्पर्क के बिना भी बाजार का अस्तित्व हो सकता है। इस प्रकार **"बाजार से अभिप्राय किसी दिये गये क्षेत्र में उस व्यवस्था से है जिसके द्वारा वस्तुओं के क्रय-विक्रय के लिये क्रेता तथा विक्रेता प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सम्पर्क में आते हैं।"** परिभाषा इंगित करती है कि बाजार के लिए सम्मुख सम्पर्क आवश्यक नहीं है। क्रेता तथा विक्रेता अप्रत्यक्ष रूप से प्रतिनिधियों, टेलीफोन, मोबाइल अथवा इन्टरनेट के माध्यम से भी अपने व्यापार को चला सकते हैं। जिस भी प्रकार क्रेता और विक्रेता सम्पर्क में आएं, वे ऐसा वस्तुओं और सेवाओं का मुद्रा के लिये विनिमय करते हैं। इस प्रक्रिया में, जिन वस्तुओं और सेवाओं का व्यापार किया जाता है उन वस्तुओं और सेवाओं की कीमत तथा मात्रा का निर्धारण भी हो जाता है।

इस प्रकार, बाजार एक ऐसी यंत्रकला अथवा प्रणाली है जिसके द्वारा क्रेता तथा विक्रेता किसी वस्तु अथवा सेवा की कीमत तथा मात्रा के निर्धारण के लिये सम्पर्क में आते हैं।

### बाजार की मुख्य विशेषताएं

उपर्युक्त परिभाषा के अनुसार बाजार की निम्नलिखित विशेषताएं होती हैः

1. **वस्तु** अर्थात कोई वस्तु होनी चाहिए जिसकी मांग की जा रही है तथा जिसका विक्रय हो रहा है।
2. **क्रेता तथा विक्रेता** अर्थात वस्तु के क्रेता तथा विक्रेता होने चाहिए।
3. **सम्पर्क** अर्थात क्रेताओं तथा विक्रेताओं के बीच सम्पर्क होना चाहिए।

### पाठगत प्रश्न 12.1

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिएः

1. बाजार का अस्तित्व वहां होता है जहां क्रेताओं तथा विक्रेताओं के बीच ................. हो।
2. क्रय तथा विक्रय ................. में होता है।
3. ................. तथा ................. की प्रक्रिया बाजार में साथ-साथ होती है।
4. बाजार में क्रेता तथा विक्रेताओं का अस्तित्व, उनके बीच सम्पर्क तथा ................. होते हैं।

## 12.2 बाजार की संरचना

बाजार की संरचना से हमारा अभिप्राय बाजार में उत्पाद की प्रकृति, विक्रेताओं व क्रेताओं की संख्या आदि से है। इस आधार पर हम बाजार के दो चरम रूप दे सकते हैंः

1. एकाधिकारी बाजार
2. पूर्ण प्रतियोगी बाजार

### 12.2.1 एकाधिकार

'Monopoly' शब्द की उत्पति दो ग्रीक शब्दों 'MONOS' तथा 'POLUS' से हुई है। 'Monos' का अर्थ है एक तथा 'Polus' का अर्थ है विक्रेता। इसलिए 'Monopoly' शब्द का अर्थ है - एक विक्रेता। **एकाधिकार बाजार की ऐसी संरचना है जिसमें किसी वस्तु का समस्त उत्पादन करने वाली एक ही फर्म होती है तथा एकाधिकारी द्वारा बेची जाने वाली वस्तु की कोई निकट स्थानापन्न वस्तु नहीं होती है।** इसलिए ऐसे बाजार में प्रतियोगिता का अभाव होता है। इस प्रकार के बाजार

में विक्रेता को किसी प्रतियोगिता का सामना नहीं करना पड़ता क्योंकि उसके द्वारा बेची जाने वाली वस्तु के अन्य विक्रेता हैं ही नहीं। विक्रेता अपनी वस्तु की अधिक कीमत वसूल करने की स्थिति में होता है जो उपभोक्ताओं के प्रत्युत्तर पर निर्भर करती है। उदाहरणार्थः परमाणु ऊर्जा, रक्षा, सार्वजनिक जल-आपूर्ति, रेलवे आदि में भारत सरकार का एकाधिकार है।

### एकाधिकार की विशेषताएं

(i) **एक फर्मः** एकाधिकारी वस्तु का अकेला उत्पादक होता है। उसका कोई प्रतियोगी नहीं होता है। वही एक अकेला विक्रेता होता है जो अपनी वस्तु से बाजार पर नियंत्रण करता है।

(ii) **वस्तु का कोई निकट स्थानापन्न न होना :** एकाधिकार द्वारा उत्पादित वस्तु के निकट स्थानापन्न नहीं होते हैं। निकट स्थानापन्न से अभिप्राय उसी प्रयोग में आने वाली अन्य समान वस्तुओं से है। एकाधिकारी किसी विशेष बाजार में वस्तु की समस्त मात्रा का उत्पादन करता है।

(iii) **कीमत निर्धारक :** बाजार में वस्तु का अकेला विक्रेता होने के कारण एकाधिकारी वस्तु की कीमत स्वयं निश्चित करता है क्योंकि उसकी कीमत को चुनौती देने वाला कोई नहीं होता। एकाधिकारी कीमत निर्धारक होता है। इससे अभिप्राय यह नहीं है कि एकाधिकारी कीमत तथा मांगी गई मात्रा दोनों को निश्चित कर सकता है। यदि वह ऊँची कीमत निश्चित करता है तो वस्तु की कम मात्रा की मांग होगी।

(iv) **नई फर्म के प्रवेश पर रोक :** नई फर्मों के लिये बाजार में प्रवेश कर अकेले विक्रेता से प्रतियोगिता करना सम्भव नहीं होता है। अकेला विक्रेता अथवा फर्म होने के कारण, एकाधिकार में फर्म तथा उद्योग में कोई भेद नहीं होता है।

(v) एकाधिकारी का **उद्देश्य लाभ अधिकतम** करना होता है।

## 12.2.2 पूर्ण प्रतियोगी बाजार अथवा पूर्ण प्रतियोगिता

बाजार की एक अन्य चरम स्थिति को पूर्ण प्रतियोगी बाजार अथवा पूर्ण प्रतियोगिता कहते हैं।

### पूर्ण प्रतियोगिता की विशेषताएं

(i) **विक्रेताओं एवं क्रेताओं की बड़ी संख्या :** एकाधिकारी बाजार के विपरीत, पूर्ण प्रतियोगी बाजार में बड़ी संख्या में क्रेताओं को वस्तु का विक्रय करने विक्रेता भी बड़ी संख्या में होते हैं।

(ii) **अकेला उत्पाद :** पूर्ण प्रतियोगिता में केवल एक उत्पाद का ही विक्रय होता है। इससे अभिप्राय है कि सभी विक्रेता क्रेताओं को समान प्रकार के उत्पाद का विक्रय करते हैं। इसलिये उत्पाद पूर्ण स्थानापन्न होते हैं।

(iii) **प्रवेश व बहिर्गमन की स्वतंत्रता :** पूर्ण प्रतियोगिता में किसी नई फर्म अथवा उत्पादक के वस्तु के विक्रय के लिये बाजार में प्रवेश पर कोई प्रतिबंध नहीं होता है। इसी प्रकार से यदि कोई विद्यमान विक्रेता विक्रय नहीं करना चाहता तो वह ऐसा करने के लिये स्वतंत्र होता है और वह बाजार से बहिर्गमन कर सकता है।

(iv) प्रत्येक विक्रेता अधिकतम लाभ कमाना चाहता है।

(v) सरकार की भूमिका विक्रेताओं को संरक्षण प्रदान करना होती है तथा यह व्यवसाय में हस्तक्षेप नहीं करती है।

(vi) पूर्ण प्रतियोगिता में विक्रेताओं तथा क्रेताओं को उत्पाद के विषय में पूर्ण जानकारी होती है।

(vii) उत्पादन के साधनों जैसे श्रम आदि पर एक उत्पादन इकाई से दूसरी उत्पादन इकाई में कार्य करने के लिये जाने पर कोई प्रतिबन्ध नहीं होता।

### वास्तविक विश्व की स्थिति में बाजार की संरचना

वास्तविक विश्व में एकाधिकार अथवा पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति देखने को नहीं मिलती। विधि अनुसार निजी एकाधिकार की अनुमति नहीं है। केवल सरकार का एकाधिकार ही अस्तित्व में रहता है। आजकल बाजार एक ही प्रकार की वस्तुओं की अनेक किस्मों से भरा पड़ा है इसलिए वास्तव में पूर्ण प्रतियोगिता भी अस्तित्व में नहीं होती है। 'साबुन' - जो स्नान करने अथवा हाथ धोने के लिये होता है, का उदाहरण लीजिये। पूर्ण प्रतियोगिता में यह आशा की जाती है कि अनेक विक्रेताओं के द्वारा केवल एक प्रकार के साबुन का ही विक्रय किया जाएगा। परन्तु वास्तव में विभिन्न फर्मों द्वारा विक्रय किये जाने वाले तथा विभिन्न ब्राण्ड के साबुन जैसे लक्स, डव, लिरिल, गोदरेज, नीम, मैसूर सन्दल, जान्सन, हमाम, डिटॉल, लाइफबाय आदि हमें बाजार में उपलब्ध होते हैं। इनका उपयोग समान उद्देश्य के लिये अर्थात स्नान करने के लिये किया जाता है, परन्तु वे रंग, पैकिंग, सुगंध आदि में भिन्न होते हैं। सभी विक्रेता अपने साबुन के विक्रय के लिये विज्ञापन आदि पर भारी व्यय करते हैं। पूर्ण प्रतियोगिता के विपरीत जहाँ एक वस्तु को बिना विज्ञापन के बेचने वाले अनेक विक्रेता होते हैं, इस स्थिति में किसी विशेष वस्तु को बेचने वाले अनेक विक्रेता होते हैं जो वस्तु की विभिन्न किस्मों को बेचते हैं। इसलिए हम नहीं कह सकते कि इस प्रकार का बाजार पूर्णप्रतियोगी बाजार है। इस प्रकार के बाजार को एकाधिकारी प्रतियोगिता अथवा अपूर्ण प्रतियोगिता कहते हैं।

## पाठगत प्रश्न 12.2

1. एकाधिकार से क्या अभिप्राय है?
2. भारत में एकाधिकार के दो उदाहरण लिखो।
3. एकाधिकार में फर्म तथा उद्योग में भेद क्यों नहीं होता है?
4. एकाधिकारी फर्म कीमत निर्धारक होती है अथवा कीमत स्वीकारक?
5. पूर्ण प्रतियोगिता में 'प्रवेश की स्वतंत्रता' से आपका क्या अभिप्राय है?

6. हाँ अथवा नहीं लिखिए :

(क) पूर्ण प्रतियोगिता में केवल एक विक्रेता होता है।

(ख) पूर्ण प्रतियोगिता में भिन्न-भिन्न वस्तुओं का विक्रय होता है।

(ग) पूर्ण प्रतियोगिता में उत्पादन में सरकार हस्तक्षेप करती है।

(घ) पूर्ण प्रतियोगिता में उत्पाद पूर्ण स्थानापन्न होते हैं।

(च) पूर्ण प्रतियोगिता में उत्पाद के बारे में क्रेताओं को पूर्ण ज्ञान होता है।

## 12.3 वितरण के माध्यमों तथा विक्रय की मात्रा के आधार पर बाजारों का वर्गीकरण

वितरण के माध्यमों अथवा विक्रय योग्य मात्राओं के आधार पर बाजारों को निम्नलिखति में वर्गीकृत किया जाता हैः

(क) थोक बाजार

(ख) फुटकर बाजार

**(क) थोक बाजार :** थोक विक्रेता एक ऐसा वितरक अथवा मध्यस्थ होता है जो उपभोक्ताओं की अपेक्षा मुख्यतः फुटकर विक्रेताओं तथा संस्थाओं को माल बेचता है। **जब किसी बाजार में वस्तुओं का लेनदेन बड़ी मात्रा में किया जाता है तो इसे थोक बाजार कहते हैं।** थोक विक्रेता सामान्य रूप से थोड़ी मात्रा में माल नहीं बेचता है। ये आमतौर पर फुटकर विक्रेताओं को माल बेचते हैं। थोक विक्रेता विनिर्माताओं तथा अन्तिम उपभोक्ताओं के बीच एक आवश्यक कड़ी होते हैं। थोक विक्रेताओं की उपस्थिति के कारण ही विनिर्माता आश्वस्त रहते हैं क्योंकि वे अपनी वस्तुओं को बड़ी मात्रा में बेच सकते हैं तथा अपना ध्यान व्यवसाय एवं उत्पादन पर केन्द्रित कर सकते हैं।

**(ख) फुटकर बाजार :** फुटकर बिक्री में किसी निश्चित स्थान से जैसे डिपार्टमेन्टल स्टोर, दुकानदार द्वारा भौतिक वस्तुओं अथवा व्यवसायकि माल का छोटी-छोटी मात्राओं में क्रेताओं को प्रत्यक्ष उपभोग के लिये विक्रय को सम्मिलित किया जाता है। **फुटकर बाजारों में वस्तुओं को छोटी-छोटी मात्राओं में बेचा जाता है। फुटकर विक्रेता सामान्य रूप से अन्तिम उपभोक्ताओं को माल बेचते हैं।**

विनिर्माता → थोक विक्रेता → फुटकर विक्रेता → उपभोक्ता

वस्तु और सेवाओं के वितरण के माध्यमों में फुटकर विक्रेता का स्थान सबसे महत्वपूर्ण होता है क्योंकि वह उपभोक्ताओं के सीधे सम्पर्क में होता है। इसलिए थोक व्यवसाय की तुलना में फुटकर बिक्री की दुकान अथवा आउटलेट की स्थिति अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। फुटकर बिक्री की दुकानें आवासीय कालोनियों के समीप स्थित होनी चाहियें ताकि लोग वस्तु एवं सेवाओं को खरीदने के लिये आसानी से आ सकें। फुटकर विक्रेता को आफिस, दुकानों की सजावट तथा वस्तुओं की उचित प्रस्तुति पर भी काफी अधिक व्यय करना पड़ता है ताकि उपभोक्ता फुटकर बिक्री की दुकान की ओर आकर्षित हों।

## पाठगत प्रश्न 12.3

1. अपने इलाके की फुटकर बिक्री की दुकानों के कुछ उदाहरण दो।
2. थोक विक्रेता की परिभाषा लिखिये।
3. फुटकर विक्रेता की परिभाषा लिखिये।
4. फुटकर बाजार की परिभाषा लिखिये।

## 12.4 ऑनलाइन बाजार अथवा ऑनलाइन खरीदारी

यह एक नव प्रवर्तन की प्रक्रिया है जिसमें उपभोक्ता इन्टरनेट पर बिना किसी मध्यस्थ सेवा के विक्रेता से सीधे ही वस्तुएं अथवा सेवाएं खरीदते हैं। इसे इलेक्ट्रानिक कामर्स (इ-कामर्स) भी कहा जाता है। आजकल, ऑनलाइन खरीदारी अत्यन्त लोकप्रिय हो गई है जो प्रौद्योगिकी के विकास से विकसित हुई है। इस प्रकार की खरीदारी में व्यक्ति भुगतान करने के लिये क्रेडिट कार्ड अथवा डेबिट कार्ड का प्रयोग कर सकता है, लेकिन कुछ पद्धतियाँ प्रयोगकर्ताओं को अपने खाते खोलने तथा वैकल्पिक विधियों द्वारा भुगतान करने में समर्थ बनाती हैं, जैसे -

- मोबाइल फोन तथा लैण्डलाइन द्वारा बिलिंग
- सुपुर्दगी पर नकद भुगतान
- चैक
- डेबिट कार्ड
- डाक मनीआर्डर

एक बार भुगतान की स्वीकृति मिलने पर वस्तुओं एवं सेवाओं की सुपुर्दगी 'डाउन लोडिंग', वितरण तथा इनस्टोर पिकिंग आदि के माध्यम से की जा सकती है।

ऑनलाइन गोदाम सामान्य रूप से दिन में 24 घण्टे उपलब्ध होते हैं तथा अनेक उपभोक्ताओं के पास कार्यस्थल तथा घर पर इन्टरनेट उपलब्ध होता है इसलिये वे किसी स्टोर अथवा दुकान पर जाने की अपेक्षा केवल इन्टरनेट के माध्यम से ही खरीददारी करना पसंद करते हैं। ऑनलाइन स्टोर्स को उत्पादों का विक्रय के लिये मूल, फोटो तथा मल्टीमीडिया फाइलों द्वारा विस्तृत निर्देशों के साथ वर्णन करना चाहिये। वर्तमान परिपेक्ष्य में ऑनलाइन खरीददारी द्वारा व्यक्ति बिना समय गंवाए भिन्न-भिन्न प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं की खरीदारी कर सकता है। इसके अतिरिक्त, बाजार में प्रौद्योगिकी में विकास के कारण हाल के वर्षों में खरीदारी की इस विधि का महत्व और अधिक बढ़ गया है।

## आपने क्या सीखा

- अर्थशास्त्र में बाजार से अभिप्राय किसी दिये गये क्षेत्र में उस प्रबंध से है जिसके द्वारा वस्तुओं के क्रय-विक्रय के लिये क्रेता तथा विक्रेता प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सम्पर्क में आते हैं।

- एकाधिकार तथा पूर्ण प्रतियोगिता बाजार की संरचना के दो चरम रूप हैं।
- एकाधिकार ऐसी बाजार संरचना है जिसमें अकेली फर्म बाजार पर नियंत्रण रखती है। यह अकेले विक्रेता का बाजार होता है जो एक ऐसी वस्तु का विक्रय करता है जिसका कोई निकट स्थानापन्न नहीं होता है।
- पूर्ण प्रतियोगिता ऐसी बाजार संरचना है जिसमें अनेक फर्में एक जैसी वस्तु का विक्रय करती हैं। इस बाजार में फर्मों का प्रवेश तथा निर्गम स्वतंत्र होता है। क्रेताओं तथा विक्रेताओं को बाजार की स्थिति के विषय में पूर्ण जानकारी होती है।
- थोक विक्रेता एक ऐसा वितरक अथवा मध्यस्थ होता है जो उपभोक्ताओं की अपेक्षा मुख्य रूप से फुटकर विक्रेताओं तथा संस्थाओं को माल का विक्रय करता है।
- फुटकर विक्रेता वह होता है जो भिन्न-भिन्न प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं का प्रत्यक्ष रूप से आम जनता को विक्रय करता है।
- ऑनलाइन खरीदारी ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा उपभोक्ता बिना समय बर्बाद किये, किसी मध्यस्थ सेवा के बिना, प्रत्यक्ष रूप से विक्रेता से वस्तु और सेवाओं की कम्प्यूटर पर इन्टरनेट द्वारा खरीदारी करते हैं।
- ऑनलाइन खरीदारी इलैक्ट्रॉनिक-कामर्स का एक रूप है।

## पाठान्त प्रश्न

1. बाजार की परिभाषा लिखिये।
2. पूर्ण प्रतियोगिता की परिभाषा लिखिये।
3. एकाधिकार की परिभाषा लिखिये।
4. फुटकर बाजार तथा थोक बाजार में भेद कीजिये।
5. पूर्ण प्रतियोगिता की विशेषताओं की व्याख्या कीजिये।
6. एकाधिकार की विशेषताओं की व्याख्या कीजिये।
7. क्या आप सोचते हैं कि फुटकर विक्रेता बेची जाने वाली वस्तुओं के स्थान तथा उनकी प्रस्तुति के बारे में चिंतित होता है? यदि हाँ तो क्यों?

## पाठगत प्रश्नों के उत्तर

### पाठगत प्रश्न 12.1

1. परस्पर संपर्क   2. बाजार स्थान   3. क्रय; विक्रय   4. वस्तु

## पाठगत प्रश्न 12.2

1. एकाधिकार बाजार की ऐसी संरचना है जिसमें वस्तु का समस्त उत्पादन करने वाली एक ही फर्म होती है तथा एकाधिकारी द्वारा बेची जाने वाली वस्तु का कोई निकट स्थानापन्न नहीं होता।
2. परमाणु ऊर्जा, भारतीय रेलवे, डाक तथा तार सेवाएं
3. क्योंकि एकाधिकारी अकेला उत्पादक/विक्रेता होता है।
4. कीमत-निर्धारक
5. 'प्रवेश की स्वतंत्रता' से अभिप्राय है कि पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत विक्रेता बाजार में अथवा बाजार से प्रवेश/निर्गम के लिये स्वतंत्र होते हैं। नई फर्मों के प्रवेश पर कोई प्रतिबंध नहीं होता है।
6. (क) नहीं

   (ख) नहीं

   (ग) नहीं

   (घ) हाँ

   (च) हाँ

## पाठगत प्रश्न 12.3

1. स्टेशनरी की दुकान, केन्द्रीय भण्डार, मदर डेयरी, दवाई की दुकानें
2. थोक विक्रेता एक ऐसा वितरक अथवा मध्यस्थ होता है जो उपभोक्ताओं की अपेक्षा मुख्यतः फुटकर विक्रेताओं तथा संस्थाओं को माल बेचता है।
3. फुटकर विक्रेता वह होता है जो वस्तुओं अथवा व्यवसायिक माल को स्थायी स्थान जैसे डिपार्टमेन्टल स्टोर, दुकानदार से क्रेताओं को प्रत्यक्ष उपभोग के लिये छोटी मात्राओं में बेचता है।
4. फुटकर बाजार से अभिप्राय उस बाजार से है जिसमें छोटी मात्राओं में वस्तुओं का अन्तिम उपभोक्ताओं को विक्रय होता है।

# 13

# कीमत और मात्रा के निर्धारण में सरकार की भूमिका

हम पहले अध्याय में पढ़ चुके हैं कि किसी वस्तु की संतुलन कीमत का निर्धारण, सरकार के बिना किसी हस्तक्षेप के, मांग और पूर्ति की शक्तियों द्वारा होता है। किन्तु इस प्रकार निर्धारित कीमत इतनी ऊँची हो सकती है कि कुछ उपभोक्ता इस कीमत पर वस्तु को खरीदने में समर्थ नहीं होते हैं अथवा यह इतनी कम हो सकती है कि इस कीमत पर उत्पादक अपनी वस्तु को बेचने के इच्छुक नहीं होते, अथवा इससे वस्तु की उत्पादन लागत भी पूरी नहीं होती। ऐसी स्थिति में सरकार हस्तक्षेप करती है तथा उपभोक्ताओं अथवा उत्पादकों के हितों की रक्षा करने के लिये, जैसा उपयुक्त हो, वस्तु की कीमत को या तो संतुलन कीमत से कम या संतुलन कीमत से अधिक निश्चित करती है।

### उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन और वितरण में सरकार की भूमिका को समझ सकेंगे;
- सरकार किस प्रकार कीमत नियंत्रित करती है को समझ सकेंगे;
- न्यूनतम समर्थन कीमत की अवधारणा को समझ सकेंगे;
- सरकार उपभोक्ताओं और उत्पादकों की सहायता क्यों करती है, को समझ सकेंगे।

## 13.1 वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन और वितरण में सरकार की भूमिका

जैसा कि पहले समझाया जा चुका है कि किसी वस्तु की संतुलन कीमत का निर्धारण, सरकार के किसी हस्तक्षेप के बिना, मांग और पूर्ति की शक्तियों के स्वतंत्र प्रभाव द्वारा होता है। किन्तु कभी-कभी जब बाजार में किसी वस्तु की कमी होती है तो इस प्रकार निर्धारित कीमत बहुत ऊँची होती है। ऐसी स्थिति में कुछ उपभोक्ता, ऊँची कीमत होने के कारण, वस्तु को खरीदने में समर्थ नहीं होते। इसलिए उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा करने के लिए सरकार को वस्तु की कीमत निश्चित करनी पड़ती है जो प्रायः संतुलन कीमत से कम होती है। इसी प्रकार जब खाद्यान्नों की फसल बहुत अच्छी होती है तो खाद्यान्नों की कीमत नीचे स्तर पर निर्धारित होती है। इस कीमत पर किसानों को उनकी उत्पादन लागत भी नहीं मिल पाती। इसलिए कीमतों में अधिक

कमी होने के कारण किसानों पर इसका बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। ऐसी स्थिति में सरकार खाद्यान्नों की कीमत निश्चित करती है, जो कि संतुलन कीमत से अधिक होती है, जिससे उत्पादकों, विशेष रूप से किसानों के हितों की रक्षा हो सके। इसलिए कभी-कभी उपभोक्ताओं और उत्पादकों के हितों की रक्षा के लिए सरकार, कुछ वस्तुओं की कीमत निर्धारण में मांग और पूति की शक्तियों की स्वतंत्र भूमिका नहीं चलने देती। सरकार वस्तु की कीमत या तो संतुलन कीमत से कम या अधिक निश्चित कर सकती है। इस प्रकार की कीमत को निर्देशित कीमत (सरकार द्वारा निर्धारित कीमत) कहते हैं। निर्देशित कीमत निम्न रूपों में हो सकती है

(i) नियन्त्रित कीमत

(ii) समर्थन कीमत

(iii) सांकेतिक कीमत

(iv) दोहरी कीमत

## 13.2 नियन्त्रित कीमत

**उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा करने के लिए सरकार वस्तु की अधिकतम कीमत निश्चित करती है। यह अधिकतम कीमत प्रायः संतुलन कीमत से कम होती है। इसे नियंत्रित कीमत अथवा उच्चतम कीमत कहते हैं।** सरकार द्वारा यह कीमत इसलिए निश्चित की जाती है क्योंकि गरीब लोग संतुलन कीमत पर वस्तु को खरीदने में समर्थ नहीं होते। यह स्थिति तब पैदा होती है जब किसी वस्तु का उत्पादन उसकी मांग से कम होता है। क्योंकि सरकार द्वारा निश्चित कीमत संतुलन कीमत से कम होती है, इससे वस्तु की आधिक्य मांग उत्पन्न हो सकती हैं जिसका अर्थ है कि क्रेता उससे अधिक खरीदने को तत्पर होते है जितना विक्रेता बेचने के इच्छुक होते हैं। भारत में सरकार नियंत्रित कीमत अथवा उच्चतम कीमत उन वस्तुओं के लिये निर्धारित करती है जिन्हें वह आम जनता के लिए अनिवार्य समझती है। उदाहरण के लिए कुछ वस्तुएं जैसे गेहूँ, चावल, चीनी, मिट्टी का तेल आदि की नियंत्रित कीमतें हैं। उच्चतम कीमत पर वस्तु की आधिक्य मांग होने के कारण सरकार **राशनिंग प्रणाली** अपनाती है। **राशनिंग से अभिप्राय प्रति व्यक्ति प्रति इकाई समय में कोटा नियत करने से है।** उच्चतम कीमत पर वस्तु की आधिक्य मांग होने के कारण काला बाजारी की समस्या भी उत्पन्न हो सकती है। काला बाजारी वह स्थिति है जिसमें विक्रेता गैर कानूनी तौर पर वस्तु की ऐसी कीमत वसूल करता है जो नियन्त्रित कीमत से बहुत अधिक होती है। काला बाजारी की समस्या को दोहरी कीमत नीति द्वारा हल किया जा सकता है जिसकी व्याख्या इस पाठ के अन्तिम भाग में की जायेगी।

## पाठगत प्रश्न 13.1

1. सरकार कुछ वस्तुओं की कीमत संतुलन कीमत से नीची क्यों निर्धारित करती है?
2. किसी वस्तु की कीमत संतुलन कीमत से नीची निर्धारित करने में आने वाली समस्याओं के नाम दीजिये।

3. राशनिंग से क्या अभिप्राय है?
4. काला बाजारी से आपका क्या अभिप्राय है?
5. कीमत नियंत्रण के कारण, कालाबाजारी की समस्या उत्पन्न होने पर सरकार द्वारा क्या नीति अपनायी जाती है?

## 13.3 समर्थन कीमत

कभी-कभी, उत्पादकों, मुख्य रूप से किसानों के हितों की रक्षा करने के लिए सरकार वस्तु की न्यूनतम कीमत निर्धारित करती है जिसका भुगतान उत्पादकों को करना होता है। यह कीमत प्रायः संतुलन कीमत से अधिक होती है। यह समस्या तब उत्पन्न होती है जबकि उत्पादकों को संतुलन कीमत पर उनकी पूरी उत्पादन लागत नहीं मिलती। **सरकार द्वारा उत्पादकों के हितों की रक्षा करने के लिए निश्चित की गई यह कीमत समर्थन कीमत कहलाती है।** इससे वस्तु की पूर्ति आधिक्य की समस्या उत्पन्न हो सकती है। इसका तात्पर्य यह है कि क्रेता जितनी वस्तु खरीदना चाहते हैं विक्रेता उससे अधिक वस्तु बेचना चाहते हैं।

भारत में, खाद्यान्न जैसे गेहूँ और चावल आदि की नीची कीमत का किसानों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। उनकी खाद्यान्न उत्पादन में रूचि समाप्त हो सकती है। इससे खाद्यान्न की बहुत अधिक कमी हो सकती है। इसलिए, कृषि उत्पादों के लिए, समर्थन कीमत की व्यवस्था अपनायी जाती है। समर्थन कीमत की यह व्यवस्था किसानों के लिए यह सुनिश्चित करती है कि वे अपने उत्पादों को कम से कम इस कीमत पर बेच सकेंगे।

समर्थन कीमत पर वस्तु की पूर्ति आधिक्य की स्थिति में, सरकार वस्तु की कितनी भी मात्रा, वस्तु का बफर स्टॉक करने के लिए, खरीदने के लिए तैयार रहती है।

## पाठगत प्रश्न 13.2

1. समर्थन कीमत क्या है?
2. सरकार वस्तु की कीमत संतुलन कीमत से अधिक क्यों निश्चित करती है?
3. मान लीजिये, किसान सरकार द्वारा, संतुलन कीमत से अधिक निश्चित कीमत पर अपना गेहूँ का पूरा उत्पादन नहीं बेच पाते हैं, सरकार द्वारा कौन सी नीति अपनायी जाती है?
4. किन्हीं दो वस्तुओं के नाम दो, जिनकी भारत में समर्थन कीमत है।

## 13.4 सांकेतिक कीमत

कुछ वस्तुएं और सेवाएं ऐसी होती है जिन्हें जीवन के अस्तित्व के लिए अनिवार्य समझा जाता है, जैसे चिकित्सा सेवाएं, स्वास्थ्य सेवाएं, शिक्षा सेवाएं आदि। गरीब लोग प्रचलित बाजार कीमत

पर इन सेवाओं का उपयोग करने में असमर्थ रहते हैं इसलिए सरकार और कुछ निजी धमार्थ संस्थाएं, इन सेवाओं को ऐसी कीमत पर उपलब्ध कराती हैं जो इनकी प्रति इकाई उत्पादन लागत से भी बहुत कम होती है। यह कीमत इन वस्तुओं और सेवाओं की सांकेतिक कीमत कहलाती है। सरकारी स्कूलों में ली जाने वाली ट्यूशन फीस, सरकार द्वारा प्रति विद्यार्थी लागत व्यय से बहुत कम होती है।

सांकेतिक कीमत इन सेवाओं का दुरूपयोग रोकने के लिए वसूल की जाती है, अन्यथा इन वस्तुओं को निःशुल्क भी उपलब्ध कराया जा सकता है। उदाहरण के लिए यदि इन सेवाओं को निःशुल्क उपलब्ध कराया जाय तो कुछ लोग निःशुल्क आवास और भोजन प्राप्त करने के लिए अस्पतालों में अधिक समय तक ठहरने का प्रयत्न कर सकते हैं।

## 13.5 दोहरी कीमत

जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि कीमत नियन्त्रण के कारण वस्तु की कमी उत्पन्न हो सकती है क्योंकि विक्रेता सरकार द्वारा नियन्त्रित कीमत पर वस्तु की काफी मात्रा की पूर्ति करने के इच्छुक नहीं होते क्योंकि यह कीमत संतुलन कीमत से कम होती है। इससे वस्तु की काला बाजारी की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। इस स्थिति से बचने के लिए सरकार दोहरी कीमत नीति अपनाती है। इस नीति के अन्तर्गत वस्तु के कुल उत्पादन का एक भाग नियन्त्रित कीमत पर उचित दर की दुकानों के माध्यम से बेचा जाता है और शेष भाग प्रचलित बाजार कीमत पर बेचा जाता है जिसका निर्धारण मांग और आपूर्ति की शक्तियों द्वारा होता है। इस कीमत पर वस्तु की कितनी भी मात्रा खरीदी जा सकती है। उदाहरण के लिए, बी.पी.एल. (गरीबी रेखा से नीचे) राशन कार्ड वाले व्यक्तियों को सरकार, उचित दर दुकानों के माध्यम से गेहूँ, चावल और चीनी नियन्त्रित कीमत पर बेचती है और उत्पादकों को उत्पादन का शेष भाग खुले बाजार में संतुलन कीमत पर बेचने की अनुमति भी देती है।

## पाठगत प्रश्न 13.3

1. सांकेतिक कीमत क्या है?
2. दोहरी कीमत से क्या अभिप्राय है?
3. सरकार कुछ वस्तुओं को निशुल्क क्यों नहीं उपलब्ध कराती। वह उनकी सांकेतिक कीमत क्यों वसूल करती है?
4. सही उत्तर पर (√) चिन्ह लगाइए।
   (अ) सांकेतिक कीमत वह कीमत है जो सरकार द्वारा प्रति इकाई उत्पादन लागत से ऊँची निश्चित की जाती है।
   (ब) सांकेतिक कीमत वह कीमत है जो प्रति इकाई उत्पादन लागत से बहुत कम होती है।
   (स) सांकेतिक कीमत वह कीमत होती है जो अमीर लोगों से वसूल की जाती है।
   (द) सांकेतिक कीमत प्रति इकाई उत्पादन लागत के बराबर होती है।

## 13.6 बाजार कीमत पर, करों और आर्थिक सहायता का प्रभाव

सरकार, वस्तुओं के उत्पादन तथा उनकी बिक्री तथा कच्चे माल आदि के आयात पर विभिन्न प्रकार के कर लगाती है जो क्रमशः उत्पादन शुल्क, बिक्री कर और आयात शुल्क के रूप में होते हैं। ये करें सरकार को, उत्पादकों, विक्रेताओं तथा इन वस्तुओं के आयात करने वालों द्वारा भुगतान किए जाते हैं। इन वस्तुओं के उत्पादक, विक्रेता और आयात करने वाले उन्हें इन वस्तुओं के क्रेताओं से वसूल कर लेते हैं। इसलिए ये **कर इन वस्तुओं की बाजार कीमत में वृद्धि करते हैं।** यदि सरकार इन करों की दर बढ़ा देती है तो इन वस्तुओं की बाजार कीमत भी बढ़ जायेगी।

दूसरी ओर, वस्तुओं को आम आदमियों को उचित मूल्य पर उपलब्ध कराने के लिए, सरकार कुछ वस्तुओं के उत्पादकों को आर्थिक सहायता भी देती है। इसलिए, **आर्थिक सहायता में वृद्धि करने से वस्तु की बाजार कीमत में कमी हो जाती है।** उदाहरण के लिए सरकार मिट्टी का तेल, खाना पकाने की गैस आदि पर आर्थिक सहायता देती है।

## 13.7 सार्वजनिक वितरण प्रणाली (सा.वि.प्र.)

गरीब लोग अनिवार्य वस्तुओं को भी उनकी बाजार कीमत पर खरीदने में समर्थ नहीं होते। ऐसे लोगों की सहायता करने के लिए भारत में अपनायी जाने वाली विधियों में से एक सार्वजनिक वितरण प्रणाली है। इस पद्धति के अन्तर्गत, अनिवार्य वस्तुएं जैसे गेहूँ, चावल, चीनी आदि को राशन की दुकान के नाम से लोकप्रिय उचित दर दुकानों के माध्यम से आम आदमियों को सस्ती दर पर उपलब्ध कराया जाता है। इन वस्तुओं को, राशन कार्ड नामक पहचान पत्र द्वारा बेचा जाता है। भारत में सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अनिवार्य तत्व निम्नलिखित हैं :

1. **आर्थिक सहायता :** सार्वजनिक वितरण प्रणाली के माध्यम से बेची जाने वाली वस्तुओं पर सरकार आर्थिक सहायता देती है। इसलिए इस प्रणाली के माध्यम से बेची जाने वाली वस्तुओं की कीमत अपेक्षाकृत कम होती है।

2. **निश्चित मात्रा (राशनिंग) :** सरकार एक व्यक्ति की न्यूनतम आवश्यकता के आधार पर प्रति समय इकाई प्रति व्यक्ति की मात्रा निश्चित कर देती है। प्रत्येक परिवार को परिवार में सदस्यों की संख्या का उल्लेख करते हुए एक राशन कार्ड दे दिया जाता है। प्रत्येक परिवार अपने परिवार में सदस्यों की संख्या के अनुसार उचित दर दुकान से वस्तु की निश्चित मात्रा खरीद सकता है।

3. **उचित दर दुकान (उ.द.दु.) :** सरकार राशन की दुकान के नाम से लोकप्रिय उचित दर दुकानों के माध्यम से इन वस्तुओं को बेचती है। ये दुकाने देश के सभी भागों में खोली जाती हैं। सरकार ये वस्तुएं इन दुकानों के मालिकों को प्रत्येक दुकान पर पंजीकृत राशन कार्डों की संख्या के अनुसार उपलब्ध कराती है। इन दुकानों के मालिकों को उनकी कुल बिक्री पर कमीशन का भुगतान किया जाता है।

## पाठगत प्रश्न 13.4

1. सार्वजनिक वितरण प्रणाली के तीन तत्वों के नाम दो।
2. कर में वृद्धि वस्तु की कीमत को कैसे प्रभावित करती है?
3. आर्थिक सहायता में वृद्धि वस्तु की कीमत को कैसे प्रभावित करती है?
4. 'राशनिंग' शब्द से क्या अभिप्राय है?
5. उचित दर दुकानों को उनके द्वारा बांटी जाने वाली वस्तुओं का कोटा किस आधार पर दिया जाता है?
6. निम्न का पूरा रूप लिखिए
   (i) बी.पी.एल.
   (ii) एफ.पी.एस.
   (iii) पी.डी.एस.

## आपने क्या सीखा

- निर्देशित कीमतें वे कीमतें होती हैं, जो सरकार द्वारा उपभोक्ताओं या उत्पादकों के हितों की रक्षा करने के लिए, संतुलन कीमत से कम या अधिक निश्चित की जाती है।
- नियन्त्रित कीमत वह कीमत होती है, जो सरकार द्वारा, उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा करने के लिए संतुलन कीमत से कम निश्चित की जाती है।
- समर्थन कीमत वह कीमत होती है जो सरकार द्वारा, उत्पादकों विशेष रूप से किसानों के हितों की रक्षा करने के लिए, संतुलन कीमत से अधिक निश्चित की जाती है।
- सांकेतिक कीमत वह कीमत होती है जो सरकार/निजी धर्मार्थ संस्थाओं द्वारा वस्तु की प्रति इकाई उत्पादन लागत से बहुत कम निश्चित की जाती है।
- दोहरी कीमत पद्धति के अन्तर्गत, कुल उत्पादन का एक भाग, नियंत्रित कीमत पर उचित दर दुकानों के माध्यम से बेचा जाता है और शेष उत्पादन सरकार के बिना हस्तक्षेप के मांग और पूर्ति की शक्तियों द्वारा निर्धारित कीमत पर खुले बाजार में प्रचलित कीमत पर बेचा जाता है।
- किसी वस्तु पर कर में वृद्धि, वस्तु की बाजार कीमत में वृद्धि करती है।
- किसी वस्तु पर दी गई आर्थिक सहायता वस्तु की बाजार कीमत को घटाती है।
- वस्तुएं सार्वजनिक वितरण प्रणाली के माध्यम से राशन कार्डों के आधार पर बेची जाती हैं।

## पाठान्त प्रश्न

1. नियन्त्रित कीमत क्या है? ये उपभोक्ताओं को किस प्रकार प्रभावित करती है?
2. समर्थन कीमत क्या है? इसका उत्पादकों पर क्या प्रभाव पड़ता है?
3. सांकेतिक कीमत क्या है? किसी वस्तु की सांकेतिक कीमत रखने के पीछे क्या उद्देश्य होता है?
4. दोहरी कीमत नीति की पद्धति की व्याख्या कीजिए। यह गरीबों की सहायता कैसे करती है?
5. कर और आर्थिक सहायता किसी वस्तु की बाजार कीमत को कैसे प्रभावित करते हैं?
6. सार्वजनिक वितरण प्रणाली से क्या अभिप्राय है? इसके आवश्यक तत्वों की संक्षेप में व्याख्या कीजिए।

## पाठगत प्रश्नों के उत्तर

### पाठगत प्रश्न 13.1

1. उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा के लिए
2. (i) मांग आधिक्य की समस्या या वस्तु की कमी

   (ii) कालाबजारी की समस्या
3. राशनिंग से अभिप्राय प्रति इकाई समय में प्रति व्यक्ति कोटा निश्चित करना है
4. कालाबाजारी एक ऐसी स्थिति है जिसमें विक्रेता, गैर कानूनी तौर पर, नियन्त्रित कीमत से बहुत अधिक कीमत वसूल करता है।
5. दोहरी कीमत नीति

### पाठगत प्रश्न 13.2

1. समर्थन कीमत एक ऐसी कीमत होती है जो सरकार द्वारा, उत्पादकों, विशेष रूप से किसानों के हितों की रक्षा करने के लिए संतुलन कीमत से अधिक निश्चित की जाती है।
2. उत्पादकों, विशेषरूप से किसानों के हितों की रक्षा करने के लिए
3. सरकार, समर्थन कीमत पर, वस्तु का बफर स्टॉक बनाने के लिए, वस्तु को किसी भी मात्रा में खरीदने के लिए तैयार रहती है।
4. (i) गेहूँ (ii) चावल

### पाठगत प्रश्न 13.3

1. सांकेतिक कीमत वह कीमत है जो सरकार और निजी धमार्थ संस्थाओं द्वारा किसी वस्तु की प्रति इकाई उत्पादन लागत से भी बहुत कम निश्चित की जाती है।
2. दोहरी कीमत एक ऐसी नीति है जिसमें किसी वस्तु के उत्पादन का एक भाग उचित दर दुकानों द्वारा नियंत्रित कीमत पर बेचा जाता है और शेष भाग मांग और पूर्ति की शक्तियों द्वारा निर्धारित प्रचलित बाजार कीमत पर बेचा जाता है।
3. सरकार कुछ वस्तुओं को, इनका दुरूपयोग रोकने के लिए, निःशुल्क उपलब्ध नहीं कराती।
4. (ब)

### पाठगत प्रश्न 13.4

1. (i) आर्थिक सहायता (ii) निश्चित मात्रा या राशनिंग (iii) उचित दर दुकानें
2. वस्तु की कीमत बढ़ जाती है।
3. वस्तु की कीमत घट जाती है।
4. राशनिंग से अभिप्राय प्रति इकाई समय में प्रति व्यक्ति कोटा निश्चित करना है।
5. दुकान के पास पंजीकृत राशन कार्डों की संख्या के आधार पर।
6. (i) गरीबी रेखा के नीचे (ii) उचित दर दुकानें (iii) सार्वजनिक वितरण प्रणाली

# 14

# मुद्रा और उसकी भूमिका

'मुद्रा' शब्द काफी रुचि उत्पन्न करता है। आज के व्यस्त जीवन में मुद्रा ने एक महत्वपूर्ण भूमिका प्राप्त कर ली है। अपनी आवश्यकताओं की सन्तुष्टि के लिए, बहुत सी वस्तुओं का क्रय करने के लिए हमें मुद्रा की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार, हमें बहुत सी सेवाएं जैसे परिवहन, संचार, शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन, होम डिलीवरी और ऐसी बहुत सी सेवाएं प्राप्त करने के लिए भी मुद्रा की आवश्यकता होती है। क्रेता के रूप में हम वस्तुओं और सेवाओं का क्रय करने के लिए मुद्रा का भुगतान करते हैं और एक विक्रेता के रूप में हम उन्हें बेचकर मुद्रा प्राप्त करते हैं। सामान्य रूप से, हम मुद्रा कागज के नोटों और सिक्कों के रूप में भुगतान/प्राप्त करते हैं। किन्तु क्या आप जानते हैं कि प्राचीन काल में लोग वस्तु से वस्तु का विनिमय करते थे। यह वस्तु विनिमय प्रणाली कही जाती थी। समय के साथ वस्तु विनिमय प्रणाली का स्थान मुद्रा ने ले लिया। क्यों? इन सब को जानने के लिए इस पाठ का अध्ययन कीजिये।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप समझ सकेंगे :

- वस्तु विनिमय प्रणाली का अर्थ;
- समाज के द्वारा मुद्रा की आवश्यकता;
- मुद्रा के कार्यों की व्याख्या;
- मुद्रा के प्रकारों के रूप में कागजी मुद्रा और सिक्के।

## 14.1 वस्तु विनिमय प्रणाली

प्राचीनकाल में जब लोग छोटी-छोटी संस्थाओं में रहते थे और अधिक विकास नहीं हुआ था, जैसा कि आप आज देखते हैं, वे एक दूसरे की सहायता, वस्तु विनिमय प्रणाली से परस्पर एक दूसरे को लाभ पहुँचा कर करते थे। वस्तु विनिमय प्रणाली का क्या अर्थ है? वस्तु विनिमय प्रणाली से अभिप्राय एक प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं का विनिमय दूसरी प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं

से करने से है। वस्तु विनिमय प्रणाली में मुद्रा का कोई योगदान नहीं था। **जब एक वस्तु का बिना मुद्रा के प्रयोग के, दूसरी वस्तु के साथ विनिमय किया जाता है तो हम उसे वस्तु विनिमय प्रणाली द्वारा व्यापार कहते है।** प्राचीन सभ्यता में ऐसा होता था।

वस्तु विनिमय प्रणाली के कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं।

(अ) प्राचीन काल में, यूरोप से व्यापरी वस्तुओं जैसे फर और शिल्प का विनिमय इत्र और रेशम के बदले, संसार के पूर्वी भागों से किया करते थे।

(ब) भारत में बहुत से जनजाति समाजों में परिवार भोजन तथा अन्य श्रमिक सेवाओं से श्रमिक सेवाओं का विनिमय किया करते थे। उदाहरण के लिए, यदि एक परिवार को फसल काटने के लिए श्रमिकों की आवश्यकता है तो दूसरा परिवार सेवा प्रदान करने के लिए इस वादे के साथ आता था कि वह बदले में इसी प्रकार की सहायता फसल काटने के लिए या घर की छत डालने के लिए प्राप्त करेगा। इस प्रकार की रीति, भारत के दूरस्थ जनजातीय क्षेत्रों में आज भी प्रचलित है।

(स) विभिन्न प्रकार के व्यवसायों में लोग जैसे किसान, शिल्पकार, मोची, बढ़ई आदि अपने उत्पाद और सेवाओं का आपस में विनिमय किया करते थे।

### पाठगत प्रश्न 14.1

1. वस्तु विनिमय प्रणाली की परिभाषा दीजिए।
2. वस्तु विनिमय प्रणाली के दो उदाहरण दीजिए।

## 14.2 मुद्रा की आवश्यकता

वस्तु विनिमय प्रणाली जैसा कि ऊपर वर्णन किया गया है, अब प्रचलित नहीं है। आज की दुनिया में कोई एक वस्तु का विनिमय दूसरी वस्तु के साथ नहीं करता है। प्रत्येक व्यक्ति वस्तुओं और सेवाओं का क्रय करने के लिए मुद्रा का भुगतान करता है। इसलिए, प्रश्न उठता है, अब वस्तु विनिमय प्रणाली क्यों प्रचलित नहीं है? मुद्रा की आवश्यकता क्यों उत्पन्न हुई? इन सभी प्रश्नों के उत्तर इस वास्तविकता में हैं कि वस्तु विनिमय प्रणाली में अनेक दोष हैं जिनका वर्णन नीचे किया गया है।

### 14.2.1 वस्तु विनिमय प्रणाली के दोष

वस्तु विनिमय प्रणाली के दोष निम्न हैं :

**1.** वस्तु विनिमय प्रणाली की एक सामान्य समस्या, **आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की कमी** है। इससे क्या अभिप्राय है? आवश्यकताओं के दोहरे संयोग से अभिप्राय है कि यदि कोई अपनी वस्तु दूसरे व्यक्ति से विनिमय करना चाहता है तो दूसरा व्यक्ति भी पहले व्यक्ति से अपनी वस्तु का विनिमय करने के लिए इच्छुक होना चाहिए। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति

को कपड़ा चाहिए और उसके पास बदले में देने के लिए चावल हैं। तब वह चावल के बदले में दूसरे व्यक्ति से कपड़ा प्राप्त कर सकता है, जिसके पास कपड़ा है और उसे चावल की आवश्यकता भी है। व्यवहारिक जीवन में ऐसी स्थिति उत्पन्न हो भी सकती है और नहीं भी। यदि व्यक्ति जिसके पास कपड़ा है उसे चावल की आवश्यकता नहीं है, तो चावल का कपड़े के लिए विनिमय नहीं होगा और दोनों व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की संतुष्टि नहीं कर सकते। यह आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की कमी का एक उदाहरण है। इसलिए वस्तु विनिमय प्रणाली तभी कार्य करेगी जबकि आवश्यकताओं का दोहरा संयोग हो, अन्यथा यह कार्य नहीं करेगी।

वस्तु विनिमय प्रणाली की एक सम्बन्धित समस्या यह है कि ऐसे व्यक्ति को ढूँढने में बहुत समय लगता था जो विनिमय करने के लिए तैयार था। किन्तु, मानवीय सभ्यता के प्रारम्भिक काल में यह एक बहुत ही कठिन कार्य था क्योंकि परिवहन और सम्प्रेषण की उचित सुविधा नहीं थी।

2. वस्तुओं के विभाजन की कमी : **कुछ वस्तुएं भौतिक रूप से, छोटे टुकड़ों में विभाजित नहीं की जा सकतीं।** मान लो, एक व्यक्ति के पास एक गाय है और उसे वस्तुओं जैसे कपड़ा अनाज आदि की आवश्यकता है। तब कितनी गाय कपड़े के बदले में और कितनी गाय खाद्यान्नों के बदले में दी जा सकती हैं? इसका निर्धारण करना बहुत कठिन था क्योंकि गाय को अनेक भागों में नहीं बांटा जा सकता।

3. वस्तुओं के विभाजन की कमी के कारण, वस्तु विनिमय प्रणाली में जिन विभिन्न वस्तुओं का व्यापार किया जाता था उनके मूल्यों की बराबरी करना बहुत कठिन था क्योंकि **माप की सामान्य इकाई नहीं थी।**

   उपर्युक्त उदाहरण में, यह तय करना बहुत कठिन होगा कि गाय की कितनी मात्रा, खाद्यान्न की एक विशिष्ट मात्रा के लिए या कुछ गज कपड़े के लिए दी जाय। यह बेतुका भी प्रतीत होता है। यह इसलिए होता है कि एक गाय कभी भी मूल्य का सामान्य माप नहीं हो सकती। यह समस्या अन्य सभी वस्तुओं के विषय में भी समान ही है।

4. वस्तु विनिमय प्रणाली की एक और समस्या यह है कि **एक व्यक्ति को अपनी वस्तु की बहुत बड़ी मात्रा का भंडारण करना पड़ता है** जिससे कि दैनिक आधार पर दूसरों के साथ अपनी इच्छित वस्तुओं का विनिमय किया जा सके। एक किसान का उदाहरण लो जिसने गेहूँ का उत्पादन किया है। स्पष्ट है कि गेहूँ की कुछ मात्रा वह अपने उपयोग के लिए प्रयोग करेगा और कुछ मात्रा दूसरों से अन्य आवश्यक वस्तुओं का विनिमय करने के लिए रखेगा। यदि उसे फर्नीचर की आवश्यकता है तो वह एक बढ़ई के पास जायेगा जो गेहूँ के बदले में फर्नीचर देने का इच्छुक है। इसी प्रकार, यदि उसे कपड़े की आवश्यकता है तो उसे एक जुलाहे से विनिमय करना पड़ेगा जो कि गेहूँ प्राप्त करके कपड़ा देने को तैयार है। और इसी प्रकार। इसलिए, एक किसान को अपनी इच्छित वस्तुओं का विनिमय करने के लिए अपने गेहूँ का स्टॉक करने के लिए पहले एक भण्डार गृह का निर्माण करना पड़ेगा। किन्तु एक भंडार गृह का निर्माण और रखरखाव, सभ्यता के आरम्भिक काल में एक बहुत ही कठिन कार्य था।

**5.** अन्त में, वस्तु विनिमय प्रणाली की एक बड़ी समस्या यह है कि किसी वस्तु की वास्तविक गुणवत्ता और मूल्य में कमी हो जाती है, यदि इसका भंडारण एक लम्बी अवधि के लिए किया जाता है। कुछ वस्तुएं जैसे नमक, सब्जियाँ आदि नाशवान हैं। इसलिए वस्तुएं भविष्य में व्यापार के लिए कभी स्वीकार नहीं की जाती क्योंकि **उनका प्रयोग क्रय शक्ति के संचय के लिए नहीं किया जा सकता।** इसका यह भी तात्पर्य है कि कोई वस्तु उधार देने या लेने के उद्देश्य से प्रयोग नहीं की जा सकती।

ऊपर दी गई समस्याओं के कारण वस्तु विनिमय प्रणाली अधिक समय तक नहीं चल सकी। जैसे ही मानव सभ्यता का विकास हुआ तो लोगों ने महसूस किया कि विनिमय का कोई माध्यम होना चाहिए जिसे आसानी से ले जाया जा सके, संग्रहण किया जा सके और वस्तुओं के मूल्य की अभिव्यक्ति कर सके। इसलिए मुद्रा अस्तित्व में आई। इसलिए वस्तु विनिमय प्रणाली के असफल होने के कारण मुद्रा की आवश्यकता उत्पन्न हुई।

### पाठगत प्रश्न 14.2

1. आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की परिभाषा दीजिए।
2. वस्तु विनिमय प्रणाली से जुड़ी दो कठिनाइयाँ बताओ।

## 14.3 मुद्रा की परिभाषा और कार्य

**मुद्रा को उस वस्तु के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसे विनिमय के माध्यम के रूप में समाज द्वारा सामान्य रूप से स्वीकार किया जाय, जो लेखे की इकाई के रूप में कार्य कर सकती है, क्रय शक्ति का संचय कर सकती है और जिसे ऋण चुकाने के लिए प्रयोग किया जा सकता है।**

मुद्रा के कार्यों का इसकी परिभाषा से पता चलता है। ये नीचे दिए गए हैं।

**1. विनिमय का माध्यमः** मुद्रा का प्राथमिक कार्य यह है कि यह विनिमय के माध्यम का कार्य करती है। इसका तात्पर्य यह है कि लोग मुद्रा की सहायता से वस्तुएं और सेवाओं का क्रय-विक्रय कर सकते हैं। वस्तु के विक्रेता द्वारा मुद्रा प्राप्त की जाती है तथा वस्तु के क्रेता द्वारा मुद्रा का भुगतान किया जाता है।

**उदाहरणः** आप एक पैन खरीदने के लिए 10 रु. का भुगतान करते हैं। विक्रेता आपसे पैन बेचकर 10 रु. प्राप्त करता है। इस प्रकार एक पैन का 10 रु. के लिए विनिमय किया जाता है।

**2. मूल्य का मापनः** मुद्रा का दूसरा मौलिक कार्य यह है कि यह लेखे की इकाई अथवा मूल्य के सामान्य माप के रूप में कार्य करती है। किसी वस्तु का मूल्य, इसकी कीमत को बाजार में बेची गई मात्रा से गुणा करके ज्ञात किया जाता है। क्योंकि कीमत मौद्रिक इकाई के रूप में व्यक्त की जाती है, किसी वस्तु के मूल्य को मुद्रा के रूप में भी व्यक्त किया जाता है।

**उदाहरण :** मान लो चावल की कीमत 20 रु. प्रति कि.ग्रा. है। चावल से भरे एक बोरे का भार 25 कि.ग्रा. है तो चावल के बोरे का मूल्य रु. $20 \times 25 = 500$ रु.।

3. **क्रय शक्ति का संचयः** मुद्रा क्रय शक्ति के संचय का कार्य भी करती है। कैसे? विनिमय के माध्यम के रूप में आप वस्तुएं खरीदने के लिए मुद्रा का भुगतान कर सकते हैं। इसका अर्थ यह है कि यदि आपके पास मुद्रा है तो आपके पास किसी वस्तु या सेवा को खरीदने की शक्ति है। इसलिए मुद्रा में क्रय शक्ति होती है। वस्तु का मूल्य उस क्रय शक्ति में समाविष्ट होता है। इसलिए किसी वस्तु का मूल्य अप्रत्यक्ष रूप से आप के पास मुद्रा के रूप में संचय किया जाता है। इसी प्रकार, वस्तु के एक विक्रेता के रूप में आप मुद्रा प्राप्त करते हैं जिसका अर्थ यह है कि वस्तु का मूल्य, जो आपने बेची, आपके पास मुद्रा के रूप में वापस आ जाता है।

**उदाहरण :** सुशीला के पास कुछ आम हैं जिन्हें वह एक क्रेता को 250 रु. में बेचती है। इसका अर्थ है कि 250 रु. के मूल्य का विनिमय हुआ। क्रेता, जिसने आम खरीदे, उसके पास देने के लिए 250 रु. मूल्य की क्रय शक्ति है। इसलिए, सुशीला द्वारा विक्रेता के रूप में प्राप्त, 250 रु. के मूल्य का मुद्रा के रूप में संचय किया गया। सुशीला, आमों का संचय नहीं कर सकती थी किन्तु वह निश्चित रूप से मुद्रा का संचय कर सकती है। उसने 250 रु. मूल्य का संचय किया है।

4. **भविष्य में भुगतान करनाः** हम सब उधार देने और उधार लेने की गतिविधियों में संलग्न रहते हैं। मान लो, आपका मित्र आपसे एक पुस्तक खरीदने के लिए 300 रु. मांगता है क्योंकि उसके पास इस समय मुद्रा नहीं है। वह एक सप्ताह बाद मुद्रा वापस करने का वचन देता है। यदि आप इससे सहमत हैं और वास्तव में उसे मुद्रा दे देते हैं तो आप ऋणदाता कहलाएगें और आपका मित्र ऋणी कहलाएगा। एक ऋणदाता के रूप में, आपने जो मुद्रा अपने मित्र को उधार दी है, उस पर कुछ ब्याज भी ले सकते हो। यदि आप कोई ब्याज नहीं लेते तो आपका मित्र आपको एक सप्ताह के पश्चात 300 रु. का भुगतान करेगा। यदि आप ब्याज के रूप में 1 रु. वसूल करते हो तो आपके मित्र को एक सप्ताह के पश्चात् 301 रु. देने होंगे। आपके मित्र के समान, ऐसे बहुत से व्यक्ति हैं जो कि अपनी वर्तमान आवश्यकताओं की सन्तुष्टि करने के लिए आज मुद्रा उधार लेते हैं, इस शर्त पर कि वे ब्याज सहित ऋणदाता की सहमति के अनुसार, किसी भविष्य की तिथि पर भुगतान कर देंगे। भविष्य में यह भुगतान केवल मुद्रा के रूप में स्वीकार किया जाता है। हम यह भी कह सकते हैं कि ऋणी ने कुछ शर्त पर भुगतान को भविष्य के लिए स्थगित कर दिया है। इस मुद्रा ने भावी भुगतान के मानक के रूप में काम किया है। कुछ देर के लिए विचार कीजिये कि आपका मित्र 300 रु. या 301 रु. की बजाय वह पुस्तक देता है जो उसने खरीदी थी। तब, क्या आप उसे स्वीकार करोगे? सम्भव है, नहीं। क्योंकि एक सप्ताह पश्चात् पुस्तक की कुछ कीमत कम हो गई हो क्योंकि वह वही नई पुस्तक नहीं रही। किन्तु मुद्रा हमेशा भविष्य की किसी भी तिथि पर अवश्य स्वीकार की जायेगी क्योंकि इसने मूल्य का संचय किया है।

## पाठगत प्रश्न 14.3

1. विनिमय के माध्यम की परिभाष दीजिए।
2. वस्तु के मूल्य का अर्थ बताओ।

## 14.4 मुद्रा के प्रकार

### 14.4.1 कागजी मुद्रा और सिक्के

मुद्रा कैसी दिखाई देती है? मुद्रा का आकार क्या है? समय के अनुसार मुद्रा का आकार बदल गया है। आपने इतिहास में पढ़ा होगा कि राजाओं के समय में लोग सोने के सिक्कों, चांदी के सिक्कों और तांबे आदि के सिक्कों का प्रयोग करके व्यापार किया करते थे। उससे पहले, प्राचीन काल में कुछ स्थानों पर लोग, पशु, नमक आदि के रूप में मुद्रा रखते थे।

आजकल, कोई भी वस्तु और सेवाओं को खरीदने के लिए पशु या नमक नहीं रखता। पशु रखना व्यवहारिक नहीं है क्योंकि इसके लिए बड़े स्थान और विशेष पर्यावरण की आवश्यकता है। नमक नाशवान है और इसे विनिमय के लिए, लम्बे समय तक संग्रह नहीं किया जा सकता। इसलिए, शताब्दियों तक बहुत से प्रयोगों के पश्चात्, अब लोग कागज के नोटों और सिक्कों के रूप में मुद्रा रखते हैं जिन्हें ले जाना आसान है। भारत में कागज के नोट 1, 2, 5, 10, 20, 50, 100, 500 और 1000 रु. के अंकित मूल्य में होते हैं। सामान्य रूप से ये करेन्सी नोट कहलाते हैं अैर इन्हें रुपये का नाम दिया जाता है। रु. का चिन्ह ₹ है।

मुद्रा का भुगतान क्रेताओं द्वारा किया जाता है अथवा विक्रेताओं के द्वारा करेन्सी नोट के रूप में प्राप्त किया जाता है। छोटे अंकित मूल्य के लिए सिक्के होते हैं। इन्हें पैसे कहते हैं। जैसे 50 पैसा, जहाँ 50 पैसा एक रुपया के आधे के बराबर है। अब 10 रु. अंकित मूल्य तक के सिक्के भारत में प्रचलन में हैं।

आपको जानना चाहिए कि करेन्सी नोट और सिक्के जो प्रचलन में है, उनकी भारत सरकार द्वारा जमानत दी जाती है। अन्यथा कोई भी व्यक्ति उन्हें बना सकता है और उनका दुरूपयोग कर सकता है।

याद रखें कि भारत के करेन्सी नोट और सिक्के भारत में ही वैध हैं, दूसरे देशों में नहीं। प्रत्येक देश की अपनी करेन्सी होती है। यदि आप दूसरे देशों में जाते हैं तो भारत की करेन्सी उस देश की करेन्सी में बदलनी पड़ेगी जिसमें आप जा रहे हैं। संसार के कुछ देशों की करेन्सी के नाम नीचे दिए गए हैं।

(अ) यू.एस.ए. की करेन्सी डालर कहलाती है जिसका चिन्ह $ है।

(ब) यूरोप की करेन्सी यूरो कहलाती है जिसका चिन्ह € है।

(स) संयुक्त राज्य की करेन्सी पौण्ड कहलाती है जिसका चिन्ह £ है।

(द) जापान की करेन्सी येन कहलाती है जिसका चिन्ह ¥ है।

## पाठगत प्रश्न 14.4

1. करेन्सी नोट का अर्थ बताओ।

## आओ कुछ करें

फ्रांस, जर्मनी, चीन और ब्राजील की करेन्सी का नाम देते हुए एक सूची तैयार करो।

## आपने क्या सीखा

- मुद्रा के आविष्कार से पहले लोग वस्तुओं का वस्तुओं से विनिमय किया करते थे जिसे वस्तु विनिमय प्रणाली कहा जाता था।
- वस्तु विनिमय प्रणाली की बहुत सी समस्याएं थीं जैसे मुद्रा के समान माप का अभाव, आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की कमी, वस्तुओं का संग्रहण करने के लिए स्थान की कमी जिससे उनका दूसरी वस्तुओं से विनिमय किया जा सके। इसने मानव समाज को मुद्रा की खोज करने के लिए प्रेरित किया।
- मुद्रा के कार्यों में विनिमय का माध्यम, मूल्य का मापन, क्रय शक्ति संचय सम्मिलित हैं और इसका प्रयोग भावी भुगतान के लिए किया जाता है। मुद्रा का विनिमय कागजी करेन्सी नोट और सिक्कों के रूप में किया जाता है।

## पाठान्त प्रश्न

1. वस्तु विनिमय प्रणाली की कार्य प्रणाली की व्याख्या करो।
2. वस्तु विनिमय प्रणाली के मुख्य दोष क्या है?
3. मुद्रा की परिभाषा दीजिए और इसके किन्हीं तीन कार्यों का उल्लेख कीजिए।
4. भारत में करेन्सी नोटों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखो।

## पाठगत प्रश्नों के उत्तर

### पाठगत प्रश्न 14.1

1. वस्तु का वस्तु से विनिमय वस्तु विनिमय प्रणाली कहलाती है।
2. (i) 10 कि.ग्रा. गेहूँ 5 कि.ग्रा. चीनी के लिए

   (ii) 1 जोड़ी जूते के लिये 8 कि.ग्रा. चावल

### पाठगत प्रश्न 14.2

1. दो व्यक्तियों में वस्तुओं का आपस में विनिमय
2. (i) आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की कमी (ii) मूल्य के संचय की कमी

### पाठगत प्रश्न 14.3

1. कोई वस्तु जिसे वस्तुओं और सेवाओं के क्रय विक्रय के लिए सामान्यतयाः स्वीकार किया जाता है।
2. वस्तु का मूल्य = वस्तु की कीमत × वस्तु की मात्रा

### पाठगत प्रश्न 14.4

1. करेन्सी नोट मुद्रा का एक प्रकार है।

# 15

# बैंकिंग और साख

मुद्रा और बैंकिंग साथ-साथ चलते हैं। वे एक दूसरे के पूरक हैं। इसलिए मुद्रा का अध्ययन करने के पश्चात् हमें बैंकिंग का भी अध्ययन करना चाहिए। आधुनिक समाज में बैंक एक बहुत ही महत्वपूर्ण संस्था है। ध्यान दो, जब समाज में मुद्रा के विनिमय के माध्यम के रूप में प्रयोग करने के लाभों को अनुभव किया, तो उसने मुद्रा को एक सुरक्षित स्थान पर संचय करने की आवश्यकता का भी अनुभव किया। अंत में यह सुरक्षित स्थान समय के साथ, बैंक के रूप में विकसित हुआ है, जो विभिन्न प्रकार से मुद्रा में व्यवहार करता है। लोग बैंक में विभिन्न प्रकार के कार्यों के लिए जाते हैं; जैसे अपनी अधिशेष मुद्रा जमा करने, नकद मुद्रा में भुगतान करने के लिए अपने खाते से मुद्रा निकालने के लिए, ऋण लेने के लिए आदि। अर्थव्यवस्था में बैंक, उत्पादन, वितरण और व्यवसायिक गतिविधियों को सुगम बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप समझ सकेंगे :

- बैंक और बैंकिंग का अर्थ;
- बैंक के कार्यों की व्याख्या;
- साख का अर्थ ओर साख सृजन की प्रक्रिया;
- भारत में विभिन्न प्रकार के बैंकों में अन्तर।

## 15.1 बैंक और बैंकिंग का अर्थ

**बैंक एक संस्था है, जो जनता से जमा के रूप में मुद्रा स्वीकार करती है और उन्हें ऋण देती है।** बैंकिंग से अभिप्राय लोगों को ऋण देने या निवेश करने के लिए, जमा स्वीकार करना है जिसका मांगने पर भुगतान किया जा सकता है, जिसे चैक, ड्राफ्ट, आदेश या अन्य प्रकार से निकाला जा सकता है।

## 15.2 बैंक के कार्य

ऊपर दिए गए अर्थ से किसी बैंक के कार्यों को स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है। बैंक के प्राथमिक कार्य निम्नलिखित हैं:

1. जनता से जमा स्वीकार करना।
2. ऋण देना।

#### कुछ बैंकों के लोगो के चित्र

### 15.2.1 जनता से जमा स्वीकार करना

बैंक जनता से मुद्रा के रूप में जमा स्वीकार करता है जिसमें व्यक्ति, समूह और व्यवसायिक फर्म आदि शामिल हैं। इस पर ध्यान देना चाहिए कि जब कोई व्यक्ति बैंक में मुद्रा जमा करना चाहता है, तो बैंक जमाकर्ता के नाम में खाता खोलकर जमा स्वीकार करता है। बैंक जमाकर्ता को एक खाता संख्या देता है। जब भी जमाकर्ता दोबारा मुद्रा जमा करना चाहता है, उसे खाता संख्या का उल्लेख करना पड़ता है जिससे कि बैंक उस खातें में मुद्रा रख सके। यदि जमाकर्ता अपने खाते से मुद्रा निकलवाता है तो बैंक जमाकर्ता के खाते से मुद्रा की कटौती कर देता है। दूसरी ओर, जनता की कुछ प्रकार की जमाओं पर बैंक ब्याज देता है।

ध्यान दें कि बैंक जमाकर्ताओं को चैकबुक देता है। जमाकर्ताओं के द्वारा चैकों का प्रयोग बैंक से मुद्रा निकालने और किसी पक्ष को बैंक के माध्यम से भुगतान करने के लिए किया जाता है।

### 15.2.2 ऋण देना

बैंक उन लोगों को ऋण देता है जो ऋण लेना चाहते हैं और जिनकी भविष्य में उस ऋण की वापसी भुगतान करने की क्षमता है। इससे क्या तात्पर्य है? इसके लिये सर्वप्रथम हमें यह जानना चाहिये कि लोग ऋण क्यों लेते हैं? लोग मुद्रा उधार लेते हैं, जब वे आज कोई वस्तु खरीदना चाहते हैं या कोई व्यवसाय करना चाहते हैं, जिसके लिए उनके पास वर्तमान में पर्याप्त मुद्रा नहीं है। किन्तु उनके पास भविष्य में मुद्रा की वापसी करने की क्षमता है। वस्तुएं जैसे टेलीविजन, फ्रिज, कपड़े धोने की मशीन, कार आदि महंगी वस्तुएं हैं। इसी प्रकार, मकान बनाने या क्रय करने में बहुत अधिक मुद्रा की आवश्यकता होती है। इन सभी वस्तुओं के लिए बैंक ऋण उपलब्ध कराता है। बैंक व्यवसाय आरम्भ करने के लिए भी ऋण देता है।

### 15.2.3 कीमती सामान रखना

बैंक द्वारा एक और कार्य सम्पन्न किया जाता है। बैंक लोगों की महंगी वस्तुएं भी रखता है जैसे आभूषण, सम्पत्ति के दस्तावेज आदि। आमतौर पर लोग अपनी महंगी वस्तुएं सुरक्षित अभिरक्षा में रखना चाहते हैं जिसे बैंक लॉकर सुविधा के रूप में उपलब्ध कराते हैं।

## पाठगत प्रश्न 15.1

1. उस संस्था का नाम बताओ जिसमें कोई अपनी अधिशेष मुद्रा जमा कर सकता है।
2. किन्हीं ऐसे दो उद्देश्यों के नाम दो जिसके लिए बैंक द्वारा ऋण स्वीकृत किया जा सकता है।

## आओं कुछ करें 15.1

अपने माता पिता के साथ एक बैंक में जाओ और पता लगाओ कि बैंक लोगों की सहायता किस प्रकार करता है और यह क्या कुछ करता है।

## 15.3 साख का अर्थ

**साख को, भुगतान प्राप्त करने के दावे के रूप में परिभाषित किया जाता है।** जब एक बैंक लोगों को ऋण देता है तो वह एक ऋण दाता बन जाता है और वह व्यक्ति जो बैंक से ऋण लेता है, ऋणी कहलाता है। जब बैंक आज ऋण देता है तो वह भविष्य में उस व्यक्ति से ऋण वसूल करने का प्रबन्ध भी कर लेता है। इसका अभिप्राय यह है कि बैंक भविष्य में ऋणी से मुद्रा के लिये दावा कर सकता है। इसी के अनुसार, बैंक अपनी जमाओं में विस्तार करने में समर्थ होता है। इसे बैंक द्वारा साख का सृजन कहते हैं। इसलिए हम कह सकते हैं कि साख का सृजन ऋण देना और ऋण लेने के कार्य द्वारा होता है।

## 15.4 साख सृजन की प्रक्रिया

अब प्रश्न उठता है, बैंक साख का सृजन कैसे करता है? अन्य शब्दों में, बैंक दूसरों को ऋण देने के लिए मुद्रा का प्रबन्ध कहाँ से करता है और यह ऋण या साख का सृजन कितनी मात्रा में कर सकता है? हम इसका उत्तर नीचे दे रहे हैं :

हम जानते हैं कि बैंक जनता से जमा के रूप में मुद्रा स्वीकार करता है। सामान्य रूप से ये जमा जनता को वापस करनी पड़ती हैं, यदि वह उन्हें निकलवाना चाहती है। इसलिए, यदि सभी व्यक्ति, जिन्होंने बैंक में मुद्रा जमा की है अपनी सारी मुद्रा निकलवा लेते हैं तो बैंक के पास कोई मुद्रा नहीं बचेगी। किन्तु सामान्य रूप से ऐसा नहीं होता।

सामान्य अनुभव से यह देखा गया है कि एक बार कोई व्यक्ति बैंक में मुद्रा जमा करता है तो उसे तुरन्त नहीं निकालता। अधिकतर लोग अपनी जमा में से थोड़ी मात्रा निकालते हैं, जब उन्हें आवश्यकता होती है और शेष राशि बैंक के पास छोड़ देते हैं। इसे सम्भव बनाने के लिए, बैंक अपनी जमा राशि का एक अंश नकद रखता हैं जिसमें से वह उन लोगों को मुद्रा देता रहता है जो इसे निकलवाने के लिए आते हैं। जमा राशि का यह अंश प्रतिशत के रूप में होता है। कुल जमा राशि का कितना प्रतिशत नकद रखा जाता है? इसका निर्णय देश के बैंकिंग प्राधिकरण

द्वारा लिया जाता है। नकद की मात्रा, उन लोगों को देने के लिए सुरक्षित रखी जाती है जो बैंक में मुद्रा निकलवाने के लिए आते हैं। कुल जमा राशि का जो अंश नकद के रूप में रखा जाता है, उसे हम नकद आरक्षण अनुपात कहते हैं। एक बार बैंक नकद आरक्षण अनुपात के आधार पर बैंक में नकद रखी जाने वाली राशि की गणना करता है, वह इस राशि को कुल जमा राशि में से घटा देता है और शेष राशि का प्रयोग ऋण लेने वाले को ऋण देने के लिए करता है। बैंक के इस कार्य से, साख सृजन का कार्य आरम्भ हो जाता है। आइये, निम्न उदाहरण की सहायता से साख सृजन की प्रक्रिया का चरणवद्ध वर्णन करें।

### 15.4.1 साख सृजन के चरण

सुविधा के लिए, हम यह कल्पना करते हैं कि अर्थव्यवस्था में केवल एक बैंक है। मान लें, बैंकों के प्राधिकरण ने नकद आरक्षण अनुपात 20 प्रतिशत निर्धारित किया है। इसलिए बैंक को उन लोगों को नकद भुगतान करने के लिए जो मुद्रा निकलवाने के लिए आते है, वर्तमान जमा राशि का 20 प्रतिशत नकद रूप में रखना चाहिए।

**चरण 1:** A नाम का एक व्यक्ति बैंक में 100 रु. जमा करता है जिससे बैंक की जमा राशि में 100 रु. की वृद्धि हो जाती है। नियम के अनुसार, बैंक 100 रु0 का 20 प्रतिशत नकद रखेगा। यह 20 रु. होता है। इसलिए बैंक नकद भुगतान के लिए 20 रु. रखेगा। अतः 100 में से 20 घटाओ। 100 – 20 = 80 रु.। इसलिए बैंक 80 रु. का ऋण देने के लिए प्रयोग कर सकता है।

**चरण 2:** B नाम का एक व्यक्ति बैंक में 80 रु. ऋण लेने के लिए आता है। बैंक, यह ऋण देने के पश्चात् B से भविष्य में इस मुद्रा की राशि का दावा कर सकता है। इसका तात्पर्य यह है कि B को ऋण देकर, बैंक 80 रु. की दूसरी जमा का सृजन कर सकता हैं

अब बैंक के पास कुल जमा की गणना कीजिये।

प्रथम, व्यक्ति A ने 100 रु. जमा किए। B को ऋण देकर बैंक 80 रु. का दावा कर सकता है। इसलिए दो चरणों के पश्चात् बैंक की कुल जमा राशि 180 रु. हो जतीि है अर्थात 100 + 80 = 180 रु.

**चरण 3:** C नाम का एक अन्य व्यक्ति बैंक से ऋण लेना चाहता है। बैंक C को ऋण के रूप में मुद्रा की कितनी राशि दे सकता है। इससे पहले चरण में हमने देखा कि बैंक B से मुद्रा का दावा करके 80 रु. जमा के रूप में बढ़ा सका। नियम के अनुसार, इसे 80 रु. का 20 प्रतिशत किसी को ऋण देने से पहले नकद के रूप में रखना पड़ता है। 80 रु. का 20 प्रतिशत 16 रु. है। इसलिए बैंक अब 16 रु. नकद रखकर, शेष राशि को ऋण के रूप में देता है। 80 – 16 = 64 रु.। इस प्रकार बैंक C को 64 रु. ऋण के रूप में दे सकता है। दोबारा, इस राशि का C से दावा करने पर बैंक तीसरे चरण में 64 रु. का जमा का और सृजन कर सकता है।

पिछले दो चरणों को जारी रखते हुए हम कह सकते हैं कि तीन चरणों के पश्चात् बैंक की कुल जमा राशि बढ़कर 180 + 64 = 244 रु. या 100 + 80 + 64 = 244 रु. हो गई।

यह श्रृंखला कुछ समय तक चलती रहेगी। किन्तु उसका अंत कब होगा? आप जानते हैं कि प्रत्येक चक्र में बैंक, जमा में वृद्धि का 20 प्रतिशत नकद के रूप में रखता है। आप यह भी जानते हैं कि बैंक ने पहले चरण में अपनी जमा के 100 रु. की वृद्धि से आरम्भ किया था। इसलिए साख सृजन की प्रक्रिया (या जमा में वृद्धि) समाप्त हो जायेगी जब प्रत्येक दौर की जमा का 20 प्रतिशत मिलाकर 100 रु. हो जाता है। अब प्रश्न उठता है किस राशि का 20 प्रतिशत 100 है? उत्तर है कि 500 का 20 प्रतिशत 100 होता है। इसका तात्पर्य यह है कि हमारे वर्तमान उदाहरण में, बैंक की आरम्भिक जमा में 100 रु. की वृद्धि और नकद आरक्षण अनुपात 20 प्रतिशत होने पर कुल साख का सृजन 500 रु. होगा। ये तीनों परस्पर सम्बन्धित हैं। आप जानते हैं कि 20 प्रतिशत $=\frac{20}{100}=\frac{1}{5}$ । यहाँ, $500=100\times\frac{1}{20\%}=100\times\frac{1}{5}=100\times 5$ । इसके अनुसार हम साख सृजन का निम्न सूत्र दे सकते हैं:

$$\textbf{कुल साख} = \textbf{जमा में आरम्भि वृद्धि} \times \frac{1}{\textbf{नकद आरक्षण अनुपात}}$$

$$500=100\times\frac{1}{20\%}$$

एक और मुख्य बात यह ध्यान रखें, क्योंकि बैंक जमा राशि 20 प्रतिशत नकद तथा शेष विभिन्न चरणों में ऋण के रूप में बांट दी जाती है, 500 रु. की कुल जमा निम्न प्रकार से बांटी जा सकती है।

नकद आरक्षण = 500 रु. का 20 प्रतिशत = 100 रु.।

ऋण की राशि = 500 – 100 = 400 रु.।

अब हम साख सृजन के विभिन्न चरणों (चक्रों) को निम्न प्रकार से प्रस्तुत कर सकते हैं।

| चरण | जमा में वृद्धि | नकद आरक्षण | ऋण |
|---|---|---|---|
| 1 | 100 | 20 | 80 |
| 2 | 80 | 16 | 64 |
| 3 | 64 | 12.8 | 51.2 |
| 4 | 51.2 | 10.24 | 40.96 |
| 5 | 40.96 | 8.19 | 32.77 |
| …… | …… | …… | …… |
| …… | …… | …… | …… |
| **कुल** | **500** | **100** | **400** |

अंत में, ध्यान रखें कि साख सृजन की प्रक्रिया में दो प्रकार की जमा का लेखा किया जाता है। पहली आरम्भिक जमा कहलाती है। आरम्भिक जमा बैंक जमा में आरम्भिक वृद्धि है जो कि बैंक जनता से नई जमा के रूप में प्राप्त करता है। हमारे उपर्युक्त उदाहरण में आरम्भिक जमा 100 रु. है जो व्यक्ति A द्वारा आरम्भ में जमा किये गये। दूसरी प्रकार की जमा को द्वितीयक जमा कहते हैं। बैंक द्वारा दिए गए ऋण के कारण प्रत्येक चक्र में जमा का सृजन द्वितीयक जमा कहलाती है। साख का सृजन द्वितीयक जमा में वृद्धि के कारण होता है।

### 15.4.2 बैंक की साख सृजन क्षमता क्या है?

किसी बैंक की साख सृजन क्षमता नकद आरक्षण अनुपात पर निर्भर करती है। यदि नकद आरक्षण अनुपात अधिक है तो बैंक को जनता को भुगतान करने के लिए नकद राशि अधिक रखनी पड़ती है और उसी के अनुसार ऋण देने के लिए कम राशि उपलब्ध होगी। इसलिए साख का सृजन कम होगा। साख का सृजन अधिक होगा यदि नकद आरक्षण अनुपात कम है। हमारे उपर्युक्त उदाहरण में, कुल साख 500 रु. थी जबकि नकद आरक्षण अनुपात 20 प्रतिशत और जमा में आरम्भिक वृद्धि 100 रु. थी। अब नकद आरक्षण अनुपात घट कर 10 प्रतिशत होने पर कुल साख होगी :

$$100 \times \frac{1}{10\%} = 100 \times \frac{1/10}{100} = 100 \times 10 = 1000 \text{ रु.}$$

### पाठगत प्रश्न 15.2

1. एक बैंक ने 200 रु. की जमा प्राप्त की। इसने ऋण लेने वाले को 180 रु. ऋण दिया। नकद आरक्षण अनुपात क्या है?
2. ऊपर दिए गए प्रश्न में (अ) आरम्भिक जमा (ब) द्वितीयक जमा और (स) कुल जमा ज्ञात करो।
3. साख की परिभाषा दो।

## 15.5 भारत में विभिन्न प्रकार के बैंक

भारत में निम्न प्रकार के बैंक हैं।

1. भारतीय रिजर्व बैंक (RBI), जो कि हमारे देश का केन्द्रीय बैंक है।
2. व्यवसायिक बैंक
3. सहकारी बैंक
4. विकास बैंक

आइये, इनकी संक्षेप में व्याख्या करते हैं।

### 15.5.1 भारतीय रिजर्व बैंक

**भारतीय रिजर्व बैंक देश में बैंकिंग व्यवस्था का शिखर है।** इसका तात्पर्य यह है कि और सभी बैंक जैसे व्यवसायिक या सहकारी या विकास बैंक भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा बनाए गए नियमों-विनियमों का पालन करते हैं। इसका मुख्य कार्यालय मुम्बई में है। भारतीय रिजर्व बैंक का मुख्य कार्य करेन्सी नोट जारी करना है। विभिन्न प्रकार के अंकित मूल्यों वाली कागजी मुद्रा जैसे 2, 5, 10, 20, 50, 100, 500 और 1000 भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा जारी की जाती है। इन करेन्सी नोटों पर आप भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर के हस्ताक्षर देख सकते हैं। गवर्नर के हस्ताक्षर वाला करेन्सी नोट सरकार द्वारा अनुमोदित किया जाता है जिससे कि इसे वस्तुओं और सेवाओं के क्रय और विक्रय के लिए प्रयोग किया जा सके। एक रुपये के नोट और सिक्के तथा एक रूपये से कम के सिक्के वित्त मंत्रालय, भारत सरकार द्वारी जारी किए जाते हैं।

भारतीय रिजर्व बैंक का एक अन्य कार्य यह है कि यह सरकार के बैंकर के रूप में कार्य करता है। भारत में केन्द्रीय और राज्य सरकारें, दोनों भारतीय रिजर्व बैंक से ऋण लेती हैं तथा अपनी मुद्रा भारतीय रिजर्व बैंक में जमा करती हैं।

### 15.5.2 व्यवसायिक बैंक

अभी हम साख सृजन की चर्चा कर रहे थे। बैंक जिसके विषय में हम बात कर रहे थे, वास्तव में एक व्यवसायिक बैंक था। बैंक के कार्य जिनका हमने पहले अध्ययन किया, वे भी व्यवसायिक बैंक के कार्य हैं।

कुछ व्यवसायिक बैंक ऐसे हैं जो सार्वजनिक क्षेत्र में हैं। उदाहरण के लिए, भारतीय स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, बैंक ऑफ इण्डिया, इंडियन बैंक, कैनरा बैंक, बैंक ऑफ बड़ौदा आदि।

कुछ अन्य व्यवसायिक बैंक हैं जो निजी क्षेत्र में हैं। जैसे आई.सी.आई.सी.आई बैंक, यस बैंक, एच.डी.एफ.सी. बैंक आदि। ये बैंक निजी तौर पर चलाए जाते हैं।

व्यवसायिक बैंकों का उद्देश्य, ऋण पर ब्याज लेकर, बहुत सी सेवाओं जैसे ड्राफ्ट जारी करना, मुद्रा का हस्तांतरण करना आदि की फीस वसूल करके, लाभ कमाना होता है।

### 15.5.3 सहकारी बैंक

भारत में बहुत से ऐसे बैंक हैं जो सहकारी समितियों द्वारा चलाए जाते हैं और जिस राज्य में वे चल रहे हैं उसके राज्य के नियमों द्वारा संचालित होते हैं। ऐसे बैंक दो प्रकार के होते हैं - कृषि (या ग्रामीण) बैंक और गैर-कृषि (या शहरी) बैंक।

ग्रामीण क्षेत्रों में, सहकारी बैंक, कृषि, पशुओं, मछली पालन आदि के लिए साख उपलब्ध कराते हैं। शहरी क्षेत्रों में सहकारी बैंक, स्वरोजगार की गतिविधियों, लघु उद्योगों, टिकाऊ वस्तुओं जैसे टेलीविजन, रैफ्रिजिरेटर आदि खरीदने के लिए और व्यक्तिगत वित्त के लिए साख उपलब्ध कराते हैं।

सहकारी बैंकों के उदाहरण हैं राज्य सहकारी बैंक, कृषि सहकारी समितियाँ, शहरी सहकारी बैंक, भूमि विकास बैंक और जिला केन्द्रीय सहकारी बैंक। इन बैंकों के विभिन्न राज्यों और क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न नाम हो सकते हैं।

### 15.5.4 विकास बैंक

देश के आर्थिक विकास की प्राप्ति के लिए उद्योगों और आधारिक संरचना में निवेश करने की आवश्यकता होती है। इसे सम्भव बनाने के लिए भारत में विकास बैंक हैं। ये बैंक लम्बी अवधि के लिए निजी व्यवसायिक कम्पनियों और सार्वजनिक क्षेत्र की इकाईयों को जो उद्योग स्थापित करना चाहते हैं या आधारिक संरचना का निर्माण करना चाहते हैं, उन्हें ऋण उपलब्ध कराते हैं। विकास बैंकों के कुछ उदाहरण भारतीय औद्योगिक विकास बैंक, भारतीय औद्योगिक वित्त निगम और राज्य वित्त निगम हैं।

## पाठगत प्रश्न 15.3

1. व्यवसायिक बैंक, सहकारी बैंक और विकास बैंक में से प्रत्येक का एक उदाहरण दीजिए।
2. सहकारी बैंक, ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में, किन कार्यों के लिए साख उपलब्ध कराते हैं? प्रत्येक के दो उदाहरण दीजिए।
3. भारत में बैंकिंग प्रणाली के शिखर पर कौन है?

## आपने क्या सीखा

- बैंक एक संगठन है जो जनता से जमा स्वीकार करता है और लोगों को ऋण देता है।
- ऋण दाता के रूप में साख सृजन करके बैंक अपनी जमा में वृद्धि कर सकता है।

- साख से अभिप्राय, ऋणियों से भुगतान प्राप्त करने के दावों से है।
- भारत में भारतीय रिजर्व बैंक, बैंकिंग प्रणाली का शिखर है।
- विभिन्न प्रकार के बैंक जो देश में कार्य कर रहे हैं, भारतीय रिजर्व बैंक के अतिरिक्त व्यवसायिक बैंक, सहकारी बैंक तथा विकास बैंक हैं।

## पाठान्त प्रश्न

1. बैंक के दो कार्यों की व्याख्या कीजिए।
2. साख क्या है? बैंक साख का सृजन कैसे करता है?
3. भारत में विभिन्न प्रकार के बैंक कौन से हैं?
4. निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखो।
   (i) भारतीय रिजर्व बैंक
   (ii) सहकारी बैंक
   (iii) व्यवसायिक बैंक

## पाठगत प्रश्नों के उत्तर

### पाठगत प्रश्न 15.2

1. 10 प्रतिशत
2. (अ) 200 रु. (ब) 180 रु. (स) 380 रु.

### पाठगत प्रश्न 15.3

3. रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया

# 16

# बचत और बीमा

उत्पादन और उपभोग के अतिरिक्त बचत भी एक अत्यंत महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि है। हम सब अपना वर्तमान और भावी जीवन ठीक प्रकार से बिताना चाहते हैं। ऐसा करने के लिए, हम वस्तुओं का उत्पादन करते हैं और उनका उपभोग करते हैं। किन्तु हम अपने उत्पादन में से आज ही सब चीजों का उपभोग कर लें तो कल उत्पादन गतिविधियों को आरम्भ करने के लिए हमारे पास कुछ नहीं रहेगा। इसीलिए यह महत्वपूर्ण है कि आज हम जो उत्पादन करते है उससे कम उपभोग करें। हमारी उत्पादन गतिविधियों को भविष्य में जारी रखने के लिए बचत आवश्यक है। किन्तु हम यह भी जानते हैं कि भविष्य अनिश्चित है और इसका पूर्वानुमान नहीं लगाया जा सकता। कोई भी निश्चय के साथ नहीं कह सकता कि भविष्य में हमारे स्वास्थ्य, जीवन, सम्पत्ति आदि पर क्या प्रभाव पड़ेगा। उनका ठीक प्रकार से ध्यान रखना होगा जिससे भविष्य में उत्पादन और उपभोग की गतिविधियां निर्विध्नता से चलती रहे। इसी संदर्भ में, जीवन, स्वास्थ्य और सम्पत्ति आदि की हानि से रक्षा के लिए बीमा अनिवार्य है।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप समझ सकेंगे :

- बचत का अर्थ और आवश्यकता;
- बचत के प्रयोग की व्याख्या;
- ब्याज की अवधारणा;
- बीमा का अर्थ और आवश्यकता;
- जीवन बीमा, स्वास्थ्य बीमा, मोटर-गाड़ी बीमा के विषय में।

## 16.1 बचत का अर्थ

वास्तव में लोग मुद्रा, वर्तमान और भविष्य दोनों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कमाते हैं। यदि वे अपनी समस्त आय आज खर्च कर देते हैं तो भविष्य के लिए कुछ नहीं

बचेगा और तब वे कल अपनी आवश्यकताओं को सन्तुष्ट नहीं कर पाऐगें। किन्तु, यदि बचत है, तो इसका प्रयोग भविष्य में किया जा सकता है। इसलिए बचत आय की वह राशि है जिसे वर्तमान में वस्तुओं और सेवाओं और अन्य वस्तुओं पर व्यय करने के पश्चात् भविष्य के लिए रखा जाता है। इसका अर्थ यह है कि **बचत आय का उपभोग पर अधिशेष** है। हम लिख सकते हैं कि

बचत = आय – उपभोग

नीचे दी गई सारणी 16.1 का अध्ययन करो। सारणी में मिस्टर X नामक एक व्यक्ति की मासिक आधार पर आय और व्यय का एक वर्ष का विवरण दिया है। देखो, हमने अप्रैल महीने से आरम्भ किया है और मार्च महीने पर अन्त किया है। यह इसलिए है क्योंकि भारत में वित्तीय वर्ष की अवधि इस वर्ष के अप्रैल से अगले वर्ष के मार्च तक होती है।

### सारणी 16.1 मिस्टर X का मासिक आधार पर पिछले वर्ष का आय और व्यय

| माह | आय (रु.) | व्यय (रु.) | बचत (रु.) |
|---|---|---|---|
| अप्रैल | 15,500 | 14,300 | 1200 |
| मई | 15,500 | 15,000 | 500 |
| जून | 15,500 | 15,500 | 0 |
| जुलाई | 15,500 | 15,500 | 0 |
| अगस्त | 15,500 | 15,500 | 0 |
| सितम्बर | 15,500 | 15,000 | 500 |
| अक्टूबर | 15,500 | 14,000 | 1500 |
| नवम्बर | 15,500 | 15,500 | 0 |
| दिसम्बर | 15,500 | 15,000 | 500 |
| जनवरी | 15,500 | 15,300 | 200 |
| फरवरी | 15,500 | 15,400 | 100 |
| मार्च | 15,500 | 15,000 | 500 |
| **कुल** | **1,86,000** | **1,81,000** | **5,000** |

आप देखते हैं कि मिस्टर X की पिछले वर्ष की कुल आय 1,86,000 रु. थी। उसका कुल व्यय 1,81,000 रु. था। इसलिए उसने पिछले वर्ष 5000 रु. की बचत की।

अर्थात 1,86,000 – 1,81,000 = 5000 रु.

ध्यान दें, हमने पूरे एक वित्तीय वर्ष का विवरण बचत की गणना करने के लिए ध्यान में रखा है, एक या दो महीने का नहीं। यह इसलिए क्योंकि कुछ व्यय, प्रत्येक माह में करने अनिवार्य नहीं होते, वर्ष के अन्त में किए जाते हैं। उदाहरण के लिए, हम भोजन और दैनिक प्रयोग की वस्तुओं आदि पर व्यय नियमित रूप से करते हैं। किन्तु, फीस, सरकार का टैक्स आदि

की गणना वार्षिक आधार पर की जाती है। इसलिए, बचत की गणना करने के लिए पूरे वर्ष का आय और व्यय का विवरण लेना बेहतर है।

## 16.2 बचत किस प्रकार लाभदायक है?

बचत निम्न ढंग से लाभदायक है।

(i) पिछले उदाहरण से आरम्भ करते हैं। मिस्टर X ने पिछले वर्ष 5000 रु. की बचत की। इससे यह संकेत मिलता है कि वर्तमान वर्ष के आरम्भ में वह अतिरिक्त 5000 रु. से प्रारम्भ करता है। इसलिए इस वर्ष उसकी आय कम से कम 5000 रु. से बढ़ेगी, बशर्ते उसकी आय और व्यय में कोई परिवर्तन नहीं होता है। इसका अर्थ है कि बचत से मनुष्य की भावी आय में बृद्धि होती है।

(ii) बचत, भविष्य के लिए, एक सुरक्षा का कार्य कर सकती है। कैसे? मान लो मिस्टर X वर्ष के आरम्भ में बीमार हो जाते हैं। इसलिए, वह एक सप्ताह तक काम पर नहीं जा सके। वह एक सप्ताह तक कैसे सह सकते हैं? चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं है। वह कुछ समय तक काम चलाने के लिये पिछले वर्ष की बचत को हमेशा प्रयोग कर सकते हैं, जब तक कि वह बीमारी से ठीक नहीं होते और काम पर जाना और आय कमाना आरम्भ नहीं करते।

### पाठगत प्रश्न 16.1

1. बचत की परिभाषा दीजिए।
2. यदि आय 1000 रु. है और बचत 200 रु. है तो उपभोग की राशि क्या है?

## 16.3 आप अपनी बचत कहाँ रखते हैं?

प्रत्येक परिवार में एक सामान्य रीति यह है कि छोटे श्रेणी के सिक्के और करेन्सी नोट जैसे 50 पैसे 1 रु., 2 रु. को एक छोटे बचत के डिब्बे में डाला जाता है। परिवार के सभी सदस्यों को इस छोटी बचत की क्रिया में सहयोग देने में प्रसन्नता होती है। कुछ समय पश्चात् जैसे एक या कई मास में जब डिब्बा खोला जाता है तो परिवार को पता चलता है कि डिब्बे में अच्छी खासी राशि है जो किसी नई वस्तु को खरीदने में बहुत लाभकारी होती है। परिवारों को इस प्रकार का बचत का डिब्बा रखना, एक प्रकार की प्रथा है।

एक परिवार का बचत का डिब्बा, बचत की एक अनौपचारिक विधि है। इसका प्रयोग बड़ी राशि की बचत करने के लिए नहीं किया जा सकता। इस प्रकार मुद्रा रखना सुरक्षित भी नहीं है क्योंकि चोरी का डर रहता है। डिब्बे में रखी गई मुद्रा, जब तक वह खोला नहीं जाता, निरर्थक रहती है। क्योंकि यह एक निजी मामला है, इसे विशेष परिवार के अलावा और कोई प्रयोग नहीं कर सकता। अंत में, इस प्रकार की बचत के बदले मे किसी प्रकार का प्रतिफल भी प्राप्त नहीं होता।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि मुद्रा को रखने के लिए एक सुरक्षित स्थान की आवश्यकता है। प्रयोग के लिए भी इसकी आवश्यकता होती है। इसे बेकार नहीं छोड़ना चाहिए। कल्पना करो कि आपने 5000 रु. की बचत की है। यदि आप इसे बहुत समय तक प्रयोग नहीं करते तो यह एक सूखी लकड़ी के समान बिना प्रयोग के बेकार रहती है। आप इसका प्रयोग न तो स्वयं कर रहे हो न ही किसी दूसरे को करने दे रहे हो। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए समाज ने ऐसी संस्थाएं उपलब्ध कराई हैं जहाँ आप अपनी बचत रख सकते हो। वे डाकघर और व्यवसायिक बैंक हैं।

### 16.3.1 डाकघर बचत बैंक

कोई भी व्यक्ति अपनी व्यय नहीं की गई मुद्रा को डाकघर बचत बैंक में रख सकता है। आप को डाकघर लगभग हर बस्ती में मिल जायेगा। इसलिए यह किसी भी व्यक्ति की पहुँच में होता है। देश का कोई भी नागरिक डाकघर में अपने नाम में न्यूनतम 50 रु. जमाकर खाता खोल सकता है। कोई भी व्यक्ति कितने भी समय के लिए इसमें मुद्रा रख सकता है तथा वह किसी भी समय इस खाते में से कितनी भी राशि निकाल सकता है बशर्ते कि इस खाते में न्यूनतम 50 रु. शेष रहें। डाकघर द्वारा, खाताधारी की लेन-देन की प्रविष्टियों का लेखा प्रमाण रखने के लिए एक पासबुक उपलब्ध कराई जाती है। डाकघर, बचत बैंक खाते में बचत पर नाममात्र का  ब्याज भी देता है। यदि कोई व्यक्ति चैक बुक लेना चाहता है तो उसे अपने खाते में न्यूनतम 500 रु. की राशि रखनी होगी।

### 16.3.2 व्यवसायिक बैंकों में बचत खाता

हम पहले ही कह चुके हैं कि व्यवसायिक बैंक लोगों की जमा स्वीकार करते हैं। कोई व्यक्ति जो मुद्रा बचाना चाहता है बैंक में बचत खाता खोल सकता है। एक खाता खोलने के लिए आवश्यक न्यूनतम राशि और न्यूनतम शेष जो मुद्रा निकालने के पश्चात खाते में रहना चाहिए, जहाँ व्यक्ति मुद्रा बचाता है, उस विशेष बैंक द्वारा निश्चित की जाती है। डाकघर की तरह बैंक भी जमा कर्ता को एक पासबुक उपलब्ध कराता है जिसमें जमा और निकाली गई राशि और खाते में शेष राशि का विस्तृत ब्यौरा दिखाया जाता है। एक व्यवसायिक बैंक, बचत बैंक खाते पर नाममात्र का ब्याज भी देता है।

## 16.4 बचत के प्रयोग

बचतों का प्रयोग ऋण देने, ऋण लेने और अर्थव्यवस्था के विकास के उद्देश्य के लिए किया जा सकता है।

#### (i) ऋण देना और ऋण लेना

कोई व्यक्ति जो बचत करता है, ऋणदाता हो सकता है क्योंकि वर्तमान में उसके पास अधिशेष मुद्रा उपलब्ध होती है। समाज में बहुत से लोग, विभिन्न कारणों से, उससे अधिक उपभोग करते हैं जितना उनकी वर्तमान आय उन्हें स्वीकृति देती है। ये लोग आवश्यकता के समय मुद्रा उधार ले सकते है और इसका भविष्य में भुगतान कर सकते हैं।

### (ii) अर्थव्यवस्था का विकास

जब डाकघर और बैंकों में बहुत से लोग मुद्रा की बचत करते हैं तो समाज के द्वारा प्रयोग के लिए मुद्रा की एक बहुत बड़ी राशि उपलब्ध हो जाती है। हम जानते है कि बूँद-बूँद को मिलाकर सागर बन जाता है। इसी प्रकार, एक व्यक्ति बहुत कम बचत कर सकता है जो इस बात पर निर्भर करता है कि वह कितना कमा रहा है और कितना खर्च कर रहा है। किन्तु जब बहुत से व्यक्ति बचत करना आरम्भ कर देते हैं, तो उनको मिलाकर एक बड़ी राशि बन जाती है। समाज के लिए, सड़कें, कार्यालय की इमारत, रेलवे स्टेशन, सड़कों पर रोशनी, मनोरंजन पार्क, विद्यालय आदि के निर्माण के लिए, मुद्रा की एक बहुत बड़ी राशि की आवश्यकता होती है। इसके कारण भविष्य में संपूर्ण देश को लाभ होता है। इसलिए, किसी व्यक्ति के द्वारा बचत देश के विकास की प्रक्रिया में लाभदायक होने की संभावना बन जाती है।

## 16.5 ब्याज, बचत पर प्रतिफल के रूप में

कोई भी व्यक्ति अपनी बचत का प्रयोग आय कमाने के लिए कर सकता है जिसे बचत पर प्रतिफल कहते हैं। यह प्रतिफल ब्याज कहलाता है। यह कैसे सम्भव होता है? हम जानते हैं कि एक व्यक्ति जिसने मुद्रा की बचत की है एक ऋणदाता हो सकता है, उस मुद्रा को एक ऋण लेने वाले को देकर जो अभी ऋण लेना चाहता है। इस बचत के प्रयोग के लिए ऋण दाता ऋणी से कुछ राशि वसूल कर सकता है। जिसे ऋणी द्वारा भुगतान किया गया और ऋणदाता द्वारा कमाया गया ब्याज कहते हैं। सामान्यरूप से ऋणी, ऋणदाता की राशि का भुगतान ब्याज सहित किसी निश्चित भविष्य की तिथि पर कर देता है। ध्यान दो, जब ऋणी, ऋणदाता से मुद्रा लेता है तो हम कहते हैं कि ऋणदाता ने ऋणी को ऋण दिया है। इसका अभिप्राय यह है कि जब एक ऋणदाता अपनी बचत, एक ऋणी को देता है तो वह एक ऋण के रूप में बदल जाती है। ऋण की राशि ऋणी द्वारा, ऋणदाता को भविष्य में ब्याज सहित वापस करनी पड़ती है।

**उदाहरण** : मान लो सुश्री सरिता की 1000 रु. की बचत है। आशीष उस मुद्रा को उधार लेना चाहता है। इसलिए सरिता ऋणदाता और आशीष ऋणी हुआ। यह निश्चय किया गया कि आशीष को ऋण की राशि 1000 रु. एक वर्ष के पश्चात् वापस करनी होगी। यह भी निश्चय किया गया कि आशीष को 120 रु. ब्याज के रूप में भुगतान करना होगा। उसी के अनुसार आशीष ने,एक वर्ष बाद सरिता को कुल राशि 1120 रु. (1000 + 120) का भुगतान किया। इसलिए, अपनी बचत को उधार देकर, सरिता ने जिस राशि की बचत की, उसको प्राप्त करने के अतिरिक्त 120 रु. ब्याज के रूप में कमाए।

### 15.5.1 ब्याज की दर

अब प्रश्न उठता है - सरिता ने आशीष को दिए गए प्रति 100 रु. पर कितनी राशि कमाई?

**उत्तर** : सरिता ने आशीष को 1000 रु. उधार दिए। उसने इस राशि पर 120 रु. कमाए।

इसलिए 100 रु. पर कमाई $= 120 \times \frac{100}{1000} = 12$ रु.

इसलिए सरिता ने 12 रु. प्रति 100 रु. ब्याज के रूप में कमाए। अर्थात 12% प्रतिवर्ष। जब हम 100 पर मूल्य ज्ञात करते है तो हम उसे प्रतिशत कहते हैं। इसलिए हम कह सकते हैं कि सरिता ने 12 प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से कमाई की। यह 12 प्रतिशत प्रतिवर्ष, ऋणी (आशीष) द्वारा भुगतान की गई और ऋणदाता (सरिता) द्वारा प्राप्त ब्याज की दर कहलाती है। 120 रु. 1000 रु. ऋण की राशि पर कुल ब्याज की राशि है। यह ऋण की राशि मूल राशि भी कहलाती है।

ब्याज की दर को, ऋणदाता द्वारा कमाई गई ऋणी द्वारा भुगतान की गई प्रति 100 रु. जो ऋणदाता ने ऋणी को एक वर्ष के लिए दिए, के रूप में परिभाषित किया जाता है।

### 16.5.2

क्योंकि लोग अपनी बचतों को डाकघर और बैंकों में रखते हैं, उन्हें ब्याज प्राप्त होता है। डाकघर व्यक्तियों को लगभग 3.5 प्रतिशत ब्याज देते है और बैंक लगभग 4 प्रतिशत प्रतिवर्ष। जब डाकघरों या बैंकों में आप अपनी बचतों पर ब्याज प्राप्त करते हो तो आपकी मुद्रा बढ़ती है। इसलिए जब आज मुद्रा की बचत की जाती है तो कल यह बढ़कर बड़ी राशि हो जाती है।

## पाठगत प्रश्न 16.2

1. ब्याज की दर की परिभाषा दीजिए।
2. ऋण दाता और ऋणी में अन्तर कीजिए।
3. यदि आप 200 रु. उधार देकर 20 रु. प्रति माह कमाते हैं तो ब्याज की दर क्या है?

## आओ कुछ करें

अपने पास के डाकघर में जाओ और एक बचत बैंक खाता खोलने के विषय में पूछताछ करो।

## 16.6 बीमा

हम अनिश्चितता की दुनिया में रह रहे हैं। इसका तात्पर्य है कि हम यह नहीं जानते कि भविष्य में क्या होगा? बहुत सी चीजें हमारे नियन्त्रण में नहीं हैं। नीचे के उदाहरण लीजिए।

(अ) एक किसान अच्छी वर्षा पर निर्भर करता है जिससे कि वह अनाजों की अधिक मात्रा का उत्पादन कर सके। किन्तु किसान का वर्षा पर कोई नियन्त्रण नहीं होता । यदि अच्छी वर्षा हो जाती है तो उसकी फसल अच्छी हो जाती है। किन्तु यदि वर्षा नहीं होती तो सूखा पड़ जायेगा और किसान को भारी हानि उठानी पड़ेगी।

(ब) लोगों के पास मकान होते है जिनमें वे रहते हैं किन्तु सम्पत्ति को हानि पहुँचाने वाली कुछ आकस्मिक दुर्घटनाओं पर, जैसे आग, चोरी हो सकती है, उनपर उनका कोई नियंत्रण नहीं होता।

(स) आजकल बहुत से लोगों के पास, दो पहिए वाले और कार के रूप में मोटर-गाड़ियाँ होते हैं। क्योंकि वाहनों की संख्या बढ़ी है। चोरी के मामलों और सड़कों पर दुर्घटनाओं की संख्या भी बढ़ी है। कोई भी दुर्घटनाओं का पुर्वानुमान नहीं लगा सकता जिनसे टूटफूट तथा हानि होती है।

(द) हम सब बीमार पड़ते हैं और चिकित्सा और इलाज पर व्यय करते हैं। कोई भी पुर्वानुमान नहीं लगा सकता कि बीमारी कब आएगी? बीमारी के कारण हम कार्य नहीं कर सकते। इसके कारण, बीमारी की अवधि में हमें अपनी आय की हानि हो सकती है।

इस प्रकार, अनिश्चिताओं के भी अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं। आश्चर्य की बात है, लाटरी जीतना भी अनिश्चित है। यह एक अप्रत्याशित लाभ है। तथापि, आय की हानि अथवा अनिश्चितता के कारण सम्पत्ति को हानि, एक चिन्ता का विषय है। अनिश्चितता में टूटफूट अथवा हानि का जोखिम शामिल होता है। कुछ सीमा तक हम सावधानी रख सकते हैं किन्तु उनसे पूरी तरह बचना सम्भव नहीं है।

ऊपर कहे गए कारणों से जिसे भी हानि होती है वह चाहेगा कि उसे उस हानि/टूटफूट के लिए पूरा या आंशिक रूप में मुद्रा के रूप में मुआवजा मिल जाए। बीमा, सम्बन्धित व्यक्ति को, हानि/टूटफूट के लिए, कुछ मुआवजा सुनिश्चित करता है। बीमा एक वस्तु या उत्पाद की तरह है। कोई भी व्यक्ति जिसे अपनी सम्पत्ति नष्ट होने या हानि होने की सम्भावना है वह कुछ मुद्रा देकर बीमा करा सकता है। **बीमे को बेचने वाला, बीमाकर्ता और खरीदने वाला, बीमाधारी, कहलाता है। बीमाधारी या क्रेता द्वारा जो मुद्रा का भुगतान किया जाता है उसे प्रीमियम कहते हैं।** सामान्य रूप से बीमे की रकम निश्चित वर्षों के लिए दी जाती है। यदि इन अवधि में कोई हानि हो जाती है तो बीमाधारी व्यक्ति को बीमाकर्ता से उचित मुआवजा मिल जाता है।

## बीमा की परिभाषा

**बीमा को एक वित्तीय उत्पाद के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसे बीमाधारी द्वारा, उसके नियन्त्रण के बाहर, किसी भी घटना के कारण होने वाली हानि की पूरी अथवा आंशिक भरपाई के लिए खरीदा जाता है।**

सामान्य रूप से बीमा को बेचने वाली, बीमा कम्पनी होती है। जब बीमाधारी व्यक्ति को कोई हानि होती है तो बीमा कम्पनी हानि की क्षतिपूर्ति करने के लिए उसे कुछ राशि का भुगतान करती है। इसे बीमे का दावा कहते हैं। इसलिए बीमा, किसी व्यक्ति को अनिश्चितता से होने वाले जोखिम को कम करने की अनुमति देता है।

टिप्पणी

## पाठगत प्रश्न 16.3

1. बीमाकर्ता तथा बीमाधारी में भेद कीजिए।
2. अनिश्चितता के दो उदाहरण दीजिए।
3. क्या बीमा एक उत्पाद है?

## 16.7 कुछ चुने हुए बीमे के उत्पाद

आइये, हम निम्न बीमा उत्पादों की संक्षेप में चर्चा करते हैं।

(i) मोटर गाड़ियों का बीमा

(ii) स्वास्थ्य बीमा

(iii) जीवन बीमा

### (i) मोटर गाड़ियों का बीमा

व्यक्ति, जिनके पास स्कूटर, मोटर साइकिल, कार आदि हैं वे सम्बन्धित बीमा कम्पनी से मोटर गाड़ी बीमा खरीद सकते हैं। क्योंकि मोटर गाड़ियाँ टिकाऊ वस्तुएं है और उनका जीवनकाल दीर्घ जैसे 10 से 15 वर्ष होता है, बीमा पोलिसी निम्न प्रकार से प्राप्त की जाती है।

पहले वर्ष में वाहन नया है इसलिए बीमा कम्पनी, बीमाधारी से अधिक राशि प्रीमियम के रूप में वसूल करती है। तदनन्तर, वाहन पुराना हो जाता है इसलिए धीरे-धीरे इसकी कीमत घटती है। इसलिए कम्पनी बीमाधारी से कम प्रीमियम वसूल करती है। जब मोटर गाड़ी को कोई नुकसान होता है, तो बीमा कम्पनी बीमा पॉलिसी में वर्णित शर्तों के आधार पर गणना करके दावे का भुगतान करती है।

### (ii) स्वास्थ्य बीमा

स्वास्थ्य बीमा योजना के अन्तर्गत एक व्यक्ति जो इस बीमा को खरीदता है वह चिकित्सा/इलाज पर जो खर्च करता है, उसमें से कुछ राशि प्राप्त कर सकता है। इस विषय में भी बीमा कम्पनी रूचि रखने वाले व्यक्ति से प्रति वर्ष एक नाममात्र की राशि प्रीमियम के रूप में लेती हैं। जब भी बीमाधारी बीमार पड़ता है और चिकित्सा पर व्यय करता है, तो बीमा कम्पनी उस भार को कम करने के लिए व्यक्ति को कुछ राशि देती है। सामान्य रूप से यदि एक व्यक्ति छोटी उम्र में स्वास्थ्य बीमा खरीदता है तो प्रीमियम कम होता है। व्यक्ति की उम्र बढ़ने के साथ-साथ बीमा शुल्क की राशि भी बढ़ती जाती है।

### (iii) जीवन बीमा

एक व्यक्ति एक विशेष अवधि के लिए जीवन बीमा खरीद सकता है। समय अवधि 10 से 25 वर्ष हो सकती है। बीमित व्यक्ति को हर वर्ष बीमा कम्पनी को कुछ राशि प्रीमियम

के रूप में देनी पड़ती है। कम्पनी व्यक्ति को समय अवधि पूरी होने पर दावा वापस कर देती है। बीमा कम्पनी द्वारा यह राशि वार्षिक आधार अथवा किस्तों में भी भुगतान की जा सकती है। यदि व्यक्ति की इस बीच में मृत्यु हो जाती है तो भुगतान उसके मनोनीत व्यक्ति को कर दिया जाता है।

## आपने क्या सीखा

- बचत वह आय है जो उपभोग के पश्चात बच जाती है।
- लोग भविष्य में सुरक्षा और बचत पर ब्याज कमाने के लिए बचत करते हैं।
- ऋण दाता वह व्यक्ति है जिसने मुद्रा की बचत की है और वह इसे ऋणी को किसी ब्याज की दर पर उधार देता है।
- ऋणी वह व्यक्ति है जो ब्याज की दर का भुगतान करके मुद्रा उधार लेता है।
- लोग अपनी मुद्रा की बचत डाकघर और बैंकों में करते हैं।
- बीमा एक उत्पाद है जिसे लोग जीवन-स्वास्थ्य, मोटर गाड़ी आदि सम्पत्ति की हानि के जोखिम को कम करने के लिए खरीदते हैं।

## पाठान्त प्रश्न

1. बचत की परिभाषा दीजिए। इसके दो उपयोग बताओ।
2. बचत की गणना कैसे होती है। लोग बचत क्यों करते हैं?
3. डाकघर बचत बैंक पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखो।
4. लोग बीमा क्यों खरीदते है?
5. मोटरगाड़ी बीमा की व्याख्या कीजिए।
6. स्वास्थ्य और जीवन बीमा में अन्तर कीजिए।

## पाठगत प्रश्नों के उत्तर

### पाठगत प्रश्न 16.1

1. बचत को उपभोग पर आय के अधिशेष के रूप में परिभाषित किया जाता है।
2. 800 रु.

टिप्पणी

### पाठगत प्रश्न 16.2

1. ब्याज की दर को ऋणी द्वारा ऋणदाता को एक वर्ष के लिए प्रत्येक 100 रु. के प्रयोग के लिए किए गए भुगतान के रूप में परिभाषित करते हैं।
2. **ऋणदाता** - व्यक्ति अथवा संस्था जो मुद्रा उधार देता है।

   **ऋणी** - व्यक्ति अथवा संस्था जो ऋणदाता से मुद्रा उधार लेता है।
3. 120 प्रतिशत

### पाठगत प्रश्न 16.3

1. बीमाकर्ता बीमे का विक्रेता होता है तथा बीमाधारी बीमे का क्रेता होता है। बीमाधारी बीमा खरीदने वाला होता है।
2. सूखा, बीमारी
3. हाँ

# मॉड्यूल 6 : अर्थशास्त्र में आंकड़ों का प्रस्तुतीकरण और विश्लेषण

17. आंकड़ों का संकलन और प्रस्तुतीकरण
18. आंकड़ों का विश्लेषण

# 17

# आंकड़ों का संकलन और प्रस्तुतीकरण

अपने चारों ओर बहुत सी वस्तुओं के विषय में सूचना प्राप्त करना जीवन का एक तरीका हो चुका है। सूचना स्वयं ज्ञान का एक सबसे बड़ा स्रोत है। बिना सूचना के निर्णय लेना बहुत कठिन है। विज्ञान और प्रोद्योगिकी के विकास से सूचना के स्रोतों में वृद्धि हुई है और वे पहुँच के अन्दर भी हो गए हैं। पुस्तकें, समाचार पत्र, पत्रिकाएं, टेलीफोन, टेलीविजन, इन्टरनेट और मोबाइल फोन आदि सभी विभिन्न प्रकार की सूचना उपलब्ध कराने के माध्यम हैं।

सूचना स्वभाव से गुणात्मक और संख्यात्मक दोनों प्रकार की होती है। अच्छा, बुरा कुरूप, सुन्दर, उत्तरदायी, महान, शिक्षित आदि शब्द जिनका प्रयोग लोगों का वर्णन करने के लिए किया जाता है, उन्हें गुणात्मक प्रकृति का कहा जा सकता है। आय, व्यय, बचत, संवृद्धि की दर, ऊँचाई, वजन, प्राप्तांक, जनसंख्या, भोजन का उत्पादन आदि को परिमाणात्मक अथवा संख्यात्मक रूप में दिया जाता है। अर्थशास्त्र के अध्ययन में विश्लेषण के लिए मुख्य रूप से संख्यात्मक सूचनाएं प्रयोग की जाती हैं।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप समझ सकेंगे :

- आंकड़े शब्द का अर्थ;
- विभिन्न प्रकार के आंकड़ों में अन्तर;
- चरों और गुणों में अन्तर;
- अर्थव्यवस्था के ऐसे क्षेत्रों की पहचान करना जहाँ हमारा काम आंकड़ों के बिना नहीं चल सकता;
- आंकड़ों का वर्गीकरण करना और उन्हें सारणीबद्ध करना;
- आंकड़ों को प्रस्तुत करने के विभिन्न रूप।

टिप्पणी



## 17.1 आंकड़ों का अर्थ और विशेषताएं

आंकड़ों से अभिप्राय, तथ्यों को सामूहिक रूप में उपलब्ध कराने वाली संख्यात्मक सूचना है। सूचना किसी के भी बारे में हो सकती है, जिसे संख्यात्मक रूप में दिया जा सकता है और निर्णय लेने में सहायक होती है। इसे संख्यात्मक आंकड़े या सरल रूप से, सांख्यिकी भी कहते हैं। आंकड़े एक बहुवचन पद है। आंकड़ों का एकवचन आंकड़ा है। इस अर्थ के अनुसार हम सांख्यिकी शब्द या आंकड़ों की कुछ विशेषताएं उदाहरण सहित नीचे दे सकते हैं।

### (i) सांख्यिकी तथ्यों का समूह है

अकेला तथ्य सांख्यिकी या आंकड़े नहीं माना जा सकता। उदाहरण के लिए, दसवीं कक्षा के एक विद्यार्थी द्वारा गणित में प्राप्त अंक 95 हैं। यह एक सूचना के रूप दी गई है जो केवल एक सरल तथ्य है, आंकड़े नहीं। तथापि, एक स्कूल के दसवीं कक्षा के सभी विद्यार्थियों द्वारा या तो खण्डानुसार या कुल प्राप्तांकों को आंकड़े माना जा सकता है क्योंकि यह तथ्यों का समूह हो जाता है। केवल एक विद्यार्थी के अंक बताकर हम दूसरों के प्रदर्शन के विषय में नहीं जान सकते और उसके अनुसार उनमें सुधार के लिए कोई विश्लेषण नहीं कर सकते। इसका अर्थ यह है कि तथ्यों के समूह देकर आंकड़े अर्थपूर्ण हो जाते हैं क्योंकि इससे विश्लेषण करने का अवसर उपलब्ध हो जाता है।

नीचे की सारणी को देखो। यह एक कक्षा के सभी 18 विद्यार्थियों के गणित में प्राप्तांकों को दर्शाती है। इसको देखकर हम संपूर्ण कक्षा के निष्पादन की तुलना कर सकते हैं। इसलिए यह आंकड़ों का एक उदाहरण है।

**सारणी 17.1**

| विद्यार्थी | अंक | विद्यार्थी | अंक |
|---|---|---|---|
| A | 95 | J | 35 |
| B | 90 | K | 30 |
| C | 75 | L | 85 |
| D | 65 | M | 20 |
| E | 90 | N | 90 |
| F | 100 | O | 80 |
| G | 80 | P | 70 |
| H | 45 | Q | 100 |
| I | 40 | R | 50 |

उपर्युक्त आंकड़ों से हम निम्न जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

(a) कितने विद्यार्थियों ने 90 से अधिक अंक प्राप्त किए हैं?

(b) कितने विद्यार्थी असफल रहे हैं।

(c) कितने विद्यार्थियों ने 50 से कम अंक प्राप्त किए हैं।

इन प्रश्नों के उत्तरों के आधार पर, अध्यापक जहाँ आवश्यकता है, विद्यार्थियों के प्रदर्शन में सुधार लाने के लिए आवश्यक कदम उठा सकता है। इसलिए, इस प्रकार से तथ्यों के समूह के रूप में आंकड़े, किसी अकेली सूचना की अपेक्षा अधिक अर्थपूर्ण होते हैं।

### (ii) संख्या में व्यक्त

सांख्यिकी या आंकड़े हमेश प्रकृति से संख्यात्मक होते हैं। गुणात्मक सूचना, जैसे अच्छा, बुरा, औसत, सुन्दर, कुरूप गुणों के कुछ उदाहरण हैं, उनके आकार को संख्यात्मक रूप में नहीं दिया जा सकता अतः इन्हें सांख्यिकी या आंकड़े नहीं कहा जा सकता।

जब तथ्यों को गिनकर, गणना करके या अनुमान लगाकर संख्या के रूप में रखा जाता है तो ये आंकड़े कहला सकते हैं। ऊपर की सारणी में विद्यार्थियों के अंक संख्यात्मक रूप में दिए गए हैं। हम एक दूसरा उदाहरण दे सकते हैं जैसा कि नीचे सारणी 17.2 में है जो एक काल्पनिक शहर में विभिन्न कालिजों में प्रथम वर्ष में दाखिल हुए, विद्यार्थियों की संख्या बताती है।

**सारणी 17.2**

| कालिज | विद्यार्थियों की संख्या |
|---|---|
| सरकारी कालिज | 409 |
| सावित्री कालिज | 308 |
| जे.पी. कालिज | 401 |
| एन.डी. कालिज | 510 |

### (iii) आंकड़े अनेक कारणों से प्रभावित होते हैं।

आंकड़े किसी एक कारण से प्रभावित नहीं होते बल्कि बहुत से कारकों द्वारा प्रभावित होते हैं। उदाहरण के लिए वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि, कई कारणों, जैसे पूर्ति में कमी, मांग में वृद्धि, मजदूरी में वृद्धि आदि के कारण हो सकती है।

### (iv) परिशुद्धता का एक उचित स्तर

सांख्यिकी में 100 प्रतिशत परिशुद्धता न तो सम्भव है और न ही वांछनीय है। जिसकी आवश्यकता और आशा है वह परिशुद्धता का एक उचित स्तर है। यदि एक डाक्टर ने कोलेस्ट्रोल के नियन्त्रण के लिए एक नई दवा का अविष्कार किया है और सांख्यिकीयरूप से उसने सुनिश्चित कर दिया कि 90 प्रतिशत लोगों पर उसका अच्छा प्रभाव पड़ा है और यदि सांख्यिकी के रूप से

95 प्रतिशत लोगों पर इलाज का अनुकूल प्रभाव पड़ा, तो यह समझा जा सकता है कि नई दवा अच्छी है और इसमें परिशुद्धता का एक उचित स्तर है क्योंकि परिणाम यह बताता है कि केवल 90 प्रतिशत मरीजों पर अनुकूल प्रभाव पड़ा है, 100 प्रतिशत पर नहीं। इससे परिशुद्धता का एक उचित स्तर प्रतिबिंबित होता है।

### (v) पूर्वनिर्धारित उद्देश्य

आंकड़े पूर्व निर्धारित उद्देश्य के लिए संकलित किए जाते हैं। ऊपर की दोनों सारिणियाँ कुछ प्रमुख उद्देश्यों को पूरा करती हैं। सारणी 17.1 के आंकड़ों का प्रयोग गणित में विद्यार्थियों के प्रदर्शन का मूल्यांकन करने के लिए किया जा सकता है। सारणी 17.2 में आंकड़ों का प्रयोग कुछ सीमा तक कालेज में प्रवेश लेने वाले युवकों की संख्या के आधार पर, शहर में उच्च शिक्षा की स्थिति जानने के लिए किया जा सकता है।

## 17.2 अर्थशास्त्र में आंकड़ों का महत्व

अर्थशास्त्र के विशेष क्षेत्र, जहां आंकड़ों का प्रयोग बहुत ही महत्वपूर्ण है, निम्न प्रकार हैं :

1. **आर्थिक नियोजन में :** साधारणतया भविष्य की योजना बनाने के लिए पिछले वर्षो के आंकड़ों का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए, यदि हम एक वर्ष के लिए प्राथमिक शिक्षा पर होने वाले व्यय की योजना बनाना चाहते हैं तो यह देखना महत्वपूर्ण है कि पिछले वर्षों में पांचवी कक्षा तक कितने छात्रों को प्रवेश दिया गया तथा उन वर्षों में उन पर कितना व्यय किया गया। आर्थिक नियोजन के आधार पर भविष्य वाणी की जाती है। उदाहरण के लिए यदि हम किसी देश की प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि का पुर्वानुमान लगाना चाहते हैं तो जनसंख्या और राष्ट्रीय आय की वृद्धि दर के आंकड़ों का भी संकलन और उन पर विचार करना पड़ेगा।

2. **राष्ट्रीय आय के निर्धारण में :** अपनी अर्थव्यवस्था की स्थिति जानने के लिए, बहुत सी अन्य वस्तुओं के अतिरिक्त, राष्ट्रीय आय ज्ञात करना भी महत्वपूर्ण है किन्तु राष्ट्रीय आय कुछ विधियों के प्रयोग द्वारा निर्धारित की जा सकती है जिनमें कुछ संख्यात्मक सूचना जैसे अर्थव्यवस्था में कर्मचारियों द्वारा प्राप्त मजदूरी तथा वेतन, भूमि और इमारतों के प्रयोग के लिए प्राप्त लगान, पूंजी के प्रयोग के लिए प्राप्त ब्याज तथा दिए गए वर्ष में उद्यमी द्वारा कमाया गया लाभ की आवश्यकता होती है।

3. **सरकारी नीतियों का आधार :** सरकार द्वारा, देश के आर्थिक विकास की नीतियाँ बनाने के लिए, सांख्यिकीय आंकड़ों का विस्तार से प्रयोग किया जाता है। भारत में बहुत अधिक निर्धन और बेरोजगार लोगों के आंकड़ों के आधार पर, सरकार को गरीबी और बेरोजगारी के उन्मूलन के लिये एक नीति, राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारन्टी अधिनियम पारित कर, बनानी पड़ी। सरकार की यह नीति एक बेरोजगार व्यक्ति को वर्ष में 100 दिन का मजदूरी सहित रोजगार देने की गारन्टी देती है। भारत में जनगणना जो प्रत्येक 10 वर्ष में एक बार होती है, स्त्री तथा पुरुषों की जनसंख्या, साक्षर लोगों की संख्या, कर्मचारियों की संख्या आदि के आंकड़े उपलब्ध कराती है। स्त्री और पुरुषों की जनसंख्या के आंकड़ों के आधार

पर यह पाया गया कि भारत में प्रति 1000 पुरुषों के पीछे 938 स्त्रियाँ हैं। कुछ राज्यों जैसे हरियाणा में 1000 पुरुषों के पीछे केवल 848 स्त्रियाँ हैं। यह एक बहुत ही चौंकाने वाली स्थिति है क्योंकि स्त्रियों की कम संख्या का एक कारण कन्या शिशु को जन्म से पहले मार देना है। इन आंकड़ों के आधार पर अब सरकार कन्या शिशु को बचाने की नीति बना रही है।

## पाठगत प्रश्न 17.1

1. पहचान करें कि निम्नलिखित आंकड़े हैं या नहीं। कोष्ठक में हाँ/नहीं लिखो।

   (i) कुमारी मोनिका ने अर्थशास्त्र में 75 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। ( )

   (ii) कृष हरि से अच्छा खिलाड़ी है। ( )

   (iii) ललिता ने अच्छे अंक प्राप्त किए। ( )

   (iv) स्कूलों के रिकार्ड में विद्यार्थियों की संख्या निम्न प्रकार है। क्या आप इस रिकार्ड को आंकड़े कहोगे? ( )

**सारणी 17.3**

| विभाग | विद्यालय अ | विद्यालय ब |
|---|---|---|
| कला | 400 | 700 |
| विज्ञान | 600 | 400 |
| वाणिज्य | 300 | 300 |

## 17.3 आंकड़ों के प्रकार

संकलन के स्रोत के आधार पर आंकड़ों को वर्गीकृत किया जा सकता है जैसेः (अ) प्राथमिक आंकड़े और (ब) द्वितीयक आंकड़े

### (अ) प्राथमिक आंकड़े

**जो आंकड़े सर्वेक्षण के उद्देश्य के अनुसार पहली बार मौलिक रूप में संकलित किए जाते हैं, प्राथमिक आंकड़े कहलाते हैं।** उदाहरण के लिए एक अनुसंधानकर्ता द्वारा एक गांव में चाय या काफी पीने की आदत वाले व्यक्तियों के बारे में संकलित आंकड़े।

**प्राथमिक आंकड़ों के संकलन करने की विधियाँ**

1. **प्रत्यक्ष वैयक्तिक अनुसंधान :** इस विधि के अंतर्गत अनुसंधानकर्ता उत्तरदाता से व्यक्तिगत रूप से आंकड़े एकत्र करता है। व्यक्ति जो सूचना का संकलन करता है, अनुसंधानकर्ता

कहलाता है और जो व्यक्ति अनुसंधानकर्ता द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देता है वह उत्तरदाता कहलाता है। इसलिए, इस ढंग से संकलित आंकड़े बहुत ही विश्वसनीय होते हैं। परन्तु अनुसंधानकर्ता के व्यक्तिगत पक्षपात और पूर्वाग्रह के परिणामों पर प्रभाव पड़ने का अवसर बना रहता है।

2. **अप्रत्यक्ष अनुसंधान :** इस विधि के अन्तर्गत अनुसंधानकर्ता अप्रत्यक्ष रूप से किसी तीसरे व्यक्ति से सूचना प्राप्त करता है जिसे जिस व्यक्ति के विषय में पूछताछ की जा रही है उसके विषय में तथ्य जानने की आशा की जाती है। इसका उपयोग आमतौर पर सरकार द्वारा नियुक्त आयोगों द्वारा किया जाता है।

3. **संवाददाता द्वारा :** इस विधि में अनुसंधानकर्ता द्वारा विभिन्न स्थानों से सूचना प्राप्त करने के लिए संवाददाता या एजेन्ट नियुक्त कर दिए जाते हैं। ये संवाददाता सूचना संकलित करते हैं और अनुसंधानकर्ता या केन्द्रीय कार्यालय को भेज देते हैं। यह विधि समाचार पत्रों के कार्यालयों द्वारा व्यापक रूप से प्रयोग की जाती है।

4. **डाक प्रश्नावली द्वारा :** इस विधि के अन्तर्गत एक बहुत अच्छी प्रकार से संरचित प्रश्नावली तैयार की जाती है और उत्तरदाता को डाक से भेज दी जाती है। उत्तरदाता प्रश्नावली को भर कर इसे दी गई समय अवधि में वापस भेज देता है। परन्तु इस विधि का प्रयोग तभी हो सकता है जब उत्तरदाता साक्षर हैं ओर प्रश्नावली को भर सकते हैं।

5. **अनुसूची द्वारा :** इस विधि के अन्तर्गत क्षेत्र के कार्यकर्ताओं को उत्तरदाता के पास अनुसूची के प्रश्नों के साथ भेजा जाता है। वे अपने हाथों से लिखकर उत्तर संकलित करते हैं और अनुसंधानकर्ता को आंकड़े उपलब्ध कराते हैं। यह विधि तभी उपयोग में लाई जा सकती है जब उत्तरदाता अशिक्षित होता है।

## (ब) द्वितीयक आंकड़े

**जब हम उन आंकड़ों का प्रयोग करते हैं जो दूसरों के द्वारा पहले से ही संकलित हैं तो वे द्वितीयक आंकड़े कहलाते हैं।** आंकड़े उस एजेन्सी के लिए प्राथमिक हैं जो इन्हें पहली बार संकलित करती है और शेष सभी प्रयोगकर्ताओं के लिए वे द्वितीयक हो जाते हैं।

### द्वितीयक आंकड़ों के स्रोत

द्वितीयक आंकड़े प्रकाशित और अप्रकाशित रूप में हो सकते हैं। प्रकाशित आंकड़ों को निम्न से प्राप्त किया जा सकता है :

(अ) समाचार पत्रों की प्रकाशित रिपोर्ट, भारतीय रिजर्व बैंक तथा कालिज पत्रिकाएं

(ब) व्यापार संघों के प्रकाशन

(स) वार्षिक रिपोर्टों में प्रकाशित वित्तीय आंकड़े

(द) SEBI के प्रकाशनों में प्रकाशित आंकड़े

(ङ) सरकारी प्रकाशनों से सूचना

(च) अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं जैसे संयुक्त राष्ट्र संघ, विश्व बैंक आदि के प्रकाशन

(छ) अन्य

अप्रकाशित रूप में द्वितीयक आंकड़े हो सकते हैं जैसे :

(अ) सरकारी विभागों की आन्तरिक रिपोर्ट

(ब) संस्थाओं द्वारा रखे गए रिकार्ड

(स) विश्वविद्यालयों में छात्रों द्वारा तैयार अनुसंधान रिपोर्टें

## 17.4 आंकड़ों का प्रस्तुतीकरण

सूचियों और प्रश्नावली के रूप में संकलित आंकड़े स्वतः स्पष्ट नहीं होते हैं। वे शुद्ध आंकड़ों के रूप में होते हैं। इन्हें अर्थ पूर्ण बनाने के लिए, इन्हें प्रस्तुत करने योग्य बनाना पड़ता है। वर्गीकरण और सारणीयन आंकड़ों को क्रम के अनुसार प्रस्तुत करने के मौलिक उपकरण हैं।

### 17.4.1 वर्गीकरण

वर्गीकरण आंकड़ों को उनकी समानता और निकट सम्बन्ध के अनुसार वर्गों और समूहों में व्यवस्थित करने की एक प्रक्रिया है। बड़ी संख्या में आंकड़े अपने मूल रूप में शुद्ध आंकड़े कहलाते हैं।

**चर और गुण :** जब आंकड़ों का वर्गीकरण समय या आकार की मात्रा के रूप में किया जा सकता है तो उसे चर कहते हैं। ऊँचाई, वजन, लम्बाई, दूरी चरों के उदाहरण हैं। चर विच्छिन्न या अविच्छिन्न हो सकते हैं विच्छिन्न चरों का आमतौर पर एक विशिष्ट मूल्य या माप होता है। उदाहरणार्थ प्रति परिवार बच्चों की संख्या, एक विच्छिन्न चर है क्योंकि इसको टुकड़ों में नहीं बांटा जा सकता।

**सारणी 17.4**

| प्रति परिवार बच्चों की संख्या | 0 | 1 | 2 | 3 | 4 |
|---|---|---|---|---|---|
| परिवारों की संख्या | 4 | 8 | 20 | 38 | 10 |

यह सारणी दर्शाती है कि 4 परिवार बिना बच्चों के हैं, 8 परिवारों में एक बच्चा है और इसी प्रकार। क्योंकि बच्चों की संख्या हर परिवार में अलग-अलग है हम इसे चर कहते हैं और इसे X से व्यक्त करते हैं। एक चर के विभिन्न मूल्य हो सकते हैं। जितनी बार एक मूल्य आता है, यह उसकी आवृति होती है। चर (x) 0-4 मूल्य हैं और उनकी आवृति 4, 8, 20, 38 और 10 हैं। यहाँ 0 मूल्य 4 बार आया है। मूल्य 1, 8 बार आया है और इसी प्रकार। दूसरी ओर, अविच्छिन्न चर में अपने पैमाने और माप में निरन्तरता होती है जैसे ऊँचाई, वजन, लम्बाई, दूरी आदि। अविच्छिन्न चर प्रायः अविच्छिन्न श्रृंखला में रखे जाते हैं जैसे नीचे दिया गया है।

| ऊँचाई (x) | 60′-62″ | 62″-64″ | 64″-66″ | 66″-68 |
|---|---|---|---|---|
| सिपाहियों की संख्या (आवृति) | 100 | 200 | 110 | 80 |

सारणी ऊँचाई का विस्तार (x) उनकी आवृति के अनुसार दर्शाती है। इसे इस प्रकार पढ़ा जा सकता है कि 100 सिपाहियों की ऊँचाई 60″-62″, 200 सिपाहियों की ऊँचाई 62″-64″ के बीच में है और इसी प्रकार।

**गुण :** जब आंकड़ों को समय अथवा आकार के परिमाण में वर्गीकृत नहीं किया जा सकता तो इसे गुण कहा जाता है जैसे सौन्दर्य, बहादुरी, योग्यता, सुस्ती आदि। गुणों की गहराई से जांच नहीं की जा सकती। एक सीमित उद्देश्य के अध्ययन के लिए इनकी केवल गिनती की जा सकती है।

**सांख्यिकी श्रृंखला :** सांख्यिकी में तीन प्रकार की श्रृंखलाऐं होती हैं जिनमें आंकड़ों का व्यवस्थितीकरण किया जा सकता है।

**व्यक्तिगत श्रृंखला :** इस प्रकार की श्रृंखला में मदों को व्यक्तिगत रूप में उनके मूल्यों के अनुसार दर्शाया जाता है। प्रत्येक मद का अलग और व्यक्तिगत अस्तित्व होता है। बड़ी संख्या में आंकड़े अपने मूल रूप में शुद्ध आंकड़े या अव्यवस्थित आंकड़े कहलाते हैं।

किन्तु जब उन्हें बढ़ते हुए या घटते हुए क्रम में व्यवस्थित कर दिया जाता है, तो इसे सरणी (Array) कहते हैं। मान लो एक अनुसंधान कर्ता के पास एक विद्यालय में 20 विद्यार्थियों के अर्थशास्त्र में 100 में से प्राप्त अंकों की सूचना निम्न प्रकार है

**सारणी 17.5**

**20 विद्यार्थियों द्वारा अर्थशास्त्र में 100 में से प्राप्त अंक**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 40 | 50 | 35 | 40 | 48 |
| 50 | 80 | 70 | 75 | 47 |
| 45 | 75 | 90 | 60 | 57 |
| 60 | 50 | 80 | 55 | 73 |

उपर्युक्त शुद्ध आंकड़ों को बढ़ते हुए क्रम में भी व्यवस्थित किया जा सकता है जो न्यूनतम संख्या से अधिकतम संख्या की ओर जाता है जैसा कि निम्न सारिणी में दिखाया गया है।

**सारणी 17.6**

**बढ़ते हुए क्रम में व्यवस्थित (100 में से अंक)**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 35 | 47 | 50 | 60 | 75 |
| 40 | 48 | 55 | 70 | 80 |
| 40 | 50 | 57 | 73 | 80 |
| 45 | 50 | 60 | 75 | 90 |

उपर्युक्त आंकड़ों को घटते हुए क्रम में भी व्यवस्थित किया जा सकता है। अर्थात अधिकतम संख्या से न्यूनतम संख्या की ओर, जैसा निम्न सारणी में दिखाया गया है।

### सारणी 17.7

**घटते हुए क्रम में व्यवस्थित (100 में से अंक)**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 90 | 75 | 60 | 50 | 45 |
| 80 | 73 | 57 | 50 | 40 |
| 80 | 70 | 55 | 48 | 40 |
| 75 | 60 | 50 | 47 | 35 |

**विच्छिन्न श्रृंखला :** इस प्रकार की श्रृंखला को चरों को निश्चित अन्तर के साथ क्रमशः उनकी आवृतियों के अनुसार तैयार किया जाता है। आवृति से अभिप्राय किसी मद या मूल्य की पुनरावृति से है। यदि एक विशेष मूल्य (x) आंकड़ों के समूह में 4 बार आता है तो x की आवृति 4 होगी। सैद्धान्तिक रूप में, इस प्रकार की श्रृखला केवल एक विच्छिन्न चर के लिए ही तैयार की जाती है। किन्तु व्यवहार में अविच्छिन्न और विच्छिन्न चर एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं। विच्छिन्न श्रृंखला का उदाहरण निम्नलिखित है।

### सारणी 17.8

| अंक | 30 | 40 | 50 | 60 | 70 | 80 | 90 | कुल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| विद्यार्थियों की संख्या (f) | 4 | 6 | 10 | 20 | 10 | 6 | 4 | 60 |

**अविच्छिन्न श्रृंखला :** इस प्रकार की श्रृंखला, आवृति को उनके सम्बन्धित चरों के समूह के साथ रखकर तैयार की जाती है जिन्हें समूहों में वर्गीकृत किया जाता है, जैसा नीचे दिखाया गया है।

### सारणी 17.9

| x | 0-10 | 10-20 | 20-30 | 30-40 | 40-50 |
|---|---|---|---|---|---|
| f (आवृति) | 7 | 13 | 20 | 13 | 7 |

इस प्रकार की श्रृंखला को समावेशी रीति और अपवर्जी रीति का प्रयोग करके बनाया जा सकता है। उपर्युक्त उदाहरण अपवर्जी श्रृंखला का है। समावेशी श्रृंखला में समूह की ऊपरीसीमा की आवृति को उसी समूह में शामिल किया जाता है। जबकि अपवर्जी श्रृंखला में उसे आगे के समूह में शामिल कर दिया जाता है।

## पाठगत प्रश्न 17.2

1. पहचान करो कि निम्न मद चर है या गुण
   - (i) एक विद्यार्थी की ऊँचाई
   - (ii) एक लड़की का सौन्दर्य
   - (iii) एक लड़के का बौद्धिक स्तर
   - (iv) एक कार की मील-दूरी
   - (v) मिस्टर X का वजन

### 17.4.2 सारणीयन

आंकड़ों का संकलन और वर्गीकरण करने के पश्चात् उन्हें एक सारणी में पंक्तियों तथा स्तम्भों में रखना, हमेशा लाभदायक है।

एक सांख्यिकी सारणी सरल हो सकती है अथवा जटिल। यह इस बात पर निर्भर करता है कि इसमें कितने चर शामिल हैं। नीचे सरल सांख्यिकीय सारणी की आकृति दी गई है।

**सारणी 17.10**

**सारणी के भाग**

| उपशीर्षक | स्तंभ शीर्षक | | |
|---|---|---|---|
| | स्तंभ<br>I II | | स्तंभ<br>I II |
| पंक्ति<br>पंक्ति<br>पंक्ति<br>पंक्ति | | | |

पाद टिप्पणी

यह सारणी एक मार्गी, दो मार्गी अथवा कई मार्गी हो सकती है। निम्न उदाहरण एक सरल सारणी का है :

#### उदाहरण 1

2010-11 में वाणिज्य में 840 विद्यार्थी, विज्ञान में 660 विद्यार्थी और प्रबंधन में केवल 50 विद्यार्थी वाले तीन संकाय थे।

पुरुषों का प्रतिशत विभिन्न विषयों में क्रमशः 40 प्रतिशत, 25 प्रतिशत, 20 प्रतिशत है। आंकड़ों का सारणीयन निम्न प्रकार किया जा सकता है।

**सारणी 17.11**

| विभाग | विद्यार्थियों की संख्या | | योग |
|---|---|---|---|
| | पुरुष | स्त्रियाँ | |
| वाणिज्य | 336 | 504 | 840 |
| विज्ञान | 165 | 495 | 660 |
| प्रबन्धन | 100 | 400 | 500 |
| **योग** | **601** | **1399** | **2000** |

### 17.4.3 अर्थशास्त्र में चित्रों और रेखाचित्रों द्वारा आंकड़ों का प्रस्तुतीकरण

दो चरों से सम्बन्धित आंकड़े एक साधारण ग्राफ से दिखाए जा सकते हैं। यह आम तौर पर एक रेखा या वक्र के रूप में होता है। समय श्रृंखला या आवृति वितरण से सम्बन्धित आंकड़ों को एक ग्राफ में आसानी से प्रस्तुत किया जा सकता है।

चित्र के रूप में प्रस्तुतीकरण, आंकड़ों का रेखागणितीय रूपान्तर है। चित्र तथ्यों को इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं कि केवल उन्हें देखकर बहुत जटिल आंकड़ों को भी समझा जा सकता है। चित्र एक, दो या तीन बिमा वाले हो सकते हैं। केवल चित्र की ऊँचाई प्रासंगिक होती है, चौड़ाई नहीं।

यहाँ हम केवल एक बिमा चित्रों का वर्णन करेंगे।

**एक बिमा चित्र :** एक बिमा चित्रों को दण्ड चित्र भी कहते हैं जिनका व्यवहार में अधिकतर प्रयोग किया जाता है। दण्ड चित्र कई प्रकार के होते हैं किन्तु यहाँ हम केवल सरल दण्ड चित्र के विषय में अध्ययन करेंगे।

**सरल दण्ड चित्र :** इन्हें प्रस्तुत करना सरल है किन्तु इनसे केवल एक प्रकार के चरों को प्रस्तुत किया जा सकता है। सरल दण्ड को क्षैतिज आधार पर या उर्ध्वाधर आधार पर बनाया जा सकता है किन्तु क्षैतिज आधार पर उर्ध्वाधर दण्ड का व्यवहार में अधिक प्रयोग किया जाता है। दण्ड एक समान मोटाई की होनी चाहिए और वे समान दूरी पर होनी चाहिएं।

आइये, हम इसकी व्याख्या करते हैं कि दिए गए आंकड़ों को सरल दण्ड चित्र की सहायता से कैसे प्रस्तुत किया जा सकता है? निम्न सारणी हमें विभिन्न वर्षो के जनगणना सांख्यिकी के अनुसार भारत में जन्म दर के आंकड़े उपलब्ध कराती है। यह सूचना निम्न सरल दण्ड चित्र में प्रस्तुत की गई है।

**सारणी 17.12**

| वर्ष | 1931-40 | 1941-50 | 1951-60 | 1961-70 | 1971-80 | 1981-90 |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जन्म दर | 45 | 35 | 30 | 28 | 24 | 20 |

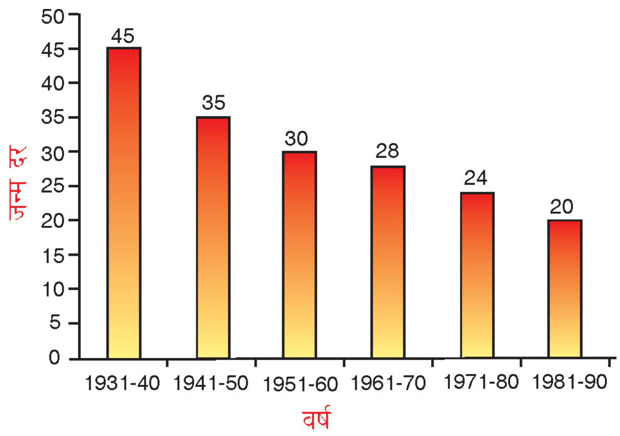


चित्र 17.1 भारत में जन्म दर

आंकड़े ग्राफ द्वारा भी प्रस्तुत किए जा सकते हैं। अर्थशास्त्र और सांख्यिकी में मूल्य, समय, सम्बन्ध, आवृति आदि में हो सकते हैं। समय श्रृंखला ग्राफ में, X-अक्ष पर समय तथा Y-अक्ष पर चर प्रस्तुत किए जाते हैं। प्रत्येक अक्ष के लिए एक सुविधाजनक पैमाना निश्चित करना आवश्यक है जिससे कि दिए गये पूरे आंकड़ों को स्थान दिया जा सके। दोनों अक्षों के पैमाने भिन्न हो सकते हैं।

### उदाहरण 2

नीचे एक विद्यालय में 5 वर्षों के लिए बच्चों की संख्या दी गई है :

**सारणी 17.13**

| वर्ष | 2007 | 2008 | 2009 | 2010 | 2011 |
|---|---|---|---|---|---|
| विद्यार्थियों की संख्या | 1000 | 2500 | 3800 | 4500 | 5200 |

इन आंकड़ों को हम एक ग्राफ के रूप में भी प्रस्तुत कर सकते हैं।

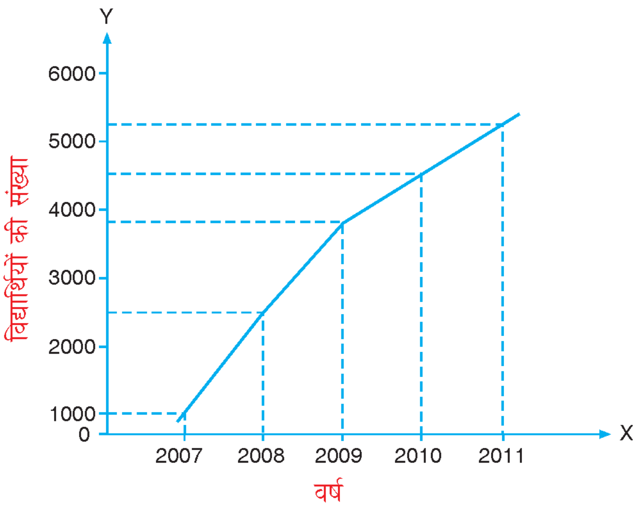


चित्र 17.2 विद्यार्थियों की भरती (2007-2011)

## आपने क्या सीखा

- आंकड़ों से अभिप्राय, आय, जनसंख्या, कीमत आदि के विषय में किसी संख्यात्मक सूचना से है।
- सांख्यिकी/आंकड़े, तथ्यों के समूह हैं जो एक सीमा तक बहुत से कारणों से प्रभावित व संख्यात्मक रूप में व्यक्त होते हैं। उनमें परिशुद्धता का एक उचित स्तर होता है, वे पूर्व निर्धारित उद्देश्य के लिए संकलित किये जाते हैं और एक दूसरे से सम्बंधित होते हैं।

- आंकड़े, आर्थिक नियोजन, राष्ट्रीय आय के निर्धारण, राजकोषीय और मौद्रिक नीतियाँ बनाने और किसी देश के केन्द्रीय बैंक की सहायता करने में महत्वपूर्ण हैं।
- आंकड़े जो मौलिक रूप में, पहली बार, सर्वेक्षण के लिये संकलित किए जाते हैं, प्राथमिक आंकड़े कहलाते हैं।
- जब हम उन आंकड़ों का प्रयोग करते हैं जिनका पहले ही दूसरों के द्वारा संकलन किया जा चुका है, तो वे आंकड़े द्वितीयक आंकड़े कहलाते हैं।
- प्राथमिक आंकड़े, (i) प्रत्यक्ष व्यक्तिगत अनुसंधान (ii) अप्रत्यक्ष अनुसंधान (iii) संवाददाताओं द्वारा (iv) डाक प्रश्नावली द्वारा (v) अनुसूची के द्वारा संकलित किए जा सकते हैं।
- द्वितीयक आंकड़ों के स्रोत, प्रकाशित और अप्रकाशित आंकड़े हो सकते हैं।
- आंकड़ों को व्यक्तिगत श्रृंखला, विच्छिन्न श्रृंखला और अविच्छिन्न श्रृंखलाओं, ग्राफ और चित्रों के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।
- आंकड़ों को सरल दण्ड चित्र के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

## पाठान्त प्रश्न

1. आंकड़ों की परिभाषा दीजिए। प्राथमिक आंकड़े कैसे संकलित किए जाते हैं?
2. प्राथमिक और द्वितीयक आंकड़ों में क्या अन्तर है?
3. चर और गुण में अन्तर कीजिए।
4. वर्गीकरण की व्याख्या कीजिए।
5. आंकड़ों के प्रस्तुतीकरण की निम्न विधियों की व्याख्या कीजिए।

   (अ) सारणीयन (ब) चित्र
6. निम्न आंकड़ों की सहायता से, एक सरल दण्ड चित्र बनाइये।

| राज्य | प्रबन्धन कालेजों की संख्या |
|---|---|
| राजस्थान | 200 |
| पंजाव | 400 |
| गुजरात | 150 |

## पाठगत प्रश्नों के उत्तर

### पाठगत प्रश्न 17.1

(i) नहीं (ii) नहीं (iii) नहीं (iv) हाँ

### पाठगत प्रश्न 17.2

(i) चर (ii) गुण (iii) गुण (iv) चर (v) चर

# 18

# आंकड़ों का विश्लेषण

आर्थिक आंकड़ों का अध्ययन प्रायः सांख्यिकी विधियों की सहायता से किया जाता है। सांख्यिकी विज्ञान, संख्यात्मक तथ्यों के संकलन, वर्गीकरण, सारणीयन की एक विधि है जो एक घटना की व्याख्या करने, वर्णन करने और तुलना करने में सहायता करती है।

स्पष्ट रूप से, एकवचन रूप में सांख्यिकी एक वैज्ञानिक विषय है जो वर्णनात्मक भी है और निर्णायक भी। वर्णनात्मक सांख्यिकी में हम वैज्ञानिक अन्वेषण के संपूर्ण सप्तक को शामिल करते हैं। सभी सांख्यिकीय जांच में पहला चरण, विभिन्न विधियों से तथ्यों को एकत्र करना है। उत्तरदाताओं से संकलित तथ्यों का पहले संपादन किया जाता है। ये तथ्य, तब सारणी, ग्राफ, चित्रों की सहायता से प्रस्तुत किए जाते हैं। परिमाणात्मक सूचना का सांख्यिकी रूप में विश्लेषण किया जाता है। प्रतिनिधि चित्रों की उस संदर्भ में व्याख्या की जाती है जिसमें उनका अध्ययन किया गया है।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप समझ सकेंगे :

- केन्द्रीय प्रवृत्ति शब्द का अर्थ;
- औसत की अवधारणा का दैनिक जीवन में प्रयोग करना;
- विभिन्न श्रृंखलाओं में समान्तर माध्य की गणना करना;
- समान्तर माध्य की गणना में वैकल्पिक विधियों का प्रयोग।

## 18.1 केन्द्रीय प्रवृत्ति का अर्थ

आंकड़ों के संकलन, व्यवस्थितीकरण और प्रस्तुतीकरण के पश्चात् उनके विश्लेषण की आवश्यकता होती है। आंकड़ों का विश्लेषण एक ऐसी विधि है जिसके माध्यम से संख्यात्मक आंकड़ों से महत्वपूर्ण तथ्य निकाले जाते हैं। सांख्यिकीय विश्लेषण का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य एक अकेला मूल्य प्राप्त करना है जो सम्पूर्ण आंकड़ों की विशेषताओं का वर्णन करे।

सांख्यिकी में हम कुछ समस्याओं के विषय में अध्ययन करते हैं जो अधिकांश अनेक कारणों से प्रभावित होती हैं। हम जो भी निष्कर्ष निकालते हैं वह बहुत से कारणों के संयुक्त प्रभावों पर आधारित होते हैं और ऐसे कारणों का अलग-अलग प्रभाव निकालना बहुत कठिन है। तथापि **आंकड़ों के विश्लेषण में पहला चरण शुद्ध आंकड़ों से प्रतिनिधि मूल्य ज्ञात करना है। इसे, औसत या केन्द्रीय प्रवृति का माप कहा जाता है।**

शुद्ध आंकड़े पहले संपादित किए जाते हैं ओर फिर आवृति वितरण में परिवर्तित किए जाते हैं। वर्णनात्मक सांख्यिकी का एक मौलिक उद्देश्य आंकड़ों में सबसे अधिक प्रतिनिधित्व करने वाली मूल्य संख्या ज्ञात करना है। यह प्रतिनिधि संख्या औसत या समान्तर माध्य कहलाती है। यह मूल्य या अकेली संख्या है, जो कि सबका प्रतिरूप है। इसे केन्द्रीय प्रवृति का माप भी कहा जाता है। इस प्रकार औसत वर्णनात्मक सांख्यिकी जो प्रवृति का माप करती है, केन्द्रीय प्रवृति कहलाती है। यह सिद्ध हो चुका है कि आंकड़ों की एक विशेष दिशा की ओर जाने की प्रवृति होती है।

**आंकड़ों का केन्द्रीय स्थापन या मूल्य की ओर एकत्र होने की प्रवृति केन्द्रीय प्रवृति कहलाती है।** आंकड़ों के समूह के किसी औसत मूल्य की गणना करने का उद्देश्य एक अकेला मूल्य प्राप्त करना है जो सभी मदों का प्रतिनिधित्व करता है और जिसे मस्तिष्क आसानी से और शीघ्र समझ सकता है। अकेला मूल्य वह बिन्दु है जिसके चारों ओर व्यक्तिगत मदें एकत्रित होती हैं।

हम अपनी दैनिक चर्चा में प्रायः औसत शब्द का प्रयोग करते हैं। यदि कोई दावा करता है कि उसके 6 विषयों में औसत अंक 100 मे से 76 हैं, यह दर्शाता है, कि उसने कुल 456 अर्थात $76 \times 6$ अंक प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की है। उदाहरण के लिए, यदि किसी श्रृंखला में 5 पारियों में सचिन ने 59, 78, 100, 50 और 63 रन बनाए। उसने कुल 350 रन बनाए। उसका रनों का औसत $350 \div 5 = 70$ है। यह महत्वपूर्ण है कि सचिन ने किसी भी पारी में जिसमें वह खेला, ठीक 70 रन नहीं बनाए। लेकिन औसत के रूपमें यह संख्या पांच पारियों में उसके द्वारा बनाए गये रनों का एक अच्छा प्रतिनिधित्व करती है। अवलोकनों के किसी समूह का एक औसत मूल्य निकालने का उद्देश्य एक अकेला मूल्य प्राप्त करना है जो सभी मूल्यों का प्रतिनिधित्व करता है और जिसे मस्तिष्क आसानी से तथा शीध्रता से समझ सकता है।

## 18.2 औसतों का उद्देश्य और कार्य

- संकलित सूचना और शुद्ध आंकड़ों को संक्षिप्त करना
- दो या अधिक समूहों में तुलना को सुगम बनाना
- शुद्ध आंकड़ों से एक प्रतिनिधि मूल्य प्रस्तुत करना
- भावी नीति और कार्यक्रमों को सुगम बनाना।

## 18.3 केन्द्रीय प्रवृति के माप के रूप में समान्तर माध्य

केन्द्रीय प्रवृतियों के विभिन्न माप हैं। समान्तर माध्य उनमें से एक हैं। समान्तर माध्य को सभी मदों के योग को मदों की संख्या से भाग देकर, प्राप्त किया जा सकता है।

गणितीय रूप में $$\bar{X} = \frac{\Sigma x}{N}$$

जहां, $x$ = मद

$\Sigma x$ = मदों का योग

$N$ = मदों की संख्या

$\bar{X}$ = समान्तर माध्य

साधारण भाषा में समान्तर माध्य औसत के नाम से लोकप्रिय है। इसकी गणना करनी बहुत आसान है। मान लो एक कक्षा में 10 विद्यार्थी हैं। उन्होंने अर्थशास्त्र में 10 में से निम्न अंक प्राप्त किए।

| विद्यार्थी | A | B | C | D | E | F | G | H | I | J |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अंक (x) | 2 | 7 | 10 | 8 | 6 | 3 | 5 | 4 | 5 | 0 |

यहां ‘x’ अर्थशास्त्र में अंक हैं। हम इनके योग से आरम्भ करते हैं 2 + 7 + 10 + 8 + 6 + 3 + 5 + 4 + 5 + 0 = 50, स्पष्ट है कि 10 विद्यार्थियों ने कुल मिलकर 50 अंक ($\Sigma x$) प्राप्त किए। विद्यार्थियों की संख्या (N) 10 है। इस प्रकार 10 विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त अंकों का औसत 50 ÷ 10 = 5 है। दूसरे शब्दों में,

$$\bar{x} = \frac{\Sigma x}{N} = \frac{50}{10} = 5$$

## पाठगत प्रश्न 18.1

1. केन्द्रीय प्रवृति का एक उदाहरण दो।
2. समान्तर माध्य की गणना का मौलिक सूत्र दो।
3. यदि मदों का योग 40 है और माध्य 4 है तो मदों की संख्या (N) ज्ञात करो।
4. राजा का चीनी का साप्ताहिक उपभोग 35 कि.ग्रा. है तो उसका दैनिक औसत उपभोग क्या है?
5. 10 विद्यार्थियों के औसत अंक 50 हैं। यदि एक और विद्यार्थी समूह में शामिल हो जाता है जिसने 5 अंक प्राप्त किए, तो नया औसत क्या होगा?

## 18.4 विभिन्न प्रकार की श्रृंखलाओं में समान्तर माध्य की गणना

जैसा कि पाठ 17 में दिया गया है, आंकड़े विभिन्न प्रकार की श्रृंखलाओं में व्यवस्थित किए जा सकते हैं। वे हैं - व्यक्तिगत श्रृंखला, विच्छिन्न श्रृंखला तथा अविच्छिन्न श्रृंखला। विभिन्न श्रृंखलाओं में समान्तर माध्य की गणना नीचे दी गई है।

**(अ) व्यक्तिगत श्रृंखला :** समान्तर माध्य या माध्य की गणना का उपर्युक्त सूत्र सभी दशाओं में लागू होता है। परन्तु जटिल आंकड़ों के लिए यदि अप्रत्यक्ष विधि का प्रयोग करना है तो उपर्युक्त सूत्र निम्न प्रकार से संशोधित किया जा सकता है।

$$\overline{x} = A + \frac{\Sigma dx}{N}$$

यहां A काल्पनिक माध्य है। dx काल्पनिक माध्य x से विचलन तथा N मदों की संख्या है।

**उदाहरण 1.** 10 विद्यार्थियों द्वारा 30 अंकों में से निम्न प्राप्तांकों का समान्तर माध्य ज्ञात कीजिये।

x : 4, 3, 8, 9, 12, 10, 25, 10, 21 और 20

x = अंक

**हल**

**(अ) प्रत्यक्ष विधि**

$\Sigma x$: 4 + 3 + 8 + 9 + 12 + 10 + 25 + 10 + 21 + 20 = 122

समान्तर माध्य $\overline{x} = \frac{\Sigma x}{N} = \frac{122}{10} = 12.2$

**(ब) अप्रत्यक्ष विधि या लघु विधि**

| x (अंक) | dx = x–A<br>A = 12, x –12 |
|---|---|
| 4 | –8 |
| 3 | –9 |
| 8 | –4 |
| 9 | –3 |
| 12 | 0 |
| 10 | –2 |
| 25 | +13 |
| 10 | –2 |
| 21 | +9 |
| 20 | +9 |
| **Σx = 122** | **Σdx = 2** |

हम काल्पनिक माध्य (A) 12 मान लेते हैं

$$\overline{x} = A + \frac{\Sigma dx}{N} = 12 + \frac{2}{10}$$

$$\overline{x} = 12 + 0.2 = 12.2$$

**(ब) विच्छिन्न श्रृंखला :** विच्छिन्न श्रृंखला में समान्तर माध्य को ज्ञात करने के लिए हम निम्न सूत्र का प्रयोग कर सकते हैं।

### (अ) प्रत्यक्ष विधि

$$\bar{x} = \frac{\Sigma fdx}{N}$$

जहां N = आवृतियों का योग

### (ब) अप्रत्यक्ष विधि या लघु विधि

$$\bar{x} = A + \frac{\Sigma fdx}{N}$$

**उदाहरण 2.** नीचे दिए गए आंकड़ों को सहायता से समान्तर माध्य की गणना करो।

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प्रति परिवार बच्चों की संख्या | 0 | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 |
| परिवारों की संख्या | 13 | 17 | 20 | 40 | 20 | 17 | 13 |

**हल**

(अ) प्रत्यक्ष विधि

x = बच्चों की संख्या

f = परिवारों की संख्या

| x | f | fx |
|---|---|---|
| 0 | 13 | 0 |
| 1 | 17 | 17 |
| 2 | 20 | 40 |
| 3 | 40 | 120 |
| 4 | 20 | 80 |
| 5 | 17 | 85 |
| 6 | 13 | 78 |
| | **140** | **420** |

$$\bar{x} = \frac{\Sigma fx}{N} = \frac{420}{140} = 3$$

इस प्रकार औसत 3 है जो यह दर्शाता है औसतन प्रति परिवार 3 बच्चे हैं।

### (ब) अप्रत्यक्ष विधि या लघु विधि

| x | f | dx = (x – A) A = 2 | fdx |
|---|---|---|---|
| 0 | 13 | –2 | –26 |
| 1 | 17 | –1 | –17 |
| 2 | 20 | 0 | 0 |
| 3 | 40 | +1 | 40 |
| 4 | 20 | +2 | 40 |
| 5 | 17 | +3 | 51 |
| 6 | 13 | +4 | 52 |
| | **140** | | **+183** |
| | | | –43 |
| | | | **140** |

$$\bar{x} = A + \frac{\Sigma fdx}{N} = 2 + \frac{140}{140} = 3$$

**(स) अविच्छिन्न श्रृंखला :** अविच्छिन्न श्रृंखला में समान्तर माध्य को ज्ञात करने के लिए निम्न तीन विधियों का प्रयोग किया जाता है

### (अ) प्रत्यक्ष विधि

$$\bar{x} = \frac{\Sigma fdx}{N}$$

### (ब) बिना पद विचलन के लघु विधि

x = किसी वर्ग का मध्य मूल्य

$$\bar{x} = A + \frac{\Sigma fdx}{N}$$

### (स) पद विचलन के साथ लघु विधि

$$\bar{x} = A + \frac{\Sigma fdx'}{N} \times c$$

यहां c = समापवर्तक

अविच्छिन्न श्रृंखला में समान्तर माध्य की गणना की नीचे एक उदाहरण की सहायता से विस्तार से व्याख्या की गई है।

**उदाहरण 3.** एक विद्यालय में 300 विद्यार्थियों द्वारा प्राप्तांक

| x (अंक) | 0-10 | 10-20 | 20-30 | 30-40 | 40-50 | 50-60 | 60-70 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| f (विद्यार्थियों की संख्या) | 23 | 27 | 40 | 120 | 40 | 27 | 23 |

**हलः** पहले प्रत्येक वर्ग का मध्य मूल्य ज्ञात करना है। इसके लिये प्रत्येक वर्ग की ऊपरी सीमा और निम्न सीमा के योग को 2 से भाग दिया जाता है। अर्थात

$$x = \frac{L_1 + L_2}{2} : \frac{0+10}{2}, \frac{10+20}{2}, \frac{20+30}{2}, \frac{30+40}{2}, \frac{40+50}{2},$$

$$\frac{50+60}{2}, \frac{60+70}{2}$$

$$= 5, 15, 25, 35, 45, 55, 65$$

यहां $L_1$ प्रत्येक वर्ग की निम्न सीमा तथा $L_2$ ऊपरी सीमा है

## (अ) प्रत्यक्ष विधि

| x | $x = \frac{l_1 + l_2}{2}$ | f (आवृति) | fx |
|---|---|---|---|
| 0-10 | 5 | 23 | 115 |
| 10-20 | 15 | 27 | 405 |
| 20-30 | 25 | 40 | 1000 |
| 30-40 | 35 | 120 | 4200 |
| 40-50 | 45 | 40 | 1800 |
| 50-60 | 55 | 27 | 1485 |
| 60-70 | 65 | 23 | 1495 |
| | | **300** | **10500** |

$$\bar{x} = \frac{\Sigma fx}{N} = \frac{10500}{300} = 35$$

## (ब) लघु विधि/अप्रत्यक्ष विधि

### (i) बिना पद विचलन के

| x | f | मध्य मूल्य (x) | dx(x–A) A = 25 | fdx |
|---|---|---|---|---|
| 0-10 | 23 | 5 | –20 | –460 |
| 10-20 | 27 | 15 | –10 | –270 |
| 20-30 | 40 | 25 | 0 | 0 |
| 30-40 | 120 | 35 | +10 | 1200 |
| 40-50 | 40 | 45 | +20 | 800 |
| 50-60 | 27 | 55 | +30 | 810 |
| 60-70 | 23 | 65 | +40 | 920 |
| | **300** | | | **3000** |

$$\bar{x} = A + \frac{\Sigma fdx}{N} = 25 + \frac{3000}{300} = 25 + 10 = 35$$

## (स) लघु विधि पद विचलन के साथ

| x | x (मध्य मूल्य) | f (आवृत्ति) | dx(x–A)A = 25 | $\mathbf{dx' = \frac{dx}{10}, c = 10}$ | $fdx^1$ |
|---|---|---|---|---|---|
| 0-10 | 5 | 23 | –20 | –2 | –46 |
| 10-20 | 15 | 27 | –10 | –1 | –27 |
| 20-30 | 25 | 40 | 0 | 0 | 0 |
| 30-40 | 35 | 120 | +10 | 1 | 120 |
| 40-50 | 45 | 40 | +20 | +2 | +80 |
| 50-60 | 55 | 27 | +30 | 3 | 81 |
| 60-70 | 65 | 23 | +40 | 4 | 92 |
| | | **300** | | | **300** |

$$\bar{x} = A + \frac{\Sigma fdx'}{N} \times c = 25 + \frac{300}{300} \times 10 = 35$$

## 18.6 समान्तर माध्य के प्रयोग में सावधानियाँ

समान्तर माध्य का प्रयोग करते समय हमें दो महत्वपूर्ण सावधानियाँ रखनी चाहिए।

1. यह बात महत्वपूर्ण है कि समान्तर माध्य एक काल्पनिक मूल्य है जिसको वास्तविक तथ्यों द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता। उदाहरण के लिए, यदि कुल मिलाकर 10 परिवारों में कुल 27 बच्चे हैं। प्रति परिवार औसत बच्चे $(27 \div 10) = 2.7$ होंगे। यह अवास्तविक है। प्रति परिवार 2 या 3 बच्चे हो सकते है 2.7 नहीं।

2. समान्तर माध्य गुणात्मक आंकड़े के रूप में नहीं हो सकता जैसे इमानदारी, बहादुरी, निष्ठा और सौन्दर्य आदि।

## पाठगत प्रश्न 18.2

1. निम्न आंकड़ों से समान्तर माध्य ज्ञात करोः

   4, 6, 3, 7, 8, 2 और 5

2. निम्न आंकड़ों से समान्तर माध्य ज्ञात कीजिए

| अंक (5 में से) | 0 | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 |
|---|---|---|---|---|---|---|
| विद्यार्थियों की संख्या | 3 | 7 | 8 | 5 | 3 | 4 |

3. यदि काल्पनिक माध्य से लिए गए 10 के समूह के विचलनों का योग 50 है और काल्पनिक माध्य 20 है तो वास्तविक समान्तर माध्य क्या होगा?

## आपने क्या सीखा

- आंकड़ों की केन्द्रीय स्थापन या मूल्य के पास एकत्र होने की प्रवृति केन्द्रीय प्रवृति कहलाती है।
- औसत वह मूल्य है जो आंकड़ों के समूह का प्रतिनिधित्व करता है।
- समान्तर माध्य एक गणितीय औसत है और इसका साधारणतया केन्द्रीय प्रवृतियों के माप के रूप में प्रयोग किया जाता है।
- समान्तर माध्य को सभी मदों के योग को, मदों की संख्या से भाग देकर ज्ञात किया जाता है।

गणितीय रूप में $\bar{X} = \frac{\Sigma x}{N}$

जहां, x = मद

$\Sigma x$ = मदों का योग

N = मदों की संख्या और

$\bar{X}$ = समान्तर माध्य

- समान्तर माध्य की व्यक्तिगत श्रृंखला, विच्छिन्न और अविच्छिन्न श्रृंखला में विभिन्न सूत्रों द्वारा गणना की जा सकती है।

## पाठान्त प्रश्न

1. आंकड़ों के विश्लेषण से आप क्या समझते हैं?
2. वर्णनात्मक विश्लेषण से क्या अभिप्राय है?
3. केन्द्रीय प्रवृति की अवधारणा की व्याख्या कीजिए।
4. समान्तर माध्य से आपका क्या अभिप्राय है? इसकी गणना कैसे की जाती है?
5. समान्तर माध्य की परिभाषा दीजिए। यह क्या दर्शाता है?
6. केन्द्रीय प्रवृतियों के माप से आपका क्या अभिप्राय है? समान्तर माध्य इसे किस प्रकार प्रतिबिम्बित करता है?
7. निम्न आंकड़ों से माध्य ज्ञात कीजिए: 7, 4, 17, 19, 11, 16, 15, 14, 9 और 11
8. ऊपर के आंकड़ों के समूह में निम्न मदों को जोड़ दिया जाय तो संशोधित माध्य क्या होगा? 18, 14, 14, 8, 10 और 21
9. नीचे दिए गए आंकड़ों की सहायता से माध्य की गणना कीजिए।

| x | f |
|---|---|
| 0 | 1 |
| 1 | 13 |
| 2 | 20 |
| 3 | 40 |
| 4 | 40 |
| 5 | 13 |
| 6 | 7 |

10. नीचे दिए गए आंकड़ों से समान्तर माध्य की गणना कीजिए।

| x | f |
|---|---|
| 0-10 | 5 |
| 10-20 | 15 |
| 20-30 | 20 |
| 30-40 | 25 |
| 40-50 | 20 |
| 50-60 | 15 |
| 60-70 | 5 |

11. नीचे दिए गए आंकड़ों से माध्य ज्ञात करोः

| x | f |
|---|---|
| 20-40 | 2 |
| 40-60 | 7 |
| 60-80 | 9 |
| 80-100 | 24 |
| 100-120 | 9 |
| 120-140 | 7 |
| 140-160 | 2 |

## पाठगत प्रश्नों के उत्तर

### पाठगत प्रश्न 18.1

1. 1
2. $\overline{x} = \frac{\Sigma x}{N}$
3. 45.9
4. 7 कि.ग्रा.
5. 5

### पाठगत प्रश्न 18.2

1. 5
2. 2.33
3. 18
4. 25

## मॉड्यूल 7 : भारतीय अर्थव्यवस्था

19. भारतीय अर्थव्यवस्था - एक विहंगम दृष्टि
20. भारतीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्रक पहलू
21. भारतीय अर्थव्यवस्था के सम्मुख चुनौतियां
22. भारतीय अर्थव्यवस्था - विश्व के संदर्भ में

# 19

# भारतीय अर्थव्यवस्था - एक विहंगम दृष्टि

भारत के नागरिक होने के नाते, आप सबके लिए, भारतीय अर्थव्यवस्था की जानकारी बहुत महत्वपूर्ण है। जैसा कि आप इतिहास से भी जानते हैं कि भारत 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र राष्ट्र हुआ। इससे पहले भारतीय उपमहाद्वीप लगभग 2 शताब्दियों तक अंग्रेजों के शासन में रहा जो अर्थव्यवस्था के सभी पहलूओं जैसे राजनीति, सभ्यता, सामाजिक रीति, अर्थव्यवस्था आदि को प्रभावित करने के लिए काफी लम्बी अवधि है। यहाँ हम केवल भारत की अर्थव्यवस्था के अध्ययन पर ही ध्यान केन्द्रित करेंगे।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात आप समझ सकेंगे:

- अंग्रेजों के 200 वर्षों के शासन काल के परिणामस्वरूप स्वतंत्रता के समय भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थिति;
- स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय अर्थव्यवस्था की विशेषताओं में परिवर्तन;
- आर्थिक सुधारों को।

## 19.1 स्वतन्त्रता के समय भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थिति

भारत को अर्थव्यवस्था अंग्रेजों से उत्तराधिकार में मिली जो देश पर अपने लाभ के लिए शासन कर रहे थे। अंग्रेजों को कभी भी भारत और इसके नागरिकों के विकास में कोई रूचि नहीं थी। उनका उद्देश्य, भारत के संसाधनों का शोषण करना और जितना अधिक संभव हो सके उन्हें इंगलैंड को ले जाना था। यही कारण है कि रेलवे लाइने बिछाई गईं जिससे कि वस्तुओं को इंगलैंड को जहाजों से ले जाने के लिए बन्दरगाहों तक पहुंचाया जा सके। यद्यपि रेलवे का बनाना एक सकारात्मक योगदान था, इसका प्रयोग, प्रमुख रूप से अंग्रेजों के हितों के लिए किया गया।

अंगेजों के शासनकाल के पश्चात कुछ ध्यान देने योग्य आर्थिक विशेषताएं निम्न प्रकार थी :

(i) हस्तकला उद्योग का पतन

(ii) नकदी फसलों का उत्पादन

(iii) अकाल और भोजन की कमी

(iv) कृषि में मध्यस्थों की वृद्धि

आइये, इन सभी बिन्दुओं की हम एक-एक करके चर्चा करें।

### 19.1.1 हस्तकला उद्योग का पतन

अंग्रजों के भारत आने से पहले, राजा-महाराजा इस देश में राज्य कर रहे थे। वे स्थानीय दस्तकारों, बढ़ई कलाकारों, जुलाहों आदि जो सुन्दर पेन्टिंग बनाने में, दीवारों को सजाने में, कपड़ों के डिजाइन बनाने में,आभूषण बनाने, दर्जी का काम, फर्नीचर बनाने, खिलौने बनाने और पत्थर व धातु की मूर्तियाँ बनाने आदि में निपुण थे, उनके हितों का ध्यान रखते थे। ये लोग इन वस्तुओं के बनाने में अपने श्रम और स्थानीय कौशल का प्रयोग करते थे। ऐसी वस्तुओं को बनाने में बहुत अधिक समय और ध्यान के केन्द्रीयकरण की आवश्यकता थी। राजाओं के दरबार, देश के विभिन्न भागों में विभिन्न प्रकार की सामग्रियों से निर्मित विभिन्न प्रकार की सजावट की वस्तुओं से भरे हुए थे। किन्तु जब अंग्रेज आए तो उन्होंने राजाओं को हराया और उनके राज्यों को जीत लिया। नगर बर्बाद कर दिए और इसके साथ ही हस्तकला उद्योगों को समाप्ति का सामना करना पड़ा।

भारतीय हस्तकला उद्योग का एक प्रमुख भाग कपड़े का हस्तकला उद्योग था। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य के बाद के भाग में इंगलैंड में उत्पादन प्रौद्योगिकी में परिवर्तन अनुभव किया जा रहा था। वस्तुओं के उत्पादन के लिए मानवीय श्रम का स्थान मशीनें ले रही थीं। वस्तुओं का बड़े पैमाने पर उत्पादन करना आसान हो रहा था। और अधिक फैक्ट्रियाँ आरम्भ हो रही थीं। अंग्रेज अपनी मशीनों द्वारा निर्मित कपड़ों को अधिक मात्रा में लाकर भारत में कम कीमतों पर बेच सकते थे। अंग्रेज सरकार ने केवल अंग्रेजी उत्पादकों की सहायता करने के लिए भी नीतियाँ बनाईं। इसलिए भारतीय हस्तकला उद्योग को हानि उठानी पड़ी।

## पाठगत प्रश्न 19.1

1. भारत में कपड़े के हस्तकला उद्योग की उत्पादन विधि की अंग्रेजों की उत्पादन विधि से तुलना कीजिए।

## आओ कुछ करें

एक संग्रहालय/एतिहासिक स्थल का निरीक्षण करो और उस समय की दस्तकारी का अध्ययन करो।

### 19.1.2 नकदी फसलों का उत्पादन

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, इंगलैंड में औद्यीकरण से सम्बन्धित परिवर्तन हो रहा था। इसलिए वहां फैक्ट्रियों में वस्तुओं का उत्पादन करने के लिए कच्चे माल की आवश्यकता थी। कपड़ा बनाने के लिए कपास की आवश्यकता थी। इसी प्रकार कपड़ों पर छपाई के लिए नील की बहुत अधिक मांग थी। जूट, गन्ना, मूंगफली की भी इंगलैंड में बहुत अधिक मांग थी क्योंकि इन सबकी वहां फैक्ट्रियों में अति आवश्यकता थी। क्योंकि इन सबकी खेती भारत में होती थी, अंग्रेजों ने भारत के गरीब किसानों को इन फसलों को उगाने के लिए मुद्रा का लालच दिया जिससे कि वे उन्हें इंगलैंड भेज सकें। ये फसलें वस्तुओं के उत्पादन में कच्चे माल के रूप में प्रयोग की जाती हैं इसलिए ये नकदी फसलें कहलाती हैं।

मुद्रा के लालच में, भारतीय किसान नकदी फसलों का उत्पादन अंग्रेजों के लिए करते थे, जो उन्हें इंगलैंड में फैक्ट्रियों के लिए पहुंचाते थे। फैक्ट्रियों द्वारा निर्मित वस्तुओं को भारतीय बाजार में बिक्री के लिए भेजा जाता था। अब, अंग्रेज इन वस्तुओं को भारत के लोगों को बेचते थे और लाभ कमाते थे।

### 19.1.3 अकाल और भोजन की कमी

अंग्रेजी शासन का भारत में सबसे बुरा प्रभाव बार-बार अकाल पड़ना था। अकाल एक ऐसी स्थिति है जिसमें बहुत से लोगों को खाने के लिए भोजन नहीं मिलता और वे भूख और बीमारियों से मर जाते हैं। सम्पूर्ण अंग्रेजी शासन काल में लगभग 33 बार अकाल पड़ा। स्वतन्त्रता के केवल चार वर्ष पहले 1943 में, सबसे अधिक विनाशकारी अकाल बंगाल का अकाल था। इस बार, भोजन की कमी के कारण 15 लाख से भी अधिक लोग मारे गए। अकाल पड़ने के कुछ कारण निम्नलिखित थे।

(i) वर्षा के अभाव के कारण खाद्यान्नों के उत्पादन पर बुरा प्रभाव पड़ा क्योंकि सिंचाई की सुविधाएं उपलब्ध नहीं थी। कृषि वर्षा पर निर्भर करती थी।

(ii) अंग्रेज सरकार खाद्यन्नों का निर्यात अपने देश इंगलैंड तथा दूसरे स्थानों को करती रही जबकि खाद्यान्नों की अपने देश में भी आवश्यकता थी। अंग्रेज सरकार की खाद्यान्नों का दूसरे देशों को निर्यात कर केवल अपने लिए आय कमाने में रूचि थी। वह खाद्यान्नों का प्रयोग अपने सिपाहियों के भोजन के लिए भी करती थी जो विश्व के विभिन्न भागों में युद्ध लड़ रहे थे। आप जानते हो कि अंग्रेजों ने न केवल भारत को बल्कि विश्व के अन्य देशों को भी अधिकार में ले लिया था। इसलिए वे भारत से उन देशों को खाद्यान्न भेज रहे थे जहां उनके सैनिक भूमि क्षेत्र पर कब्जा करने के लिए लड़ रहे थे।

(iii) गरीब लोगों के पास बाजार से खाद्यान्न खरीदने के लिए काफी मुद्रा नहीं थी।

(iv) जैसा कि ऊपर कहा गया है भारतीय किसानों को अपने खेतों में नकदी फसलों का उत्पादन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था। इससे, खाद्यान्नों के उत्पादन में गिरावट आई क्योंकि उनकी खेती करने के लिए कम क्षेत्र उपलब्ध था।

## पाठगत प्रश्न 19.2

1. अकाल का अर्थ बताओ।
2. अंग्रेज खाद्यान्नों का निर्यात क्यों कर रहे थे?

## आओ कुछ करें

नकदी फसलों और खाद्यान्नों की एक सूची तैयार करो।

### 19.1.4 कृषि में मध्यस्थ

अंग्रेजों के शासन काल में, भारत के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि था। 70 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या कृषि पर निर्भर थी। इसलिए यह सरकार की आय का प्रमुख साधन था। अंग्रेजों ने दो प्रकार का भूमि लगान प्रारम्भ किया जैसेः

(i) **स्थायी बन्दोबस्त :** इसके अन्दर भूमि लगान की एकत्र की जाने वाली राशि स्थायी रूप से निश्चित थी।

(ii) **अस्थायी बन्दोवस्त :** इसमें 25 से 30 वर्ष की अवधि के पश्चात भूमि का लगान परिवर्तित कर दिया जाता था।

लगान एकत्र करने के लिए अंग्रेज सरकार ने भारत के पूर्वी भाग में **जमींदार,** पश्चिमी भाग में **महलवारी** और दक्षिणी भारत में **रैयतवारी** नियुक्त किए। ये लोग मध्यस्थ कहलाते थे क्योंकि ये जनसाधारण और अंग्रेज सरकार के बीच कार्य किया करते थे। उनका कार्य, लगान, कर आदि के रूप में गांव वालों, किसानों तथा अन्य परिवारों से आय एकत्र करना और उस आय को सरकार के पास जमा करना था। कुछ वर्षों में, ये लोग जनसाधारण के शोषण कर्ता बन गए क्योंकि वे निर्दयता के साथ उनकी गरीब दशा पर विचार किये बिना लगान वसूल करते थे। इसी प्रकार, कम वर्षा अथवा बाढ़ की स्थिति में खराब फसल होने पर भी कोई दया नहीं की जाती थी। गांव वालों से एकत्रित कुल आय में से ये मध्यस्थ एक भाग, अंग्रेज सरकार के पास जमा करने से पहले अपने पास रख लेते थे। भूमि का लगान एकत्र करने के अतिरिक्त अंग्रेज सरकार उन पर प्रशासन को चलाने के लिए भी निर्भर करती थी। इस प्रकार जमींदार, महलवारी और रैयतवारी क्रमशः अपने क्षेत्रों में लघु शासक बन गए। जो लोग भूमि का लगान नहीं दे पाते थे वे उन व्यक्तियों की सम्पति बलपूर्वक ले जाते थे। इस प्रकार, ये मध्यस्थ, अंग्रेज सरकार के आशीर्वाद तथा जनसाधारण की लागत पर धनी और शक्तिशाली हो गए।

## पाठगत प्रश्न 19.3

1. स्थायी और अस्थायी बन्दोबस्त में भेद कीजिए।
2. जमींदारों के विषय में तीन वाक्य लिखो।

## 19.2 अंग्रजों के शासन का सकारात्मक योगदान

अंग्रेजों के शासन काल में कुछ सकारात्मक कार्य हुए। रेलवे, जो आज आप देखते हो वह 1850 में अंग्रेजी सरकार द्वारा प्रारम्भ की गई। 1850 से 1855 के बीच पहला पटसन का कारखाना, पहली कपड़ा मिल और पहली कोयले की खान की स्थापना हुई। बाद के वर्षो में, रेलवे लाइन की लम्बाई और ऊपर कहे गए कारखानों की संख्या बढ़ती रही। अंग्रेज सरकार ने देश में दूर-संचार सेवा, तार और डाकघरों की भी स्थापना की।

## 19.3 स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय अर्थव्यवस्था की विशेषताओं में परिवर्तन

स्वतंत्रता के पश्चात भारत के इतिहास में एक नए युग का प्रादुर्भाव हुआ, स्पष्ट रूप से इसलिए क्योंकि भारत का शासन चलाना इसके अपने लोगों का उत्तरदायित्व हो गया। ब्रिटिश सरकार से भिन्न, भारत की सरकार का उद्देश्य, भारत को विकास के ऊँचे स्तर पर ले जाना और इसके सभी नागरिकों का कल्याण था। वर्ष 2010 तक, भारत सरकार, भारत पर शासन के 60 से अधिक वर्ष पूरे कर चुकी है। मूल्यांकन करने का तथा उसी के अनुसार भारतीय अर्थव्यवस्था की विशेषताओं का वर्णन करने का, यह एक काफी लम्बा समय है, जो निम्न प्रकार हैं :

प्रति व्यक्ति आय का निम्न स्तर, प्रति व्यक्ति आय में धीमी वृद्धि, जनसंख्या का भारी दबाव, गरीबी का अस्तित्व, कृषि पर निर्भरता और विकास के लिये योजना बनाना।

हम इनकी चर्चा निम्न प्रकार से एक-एक करके करेंगे।

### 1. प्रति व्यक्ति आय का निम्न स्तर

**प्रति व्यक्ति आय की गणना राष्ट्रीय आय को जनसंख्या से भाग देकर की जाती है।** एक व्यक्ति की आय उसके रहन सहन के स्तर का मुख्य सूचक है। प्रति व्यक्ति आय, अर्थव्यवस्था में एक वर्ष में, एक व्यक्ति द्वारा अर्जित औसत आय का बोध कराती है। भारत की वर्ष 2009-10 की प्रति व्यक्ति आय 33731 रु. थी। यह लगभग 2811 रु. मासिक आती है अर्थात 33731/12 = 2811 रु.।

यह राशि एक अच्छा जीवन बिताने के लिए बहुत कम है। एक व्यक्ति को रहने के लिए एक कमरा, पहनने के लिये कपड़े और पोषाक की सामग्री तथा खाने के लिए भोजन की आवश्यकता होती है। ये सभी वस्तुएं बाजार से कुछ कीमत का भुगतान कर खरीदी जाती है। यदि किसी व्यक्ति के पास रहने के लिए उसका पैतृक मकान है, वह किराये का भुगतान नहीं करता फिर भी उसे अपने लिए कपड़े और भोजन की आवश्यकता होती है। क्योंकि खाद्यान्न, सब्जी, कपड़े

आदि की कीमत ऊँची है, क्या आप समझते हैं कि 2811 रु. इन खर्चों के पूरा करने के लिए काफी हैं।

### आओ कुछ करें

बाजार जाओ और चावल, गेहूँ, आटा, आलू और प्याज की कीमत ज्ञात करो। इन वस्तुओं की वह मात्रा ज्ञात करो, जिसका आपने पिछले महीने में उपभोग किया। तब इन वस्तुओं पर किया गया व्यय ज्ञात करो। इसी प्रकार, इन वस्तुओं पर अपने परिवार का व्यय ज्ञात करो। तब, सोचो, इन खर्चों के पूरा करने के लिए आपकी आय कितनी होनी चाहिए।

## 2. प्रति व्यक्ति आय में धीमी वृद्धि

भारत में प्रति व्यक्ति आय न केवल कम है किन्तु बहुत धीमी गति से भी बढ़ रही है। संवृद्धि/वृद्धि से अभिप्राय समय के साथ-साथ वृद्धि से है। हम क्यों चाहते हैं कि हमारी आय प्रति वर्ष बढ़े? इसके कुछ कारण हैं।

प्रथम, हमारी मांगे समय के साथ-साथ बढ़ रही हैं। अधिक आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए, हमें अधिक आय की आवश्यकता होती है। अपना ही उदाहरण लीजिए। क्या आप सिनेमा हाल में सिनेमा (चलचित्र) नहीं देखना चाहते? क्या आप अच्छे कपड़े नहीं पहनना चाहते? क्या आप एक होटल में खाना नहीं खाना चाहते? क्या आप एक स्टेडियम में आई.पी.एल. क्रिकेट मैच नहीं देखना चाहते? क्या आप एक महाविद्यालय में पढ़ना नहीं चाहते? क्या आप, अपने लिए एक मोबाइल फोन नहीं चाहते, आदि। यह सूची अंतहीन हो सकती है। किन्तु ये वस्तुएं निःशुल्क प्राप्त नहीं होतीं। इसलिए, इन आवश्यकताओं का पूरा करने के लिए आपको पहले से अधिक आय की आवश्यकता होती है।

द्वितीय, अधिक आय कमाने का दूसरा कारण यह है कि जो वस्तुएं आप बाजार में खरीदते हो, उनकी कीमतें भी बढ़ रही हैं। इसलिए, उन्हीं वस्तुओं और सेवाओं के लिए, जिनका आप उपभोग करते हो, आपको अधिक मुद्रा का भुगतान करना पड़ता है। हाल ही में, पैट्रोल और डीजल की कीमतें बढ़ाई गई थीं। दिल्ली में कीमतें लगभग 5 रु. प्रति लीटर बढ़ाई गई थीं। मान लो, एक व्यक्ति ट्रक में जूते भरकर दिल्ली से शिमला ले जाता है। वह शिमला के बाजार में 300 रु. प्रति जोड़ी की दर से जूते बेचता है। कीमत बढ़ने से पहले, उसका डीजल पर व्यय लगभग 3100 रु. प्रति फेरा था। किन्तु कीमत बढ़ने के कारण, उसका डीजल पर व्यय बढ़कर, मानलो 3700 रु. हो जाता है। वह इन अतिरिक्त 600 रु. का प्रबन्ध कैसे करेगा। एक तरीका यह है कि एक जोड़ी जूते की कीमत बढ़ाकर 300 से 325 रु. कर दी जाए। यदि आप शिमला में रह रहे हैं और जूते खरीदते हैं तो आपको एक जोड़ी जूते के पहले से 25 रु. अधिक देने पड़ेगे। ये 25 रु. अधिक आप कहां से लायेंगे? व्यय में इस वृद्धि को पूरा करने के लिए आपकी आय में वृद्धि होनी चाहिए। क्योंकि, आपको और वस्तुओं पर भी व्यय करना होता है और दूसरी वस्तुओं की कीमतें भी इसी प्रकार बढ़ रही हैं, आपकी आय में भी अधिक तीव्र गति से वृद्धि होनी चाहिए। किन्तु, विडम्बना यह है कि भारत में प्रति व्यक्ति आय इच्छित ढ़ंग से नहीं बढ़ी है।

हमने अभी बताया कि वर्ष 2009-2010 में प्रति व्यक्ति आय 33731 रु. थी। क्या आप जानते हो कि पिछले वर्ष 2008-2009 में यह राशि क्या थी। यह 31801 रु. थी। इसका अभिप्राय यह है कि एक व्यक्ति की आय केवल 1930 रु. बढ़ी। प्रति माह वृद्धि क्या है? यह लगभग 160 रु. प्रति माह थी। क्या यह राशि, कीमतों के वृद्धि के कारण, आपके द्वारा बहुत सी वस्तुओं पर अधिक व्यय को पूरा करने के लिए, काफी है? याद कीजिये, कि आपको केवल जूतों पर 25 रु. का अधिक भुगतान करना पड़ेगा। आपको बहुत सी अन्य वस्तुओं की भी आवश्यकता होती है जिनके लिए आपको अधिक भुगतान करना पड़ता है। इसलिए 160 रु. की वृद्धि आपकी विद्यमान आवश्यकताओं को भी पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं है, बढ़ी हुई आवश्यकताओं के विषय में क्या कहा जा सकता है? हम प्रति व्यक्ति आय पर आर्थिक सर्वेक्षण द्वारा दिए गए आंकड़े निम्न सारणी में पुनः प्रस्तुत कर रहे हैं।

**सारणी 19.1 भारत में प्रति व्यक्ति आय**

| वर्ष | प्रति व्यक्ति आय (रुपये) | प्रति माह वृद्धि (रुपये में) |
|---|---|---|
| 2008-09 | 31801 | – |
| 2009-10 | 33731 | 160 |

तृतीय, और अन्तिम, हम अपनी आय में वृद्धि चाहते हैं क्योंकि हम एक दूसरे की आवश्यकता पड़ने पर सहायता करना चाहते हैं या एक दूसरे को प्रसन्न करना चाहते हैं। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हम एक समाज में अपने सम्बन्धियों, मित्रों और अन्य व्यक्तियों के साथ रहते हैं। हमें, हर समय, एक दूसरे का सहयोग और सहायता की आवश्यकता होती है। क्या आपने, आवश्यकता के समय, किसी मित्र की सहायता की है? आप किसी निर्धन व्यक्ति की सहायता करना चाहते हैं जिसे खाने के लिए भोजन की आवश्यकता है। आपको अपने किसी मित्र के लिए, आवश्यकता होने पर, पुस्तक खरीदनी पड़ सकती है। आपको अपने छोटे भाई या बहन के लिए चाकलेट खरीदने की आवश्यकता हो सकती है। इन सभी मामलों में आपको, अपनी स्वयं की आवश्यकताओं को पूरा करने के पश्चात् और अधिक मुद्रा की आवश्यकता हो सकती है। किन्तु यदि हम, अपनी बढ़ी हुई आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, अपने स्वयं के लिए अधिक आय नहीं कमा सकते, तो हम, अन्य व्यक्तियों, जिनकी हम सहायता करना चाहते हैं, की कैसे सहायता कर सकते हैं?

## पाठगत प्रश्न 19.4

1. सारणी 19.1 की सहायता से वर्ष 2008-09 की तुलना में 2009-10 में प्रति व्यक्ति आय में प्रतिशत वृद्धि ज्ञात करो (अपनी गणित की योग्यता का प्रयोग करो)।
2. प्रति व्यक्ति आय की परिभाषा दो।
3. वर्ष 2009-2010 में भारत की प्रति व्यक्ति आय क्या थी?

### 3. जनसंख्या का भारी दबाव

भारतीय अर्थव्यवस्था में जनाधिक्य है। पिछले 60 वर्षों में यह तीन गुनी से अधिक बढ़ चुकी है। स्वतंत्रता के समय, 1947 में जनसंख्या 35 करोड़ थी। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या 121 करोड़ है। विश्व में यह केवल चीन से दूसरे स्थान पर है और भविष्य में चीन से ऊपर भी जा सकती है। हम अधिक जनसंख्या से क्यों चिंतित हैं? सीधी सी बात है, अधिक व्यक्तियों से अभिप्राय खाने के लिए अधिक मुंह हैं। यह इस बात का संकेत है कि अधिक खाद्यान्नों का उत्पादन किया जाय। क्योंकि हर वर्ष जनसंख्या बढ़ रही है इसलिए हर वर्ष खाद्यान्नों का अधिक उत्पादन होना चाहिए। यह आसान कार्य नहीं है। क्योंकि कृषि के लिए भूमि के क्षेत्र में उस अनुपात में वृद्धि नहीं हो रही है। इसलिए खाद्यान्नों का उत्पादन जनसंख्या में वृद्धि से मेल नहीं खाता तो प्रति व्यक्ति खाद्यान्नों की उपलब्धता घट जायेगी। संपूर्ण भारत को एक परिवार मानकर यह कह सकते हैं कि परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिए खाने के लिए कम भोजन मिलेगा। क्या यह चिन्ताजनक बात नहीं है?

भोजन के अतिरिक्त अधिक जनसंख्या के लिए, अधिक वस्त्र, अधिक शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं, अधिक मकानों, सड़कों और किस वस्तु की आवश्यकता नहीं है? इन्हें कौन उपलब्ध करायेगा? क्या हमारी सरकार के पास इन सभी सुविधाओं को उपलब्ध कराने के लिए पर्याप्त संसाधन हैं? शायद नहीं। वरना, शहरों में मलिनावास तथा सड़कों पर भिखारी नहीं होते।

भारतीय जनसंख्या के विषय में सकारात्मक बात यह है कि युवकों की संख्या संसार के अन्य देशों की तुलना में बहुत अधिक है। लगभग आधी जनसंख्या 0-25 वर्ष के आयु वर्ग में है। 121 करोड़ में से लगभग 78.5 करोड़ व्यक्ति 35 वर्ष से कम आयु के हैं। इससे क्या अभिप्राय है? युवक ऊर्जा और शक्ति से पूर्ण होते हैं और उनसे बेहतर कार्य करने की आशा की जाती है क्योंकि उनमें अधिक कार्य करने की क्षमता होती है। यह निम्न आलंबन/आश्रित अनुपात का भी सूचक है।

क्या आप जानते है कि भारत में सबसे अधिक जनसंख्या वाले तीन राज्य कौन से हैं। वे हैं उत्तर प्रदेश, इसके पश्चात् महाराष्ट्र और फिर बिहार। यह जानना रूचिकर है कि उत्तर प्रदेश की जनसंख्या लगभग ब्राजील की जनसंख्या के बराबर है जो भूमि के क्षेत्र के अनुसार संसार के बड़े देशों में से एक है। जबकि महाराष्ट्र की जनसंख्या मैक्सिकों की जनसंख्या के बराबर है। इसे प्रमाणित करने के लिए नीचे सारणी 19.2 को देखो।

वास्तव में भारत की कुल जनसंख्या संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान, इण्डोनेशिया, पाकिस्तान, बंगलादेश की जनसंख्या को मिलाकर लगभग उसके बराबर है।

**सारणी 19.2**

**2011 की जनगणना के अनुसार भारत और राज्यों की जनसंख्या (करोड़ में)**

| | |
|---|---|
| उत्तर प्रदेश - 19.9 | ब्राजील - 19.07 |
| महाराष्ट्र - 11.2 | मैक्सिको - 11.2 |
| भारत - 121 | |

### 4. गरीबी का अस्तित्व

संसार के लगभग एक तिहाई गरीब लोग भारत में रहते हैं। सड़कों पर भिखारियों को देखिए। कस्बों और शहरों में मलिनावासों, बच्चों का खेतों में, या गली के ढाबों में, या दूसरों के घरों में या फैक्ट्रियों आदि में काम करना, ये देश में गरीबी के चिन्ह हैं। नीचे सारणी 19.3 को देखो। भारत की 30 करोड़ से अधिक जनसंख्या गरीबी से ग्रस्त है जो कि कुल जनसंख्या का लगभग 27.5 प्रतिशत है। इनमें से, 20 करोड़ से अधिक ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं। शेष शहरी क्षेत्रों अर्थात कस्बों और शहरों में रहते हैं।

भारत के विभिन्न राज्यों में, उड़ीसा सबसे अधिक गरीबी से ग्रस्त है। क्योंकि इसकी कुल जनसंख्या के 46 प्रतिशत लोग गरीब हैं जो सभी राज्यों में सबसे अधिक है। इसके पश्चात छत्तीसगढ़ और फिर बिहार आता है। गरीब लोगों की संख्या के संबंध में उत्तर प्रदेश में गरीब लोगों की संख्या अधिकतम है। पंजाब, हरियाणा और आंध्र प्रदेश को देखो। वे गरीबी से सबसे कम प्रभावित हैं क्योंकि इन राज्यों में गरीब लोगों का प्रतिशत, उड़ीसा, बिहार ओर उत्तरप्रदेश की तुलना में कम है।

**सारणी 19.3**

**भारत के कुछ राज्यों में गरीबी की स्थिति**

| राज्य | प्रतिशत गरीब लोग | गरीब लोगों की कुल संख्या (लाख में) |
|---|---|---|
| उड़ीसा | 46 | 179 |
| छत्तीसगढ़ | 41 | 91 |
| बिहार | 41 | 369 |
| उत्तर प्रदेश | 35 | 590 |
| आंध्र प्रदेश | 16 | 126 |
| हरियाणा | 14 | 32 |
| पंजाब | 08 | 22 |
| **कुल भारत** | **27.5** | **3017** |

स्रोत : *आर्थिक सर्वेक्षण*

जब आप सारणी 19.3 का अध्ययन करते हैं तो आप इससे क्या निष्कर्ष निकालते हैं? गरीब लोगों का प्रतिशत बताता है कि 100 व्यक्तियों में से कितने गरीब हैं जबकि गरीबों की कुल संख्या निरपेक्ष संख्या है। देखो कि उड़ीसा में 179 लाख गरीब व्यक्ति हैं जो कि उत्तर प्रदेश के 590 लाख से बहुत कम है। किन्तु उड़ीसा में प्रति 100 व्यक्तियें में से 46 गरीब हैं जबकि उत्तर प्रदेश में प्रति 100 व्यक्तियों में से 35 गरीब हैं। क्योंकि उत्तर प्रदेश की कुल जनसंख्या उड़ीसा से अधिक है, गरीब लोगों की निरपेक्ष संख्या भी उत्तर प्रदेश में उड़ीसा से अधिक है। अधिक प्रतिशत होने के कारण उड़ीसा, उत्तर प्रदेश से अधिक गरीबी से ग्रस्त है।

गरीबी मनुष्यता पर एक अभिशाप है। एक गरीब व्यक्ति अपनी दैनिक आवश्यकताओं या अनिवार्यताओं को बाजार से खरीदने में समर्थ नहीं हो सकता। वह दिन में दो वक्त का भोजन करने के योग्य भी नहीं है ओर न ही वह उचित वस्त्र पहन सकता है। एक गरीब व्यक्ति के पास रहने के लिए आश्रय नहीं है या कच्चा मकान है। उसके लिए शिक्षा प्राप्त करना, स्वास्थ्य की रक्षा करना कठिन है। ऐसा क्यों होता है? इसके कई कारण हो सकते हैं।

प्रथम, गरीबी से ग्रस्त व्यक्ति या तो बेरोजगार हैं या अपने वर्तमान व्यवसाय से बहुत कम आय प्राप्त करता है जो उसकी मौलिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपर्याप्त है।

द्वितीय, उस व्यक्ति का दूसरों के द्वारा, जाति, धर्म या लिंग के आधार पर शोषण किया जा रहा है।

तृतीय, व्यक्ति गरीब इसलिए हो गया है कि उसके पास, भूमि या मकान आदि के रूप में कोई सम्पति नहीं है। जिन लोगों को उत्तराधिकार में अपने पूर्वजों से सम्पति मिली है, उन्हें दूसरे लोगों की अपेक्षा, जिनके पास सम्पति नहीं है, कुछ लाभ प्राप्त हैं।

चौथा, शायद सरकार के प्रयास प्रभावपूर्ण नहीं रहे हैं। भ्रष्टाचार, निर्णय लेने में विलम्ब, सरकार द्वारा गरीबी दूर करने में रुकावट रहे हैं। तथापि, गरीबी का अस्तित्व केवल सरकार की ही असफलता नहीं है किन्तु व्यक्तियों और समाज की भी असफलता है, जिन्हें एक दूसरे की सहायता और सहयोग करना चाहिए जिससे प्रत्येक व्यक्ति उत्तम जीवन बिता सके।

हम गरीबी की अवधारणा और सरकार द्वारा गरीबी उन्मूलन के लिए उठाए गए कदमों के विषय में पाठ 22 में चर्चा करेंगे।

### पाठगत प्रश्न 19.5

1. आपके विचार में क्या गरीबी और बेरोजगारी आपस में सम्बन्धित हैं?
2. सारणी 19.3 में दिए गए आंकड़ों से उड़ीसा और पंजाब की तुलना करो।

### आओं कुछ करें

सारणी 19.3 में दिए गए आंकड़ों से राज्यों की कुल जनसंख्या की गणना करो। अपने गणित के ज्ञान का प्रयोग करो।

### 5. कृषि पर निर्भरता

किसी अर्थव्यवस्था में अपनी आजीविका कमाने के लिए व्यक्ति विभिन्न प्रकार के कार्य करते हैं, जैसे कृषि, उद्योग और सेवाएं (इसका अध्ययन हम पाठ 20 में विस्तार से करेंगे) भारतीय अर्थव्यवस्था, परम्परागत रूप से, कृषि पर आधारित है। 1951 में, पहली योजना के प्रारम्भ

में, 70 प्रतिशत से अधिक लोग कृषि और संबंधित गतिविधियों में लगे हुए थे। यद्यपि यह प्रतिशत कम हो गया है, अब भी इक्कीसवीं शताब्दी के आरम्भ में अर्थात वर्ष 2001 में जनसंख्या का लगभग 60 प्रतिशत भाग कृषि पर निर्भर करता था।

### 7. विकास के लिये योजना बनाना

स्वतन्त्रता के पश्चात, भारतीय अर्थव्यवस्था की, आर्थिक नियोजन की प्रक्रिया द्वारा विकास की प्राप्ति का लगातार प्रयास करना, मुख्य विशेषता रही है। पिछले 60 वर्षों से यह एक बहुत ही सकारात्मक घटना रही है।

भारत सरकार ने, 1951 में पहली पंचवर्षीय योजना आरम्भ कर, पंचवर्षीय योजनाओं को अपनाया। पहली योजना की अवधि 1951 से 1956 थी। इसी के अनुसार दूसरी पंचवर्षीय योजना 1956 में आरंभ हुई तथा 1961 में समाप्त हुई। और इसी प्रकार। भारत में विभिन्न योजनाओं की समय अवधि जानने के लिए नीचे सारणी 19.4 को देखो।

**सारणी 19.4**

| योजना | भारत में योजना अवधि |
|---|---|
| पहली | 1951-1956 |
| दूसरी | 1956-1961 |
| तीसरी | 1961-1966 |
| वार्षिक योजनाएं | 1966-1967, 1967-68, 1968-69 |
| चौथी | 1969-1974 |
| पांचवी | 1974-79 |
| वार्षिक योजना | 1979-80 |
| छठी | 1980-1985 |
| सातवीं | 1985-1990 |
| वार्षिक योजनाएं | 1990-91, 1991-92 |
| आठवीं | 1992-1997 |
| नौवी | 1997-2002 |
| दसवीं | 2002-2007 |
| ग्यारहवीं | 2007-2012 |

नियोजन से आपका क्या अभिप्राय है? नियोजन से अभिप्राय भविष्य में कुछ करने के लिए तैयारी करना है। इसका तात्पर्य आपके द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति की समस्या को हल करने से हैं।

आप स्वयं अपना उदाहरण ले सकते हो। मान लो, आपको अगले वर्ष दसवीं कक्षा की परीक्षा देनी है। मान लो, आज से आप के पास दस महीनें हैं। आप इसके लिए क्या करोगे। स्पष्ट रूप से, आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक क्रमबद्ध ढंग से तैयारी करोगे। अर्थात अपनी परीक्षा अच्छे अंकों से पास करने के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आपकी तैयारी में निम्न बातें शामिल होंगी।

(i) पुस्तकें खरीदने के लिए मुद्रा का प्रबन्ध करना।

(ii) प्रति दिन पढ़ने और दूसरे कार्यों के लिए समय का आबंटन करना।

(iii) प्रतिदिन प्रत्येक विषय अर्थात अर्थशास्त्र, गणित, जीवविज्ञान, हिन्दी, अंग्रेजी इत्यादि के लिए समय का आबंटन करना।

(iv) अपनी तैयारी का, प्रति माह या प्रति दो या तीन माह में मूल्यांकन करना।

इसी प्रकार, भारत सरकार, अपनी आर्थिक और दूसरी समस्याओं को हल करने के लिए योजना बनाती रही है। नियोजन अनिवार्य है क्योंकि समस्याओं का हल एक या दो दिन में आसानी से नहीं किया जा सकता । खाद्यान्नों के उत्पादन बढ़ाने की समस्या का उदाहरण लीजिए। इसमें संसाधनों के, मानव शक्ति, कच्चा माल, मशीनें, मुद्रा आदि के रूप में आबंटन की आवश्यकता है जिनका उचित ढंग से प्रयोग किया जाना चाहिए जिससे उनकी कम से कम बर्बादी हो। इसी प्रकार, बहुत सी अन्य समस्याएं भी हैं जैसे प्रत्येक वर्ष बहुत से युवकों को रोजगार या नौकरी देने की समस्या, गरीब लोगों के जीवन स्तर में सुधार लाने की समस्या, ग्रामीण जनसंख्या को सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराना, भारत के विभिन्न गांव और कस्बों को जोड़ने के लिए सड़कों का निर्माण करना आदि। आप इस प्रकार की अन्य हजारों समस्याएं गिन सकते हैं।

भारत ने पंचवर्षीय योजनाएं अपनाई हैं ताकि किसी विशेष योजना के आरम्भ में यह घोषणा की जा सके कि आने वाले पांच वर्षों में कौन सी समस्याएं लेनी हैं और समय अवधि के अन्त में सम्पूर्ण स्थिति और उस दिशा में की गई उन्नति का पुनरावलोकन किया जा सके। उपर्युक्त सारणी 19.4 में पंचवर्षीय योजनाओं की समय अवधि दी गई है। हमने दस पंचवर्षीय योजनाएं समाप्त कर ली हैं। ग्यारहवी योजना वर्ष 2012 में पूरी होगी। आप देख सकते हैं कि 1966-69 की अवधि में कोई पंचवर्षीय योजना नहीं थी, केवल वार्षिक योजनाएं थीं। यह पंचवर्षीय योजना को चलाने के लिए मौद्रिक और अन्य संसाधनों की कमी के कारण हुआ। ऐसा क्यों हुआ? ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि भारत ने 1962 में चीन से और 1965 में पाकिस्तान से युद्ध लड़ा जिसके लिए सरकार को अपने संसाधनों को हटाकर इन लड़ाइयों को लड़ने के लिए लगाना पड़ा। भारत को, सूखे की स्थिति का भी सामना करना पड़ा जिसने इस अवधि में हमारा कृषि में उत्पादन कम कर दिया। इसलिए पंचवर्षीय योजना चलाना कठिन था और भारत को वार्षिक योजनाओं से काम चलाना पड़ा। जब स्थिति बेहतर हो गई तो 1969 में दोबारा पंचवर्षीय योजनाएं, चौथी पंचवर्षीय योजना के साथ पुनः आरम्भ की।

1979 में केन्द्र में सरकार बदल गई थी। इसलिए छठी पंचवर्षीय योजना 1980 से आरम्भ की गई और वर्ष 1979-80 को वार्षिक योजना में बदल दिया गया।

**योजनाओं पर व्यय :** प्रत्येक योजना में सरकार संसाधनों का आबंटन विभिन्न क्षेत्रकों जैसे कृषि उद्योग, शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन, संचार सामुदायिक विकास और अन्य सामाजिक क्षेत्रकों में करती है। इसका उद्देश्य दिए गए संसाधनों को उस अवधि में सरकार द्वारा निश्चित किए गए क्षेत्र के विकास के लक्ष्यों के लिए प्रयोग करने से है। उदाहरण के लिए कृषि के संसाधनों का प्रयोग भूमि की उत्पादकता बढ़ाने, सिंचाई की सुविधा बढ़ाने आदि के लिए किया जा सकता है। इसी प्रकार शिक्षा के लिए संसाधनों का प्रयोग स्कूल की इमारत बनवाने, प्रतिभाशाली छात्रों को छात्रवृत्ति देने आदि पर किया जा सकता है। हम संसाधनों को रुपयों के रूप में व्यक्त कर सकते हैं। पहली पंचवर्षीय योजना में कुल राशि 2070 करोड़ रु. विभिन्न क्षेत्रकों का व्यय पूरा करने के लिए आबंटित की गई थी। ग्यारहवी पंचवर्षीय योजना में, जो वर्ष 2012 में पूरी होनी है। विभिन्न क्षेत्रों पर व्यय करने के लए 36,44,718 करोड़ रु. की राशि प्रस्तावित की गई है। पहली योजना से ग्यारहवीं योजना में व्यय में बहुत अधिक वृद्धि के प्रमुख कारण हैं :

(अ) जनसंख्या में वृद्धि

(ब) आवश्यकताओं में वृद्धि

(स) बाजार में कीमतों में वृद्धि

## आओ कुछ करे

1. आप एक एकड़ भूमि के प्लाट पर, पहले वर्ष गेहूँ का उत्पादन 5 क्विंटल से बढ़ाकर इस वर्ष 8 क्विंटल करना चाहते हैं। आप इस लक्ष्य को पूरा करने की योजना कैसे बनाओगे।

## आपने क्या सीखा

- भारतीय अर्थव्यवस्था की कहानी की दो भिन्न अवस्थायें हैं। एक, अर्थव्यवस्था अंग्रेजी शासन काल के दौरान और दो, अर्थव्यवस्था स्वतंत्रता के पश्चात्।
- अंग्रेजी शासन काल में, भारतीय अर्थव्यवस्था का प्रयोग अंग्रजों द्वारा अपने लाभ के लिए किया गया। परिणामस्वरूप, अर्थव्यवस्था को अकाल और मध्यस्थों द्वारा शोषण को सहन करना पड़ा। इसका परिणाम यह हुआ कि स्वतंत्रता के समय भारत में बड़े पैमाने पर निर्धनता थी।

- स्वतंत्रता के पश्चात स्थिति में लोगों की आशाओं के अनुरूप परिवर्तन नहीं हुआ। भारत की अब भी प्रतिव्यक्ति आय का निम्न स्तर, समय के अनुसार इसमें धीमी वृद्धि, गरीबी, जनसंख्या के भारी दबाव आदि के लिये जाना जाता है।
- किन्तु भारत को, अपनी पंचवर्षीय योजनाओं, जो कुछ उद्देश्यों की पूर्ति के लिए लक्ष्य निर्धारित करती है, पर आशा है।

## पाठान्त प्रश्न

1. अस्थायी बन्दोबस्त से आपका क्या अभिप्राय है?
2. अंग्रेज नकदी फसलों की खेती क्यों कराना चाहते थे?
3. भारत में अकाल पड़ने के दो कारण दो।
4. भारतीय जनसंख्या का एक सकारात्मक पहलू बताओ।
5. प्रति व्यक्ति आय की परिभाषा से क्या आप इसमें धीमी वृद्धि का एक कारण बता सकते हो।
6. अंग्रेजी शासन काल में पड़े अकालों का एक संक्षिप्त विवरण दो। इन अकालों के पड़ने के क्या कारण थे?
7. मध्यस्थ कौन थे? उनके द्वारा अदा की गई भूमिका का वर्णन कीजिये।
8. भारत सरकार ने नियोजन क्यों अपनाया?
9. क्या आपके विचार में भारत एक गरीब देश है? अपने उत्तर के पक्ष में कारण दीजिये।

## पाठगत प्रश्नों के उत्तर

### पाठगत प्रश्न 19.1

1. भारतीय कपड़ा उद्योग श्रम का प्रयोग करता था जबकि अंग्रजी कपड़ा उद्योग मशीनों का प्रयोग करता था।

### पाठगत प्रश्न 19.2

1. अकाल से अभिप्राय भोजन की कमी की स्थिति से है जो भुखमरी और बहुत से व्यक्तियों की मृत्यु का कारण बनती है।
2. अंग्रेज, खाद्यान्नों का निर्यात, आय कमाने के लिए कर रहे थे।

### पाठगत प्रश्न 19.3

1. स्थायी बन्दोबस्त से अभिप्राय भूमि का लगान स्थायी रूप से निश्चित करने से है।

   अस्थायी बंदोबस्त से अभिप्राय प्रत्येक 25-30 वर्षों में भूमि के लगान में परिवर्तन करने से है।

2. भारत के पूर्वी राज्यों में अंग्रेजों ने जमींदारों को नियुक्ति की। उनका कार्य लोगों से लगान वसूल करना था। वे स्थानीय प्रशासन को चलाने के भी उत्तरदायी थे।

### पाठगत प्रश्न 19.4

1. 6.06 प्रतिशत

2. $\text{प्रतिव्यक्ति आय} = \dfrac{\text{राष्ट्रीय आय}}{\text{जनसंख्या}}$

3. 33,731 रु.

### पाठगत प्रश्न 19.5

1. हाँ

2. उड़ीसा की 46 प्रतिशत जनसंख्या गरीब है जबकि पंजाब में केवल 8 प्रतिशत जनसंख्या गरीब है। इसलिए पंजाब उड़ीसा से धनी है।

# 20

# भारतीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्रक पहलू

हम भिन्न-भिन्न प्रकार की वस्तुओं एवं सेवाओं का उपभोग करते हैं। ये दो प्रकार की हो सकती हैं - (i) खाद्य मदें (ii) गैर-खाद्य मदें। भोजन बनाने के लिये हमें खाद्यान्नों, फल तथा सब्जियों एवं खाद्य तेलों की आवश्यकता पड़ती है। इन सभी वस्तुओं का ग्रामीण क्षेत्रों में कृषकों द्वारा उत्पादन किया जाता है। गैर-खाद्य मदें जिन्हें हम प्रयोग करते हैं, अनगिनत हैं, जैसे कपड़े, जूते, फर्नीचर, बर्तन, मोटरगाड़ी, पैन, कागज, पुस्तक आदि। इनका उत्पादन कस्बों तथा शहरों में उद्योगों द्वारा किया जाता है। क्योंकि खाद्यान्नों का उत्पादन तथा गैर खाद्य सामग्री का उत्पादन भिन्न-भिन्न वातावरण में होता है, हम इन्हें अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रकों में वर्गीकृत करते हैं।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप समझ सकेंगे :

- भारतीय अर्थव्यवस्था के तीन मुख्य क्षेत्रक जिनके द्वारा गृहस्थ अपनी जीविका अर्जित करते हैं;
- अर्थव्यवस्था में इनमें से प्रत्येक क्षेत्रक की भूमिका तथा महत्व;
- इन क्षेत्रकों का आपस में सहबन्धन।

## 20.1 लोगों के द्वारा अपनाये जाने वाले व्यवसायों के प्रकार

अपनी जीविका अर्जित करने के लिये लोग अपनी शिक्षा, कौशल, परिवार की परम्परा आदि के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रकार की गतिविधियों में संलग्न होते हैं। सामान्यतया हम इन्हें अर्थव्यवस्था के तीन विभिन्न क्षेत्रकों में वर्गीकृत करते हैं:

(i) प्राथमिक क्षेत्रक

(ii) द्वितीयक क्षेत्रक

(iii) तृतीयक क्षेत्रक

### 20.1.1 प्राथमिक क्षेत्रक

भारत के ग्रामीण क्षेत्रों के बारे में विचार करें। वे लोग जो गांवों में रहते हैं, अपनी जीविका कैसे अर्जित करते हैं? उनमें से अधिकतर लोग फसल उगाने के लिए खेतों में कार्य करते हैं जिसे हम कृषिकर्म कहते हैं। इन लोगों को हम कृषक तथा कृषि श्रमिक तथा व्यवसाय को कृषि कहते हैं। विभिन्न प्रकार की फसलें होती हैं जिन्हें उगाया जाता है जैसे खाद्यान्न तथा गैर-खाद्य मदें। खाद्यान्नों में आनाज, दाले, फल तथा सब्जी आदि तथा गैर-खाद्य मदों में कपास, जूट आदि को सम्मिलित किया जाता है।

इसी प्रकार, लोग अपनी जीविका वान्यिकी से भी अर्जित करते हैं जिससे अभिप्राय वन-उत्पादों को एकत्र कर बाजार में बेचने से है। इस व्यवसाय को **वान्यिकी** कहा जाता है। वन उत्पादों में इमारती लकड़ी, ईंधन की लकड़ी, जड़ी-बूटी वाली औषधि आदि को सम्मिलित किया जाता है। बहुत से लोग खनिज निकालने के लिये खानों के क्षेत्र में कार्य करते हैं। अनेक लोग ऐसे भी है जो पशुधन में वृद्धि करने में संलग्न हैं जैसे मुर्गीपालन तथा दुग्धशाला आदि। अन्त में, मत्स्यपालन एक अन्य व्यवसाय है जिसमें लोग पोखरों, नदियों अथवा समुद्र में से मछलियाँ पकड़कर बाजार में बेचते हैं। ये सभी गतिविधियाँ अर्थात कृषि, वान्यिकी, खनन, पशुपालन तथा मत्स्यपालन एक दूसरे की पूरक हैं। इन्हें हम प्राथमिक उत्पादन में वर्गीकृत करते हैं तथा उन्हें प्राथमिक क्षेत्रक में रखते हैं।

अतः हमारी अर्थव्यवस्था के प्राथमिक क्षेत्रक में निम्नलिखित को सम्मिलित किया जाता है:

(i) कृषि तथा संबद्ध क्रियाकलाप

(ii) मत्स्यपालन

(iii) वान्यिकी

(iv) खनन तथा उत्खनन

भारत में गांव प्राचीन काल से विद्यमान रहे हैं। कृषि तथा संवद्ध क्रियाकलाप लोगों का परम्परागत व्यवसाय है। यह उन्हें प्राकृतिक रूप से ही प्राप्त हो जाता है क्योंकि भोजन जो हमें कृषि से प्राप्त होता है, जीवन की एक मूलभूत आवश्यकता है। परन्तु समय के साथ-साथ मानव आबादी गांवों के बाहर भी फैलने लगी है। विकास की प्रक्रिया में कस्बे तथा शहर अस्तित्व में आये हैं। इन्हें शहरी क्षेत्र कहते हैं। जयपुर, अहमदाबाद, पुणे, भुवनेश्वर आदि भारत में शहरों के उदाहरण हैं। देहली, चैन्नई, मुम्बई तथा कोलकत्ता को मेट्रो शहर कहा जाता है क्योंकि ये और भी बड़े शहर हैं। ये शहरी क्षेत्र गैर-कृषि व्यवसायों के लिये जाने जाते हैं। गैर-कृषि गतिविधियों को हम दो क्षेत्रकों में विभाजित कर सकते हैं।

(i) द्वितीयक क्षेत्रक

(ii) तृतीयक क्षेत्रक

### 20.1.2 द्वितीयक क्षेत्रक

इस क्षेत्रक में निम्नलिखित उत्पादन गतिविधियों को सम्मिलित किया जाता है।

टिप्पणी

(क) विनिर्माण

(ख) निर्माण

(ग) गैस, जल तथा बिजली आपूर्ति

### विनिर्माण

विनिर्माण करने वाली इकाइयां जिन्हें इस फैक्ट्री तथा उद्योग कहते हैं, इनमें कच्चे माल का प्रयोग कर वस्तुओं का उत्पादन करने वाली इकाईयों को सम्मिलित किया जाता है। आकार तथा सम्बद्ध व्यय के आधार पर ये लघु उद्योग तथा बड़े पैमाने के उद्योग होते हैं। लघु उद्योग के उदाहरण हैं: जूते बनाने वाली फैक्ट्री, कपड़े का उत्पादन करने वाली इकाईयां, प्रिंटिंग, शीशा बनाना, फर्नीचर आदि। बड़े पैमाने के उद्योग में इस्पात, मोटर गाड़ियां, एल्यूमिनियम आदि के उद्योगों को सम्मिलित किया जाता है। विनिर्माण के व्यवसाय में कुशल श्रमिक कार्य करते हैं।

### निर्माण

इस गतिविधि में आवासीय तथा गैर-आवासीय इमारत, सड़क, पार्क, पुल, बांध, हवाई अड्डे, बस अड्डे आदि को सम्मिलित किया जाता है। शहरी क्षेत्रों में होने वाली यह एक नियमित गतिविधि है।

द्वितीयक क्षेत्रक में लोगों द्वारा अपनाएं जाने वाले व्यवसाय हैं: गैस, जल तथा बिजली आपूर्ति। ये आवश्यक सेवाएं हैं।

### आओ करें और सीखें

(i) एक मुर्गी फार्म का निरीक्षण कीजिये और उन उत्पादों को नोट कीजिये जो उसके द्वारा बेचे जाते हैं।

(ii) वनों से मिलने वाले पाँच उत्पादों की एक सूची बनाइये तथा उनकी कीमतों को नोट कीजिये।

### 20.1.3 तृतीयक क्षेत्रक

लोग तृतीयक क्षेत्रक की गतिविधियों में भी संलग्न होते हैं जो प्रकृति में भिन्न होती हैं। इस क्षेत्रक को सेवा क्षेत्रक भी कहते हैं जिसमें निम्नलिखित सेवाएं प्रदान की जाती हैं।

(i) व्यापार, होटल तथा जलपान गृह

(ii) परिवहन, संग्रहण तथा संचार

(iii) वित्तीय सेवाएं जैसे बैंकिंग, बीमा आदि

(iv) स्थावर सम्पदा तथा व्यवसायिक सेवाएं

(v) लोक प्रशासन

(vi) अन्य सेवाएं

सारणी 20.1 में 2009-10 में उपरोक्त विभिन्न उपक्षेत्रकों में कार्यशील जनसंख्या के प्रतिशत को प्रदर्शित किया गया है :

**सारणी 20.1 भारत में कार्यशील जनसंख्या का व्यवसायिक वितरण**

| व्यवसाय | प्रतिशत |
|---|---|
| (i) कृषि | 50.19 |
| (ii) खनन तथा उत्खनन | 0.61 |
| (iii) विनिर्माण | 13.33 |
| (iv) बिजली जल आपूर्ति आदि | 0.33 |
| (v) निर्माण | 6.10 |
| (vi) व्यापार, होटल आदि | 13.18 |
| (vii) परिवहन, संग्रहण आदि | 5.06 |
| (viii) वित्तीय, व्यवसायिक सेवाएं आदि | 2.22 |
| (ix) अन्य सेवाएं | 8.97 |

*स्रोतः आर्थिक सर्वेक्षण*

## पाठगत प्रश्न 20.1

1. निम्नलिखित में से कौन सा प्राथमिक क्षेत्रक का भाग है?

   (अ) मत्स्य पालन (ब) विद्युत (स) बैंकिंग

2. भारत में कार्यशील जनसंख्या के अंश के मामले में सबसे बड़ा क्षेत्रक कौन सा है?

## आओ करें और सीखें

अपने आस-पड़ौस के तीन परिवारों के घर जाकर उनसे उनके व्यवसाय के बारे में पूछिये तथा उनके व्यवसाय को विभिन्न क्षेत्रकों में वर्गीकृत कीजिये।

चूंकि लोग उपरोक्त क्षेत्रकों के अन्तर्गत भिन्न-भिन्न गतिविधयों में कार्य करके आय प्राप्त करते हैं। हम इन क्षेत्रकों का राष्ट्रीय आय में योगदान तथा अर्थव्यवस्था में इनकी भूमिका एवं महत्व का विश्लेषण कर सकते हैं।

## 20.2 प्राथमिक क्षेत्रक की भूमिका एवं महत्व

प्राथमिक क्षेत्रक में कृषि सबसे प्रधान व्यवसाय है तथा इसका राष्ट्रीय आय में अंश भी सबसे बड़ा है। इसलिए हम भारतीय अर्थव्यवस्था में राष्ट्रीय आय में अंश, रोजगार के अवसर, भोजन तथा कच्चे माल के संदर्भ में कृषि क्षेत्र की भूमिका तथा इसके महत्व पर अपना ध्यान केन्द्रित करेंगे। आइये, अब इन्हें एक-एक करके लें।

### 1. राष्ट्रीय आय में अंश

स्वतंत्रता के समय राष्ट्रीय आय में कृषि का योगदान 50 प्रतिशत से अधिक था। हाल के वर्षों में इसके योगदान में कमी आई है। वर्ष 2009-10 में राष्ट्रीय आय में कृषि का योगदान लगभग 15 प्रतिशत था।

### 2. जनसंख्या के सबसे बड़े भाग को रोजगार प्रदान करती है

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है। ये भारत की जनसंख्या के सबसे बड़े भाग का व्यवसाय है। स्वतंत्रता के समय हमारी जनसंख्या का लगभग 70 प्रतिशत अपनी जीविका अर्जन करने के लिये कृषि तथा संबद्ध क्रिया कलापों पर निर्भर था। विनिर्माण तथा सेवा क्षेत्रक के विकास होने से कृषि पर निर्भरता कुछ कम हुई है। वर्ष 2009-10 में भारत की लगभग 50 प्रतिशत जनसंख्या कृषि में कार्यरत थी।

### 3. लाखों को भोजन प्रदान करती है

भोजन, जीवन की सबसे मूलभूत आवश्यकता है। कृषि के बिना भोजन का उत्पादन तथा उसकी आपूर्ति हो ही नहीं सकते। भारत में भोजन की आवश्यकता केवल अधिक ही नहीं बल्कि जनसंख्या में वृद्धि होने के कारण प्रत्येक वर्ष उसमें वृद्धि भी हो रही है। भारत में वर्ष 2008-09 में खाद्यान्नों का कुल उत्पादन लगभग 2340 लाख टन था। इसमें गेहूँ, चावल तथा दाले सम्मिलित हैं।

### 4. उद्योगों को कच्चा माल प्रदान करती है

चीनी, जूट, कपास, कपड़ा, वनस्पति आदि उद्योगों को कच्चा माल कृषि से प्राप्त होता है। क्या आप जानते हैं कि कागज कैसे बनता है? इसके लिये एक विशेष प्रकार की घास, बांस आदि की आवश्यकता होती है। कृषि के बिना कागज का उत्पादन संभव नहीं है। भोजन सामग्री बनाने वाले उद्योगों पर दृष्टि डालिये जो विभिन्न प्रकार के डब्बा बंद भोजन की मदों जैसे अचार, फलों के रस, फलों के मुरब्बे, बिस्कुट, ब्रैड, आधे पके हुए भोजन आदि की आपूर्ति करते हैं। ये खाद्य प्रक्रमण से संबंधित उद्योग केवल कृषि के कारण ही चल रहे हैं।

## पाठगत प्रश्न 20.2

1. भारत में 2008-09 में खाद्यान्नों का कितना उत्पादन था?
2. खाद्य प्रक्रमण से संबंधित उद्योगों से प्राप्त तीन उत्पादों के उदाहरण लिखिये।
3. स्वतंत्रता के समय राष्ट्रीय आय में कृषि का योगदान कितना था?
4. वर्ष 2009-10 में भारत की राष्ट्रीय आय में कृषि का योगदान कितना रहा?

## 20.3 द्वितीयक क्षेत्रक की भूमिका तथा महत्व

विनिर्माण उद्योग द्वितीयक क्षेत्रक के एक बड़े भाग का निर्माण करते हैं। इन उद्योगों को लघु उद्योगों तथा बड़े पैमाने के उद्योगों में वर्गीकृत किया जाता है।

लघु उद्योग क्या होते हैं? कोई भी उद्योग जिसमें संयंत्र तथा मशीनरी पर कम से कम 25 लाख रुपये का व्यय होता है, लघु उद्योग कहलाता है। ये उद्योग अधिकतर श्रम प्रधान प्रौद्योगिकी का प्रयोग करते हैं अर्थात इन उद्योगों में उत्पादन प्रक्रिया में अधिक श्रम शक्ति का उपयोग किया जाता है। दूसरी ओर, बड़े पैमाने के उद्योगों में संयंत्र तथा मशीनरी में बहुत बड़ी राशि के निवेश की आवश्यकता पड़ती है। ये अनेक एकड़ भूमि में फैले होते हैं तथा बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार देते हैं। ये बड़ी मशीनों के रूप में पूंजी प्रधान प्रौद्योगिकी का प्रयोग करते हैं। उदाहरण के लिये लोह एवं इस्पात उद्योग को ही लीजिये। टाटा लोह एवं इस्पात उद्योग देश में सबसे पुराना है। यह जमशेदपुर में लगभग 37.31 वर्ग कि.मी. भूमि क्षेत्र में स्थित है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद औद्योगिक क्षेत्रक, लघु उद्योगों तथा बड़े पैमाने के उद्योगों दोनों के महत्व में वृद्धि होती रही है। अब हम इनकी एक-एक करके चर्चा करेंगे।

### (i) राष्ट्रीय आय में अंश

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् औद्योगिक क्षेत्र का योगदान इस अवधि में धीरे-धीरे बढ़ रहा है। वर्ष 2009-10 में भारत के घरेलू उत्पाद में इस क्षेत्रक का योगदान 28 प्रतिशत था। स्वतंत्रता के समय यह केवल 14 प्रतिशत था। इसमें वृद्धि विनिर्माण इकाईयों में वृद्धि तथा औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि के कारण हुई है।

### (ii) रोजगार का सृजन

औद्योगिक क्षेत्रक ने भारत की जनसंख्या को रोजगार के अवसर प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। लघु उद्योगों तथा बड़े पैमाने के उद्योगों दोनों में संयुक्त रूप से लगभग 3 करोड़ 30 लाख लोग संलग्न हैं। इसमें से लघु उद्योग लगभग 3 करोड़ 12 लाख लोगों को नौकरी के अवसर प्रदान करता है।

### (iii) आधारिक संरचना का सृजन

आज सड़कें, राजमार्गों, रेलवे, हवाई जहाजों आदि के होने के कारण दूरस्थ स्थानों की यात्रा करना आसान हो गया है। बड़ी-बड़ी बांध परियोजनाओं जैसे हीराकुंड तथा भाखड़ा नांगल आदि के बार में विचार कीजिये जो हमें बिजली तथा सिंचाई प्रदान करते हैं। बड़ी-बड़ी इमारतों पर दृष्टि डालिये जो दफ्तर, क्रय-विक्रय केन्द्र, फैक्ट्रियों, संस्थानों आदि को स्थान देते हैं तथा निवास स्थान उपलब्ध कराते हैं। रेडियो तथा टेलीफोन के टावरों को भी देखो जो संचार को सुगम बनाते हैं। ये सभी आधारिक संरचना के भाग हैं। आप सोच सकते हैं कि आज इन सुविधाओं के बिना किस प्रकार रहा जा सकता है? आधारिक संरचना का निर्माण बड़े पैमाने के उद्योगों के योगदान के कारण ही संभव है जो आधारिक संरचना के निर्माण के लिये आवश्यक मशीनरी तथा उपस्कर का निर्माण करते हैं।

### (iv) उपभोक्ता वस्तुओं का प्रावधान

कपड़े, जो आप पहनते हैं, पैन, टूथ ब्रुश, साबुन, जूते, साइकिल, स्कूटर, कार आदि जो आप प्रयोग करते हैं, सभी का उत्पादन विनिर्माण उद्योगों में होता है। आज आपकी पसंद की अनेक वस्तुओं से बाजार भरा हुआ है। यह औद्योगीकरण के कारण ही सम्भव है।

### पाठगत प्रश्न 20.3

1. लघु उद्योगों की परिभाषा लिखिये।
2. 2009-10 में राष्ट्रीय आय में औद्योगिक क्षेत्रक का अंश कितना था?
3. आधारिक संरचना के दो उदाहरण लिखिये।

## 20.4 सेवा क्षेत्रक की भूमिका तथा महत्व

भारत में सेवा क्षेत्रक का प्रसार बहुत तेजी से हो रहा है। अगर आप अपने चारों ओर दृष्टि डाले तो आप देखेंगे कि लोगों तथा माल को ले जाने वाली रेल गाड़ियों की संख्या में भी महत्वपूर्ण रूप से वृद्धि हुई है। आप यह भी देखते हैं कि अनेक बसें, कार तथा ट्रक सड़क पर एक स्थान से दूसरे स्थान पर आते जाते रहते हैं। इससे तात्पर्य है कि समय के साथ परिवहन सेवाओं में वृद्धि हुई है। अधिक संख्या में लोगों के पास टेलीफोन तथा मोबाइल फोन हैं। शिक्षा प्रदान करने के लिये देश में अधिक संख्या में स्कूलों का निर्माण हुआ है। मुक्त विद्यालयी शिक्षा के अन्तर्गत अध्ययन केन्द्रों की संख्या में वृद्धि हुई है ताकि और अधिक विद्यार्थी लाभान्वित हो सकें। आप, लोगों को स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करते हुए अस्पताल, स्वास्थ्य केन्द्रों आदि को भी देखते हैं। बैंकों ने भी अपनी शाखाएं खोली हैं ताकि लोग अपना खाता खोल सकें, अपनी आवश्यकतानुसार पैसा निकाल सकें तथा मकान, कार, स्कूटर आदि खरीदने के लिये ऋण ले सकें। लोगों को भोजन प्रदान करने के लिये अधिकतर सार्वजनिक स्थलों पर होटल तथा जलपान गृह हैं। ये सभी विभिन्न प्रकार की सेवाओं के उदाहरण हैं। सेवाओं के अभाव में अर्थव्यवस्था में जीवन के बारे में सोचना भी कठिन है। इसलिये सेवा क्षेत्र की भूमिका तथा महत्व के बारे में जानना आवश्यक है जिसकी हम निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत चर्चा करेंगे।

(i) सेवा क्षेत्रक का राष्ट्रीय आय में योगदान

(ii) सेवा क्षेत्रक का रोजगार प्रदान करने में योगदान

(iii) विदेशों से कोषों को आकर्षित करने में योगदान

(iv) निर्यातों में सेवा क्षेत्रक का योगदान

### आओ करें और सीखे

लगभग 200 शब्दों में अपनी स्थानीय परिवहन सेवा पर एक 'परियोजना तैयार' कीजिये।

## 20.5 सेवा क्षेत्रक का राष्ट्रीय आय में योगदान

तीनों क्षेत्रकों अर्थात कृषि, उद्योग तथा सेवा क्षेत्रकों में, सेवा क्षेत्रक ने भारत की राष्ट्रीय आय में सबसे अधिक योगदान दिया है। यदि भारत की आय 100 है तो वर्ष 2009-10 में सेवा क्षेत्रक का योगदान 55.20 रहा जो कुल के आधे से अधिक है। हमने सारणी 20.2 में विभिन्न सेवाओं के अंश को नीचे प्रस्तुत किया है।

**सारणी 20.2 सकल घरेलू उत्पाद में सेवा क्षेत्रक का योगदान (2009-10)**

| | |
|---|---|
| व्यापार होटल आदि | 16.3 |
| परिवहन, संचार सेवा | 7.8 |
| वित्त, स्थावर सम्पदा, व्यवसाय | 16.7 |
| समुदाय, सामाजिक तथा अन्य | 14.4 |
| **कुल सेवा क्षेत्रक** | **55.2** |

*स्रोतः आर्थिक सर्वेक्षण*

आप देख सकते हैं कि वित्तीय, स्थावर सम्पदा तथा व्यवसायकि सेवाओं का कुल 55.2 में से 16.7 प्रतिशत योगदान रहा। वित्तीय सेवाओं में बैंकिंग तथा बीमा को सम्मिलित किया जाता है। व्यापार तथा होटल सेवाओं का योगदान 16.3 प्रतिशत रहा। समुदाय तथा सामाजिक सेवाओं, जिनमें लोक प्रशासन, रक्षा आदि सेवाओं को सम्मिलित किया जाता है, का योगदान 14.4 प्रतिशत रहा जबकि परिवहन तथा संचार सेवाओं का राष्ट्रीय आय में 7.8 प्रतिशत योगदान रहा।

### (i) रोजगार प्रदान करने में योगदान

आज अधिकाधिक लोगों को सेवा क्षेत्रक में रोजगार मिल रहा है। 2009-10 में देश में कुल रोजगार स्तर के 29.4 प्रतिशत को इस क्षेत्रक में रोजगार प्राप्त हुआ। आगे आने वाले समय में इस आंकड़े में और वृद्धि होने वाली है। इसका मुख्य कारण है कि भारत में प्रत्येक वर्ष शिक्षित लोगों की संख्या में वृद्धि हो रही है। वे विभिन्न क्षेत्रों से जैसे 10वीं पास, कला, वाणिज्य, विज्ञान, इंजीनियरिंग, औषधि विज्ञान तथा अन्य व्यवसायिक विषयों में स्नातक आदि होते हैं। सेवा क्षेत्रक में इन लोगों की आवश्यकता होती है। मजदूरी और वेतन के सम्बन्ध में, सेवा क्षेत्रक, कृषि क्षेत्रक की अपेक्षा अधिक भुगतान करता है। कृषि की तुलना में, सेवा क्षेत्रक अधिक रोजगार के अवसर प्रदान करता है। ऐसी भिन्न-भिन्न प्रकार की सेवाएं अस्तित्व में हैं जो पूरे वर्ष प्रदान की जाती है। लेकिन, कृषि में कुछ मौसमी गतिविधियां ही होती हैं। इसलिये, जैसे-जैसे लोग अधिक शिक्षित होते जाते हैं वे सेवा क्षेत्रक की ओर बढ़ते हैं। इसलिये, सेवा क्षेत्रक में रोजगार बढ़ रहा है।

### (ii) विदेशों से कोषों को आकर्षित करने में योगदान

भारत के सेवा क्षेत्रक के विकास को देखकर विदेशों से लोग लाभ कमाने के लिये इस क्षेत्र में अधिक धन निवेश करने में अपनी रूचि प्रदर्शित कर रहे हैं। बैंकिंग, बीमा, व्यापार,

परिवहन, होटल सेवाओं ने संयुक्त रूप से एक लाख अठारह हजार करोड़ रु. से अधिक प्रत्यक्ष निवेश के रूप में विदेशों से आकर्षित किए हैं। हाल में, भारत में कम्प्यूटर सेवाओं में कई गुना वृद्धि हुई है। इसने सैंतालीस हजार करोड़ रु. से अधिक विदेशों से आकर्षित किए हैं। यदि निवेश किए जाते हैं तो अधिक रोजगार के अवसरों का सृजन होता है। यह देश के लिये लाभदायक है।

### (iii) निर्यातों में सेवा क्षेत्रक का योगदान

निर्यात से तात्पर्य - डालर, यूरो, येन, पौण्ड आदि के रूप में विदेशी मुद्रा अर्जित करने के लिये विदेशी नागरिकों को वस्तुएं तथा सेवाएं बेचना है। हाल के वर्षों में, भारत के सेवा क्षेत्रक ने, निर्यातों के माध्यम से देश के लिये विदेशी मुद्रा अर्जित करने में बहुत बड़ा योगदान दिया है। हमारी व्यवसायिक सेवाएं जिनमें सूचना प्रौद्योगिकी, परामर्श सेवाएं, कानूनी सेवाएं आदि को सम्मिलित किया जाता है, विश्व स्तर की हो चुकी हैं।

वर्ष 2009-10 में भारत ने सेवाओं के निर्यात से लगभग 4.35 लाख करोड़ रुपये अर्जित किये।

### पाठगत प्रश्न 20.4

1. भारत में 2009-10 में सेवा क्षेत्रक का रोजगार में कितना अंश था?
2. 2009-10 में भारत की राष्ट्रीय आय में सेवा क्षेत्रक का कितना अंश था?

## 20.6 अर्थव्यवस्था के तीनों क्षेत्रकों में सहबन्धन

अर्थ व्यवस्था के तीनों क्षेत्रक परस्पर जुड़े होते हैं। वास्तव में ये एक दूसरे के पूरक एवं परिशिष्ट होते हैं। इसे समझने के लिये हम आपको एक कहानी सुनाते हैं।

एक कृषक, हरी सिंह, रामपुर गांव में अपनी कृषि भूमि पर गेहूँ की खेती करता है। गत वर्ष अच्छी वर्षा होने के कारण उसकी फसल अच्छी हुई। इसलिये वह 10 क्विंटल गेहूँ स्थानीय मंडी में बेच सका तथा शेष 10 क्विंटल अपने परिवार के उपभोग के लिये रख सका। इस वर्ष, उचित वर्षा नहीं हुई। इस क्षेत्र में सिंचाई की भी कोई सुविधा नहीं है तो वह गेहूँ की फसल की सिंचाई कैसे करे। हरी सिंह ने, भूमि से जल निकालने का निश्चय किया। लेकिन इसके लिये उसको डीजल पम्प सैट की आवश्यकता पड़ती है। डीजल पम्प सैट कौन देगा? इसका उत्पादन 'रवि मेनूफक्चरर्स' नामक एक विनिर्माण इकाई करती है जो 200 कि.मी. दूर करीमनगर नामक औद्योगिक क्षेत्र में स्थित है। अब इतनी दूर जाना तो कठिन कार्य है। हरी सिंह के एक मित्र गंगा सिंह ने उससे कहा कि चिन्ता करने की कोई बात नहीं है। वह हरी सिंह को शिव मंडी नामक सबसे पास के कस्बे में लेकर गया। बाजार में गंगा के बहनोई की 'पप्पू हार्डवेयर स्टोर' के नाम से एक दुकान है जिस पर पंप सैट बेचे जाते हैं। जब हरी सिंह ने पम्प सैट के बारे में पूछा तो पप्पू ने उसे दो घंटे इंतजार करने के लिये कहा क्योंकि जो ट्रक करीमनगर से 50 रवि पम्प सैट तथा ट्रैक्टरों के लिये कुछ पुर्जे लेकर आ रहा है, वह दुकान पर उस समय में पहुँच जायेगा। पप्पू ने रवि क्षेत्रपाल से जो रवि पम्प का मालिक

है, अपने मोबाइल फोन पर इसे सुनिश्चित करने के लिए बात भी की। उसी बीच, गंगा और हरी सिंह ने एक चाय की दुकान पर चाय तथा नाश्ता लिया, प्राथमिक विद्यालय शिक्षा के लिये हरी छोटी पुत्री के प्रवेश के बारे में पूछताछ के लिये गये तथा गंगा के पुत्र के लिये जिसे घर पर बुखार था, स्वास्थ्य केन्द्र से दवाएं खरीदी। दो घण्टे के पश्चात जब वे पप्पू की दुकान पर वापस आये तो उन्होंने श्रमिकों को पम्प सैट उतारते हुए देखा। पप्पू ने उनको बताया कि उसने करीमनगर में फैक्ट्ररी को 50 पम्प सैट का आर्डर दिया था। ट्रक उसी बाजार में दूसरी दुकान जो मोटर गाड़ियों तथा ट्रैक्टर के पुर्जों का विक्रय करती है, को पुर्जे सौंप देगा। हरी ने देखा कि पप्पू ने ट्रक ड्राइवर को 1,00,000 रु. का चैक दिया जिसे उसने रवि क्षेत्रपाल की ओर से प्राप्त किया। क्योंकि राशि बड़ी है, नकद देना सुरक्षित नहीं है। चैक एक उससे बेहतर विकल्प है। पप्पू ने कहा मि. क्षेत्रपाल धन प्राप्त करने के लिए इस चैक को अपने बैंक खाते में जमा करा सकते हैं। उसने आगे कहा कि यह भुगतान कुछ पिछले देय को चुकाने के लिये है। पम्पों के लिये भुगतान ग्राहकों को पम्प बेचने के बाद इसी प्रकार कर दिया जाएगा। हरी सिंह ने पप्पू को 7000 रु. का भुगतान करके एक पम्प सैट खरीद लिया। ''इस वर्ष खराब **मानसून** के कारण पम्प सैटों की बहुत मांग है तथा ये शीघ्र ही बिक जायेंगे'' पप्पू ने विश्वासपूर्वक कहा। ''अब ट्रक का क्या होगा'' गंगा सिंह के साथ गांव को वापस लौटते हुए हरी ने पूछा। अब ट्रक मंडी से गेहूँ तथा सब्जियाँ ले जाएगा जिन्हें करीमनगर औद्योगिक क्षेत्र तथा कस्बे में बेच दिया जाएगा'' गंगा ने उत्तर दिया।

उपरोक्त कहानी से, आप कृषि, उद्योग तथा सेवा क्षेत्रकों में आसानी से सम्बन्ध स्थापित कर सकते हैं। हरी सिंह की ही भांति कृषि क्षेत्र में अनेक कृषक हैं, जिन्हें अपनी भूमि की सिंचाई के लिये डीजल पम्पों की आवश्यकता है। पम्पों के अतिरिक्त भी अनेक अन्य आगतों जैसे उर्वरक, कीटनाशक, हल, ट्रैक्टर आदि की खेती बाड़ी में आवश्यकता होती है। इन वस्तुओं की भी उद्योगों द्वारा ठीक उसी प्रकार आपूर्ति की जाती है जिस प्रकार से उपरोक्त कहानी में पम्प सेटों की। बदले में उद्योगों तथा सेवा क्षेत्रकों में कार्यरत लोगों को कृषि क्षेत्रक द्वारा भोजन की आपूर्ति ठीक उसी प्रकार की जाती है जैसे कि हरी सिंह ने अपने अतिरिक्त गेहूँ को मंडी में बेचा था। तो फिर सेवा क्षेत्रक की क्या भूमिका है? उसकी भूमिका कृषि तथा उद्योगों के बीच के लेनदेनों को सुगम तथा सुनिश्चित करना है। कहानी में ट्रक द्वारा पम्पों तथा पुर्जो का करीमनगर से शिव मंडी ले जाना तथा अपनी वापसी यात्रा में भोजन सामग्री ले जाना परिवहन सेवा का एक भाग है। आर्डर के अनुसरण के लिये मोबाइल फोन का प्रयोग संचार सेवाओं का एक भाग है। बैंक में चैक जमा करना वित्तीय सेवाओं का भाग है। पप्पू की दुकान वस्तुओं की सुपुर्दगी प्रदान करने की व्यवसायिक सेवा प्रदान करती है। ध्यान दीजिये ये सभी गतिविधियाँ मुद्रा के लेनदेनों की सहायता से की जाती हैं। इस कहानी में हरी सिंह ने गेहूँ बेचा तथा मुद्रा प्राप्त की। उसने पम्प खरीदने के लिये मुद्रा का प्रयोग किया। पप्पू ने हरी से मुद्रा प्राप्त की तथा अपना लाभ रखने के बाद इसे पम्पों के आपूर्ति करने वाले को दे दिया। मुद्रा प्राप्त करने के पश्चात पम्पों की आपूर्ति करने वाला ट्रक वाले को उसका किराया तथा उद्योग में लोगों को मजदूरी का भुगतान करेगा। ये लोग इस मुद्रा का प्रयोग ट्रक द्वारा मंडी से लाये गये भोजन को स्थानीय बाजार से खरीदने में प्रयोग करेंगे।

इस सरल सी कहानी से अब आप सोच सकते हैं कि पूरी अर्थव्यवस्था आन्तरिक रूप से किस प्रकार जुड़ी हुई है।

## पाठगत प्रश्न 20.5

1. चैक द्वारा भुगतान करने का एक लाभ बातइये।
2. 'खाद्यान्नों का परिवहन' किस क्षेत्रक का भाग है?

   (अ) कृषि (ब) उद्योग (स) सेवा

## आओ करें और सीखें

अपने स्थानीय बाजार में जायें तथा वहाँ पर जो सेवाएं आपको मिलती हैं, उनकी एक सूची तैयार करें। तथा ऐसे पांच कृषि तथा औद्योगिक उत्पादों की सूची भी तैयार करें जो आप वहाँ देखते हैं। इनकी उत्पत्ति के स्थान का भी पता लगायें।

## आपने क्या सीखा

- अर्थव्यवस्था में तीन क्षेत्रक होते हैं जिनके नाम हैं, प्राथमिक (कृषि तथा सम्बन्धित गतिविधयाँ), द्वितीयक (विनिर्माण आदि) तथा तृतीयक (सेवाएं)।
- ये सभी क्षेत्रक राष्ट्रीय आय के सृजन तथा वृद्धि में रोजगार के अवसरों के सृजन में, वस्तु और सेवाओं की आपूर्ति करने में तथा आधारिक संरचना के सृजन में योगदान देते हैं।
- ये तीनों क्षेत्रक एक-दूसरे के पूरक तथा परिशिष्ट होते हुए आपस में जुड़े होते है।

## पाठान्त प्रश्न

1. प्राथमिक क्षेत्रक के उपक्षेत्रकों के नाम लिखिये।
2. द्वितीयक क्षेत्रक के उपक्षेत्रकों के नाम लिखिये।
3. तृतीयक क्षेत्रक के उपक्षेत्रकों के नाम लिखिये।
4. प्राथमिक क्षेत्रक की भूमिका तथा महत्व की व्याख्या कीजिये।
5. द्वितीयक क्षेत्रक की भूमिका तथा महत्व की व्याख्या कीजिये।
6. तृतीयक क्षेत्रक की भूमिका तथा महत्व की व्याख्या कीजिये।
7. अर्थव्यवस्था के तीनों क्षेत्रक किस प्रकार परस्पर जुड़े होते हैं?

## पाठगत प्रश्नों के उत्तर

### पाठगत प्रश्न 20.1

1. (अ)
2. कृषि

### पाठगत प्रश्न 20.2

1. 234 मिलियन टन
2. डबल रोटी, फलों के मुरब्बे, अचार
3. 50 प्रतिशत से अधिक
4. 15 प्रतिशत

### पाठगत प्रश्न 20.3

1. कोई उद्योग जिसमें संयत्रों तथा मशीनरी पर कम से कम 25 लाख रु. का व्यय करके स्थापना की जा सकती है, लघु उद्योग कहलाता है।
2. 28 प्रतिशत
3. टेलीफोन के टावर, हीराकुंड बांध

### पाठगत प्रश्न 20.4

1. 29.4 प्रतिशत
2. 55.2 प्रतिशत

### पाठगत प्रश्न 20.5

1. सुरक्षा (बैंक खाते के माध्यम से व्यक्ति तक पहुँचता है)
2. सेवा

21

# भारतीय अर्थव्यवस्था के सम्मुख चुनौतियां

देश के प्रत्येक नागरिक को, एक अच्छा जीवन बिताने का अधिकार है। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी न्यूनतम आवश्यकताएं, जैसे भोजन, स्वास्थ्य की सुरक्षा, आवास, मौलिक शिक्षा आदि को पूरा करने के योग्य होना चाहिए। परन्तु भारत एक निर्धन देश है, जहां कुल जनसंख्या के बहुत बड़े भाग के पास इन सब चीजों को प्राप्त करने की क्षमता नहीं है। इस वास्तविकता के कारण यह और अधिक बुरा हो जाता है क्योंकि हमारी अर्थव्यवस्था, पर्याप्त रोजगार के अवसर उपलब्ध नहीं करा सकती जिससे कि निर्धन लोगों को नौकरी मिल सके और वे आय कमा सकें इसलिए, निर्धनता और बेरोजगारी का उन्मूलन हमारी अर्थव्यवस्था के सम्मुख एक बहुत बड़ी चुनौती है। इसी प्रकार जीवन की ऊँची गुणवत्ता को उचित शिक्षा प्राप्त करके, और स्वास्थ्य सुरक्षा सुविधाओं के द्वारा ही प्राप्त किया जाता है। क्योंकि जनसंख्या की दृष्टि से, भारत एक बहुत बड़ा देश है, सरकार द्वारा इसके सभी नागरिकों को, शिक्षा और स्वास्थ्य सुरक्षा का प्रबंध करना एक बहुत बड़ी चुनौती है। सरकार के सामने, एक दूसरी चिंता, बाजार में वस्तुओं की बढ़ती हुई कीमतें हैं जिसे मुद्रा स्फीति कहते हैं। बढ़ती हुई कीमतों का निर्धन और मध्यम वर्ग के लोगों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। इसलिए, कीमत स्तर पर नियंत्रण करना, जब भी आवश्यक हो, एक बहुत बड़ी समस्या है। अंत में, जनसंख्या और उसकी आवश्यकताओं के बढ़ने के साथ राष्ट्र की आय भी बढ़नी चाहिए जिससे कि विकास की प्रक्रिया चलती रहे। इसलिए, प्रत्येक वर्ष आर्थिक संवृद्धि प्राप्त करना, अर्थव्यवस्था के सम्मुख एक बहुत बड़ी चुनौती है।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप समझ सकेंगे :

- निर्धनता का अर्थ तथा सरकार द्वारा निर्धनता उन्मूलन और रोजगार उपलब्ध कराने के लिए अपनाई गई योजनाएं;
- सरकार द्वारा शिक्षा और स्वास्थ्य सुरक्षा सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए उठाये गये कदम;

- कीमतों में वृद्धि या मुद्रा स्फीति को नियंत्रित करने की विधियां;
- सरकार द्वारा उच्च आर्थिक संवृद्धि के लिए की जाने वाली व्यूह रचना।

## 21.1 निर्धनता और बेरोजगारी को हल करना

भारत में निर्धन कौन है? **भारत सरकार के योजना आयोग के अनुसार, कोई भी व्यक्ति जिसे अपने भोजन से ग्रामीण क्षेत्र में 2400 कि. कैलोरी और शहरी क्षेत्र में 2100 कि. कैलोरी नहीं मिल पाती, निर्धन कहलाता है।** हम भारत में इसे गरीबी रेखा कहते हैं। इस गरीबी रेखा की व्याख्या कैसे की जाए? आप जानते हैं कि हमें जीवित रहने के लिए भोजन सबसे अधिक आवश्यक है। हम अपने शरीर को ऊर्जा देने के लिए भोजन करते हैं जिससे कि हम कुछ कार्य कर सकें। ऊर्जा का माप कैसे किया जाता है? हमारे शरीर की प्रतिदिन ऊर्जा की न्यूनतम आवश्यकता क्या है?

ऊर्जा को कि.कैलोरी के रूप में मापा जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में अपनी आजीविका कमाने के लिये लोग बहुत सा कठिन कार्य करते हैं। प्रबुद्ध व्यक्तियों के अनुसार किसी व्यक्ति द्वारा ऐसे कार्य करने के लिए ग्रामीण क्षेत्र में 2400 कि.कैलोरी और शहरी क्षेत्र में 2100 कि. कैलोरी की आवश्यकता है। यह कैलोरी प्राप्त करने के लिए किसी व्यक्ति को, अनाज, दालें और सब्जियों आदि के रूप में कुछ भोजन की मात्रा की आवश्यकता होती है। इन खाद्य मदों को खरीदने के लिए व्यक्ति के पास कुछ मात्रा में मुद्रा होनी चाहिए। इससे यह संकेत मिलता है कि **यदि व्यक्ति काम के लिए आवश्यक ऊर्जा प्राप्त करने के लिए, भोजन खरीदने के लिए, अनिवार्य राशि कमाने में समर्थ नहीं होता, तो वह व्यक्ति गरीबी रेखा के नीचे या स्पष्ट रूप से निर्धन कहलाता है।**

इस आधार पर यह पाया जाता है कि भारत में लगभग कुल जनसंख्या का 27.5 प्रतिशत भाग वर्ष 2004-05 में निर्धन था जो लगभग 27 करोड़ था। किन्तु क्या आपके विचार में, निर्धनता केवल खाये गये भोजन के रूप में ही मापी जानी चाहिए। अन्य अनिवार्य मदें, जैसे वस्त्र, जूते आदि भी न्यूनतम आवश्यकताओं के अंदर आने चाहिए। इसका तात्पर्य है इन सब मदों को खरीदने के लिए और अधिक राशि की आवश्यकता है। भारत सरकार के अनुसार, यदि भोजन, वस्त्र, जूते और दूसरे गैर खाद्य मदें भी शामिल कर लिये जाएं तो भारतीय जनसंख्या का 37 प्रतिशत से अधिक भाग, अर्थात 37 करोड़ से अधिक लोग निर्धन थे।

इसी प्रकार, रोजगार के विषय में भी भारत की स्थिति अच्छी नहीं है। गरीबी का एक प्रमुख कारण उन व्यक्तियों में बेरोजगारी है जो काम करने के इच्छुक हैं। भारत में उद्योगों, शिक्षा और प्रशिक्षण की धीमी वृद्धि बेरोजगारी के प्रमुख कारण हैं। हमारी कृषि पर भी जनसंख्या का अधिक भार है और उसमें रोजगार, मौसमी है। जब फसल की कटाई का काम समाप्त हो जाता है, कृषि श्रमिक और किसान बेरोजगार हो जाते हैं। भारत में वर्ष 2010 तक श्रम-शक्ति की जनसंख्या लगभग 43 करोड़ थी। श्रम शक्ति से अभिप्राय उन व्यक्तियों से है जो कार्य कर सकते हैं और जिनकी आयु 15 वर्ष से 59 वर्ष के आयु वर्ग में है। दैनिक आधार पर लगभग 3 या 4 करोड़ या श्रम शक्ति के लगभग 8 प्रतिशत लोगों को रोजगार नहीं मिलता।

## 21.2 रोजगार उत्पन्न करना या निर्धनता उन्मूलन कार्यक्रम

निर्धनता दूर करने और अपने नागरिकों को रोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए सरकार क्या कर रही है? इन गंभीर समस्याओं को हल करने के लिए, भारत की सरकार स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात से नीतियां बनाती रही है और बहुत सी धन राशि खर्च करती रही है। यही कारण है गरीबी रेखा से नीचे रहने वालों की जनसंख्या समय के साथ घट रही है, भले ही धीमी गति से। इसी प्रकार बेरोजगारी की दर को नियंत्रण से बाहर बढ़ने नहीं दिया गया है। यह सरकार द्वारा निम्न कार्यक्रम लागू करने के कारण सम्भव हो पाया है।

### 1. महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारन्टी योजना (MGNREGS)

इस योजना का उद्देश्य, ग्रामीण जनसंख्या को, एक वर्ष में कम से कम 100 दिनों का वेतन रोजगार गारन्टी के साथ उपलब्ध कराना है। कार्य, अकुशल शारीरिक कार्य की प्रकृति का है। यह योजना, वर्ष 2006 में भारत के 200 जिलों में प्रारंभ की गई थी। फिर 2008 में इसकी घोषणा पूरे देश के लिए की गई। किसी परिवार का कोई भी ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाला वयस्क सदस्य, एक वर्ष में, 100 दिन का शारीरिक कार्य दैनिक मजदूरी के आधार पर कर सकता है। वर्ष 2010 में, दिसम्बर के महीने तक लगभग 4.1 करोड़ परिवार, इस योजना के अन्तर्गत लाभ उठा चुके थे। वर्ष 2010-11 में सरकार ने इस योजना को चलाने के लिए 40100 करोड़ रु. की राशि निर्धारित की थी।

### 2. स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना (SGSY)

यह योजना अप्रैल 1999 में प्रारंभ की गई। इस योजना का उद्देश्य, ग्रामीण गरीब लोगों की, स्वरोजगार के माध्यम से, आय सृजन करने की क्षमता को बढ़ाने में सहायता करना है। इस योजना का प्राथमिक केन्द्र बिन्दु अनुसूचित जाति और जनजाति तथा स्त्रियां हैं। किन्तु अन्य भी इसका लाभ प्राप्त कर सकते हैं। इस योजना के अन्तर्गत गरीब लोगों को प्रशिक्षण, बैंक से ऋण और अन्य सुविधाएं दी जाती हैं जिससे कि वे निर्धनता को दूर करने की अपनी क्षमता का निर्माण कर सकें। व्यक्ति, जो अपना स्वयं का कार्य करते हैं स्वनियोजित या स्वरोजगारी कहलाते हैं। यह योजना, मुख्य रूप से इन स्वरोजगारियों के लिए है। इस योजना के अंतर्गत, निर्धन परिवारों को प्रशिक्षण देने के लिए सरकार ने हर जिले में ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना की है। लगभग 77000 ग्रामीण युवक इस योजना के अंतर्गत, दिसम्बर 2010 तक प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं।

### 3. स्वर्ण जयन्ती शहरी रोजगार योजना (SJSRY)

इस योजना का उद्देश्य शहरी क्षेत्रों में रहने वाले गरीब परिवारों को रोजगार उपलब्ध कराना है। यह योजना सर्वप्रथम 1997 में आरंभ की गई। इसके बाद 2009 में बहुत से नये प्रयास आरम्भ किये गये जिनमें निम्नलिखित शामिल हैं :

(i) स्वरोजगार सृजन करने के कार्यक्रम

(ii) ग्रामीण स्त्रियों के लिए कार्यक्रम

(iii) शहरी निर्धनों के लिए प्रशिक्षण

(iv) सामुदायिक विकास कार्यक्रम

(v) वेतन रोजगार कार्यक्रम

सरकार ने वर्ष 2010-11 के लिये स्वर्ण जयन्ती शहरी रोजगार योजना के लिए 590 करोड़ रु. की राशि निर्धारित की। इस योजना के अंतर्गत, दिसम्बर 2010 तक, कुल 6 लाख 50 हजार से अधिक परिवार लाभ उठा चुके हैं।

## पाठगत प्रश्न 21.1

1. ग्रामीण क्षेत्रों के लिए गरीबी रेखा क्या है?
2. भारत में श्रम शक्ति की जनसंख्या क्या है?
3. शहरी गरीबी को हल करने की योजना का नाम दो।

## 21.3 शिक्षा उपलब्ध कराना

हमारे राष्ट्र के सामने दूसरी चुनौती सभी नागरिकों को शिक्षित करना है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में पुरुषों की साक्षरता दर 82.14 प्रतिशत, महिलाओं की 65.46 प्रतिशत और वयस्कों की 74.04 प्रतिशत है। भारत सरकार ने सभी लोगों को शिक्षित करने के लिए निम्न उपाय किये हैं।

### 1. बच्चों को निशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009

भारत सरकार ने वर्ष 2009 में 6 से 14 वर्ष के आयु के सभी बच्चों के लिए निशुल्क शिक्षा एक मौलिक अधिकार बना दिया है। यह नियम अप्रैल 2010 से लागू कर दिया गया है। अब 6 से 14 आयु वर्ग के सभी बच्चे निशुल्क शिक्षा का दावा कर सकते है और सरकार इसे उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। इसके अनुसार सरकार अधिक से अधिक प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालय खोलेगी और पढ़ाने के लिए शिक्षकों को नियुक्त करेगी।

### 2. प्रारंभिक और माध्यमिक शिक्षा के लिए योजना

प्रारंभिक और माध्यमिक शिक्षा के विकास के लिए मुख्य योजनाएं नीचे दी गई हैं:

(i) सर्व शिक्षा अभियान **(SSA)**

सर्व शिक्षा अभियान 6 से 14 आयु वर्ग के बच्चों को शिक्षा देने के लिए केन्द्रीय सरकार द्वारा राज्य सरकारों की साझेदारी में लागू किया गया है। शिक्षा के अधिकार

के अधिनियम जो बाद में आया, को ध्यान में रखते हुए सर्व शिक्षा अभियान में उसी प्रकार सुधार किया गया है। इस योजना के उद्देश्य हैं

(अ) विद्यालय में सभी बच्चों का नामांकन

(ब) बच्चों को विद्यालय में उच्च प्राथमिक स्तर तक रखना

(स) 'विद्यालय के कैम्प में वापस' भेज कर सत्कार करना

(द) शिक्षा की गारंटी देने वाले केन्द्र स्थापित करना

(ड) शिक्षा देने में जाति, लिंग आदि के कारण आने वाले अंतर को समाप्त करना।

सितम्बर 2010 तक 309, 727 नये विद्यालय थे जिनमें 11 लाख से अधिक अध्यापकों की नियुक्ति की गई थी। लगभग 9 करोड़ बच्चों को पाठ्य पुस्तकें उपलब्ध कराई गईं। बालिकाओं को शिक्षा देने के लिए सर्व शिक्षा अभियान में मुख्य प्रारंभिक स्तर पर बालिकाओं को शिक्षा देने की योजना नामक एक मुख्य घटक है। इस योजना के अन्तर्गत बालिकाओं को शिक्षा देने के लिए हर समूह में आदर्श विद्यालयों की स्थापना की जा रही है। वर्दी और अध्ययन सामग्री आदि बालिकाओं को निःशुल्क उपलब्ध करायी जाती है। इस योजना के अन्तर्गत बालिका विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए शिक्षकों को विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है।

सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत बालिकाओं के लिए कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय नाम के आवासीय विद्यालय भी हैं। कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों में प्रवेश लेने वाली बालिकाओं में से 75 प्रतिशत अनुसूचित जाति और जनजाति, अन्य पिछड़ी जाति और अल्प संख्यक समुदाय भी हैं। शेष 25 प्रतिशत उन परिवारों की हैं जो गरीबी रेखा से नीचे हैं। 2 लाख से अधिक बालिकाओं का नाम मार्च 2010 तक कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों में नामांकित किया गया हैं।

### (ii) विद्यालयों में दोपहर का भोजन उपलब्ध कराने का राष्ट्रीय कार्यक्रम

बच्चों को विद्यालय में आकर्षित करने और उन्हें रोकने के लिए सरकार ने दोपहर के भोजन का कार्यक्रम प्रारंभ किया है। इसके पीछे मंशा यह है कि बच्चों को अच्छा भोजन देकर स्वास्थ्यवर्धक आहार उपलब्ध कराया जाय। दोपहर का भोजन समाज के विभिन्न वर्गों के बच्चों को निकट लाता है और एक दूसरे के प्रति सद्भावना का विकास करता है। 14 करोड़ से अधिक बच्चों को 2009-10 में इससे लाभ हुआ।

### (iii) राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (RMSA)

राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान माध्यमिक स्तर पर प्रवेश लेने वाले बच्चों का अनुपात बढ़ाने के लिए वर्ष 2009 में प्रारंभ किया गया। इस कार्यक्रम के कुल

व्यय का 75 प्रतिशत केन्द्रीय सरकार वहन करती है जबकि 25 प्रतिशत राज्य सरकारें उपलब्ध कराती हैं। उत्तर पूर्वीय क्षेत्रों के लिए यह अनुपात 90 : 10 है।

### (iv) विकलांगों के लिए माध्यमिक स्तर पर समावेशित शिक्षा (IEDSS)

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की सहायता के लिए सरकार ने 2009-10 से माध्यमिक स्तर पर समावेशी शिक्षा कार्यक्रम प्रारंभ किया। इसका उद्देश्य नवीं से बारहवीं कक्षा के स्तर तक अध्ययन करने वाले विकलांग बच्चों की शिक्षा के लिए 100 प्रतिशत केन्द्रीय सहायता उपलब्ध कराना है।

### (v) साक्षर भारत

15 वर्ष से अधिक आयु के युवकों में शिक्षा और साक्षरता को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार ने अपने राष्ट्रीय साक्षरता लक्ष्य को साक्षर भारत के रूप में पुनः ढाला है। इस कार्यक्रम का विशेष केन्द्र बिन्दु महिलायें होंगी।

## 3. उच्च और तकनीकी शिक्षा का कार्यक्रम

विद्यालयों से शिक्षा पास करने के पश्चात उच्च शिक्षा, कॉलेज शिक्षा से प्रारंभ होती है। उच्च और तकनीकी शिक्षा में कला, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान, इंजिनियरिंग, औषधि, सूचना प्रौद्योगिक में स्नातक शामिल हैं। यदि कोई देश शिक्षित समाज की स्थापना करना चाहता है और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अन्य देशों के साथ प्रतियोगिता करना चाहता है तो उसे अपनी उच्च और तकनीकी शिक्षा के स्तर में सुधार करना चाहिए। भारत सरकार ने उच्च और तकनीकी शिक्षा में विकास के लिये अनेक कदम उठाये हैं जो कि नीचे दिये गये हैं :

1. ग्यारहवी योजना अवधि में केन्द्रीय सरकार ने राज्य सरकारों के सहयोग से आठ नये विश्वविद्यालय, 10 नये इंजीनियरिंग कॉलेज स्थापित करने का उद्देश्य बनाया है।
2. नये आदर्श कॉलेजों की देश के पिछडे हुए जिलों में स्थापना की जायेगी।
3. सूचना प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने के लिए 20 नये भारतीय सूचना प्रोद्योगिकी संस्थान स्थापित किये जाएगें।
4. राष्ट्रीय तकनीकी संस्थान और भारतीय तकनीकी संस्थान के रूप में और अधिक इंजीनियरिंग कॉलेज बनाये जाऐंगे जो वर्ष 2011-12 से भारत के विभिन्न भागों में कार्य करने लगेंगे।
5. विज्ञान में अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने 5 भारतीय विज्ञान और अनुसंधान संस्थानों की देश के विभिन्न भागों में स्थापना की है।
6. अन्त में ग्यारहवी पंचवर्षीय योजना में 5 नये इंडियन इन्स्टीट्यूट आफ मैनेजमेंट काम करने लगे हैं और 2011-12 में 2 और कार्य आरंभ कर देंगे।

## पाठगत प्रश्न 21.2

1. सर्व शिक्षा अभियान के तीन उद्देश्य बताओ।
2. बालिकाओं को शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए सुझाव दीजिए।
3. 'दोपहर का भोजन योजना' का एक लाभ बतायें।

## 21.4 स्वास्थ्य सुरक्षा प्रदान करना

देश के सम्मुख एक अन्य मुख्य चुनौती लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सुरक्षा सुविधाएं उपलब्ध कराना है। स्वास्थ्य सुरक्षा के अभाव में प्रति 100,000 महिलाओं में से 254 स्त्रियां बच्चों को जन्म देते समय मर जाती हैं। इसे **मातृत्व मृत्यु दर** कहते हैं। प्रति 1000 बच्चों में से 50 जन्म के समय मर जाते हैं जिसे **शिशु मृत्यु दर** कहते हैं। प्रति हजार 15 बच्चे 4 वर्ष की आयु पूरा करने से पहले मर जाते हैं जिसे **बाल मृत्यु दर** कहते हैं। निश्चय ही ये सूचनाएं उत्साहवर्धक नहीं हैं। देश में बहुत से गांव और दूर दराज क्षेत्र हैं किन्तु शहरों और कस्बों की तरह इन क्षेत्रों में लोगों की समस्याओं पर ध्यान देने के लिए पर्याप्त स्वास्थ्य केन्द्र या अस्पताल और डाक्टर नहीं हैं।

2010-11 में सरकार ने स्वास्थ्य सुरक्षा पर कुल व्यय का केवल 5 प्रतिशत खर्च किया जो हमारे राष्ट्रीय आय का केवल 1.27 प्रतिशत है। हमारा पड़ौसी देश श्रीलंका भी प्रति व्यक्ति स्वास्थ्य सेवाओं पर भारत से अधिक व्यय करता है।

आइये, स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने में सरकार की भूमिका को देखें।

### (i) राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (NRHM)

राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन की स्थापना, 2005 में ग्रामीण जनसंख्या को वहन करने योग्य एवं गुणात्मक स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए की गई। इसका उद्देश्य बीमारियां जैसे मलेरिया, कालाजार, अंधापन, आयोडीन की कमी, तपेदिक, कुष्ठ रोग, फाइलेरिया आदि को दूर करने के लिए जनता को जन स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार करके स्वास्थ्य और परिवार कल्याण योजनाओं को मजबूत बनाना है। राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन वर्तमान प्राथमिक और सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों में प्राण फूंकने के लिए आरंभ किया गया है। सितम्बर 2010 तक लगभग 8 लाख स्वास्थ्य कर्मचारियों को स्वास्थ्य सुरक्षा का प्रशिक्षण दिया गया है और 9 हजार से अधिक डाक्टरों और 26 हजार नर्सों को ग्रामीण जनसंख्या को स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के लिए अनुबंध के आधार पर नियुक्त किया गया है। राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य निगम बहुत सी सचल चिकित्सा इकाईयां भी चला रहा है जो लोगों को घर बैठे स्वास्थ्य सेवाएं देने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर आती जाती रहती हैं।

### (ii) जननी सुरक्षा योजना (JSY)

सरकार ने, बच्चे को जन्म देते समय मां के जीवन को बचाने के लिए जननी सुरक्षा योजना आरंभ की।

### (iii) प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना (PMSSY)

भारत में स्वास्थ्य सुरक्षा सेवाएं समान रूप से उपलब्ध नहीं हैं। कुछ राज्यों में चिकित्सा संस्थान, कॉलेज, अस्पताल के रूप में बहुत अच्छी स्वास्थ्य आधारित संरचना उपलब्ध है। जबकि दूसरे राज्यों में ये सुविधाएं नहीं हैं। इससे स्वास्थ्य सुरक्षा सेवाओं की उपलब्धता में क्षेत्रीय असंतुलन पैदा हो गया है और कहीं पर अधिक भीड़ पायी जाती है जहां वे सुविधाएं उपलब्ध हैं। उदाहरण के लिए, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान दिल्ली में स्थित है और एक विश्व स्तर का चिकित्सा संस्थान और अस्पताल है। क्योंकि अन्य राज्यों में ऐसी सुविधा उपलब्ध नहीं है, भिन्न-भिन्न राज्यों से लोग इस संस्थान में उपचार कराने के लिए दिल्ली आते हैं। इसका परिणाम यह है कि अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान चिकित्सा संस्थान में अधिक भीड़ हो गई है और इलाज कराने के लिए अधिक समय तक प्रतीक्षा करनी पड़ती है। इन समस्याओं का निदान करने के लिए, भारत सरकार ने प्रधान मंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना आरंभ की है। इस योजना के अंतर्गत अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान जैसे 6 नये संस्थान देश के विभिन्न भागों में स्थापित किये जायेंगे। इसका उद्देश्य विभिन्न राज्यों में विद्यमान 12 सरकारी चिकित्सा कॉलेजों का स्तर ऊँचा करना भी है।

### (iv) राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण

एड्स (Acquired Immune Deficiency Syndrome) एक भयानक स्वास्थ्य अव्यवस्था है जो उन लोगों को प्रभावित करती है जो HIV से संक्रमित हैं। भारत में 2009 में लगभग 24 लाख लोग HIV से प्रभावित थे जो विश्व में सर्वाधिक में से एक है। एक बार HIV नामक विषाणु मनुष्य के शरीर पर आक्रमण करता है तो मनुष्य की बीमारियों से लड़ने की शक्ति समाप्त हो जाती है और उसका इम्यून सिस्टम (immune system) समय के साथ कमजोर हो जाता है। ऐसी दशा में व्यक्ति यदि किसी बीमारी का शिकार हो जाता है तो वह स्वस्थ नहीं हो पाता। एड्स ने पूरे संसार की जनसंख्या को खतरे में डाल दिया है। भारत सरकार ने एड्स को रोकने के लिए लोगों में जागृति पैदा करने तथा विषाणु से प्रभावित लोगों का इलाज करने के लिये केन्द्र खोले हैं।

### पाठगत प्रश्न 21.3

1. राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन के उद्देश्य लिखें।

## 21.5 कीमत वृद्धि को रोकना

लोग बाजार में विभिन्न वस्तुएं खरीदने के लिए कीमत चुकाते हैं। यदि कीमतें बढ़ जाती हैं तो उतनी ही मात्रा में वस्तुओं और सेवाओं को खरीदना कठिन हो जाता है। परिणामस्वरूप व्यक्तियों के संतुष्टि के स्तर में कमी आती है। जब आप अधिक कीमत का भुगतान करते

हैं आपकी विद्यमान आय पहले से कम प्रतीत होती है, क्योंकि अब आपको कम मात्रा में वस्तुओं की अधिक कीमत देनी पड़ती है। इससे क्रेताओं पर बुरा प्रभाव पड़ता है। कीमते क्यों बढ़ती है? इसका सबसे सामान्य कारण यह है कि यदि वस्तु की वह मात्रा जो व्यक्ति बाजार से खरीदना चाहते हैं उसकी वास्तविक उपलब्धता से अधिक है तो उस विशिष्ट वस्तु की कमी हो जाएगी। इसके परिणामस्वरूप वस्तु की कीमत बढ़ जाएगी। यदि वस्तु का उत्पादन पर्याप्त मात्रा में नहीं हुआ है तो वस्तु की कमी हो सकती है। उदाहरण के लिये यदि सूखे की स्थिति उत्पन्न हो जाती है तो खाद्यान्न का उत्पादन घट जाता है। दूसरा कारण उचित भंडारण सुविधाओं के अभाव में वस्तु बर्बाद हो सकती हैं। अंतिम कारण है, यदि विक्रेता वस्तु की जमाखोरी कर लेते हैं और इसे बेचते नहीं जिससे मानवनिर्मित कमी हो जायगी। विक्रेता वस्तु की अधिक कीमत वसूल करने के लिए जानबूझ कर ऐसा करते हैं। जमाखोरी प्रायः अनिवार्य वस्तुओं जैसे प्याज, चावल, दवाईयां आदि की होती है। सरकार कीमत नियंत्रण में प्रमुख भूमिका निम्न प्रकार से अदा करती है :

(i) किसानों को विभिन्न प्रकार से सहायता करके जिससे अनाज के उत्पादन पर बुरा प्रभाव न पड़े। उदाहरण के लिए सरकार किसानों को बीज उर्वरक आदि नीची कीमत पर खरीदने की अनुमति देती है।

(ii) भंडारण गृह और कोल्ड स्टोरेज बनाकर अनाज और सब्जियां को ठीक प्रकार से रखने के लिए जिससे कि इस प्रकार की वस्तुओं की उपलब्धता की समस्या न हो।

(iii) अनिवार्य वस्तुओं की जमाखोरी पर कठोर निगरानी रखकर और दोषी को सजा देकर क्योंकि जमाखोरी एक अपराध है।

## 21.6 उच्च आर्थिक संवृद्धि प्राप्त करना

सरल रूप में हम आर्थिक संवृद्धि को देश की कुल आय और प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि के रूप में परिभाषित कर सकते हैं। यह तभी संभव है जबकि भारत का कृषि और उद्योगों का उत्पादन बढ़े और सेवा क्षेत्र का भी वांछित ढंग से विस्तार हो। इस दिशा में सरकार द्वारा उठाये गये कुछ कदम निम्न प्रकार हैं :

1. भारत दूसरी पंचवर्षीय योजना अर्थात 1956 से छोटे पैमाने, बड़े पैमाने और भारी उद्योगों की स्थापना को प्रोत्साहन देता रहा है। ये उद्योग, मनुष्यों के उपयोग के लिए वस्तुओं का उत्पादन, आधारित संरचना का निर्माण करने के लिए आवश्यक मशीनें और उपकरणों का उत्पादन करते हैं और सेवा क्षेत्र के विस्तार में सहायता करते हैं। उद्योग बहुत सी नौकरियां और ऊँची मजदूरी उपलब्ध कराते हैं।

2. सरकार खाद्यान्नों के उत्पादन को सुधारने के लिए अच्छी आगतों जैसे उत्तम बीज, खाद आदि के प्रयोग को प्रोत्साहन देती रही है।

3. सड़कों, रेलवे लाइन, हवाई अड्डों, संचार टावर, बिजली आदि के रूप में बेहतर आधारिक संरचना के कारण भारत का सेवा क्षेत्र तीव्र गति से बढ़ रहा है।

इस गति को बनाये रखने के लिए सरकार ने नियमों तथा उपनियमों में सुधार किया है जिससे कि लोग विकास की प्रक्रिया में आसानी से भाग ले सकें। ये कदम आर्थिक सुधार कहलाते हैं।

## पाठगत प्रश्न 21.4

1. एक क्रेता के लिए कीमत वृद्धि बुरी क्यों है?
2. जमा खोरी का अर्थ बताओ।
3. आर्थिक संवृद्धि की परिभाषा दो।

## आपने क्या सीखा

- रोजगार सृजन करने और निर्धनता उन्मूलन के लिए सरकार द्वारा कार्यक्रम हैं - महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना, स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना और स्वर्ण जयन्ती शहरी रोजगार योजना।
- शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए जैसे दोपहर का भोजन, साक्षर भारत, सर्व शिक्षा कार्यक्रमों आदि को लागू किया गया है।
- अच्छी स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन, एड्स नियंत्रण आदि कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं।
- कीमत वृद्धि नियंत्रण और आर्थिक संवृद्धि की प्राप्ति भी सरकार के सामने चुनौतियां हैं जिनकों अन्य बातों के अतिरिक्त उत्पादन को प्रोत्साहन देकर हल किया जाता है।

## पाठान्त प्रश्न

1. निर्धनता उन्मूलन योजनाएं क्या हैं? किसी एक की व्याख्या करो।
2. प्रारंभिक और माध्यमिक शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए किन्हीं दो योजनाओं का वर्णन करो।
3. राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन पर एक टिप्पणी लिखिए।
4. कीमत वृद्धि के नियंत्रण के लिए कुछ उपाय दीजिए।
5. आर्थिक संवृद्धि प्राप्त करने के लिए सरकार क्या कर रही है?

## पाठगत प्रश्नों के उत्तर

### पाठगत प्रश्न 21.1

1. 2400 कि. कैलोरी प्रति दिन प्रति व्यक्ति
2. 43 करोड़
3. स्वर्ण जयन्ती शहरी रोजगार योजना

### पाठगत प्रश्न 21.2

1. (अ) विद्यालयों में सभी बच्चों का नामांकन
   (ब) शिक्षा गारंटी केन्द्रों का निर्माण
   (स) 'विद्यालय के कैम्प में वापस' भेजकर सत्कार करना
2. (i) हर समुदाय में बालिकाओं के लिए आदर्श विद्यालयों की स्थापना
   (ii) बालिकाओं को वर्दी और अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराना
   (iii) बालिकाओं को पढ़ाने के लिए अध्यापकों को प्रशिक्षण देना
3. दोपहर का भोजन समाज के विभिन्न वर्गों के बच्चों को एक साथ खाने की अनुमति देता है और एक दूसरे के प्रति सद्भावना का विकास करता है।

### पाठगत प्रश्न 21.3

1. (i) स्वास्थ्य और परिवार कल्याण कार्यक्रमों को शक्तिशाली बनाना।
   (ii) बीमारियां जैसे मलेरिया, कालाजार, अंधापन, आयोडिन की कमी, तपेंदिक, फाइलेरिया, कुष्ठ रोग आदि को दूर करना।

### पाठगत प्रश्न 21.4

1. क्रेता को अपनी आय से पहले से अधिक मुद्रा का भुगतान करना पड़ता है यह एक बोझ बन जाता है।
2. जमाखोरी से अभिप्राय वस्तुओं की कृत्रिम कमी करने के लिए गुप्त रूप से भंडारण करना
3. आर्थिक संवृद्धि से अभिप्राय राष्ट्रीय और प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि से है।

# 22

# भारतीय अर्थव्यवस्था - विश्व के संदर्भ में

आप जानते हैं कि भारत विश्व के अनेक देशों में से एक है। देश एक दूसरे के साथ सम्पर्क स्थापित करते हैं और बहुत से अपने हित वाले क्षेत्रों में सम्बन्ध रखते हैं। एक देश के नागरिक टूरिस्ट के रूप में, नौकरी खोजने के लिए, व्यापार करने के लिए, अध्ययन करने के लिए, धर्मार्थ कार्यों के लिए और कुछ सरकारी कार्यों आदि के लिए दूसरे देशों की यात्रा करते हैं। इस अध्याय में मुख्य केन्द्र, भारत और शेष विश्व में आर्थिक सम्बन्ध हैं।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप समझ सकेंगे:

- देशों में आर्थिक सम्बन्ध का अर्थ;
- व्यापार का महत्व;
- भारत द्वारा वस्तुओं और सेवाओं का निर्यात और आयात;
- वैश्वीकरण का अर्थ;
- अंत में, हम दो बहुत ही महत्वपूर्ण अर्थव्यवस्थाओं, अमेरिका और चीन पर एक विहंगम दृष्टि डालेंगे जिससे कि आपको विश्व में भारत की तुलनात्मक स्थिति के विषय में कुछ ज्ञान हो सके।

## 22.1 देशों के बीच में आर्थिक सम्बन्ध का अर्थ

यदि आपको मुद्रा की आवश्यकता है तो आप इसे किसी मित्र अथवा बैंक से उधार ले सकते हैं। यदि आप एक पुस्तक खरीदना चाहते हैं तो आप अपनी स्थानीय पुस्तक की दुकान को मुद्रा का भुगतान करके, प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप वस्तुओं जैसे स्टेशनरी या कपड़े या जूते आदि के विक्रेता हैं तो आप उन्हें उन उपभोक्ताओं को बेचते हैं जो आपको कीमत का

भुगतान करते हैं। यदि आप किसी वस्तु का उत्पादन करना चाहते हैं तो आप कुछ मुद्रा का निवेश कर सकते हैं और एक फैक्ट्री आरम्भ कर सकते हैं और उन लोगों को रोजगार दे सकते हैं जो आपको अपना श्रम दे सकते हैं। ये सब आप के देश के अन्दर आर्थिक गतिविधियों के उदाहरण हैं, जिनमें अपने देश के नागरिक भाग लेते हैं। किन्तु जब ऐसी गतिविधियां दो या अधिक देशों के नागरिकों के मध्य होती हैं तो हम इसे इन **देशों के मध्य आर्थिक सम्बन्ध** कहते हैं। भारत का उदाहरण लो। क्योंकि हम भारत के नागरिक हैं, हम भारत को अपना घरेलू देश कहते हैं और 'शेष विश्व' में अन्य सभी देश शामिल हैं। इसलिये जब भारत और शेष विश्व में आर्थिक संबंध है तो हमारा तात्पर्य है कि भारत के नागरिक वस्तुओं और सेवाओं का विनिमय (दोनों खरीदना और बेचना) विदेशी नागरिकों के साथ कर रहे हैं या विदेशों में नौकरी या व्यापार आदि करने के लिये जा रहे हैं। इसी प्रकार, विदेशी नागरिक नौकरी करने अथवा व्यवसाय के लिए भारत आते हैं। इसके अनुसार आर्थिक सम्बन्धों के कुछ उदाहरण निम्न प्रकार से दिये जा सकते हैं।

1. घरेलू नागरिकों द्वारा विदेशी नागरिकों को विदेश में वस्तुएं और सेवाएं बेचना। इसे निर्यात कहते हैं।
2. घरेलू नागरिकों द्वारा विदेशों से वस्तुएं और सेवाएं खरीदना। इसे आयात कहते हैं।
3. किसी को विदेशों में उपहार भेजना और इसी प्रकार विदेशों से उपहार प्राप्त करना।
4. विदेशों को मुद्रा भेजना और विदेशों से मुद्रा प्राप्त करना।
5. पर्यटकों, व्यवसायिक व्यक्तियों और सरकारी प्रतिनिधि मंडलों द्वारा विदेशों की यात्रा करना।

जब एक देश के अन्य देशों के साथ आर्थिक संबंध होते हैं तो वह खुली अर्थव्यवस्था कहलाती है।

## 22.2 व्यापार का महत्व

ऊपर दिये गये (i) और (ii) उदाहरण व्यापार के भाग हैं। लोग देश के अन्दर बाजार के माध्यम से वस्तुएं और सेवाएं खरीदते और बेचते हैं। जब वही क्रिया विभिन्न देशों के नागरिकों के बीच होती है तो हम उसे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार कहते हैं।

निर्यात और आयात, वस्तुओं और सेवाओं का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार है।

व्यापार की गतिविधियां पूर्णरूप से अर्थव्यवस्था का भाग हैं। किसी अर्थव्यवस्था में व्यापार के बिना जीवन को देख पाना कठिन है। वस्तुएं, एक स्थान से दूसरे स्थान को, रेलगाड़ियों, ट्रकों, आदि से देश के अंदर लगातार भेजी जाती है। इसी प्रकार, हवाई जहाज और समुद्री जहाज का प्रयोग बहुत सी वस्तुओं को विभिन्न देशों में भेजने के लिए किया जाता है।

इसका उद्देश्य, वस्तुओं अथवा सेवाओं को उन लोगों को उपलब्ध कराने से है जो उनका भुगतान करना चाहते हैं, इससे कोई सरोकार नहीं कि क्रेता कहां रहता है। इसका तात्पर्य यह है कि

वस्तुओं और सेवाओं का वितरण केवल व्यापार द्वारा ही संभव है। यही कारण है कि व्यापार इतना महत्वपूर्ण है। हम व्यापार के नीचे दिये गये बहुत से अन्य लाभों पर भी विचार कर सकते हैं :

1. व्यापार के द्वारा लोग विभिन्न प्रकार की वस्तुएं और सेवाएं प्राप्त कर सकते हैं। गर्मियों में आप हमेशा ठंढ़े पेय पसंद करोगे। बाजार में उपलब्ध कुछ ठंडे पेय, कोका कोला, पेप्सी कोला आदि हैं। क्या आप जानते हैं, भारत में कोका कोला कहां से आया। यह अमेरिका में बनाया गया जो भारत से बहुत दूर है। अब, वास्तव में, कोका कोला के संयंत्र भारत में स्थित हैं किन्तु अब भी यह एक विदेशी कम्पनी है। इसी प्रकार, भारत के अचार बाहर बहुत से देशों में भारतीय व्यापारियों द्वारा बेचे जाते हैं। अपनी आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिये भारतीय वस्तुओं का उपभोग विदेशियों द्वारा व विदेशी वस्तुओं का उपभोग भारतीयों द्वारा किये जाने के बहुत से उदाहरण हैं।

2. व्यापार, नई वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन को प्रोत्साहन देता है। व्यापार के द्वारा विक्रेता और क्रेता एक दूसरे के साथ सम्पर्क स्थापित करते हैं। इसलिए विक्रेता, क्रेताओं की पसंद और वरीयता को जानते हैं और उसी के अनुसार उपभोग के लिये वस्तुएं और सेवाएं उपलब्ध कराते हैं।

3. विभिन्न देशों के लोग व्यापार के माध्यम से आपस में मिलते हैं और संपर्क स्थापित करते हैं। तदनुसार, एक देश के लोग दूसरे देश की सभ्यता, रीति-रिवाज, भाषा आदि जान सकते हैं।

4. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के कारण वस्तुओं का उत्पादन अधिक कुशलता से करना संभव हो जाता है क्योंकि इससे विशिष्टीकरण होता है। इसका तात्पर्य है कि वस्तुओं का उत्पादन कम लागत पर किया जा सकता है जिससे लोग उन्हें कम कीमत पर प्राप्त कर सकेंगे। कैसे? एक वस्तु का उत्पादन एक से अधिक देश में हो सकता है किन्तु एक देश में उसका उत्पादन करने के लिए अच्छा कच्चा माल और प्रौद्योगिकी हो सकती है। भारत का उदाहरण लीजिये, भारत में मसाले और कपास आदि की खेती अनुकूल जलवायु और मिट्टी की दशा के कारण आसानी से हो जाती है। अच्छी प्रथा, परम्परा और संस्कृति के कारण भारत का हस्तकला उद्योग विश्व विख्यात है। इसलिये, इनका उत्पादन भारत में आसानी से कम लागत पर होता है। तदनुसार, भारत इन वस्तुओं के उत्पादन में विशिष्टीकरण प्राप्त कर सकता है। इसलिये दूसरे देश ये वस्तुएं भारत से सस्ती कीमत पर खरीद सकते हैं। इसी प्रकार दक्षिणी अफ्रिका में हीरे आसानी से मिल जाते हैं क्योंकि वहां उनकी खानें होती हैं। आपको ऐसे बहुत से दूसरे भी उदारहण मिल सकते हैं। मुख्य बात यह है कि यदि कोई देश किसी वस्तु का उत्पादन अच्छी गुणवत्ता और सस्ती लागत पर कर सकता है तो उसे उस वस्तु के उत्पादन में विशिष्टीकरण प्राप्त हो जाता है और उसे उस वस्तु का अन्य देशों को निर्यात करने से लाभ प्राप्त होता है।

### पाठगत प्रश्न 22.1

1. विदेशी व्यापार का एक लाभ बताओ।
2. निर्यात से क्या अभिप्राय है?
3. आयात की परिभाषा दीजिए।

## 22.3 भारत द्वारा निर्यात और आयात

भारत के संसार के बहुत से देशों के साथ आर्थिक सम्बन्ध हैं। परिणाम स्वरूप, भारत बहुत सी वस्तुओं का निर्यात विदेशों को करता है। विदेशों से बहुत सी वस्तुओं का आयात करता है। वे देश जिनके साथ भारत निर्यात और आयात की गतिविधियों में संलग्न हैं वे भारत के व्यापार के साझीदार कहलाते हैं।

### (अ) भारत के निर्यात

मुख्य मदें जिनका भारत विभिन्न देशों को निर्यात करता है, वे इन्जीनियरिंग का समान, हस्तशिल्प, रसायन और संबद्ध उत्पाद, सिले हुए कपड़े, सूत, लोह-अयस्क, चमड़ा, मछलियाँ, चावल, फल और सब्जियां आदि हैं। कुछ देश जिनको भारत निर्यात करता है, फ्रांस, जर्मनी, यू.के., यू.एस.ए., ईरान, यू.ए.ई., चीन, हांगकांग, सिंगापुर, अफ्रीका और लैटिन अमरीका के कुछ देश हैं।

### (ब) भारत के आयात

पेट्रोलियम, स्नेहक, मुख्य मदें हैं, जिनका भारत आयात तेल और पेट्रोलियम निर्यात करने वाले देशों (OPEC) जैसे ईरान, यू.ए.ई. और सऊदी अरब आदि से करता है। भारत अलोह धातुओं, पूंजीगत वस्तुओं और उर्वरकों का भी आयात करता है। पूंजीगत वस्तुओं में बिजली और बिना बिजली से चलने वाली मशीनें और परिवहन उपस्कर शामिल हैं। भारत के आयात अधिकतर उन्हीं देशों से आते हैं जिनको यह वस्तुओं और सेवाओं का निर्यात करता है।

### पाठगत प्रश्न 22.2

1. भारत के निर्यात के दो मुख्य मदों के नाम बताओ।
2. भारत के आयात के दो मदों के नाम बताओ।
3. भारत के दो मुख्य व्यापार के साझीदारों के नाम बताओ।

## 22.4 वैश्वीकरण का अर्थ

आजकल वैश्वीकरण शब्द का सामान्य रूप से प्रयोग किया जाता है। कारण स्पष्ट है। आज दूरदर्शन, इन्टरनेट तथा मोबाइल फोन आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं। आज दूर दराज देशों

में लोग मोबाइल फोन के माध्यम से बात कर सकते हैं तथा सम्पर्क में रह सकते हैं। आज, आप भारत और वेस्टइन्डीज के क्रिकेट मैच का सीधा प्रसारण दूरदर्शन पर देख सकते हैं।

आप यू.एस.ए. मे अपने मित्र से या यूरोप में मोबाइल फोन से बात कर सकते हो। यदि आप विस्तार में कुछ कहना चाहते हो तो आपको पत्र भेजने की आवश्यकता नहीं है। भारत से यू.एस.ए. में एक पत्र प्राप्त करने में इसे 7 दिन लग जाते हैं। किन्तु इन्टरनेट के माध्यम से आप ई-मेल भेज सकते हो जो आपके मित्र के पास कुछ ही सेकण्ड में पहुंच जाता है।

आप जर्मनी या जापान में उत्पादित एक नई वस्तु मंगवाने के लिए इन्टरनेट के माध्यम से आदेश कर सकते हैं ओर यह आपके पास भारत में पहुंच जायेगी। इन प्रगतियों के कारण हम सोचते हैं कि संसार छोटा हो गया है और एक गांव में रहने वाले बहुत से परिवारों की तरह दिखाई देता है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि यह विकास कुछ दिनों में नहीं हुआ है। इसकी प्रक्रिया बहुत लम्बी अवधि से चल रही है। प्राचीन काल में व्यक्ति और व्यक्तियें के समूह वस्तु और सेवाओं के व्यापार के लिये विभिन्न देशों की यात्रा समुद्री मार्ग से करते थे। हवाई जहाज और समुद्री जहाज के आविष्कार से यात्रा करना और वस्तुएं भेजना आसान हो गया है। अब विभिन्न देशों की सरकारों ने आपस में संपर्क स्थापित करना प्रारम्भ कर दिया है जिससे आने वाली बाधाओं को कम से कम किया जा सके और सभी राष्ट्रों के नागरिक वस्तुओं का विनिमय बिना किसी समस्या के कर सकें। तकनीकी और वैज्ञानिक उन्नति के कारण परिवहन और संचार के साधनों ने, जैसा कि आप आज देखते हो, विभिन्न देशों के नागरिकों में संपर्क की प्रक्रिया को अब आसान बना दिया है। इसलिए अब हम विश्व में अलग नहीं हैं यद्यपि हम विभिन्न देशों के अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग रह रहे हैं। बल्कि व्यापार, परिवहन और संचार की व्यवस्था से लोग एक दूसरे के पास आ गए हैं। लोग घरेलू और विदेशी दोनों प्रकार की वस्तुओं का उपभोग कर सकते हैं, नौकरी करने के लिए विदेशों में जा सकते हैं, विदेशी नागरिकों से विचारों का आदान-प्रदान कर सकते हैं, विभिन्न देशों को वस्तुओं और सेवाओं का निर्यात कर सकते हैं आदि।

विश्व के विभिन्न देश एक दूसरे के पास आते हुए प्रतीत होते हैं। यह प्रक्रिया साधारण भाषा में वैश्वीकरण कहलाती है।

## 22.5 भारत, चीन और यू.एस.ए. में आर्थिक विकास की तुलना

यू.एस.ए. संसार के सबसे अधिक विकसित देशों में से एक है। भारत और यू.एस.ए. की अर्थव्यवस्था में समान बात यह है कि दोनों संसार के सबसे बड़े प्रजातंत्र हैं अर्थात दोनों में शासन, जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा किया जाता है। चीन और भारत दोनों में समान बात यह है कि दोनों एशिया महाद्वीप के भाग हैं और पड़ोसी हैं। कुछ समय पहले भारत और चीन, में आर्थिक विकास का स्तर लगभग एक समान था। दोनों विकासशील राष्ट्र थे। किन्तु पिछले कुछ वर्षो में चीन की अर्थव्यवस्था का विकास बहुत तेजी से होता रहा है। इसलिए इन अर्थव्यवस्थाओं की तुलना करना सार्थक है। आपने भारतीय अर्थव्यवस्था के विषय में पहले

ही, पहले तीन पाठों में अध्ययन किया है। यहां यू.एस.ए. और चीन की अर्थव्यवस्था के विषय में क्रमशः विहंगम दृष्टि डालते हैं।

### 22.5.1 यू.एस.ए. की अर्थव्यवस्था का एक संक्षिप्त लेखा जोखा

यू.एस.ए. की अर्थव्यवस्था की एक बहुत महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि निजी क्षेत्र वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में एक प्रमुख भूमिका अदा करता है। सरकार व्यवसाय के कार्यों में अधिक हस्तक्षेप नहीं करती। यू.एस.ए. में 3 करोड़ छोटे व्यवसाय हैं। संसार की 500 सबसे बड़ी कम्पनियों में, 139 यू.एस.ए. में हैं। लगभग सबसे अधिक धनी लोगें में से 40 प्रतिशत यू.एस.ए. में रहते हैं। अमेरिका के व्यवसायी और निगमों का सारे विश्व में प्रभाव और उनकी उपस्थिति पाई जाती है। बहुराष्ट्रीय निगम, जैसे फोर्ड मोटर्स, जनरल इलेक्ट्रिक, कोका कोला, वाल मार्ट, आदि यू.एस.ए. से आये हैं।

यू.एस.ए. की कृषि भी बहुत उन्नत है। यह खाद्यान्नों जैसे गेहूँ, अनाज, फल और सब्जियों के सबसे बड़े निर्यातकों में से एक है।

विनिर्माण में यू.एस.ए. का विनिर्माण उत्पादन, चीन, भारत और ब्राजील के संयुक्त उत्पादन से अधिक था। केवल, हाल ही में अर्थात 2010 में ऐसा कहा जाता है कि चीन यू.एस.ए. से आगे निकल गया है। पेट्रोलियम, स्टील, मोटर गाड़ियां, निर्माण में प्रयोग की जाने वाली मशीनें और कृषि में प्रयोग की जाने वाली मशीनें अमरीका के कुछ प्रमुख विनिर्माण उद्योग हैं।

शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं यू.एस.ए. में उच्च गुणवत्ता वाली हैं। भारत के 15 प्रतिशत के विपरीत, यू.एस.ए. में 85 प्रतिशत बच्चे पब्लिक स्कूलों में प्रवेश करते हैं। यू.एस.ए. वस्तुओं और सेवाओं के विश्व में तीन सबसे बड़े निर्यातकों में से एक है, और शेष विश्व से, सबसे बड़ा आयात करने वाला देश है। प्रत्येक व्यक्ति, डॉलर कहलाने वाली, उसकी करेन्सी को जानता है जो कि एक अन्तर्राष्ट्रीय करेन्सी है, क्योंकि यह लगभग हर जगह प्रचलन में है तथा विश्व व्यापार में यू.एस.ए. का आधिपत्य है।

इसकी अमीरी के बावजूद यू.एस.ए. में भी गरीबी और बेरोजगारी पाई जाती है। 2008 में इसकी जनसंख्या के लगभग 16 प्रतिशत भाग को अच्छा भोजन नहीं मिलता था। 2010 में इसकी बेरोजगारी की दर 9.9 प्रतिशत थी।

### 22.5.2 चीन की अर्थव्यवस्था

यह कहा जाता है कि चीन की अर्थव्यवस्था अब संसार में यू.एस.ए. के पश्चात दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। 1980 तक चीन अपनी आर्थिक शक्ति के विषय में बहुत महत्वपूर्ण नहीं था। इसकी स्थिति भारत के समान ही थी। किन्तु 1980 के पश्चात चीन की अर्थव्यवस्था, उसके द्वारा अपनाये गये आर्थिक सुधारों के कारण, बहुत तेजी से बढ़ी। आपको यह ज्ञान होना चाहिए कि भारत और यू.एस.ए. के विपरीत चीन में प्रजातंत्र या जनता का राज नहीं

है। चीन में एक पार्टी राज करती है और लोगों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता नहीं है। किन्तु, चीन की सरकार ने धीरे-धीरे निजी क्षेत्र को व्यवसाय स्थापित करने और वस्तुओं और सेवाओं का बड़ी मात्रा में उत्पादन करने की स्वीकृति दे दी है। इसके परिणामस्वरूप, चीन, विभिन्न देशों को अधिक मात्रा में निर्यात कर सका और बहुत अधिक मात्रा में विदेशी मुद्रा अर्जित कर सका।

भारत के समान चीन ने भी पंचवर्षीय योजना की युक्ति को अपनाया है। इसकी बारहवीं पंचवर्षीय योजना अभी हाल ही में प्रारंभ हुई है जिसकी अवधि 2011-2015 है। चीन की प्रथम योजना की अवधि 1953-57 थी। नियोजन और आर्थिक सुधारों को कठोरता से लागू करने के कारण चीन तेजी से आर्थिक विकास कर रहा है। अब, चीन की राष्ट्रीय आय और प्रतिव्यक्ति आय भारत की अपेक्षा तीव्र गति से बढ़ रही हैं। 2010 की प्रथम आधी अवधि में चीन का विश्व के कुल निर्यातों में 10 प्रतिशत भाग था और इसकी तुलना में भारत का भाग केवल 1.4 प्रतिशत था। जनसंख्या पर नियंत्रण के क्षेत्र में चीन का भारत से बेहतर प्रदर्शन रहा है। यह कहा जाता है कि भारत निकट भविष्य में जनसंख्या में चीन से आगे निकल जायेगा। अपने बेहतर आर्थिक पर्यावरण के कारण, चीन, विदेशों से, भारत की अपेक्षा अपने औद्योगिक और सेवाओं के विकास के लिए, अधिक मुद्रा आकर्षित कर रहा है। आज चीन का रहन-सहन का स्तर इतना अधिक सुधर गया है कि इसका निर्धनता अनुपात 1981 में 51 प्रतिशत से गिर कर 2005 में 2.5 प्रतिशत रह गया। जबकि भारत में उस समय 27.5 प्रतिशत लोग निर्धन थे।

## पाठगत प्रश्न 22.3

1. भारत और चीन की एक समान आर्थिक विशेषता लिखो।
2. भारत, चीन और यू.एस.ए. की गरीबी के सम्बन्ध में तुलना करो।

## आपने क्या सीखा

- आर्थिक सम्बन्ध का अर्थ और अन्य देशों से व्यापार के लाभ।
- भारत किन वस्तुओं का निर्यात और आयात करता है?
- आरंभिक स्तर पर वैश्वीकरण का अर्थ।
- यू.एस.ए. और चीन की अर्थव्यवस्थाओं की स्थिति की क्रमशः जानकारी जिससे आप उनकी तुलना भारत से कर सको जो पूर्व के पाठों में दी गई है।

## पाठान्त प्रश्न

1. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लाभों की व्याख्या करो।
2. भारत के व्यापार के साझीदारों के और कुछ वस्तुओं जिनका यह व्यापार करता है, उदाहरण दो।
3. यू.एस.ए.की अर्थव्यवस्था पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखो।
4. चीन की अर्थव्यवस्था पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखो।

## पाठगत प्रश्नों के उत्तर

### पाठगत प्रश्न 22.1

1. विदेशी व्यापार से विशिष्टीकरण और वस्तुओं व सेवाओं का कुशलता से उत्पादन होता है।
2. शेष विश्व को वस्तुएं और सेवाएं बेचना निर्यात कहलाता है।
3. शेष विश्व से वस्तुएं और सेवाएं खरीदना आयात कहलाता है।

### पाठगत प्रश्न 22.2

1. इंजीनियरिंग का सामान, हस्तशिल्प
2. पेट्रोलियम, बिजली की मशीन
3. यू.एस.ए., यू.ए.ई.

### पाठगत प्रश्न 22.3

1. पंचवर्षीय नियोजन
2. 2005 में भारत की गरीबी दर 27.5 प्रतिशत थी जबकि चीन की केवल 2.5 प्रतिशत थी। यू.एस.ए. में इसकी जनसंख्या के लगभग 16 प्रतिशत लोगों को 2008 में अच्छा भोजन प्राप्त नहीं होता था।

# मॉड्यूल 8 : समकालिक आर्थिक समस्याएं

23. पर्यावरण तथा धारणीय विकास
24. उपभोक्ता जागरूकता

# 23

# पर्यावरण तथा धारणीय विकास

पिछले पाठों में आप आर्थिक विकास तथा यह किस प्रकार लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार कर सकता है, के विषय में पढ़ चुके हैं। वस्तु और सेवाओं का उत्पादन मानवीय आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिये होता है। विभिन्न वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में मानव निर्मित तथा प्राकृतिक दोनों संसाधनों की आवश्यकता पड़ती है। जैस-जैसे अधिक वस्तुओं का उत्पादन होता है, अधिक संसाधन खर्च होते जाते हैं। उत्पादन प्रक्रिया केवल संसाधनों का ही उपयोग नहीं करती बल्कि अन्य समस्याएं भी उत्पन्न करती है, जैसे जब फैक्ट्रियों में वस्तुओं का उत्पादन होता है तो इन से धुआं निकलता है जिससे वह वायु प्रदूषित हो जाती है जिसमें हम सांस लेते हैं। इसी प्रकार, नदियों में डाले गये मल-पदार्थ हमारे पीने के पानी को प्रदूषित करते हैं। जैसे-जैसे वस्तुओं और सेवाओं की मांग बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे संसाधनों की मांग भी बढ़ती जाती है। परिणामस्वरूप, संसाधनों का क्षय हो रहा है तथा उनको ऐसी क्षति पहुंच रही है जिसे सुधारा नहीं जा सकता। जैसे-जैसे हम वनों को काटते हैं, वायु तथा नदियों को प्रदूषित करते हैं, पृथ्वी से खनिजों को निकालते हैं, हम प्रकृति को नष्ट करते हैं। प्रकृति का इस प्रकार विनाश मानव जीवन को बुरी तरह से प्रभावित कर रहा है।

## उद्देश्य

इस अध्याय को पढ़ने के पश्चात आप इस योग्य होंगे कि :

- पर्यावरण की परिभाषा तथा महत्व को जान पायें;
- पर्यावरण की विभिन्न समस्याओं, जैसे प्रदूषण, निम्नीकरण, संसाधनों के क्षय को समझ पायें;
- धारणीय विकास के अर्थ की व्याख्या कर पायें;
- धारणीय विकास प्राप्त करने की विधियां बता पायें।

## 23.1 पर्यावरण : परिभाषा तथा महत्व

पर्यावरण, पृथ्वी अथवा इसके किसी भाग पर प्राकृतिक रूप से पाई जाने वाली सभी जैव तथा अजैव वस्तुओं को चारों ओर से घेरे रहता है। उसमें उन सभी जैव तथा अजैव कारकों को

टिप्पणी

सम्मिलित किया जाता है जो प्रकृति में एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। सभी सजीव तत्वों जैसे पक्षी, जन्तु, पौधे, वन आदि को जैव घटक में सम्मिलित किया जाता है। दूसरी ओर, सभी निर्जीव वस्तुएं जैसे वायु, जल, चट्टान, सूर्य आदि पर्यावरण के अजैव घटक के उदाहरण हैं। इस प्रकार पर्यावरण का अध्ययन पर्यावरण के जैव तथा अजैव घटकों में अन्तर्सम्बन्ध का अध्ययन है।

## पर्यावरण का महत्व

1. पर्यावरण मनुष्य को नवीकरणीय तथा गैर-नवीकरणीय दोनों संसाधन प्रदान करता है। नवीकरणीय संसाधन वे संसाधन हैं जिनकी समय के साथ पूर्ति हो जाती है तथा इसलिये बिना इस संभावना के उनका उपयोग किया जा सकता है कि इन संसाधनों का क्षय हो जायेगा अथवा ये समाप्त हो जायेंगे। नवीकरणीय संसाधनों के उदाहरणों में वनों में वृक्षों, महासागर में मछलियों आदि को सम्मिलित किया जाता है। दूसरी ओर, गैर-नवीकरणीय संसाधन वे संसाधन हैं जो खर्च हो जाने के कारण समय के साथ समाप्त हो जाते हैं अथवा उनका क्षय हो जाता है। गैर-नवीकरणीय संसाधनों के उदाहरणों में जीवाश्म ईंधन तथा खनिज, जैसे पैट्रोलियम, प्राकृतिक गैस, कोयला आदि को सम्मिलित किया जाता है। इसलिये भावी पीढ़ियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए इन संसाधनों का प्रयोग सावधानीपूर्वक करना चाहिये।

### क्या आप जानते हैं?

चालू अनुमानों के आधार पर संसार का सारा निष्कर्षण योग्य कोयला, तेल, प्राकृतिक गैस तथा यूरेनियम-235 के भंडार अर्थात हमारे ऊर्जा के सभी वर्तमान स्रोत लगभग 50-75 वर्षों के अन्दर समाप्त हो जायेंगे।

2. पर्यावरण हानिकारक अपशेषों तथा उप-उत्पादों को आत्मसात भी करता है अर्थात यह अपशेषों को पचाता है। चिमनियों तथा मोटर गाड़ियों के निकास-पाइपों से निकलने वाला धुआं, शहरों तथा नगरों के मल पदार्थ, औद्योगिक स्राव सभी को पर्यावरण आत्मसात कर लेता है। इन सभी अपशेषों तथा उप-उत्पादों का विभिन्न प्राकृतिक प्रक्रियाओं द्वारा आत्मसात तथा पुनर्चक्रीकरण किया जाता है।

3. पर्यावरण जैव-विविधता द्वारा जीवन को भी धारित करता हैं। जीवन के विभिन्न रूपों पर पर्यावरण के दबाव द्वारा उत्पन्न आनुवंशिक विभिन्नताएं जीवन के उन रूपों का अनुकूलन करने, विकसित होने तथा आनुवंशिक विभिन्नताएं उत्पन्न करने की अनुमति देती हैं जो कठोर पर्यावरण में जीवित रह सकें। अतः पर्यावरण जीवन के विभिन्न रूपों तथा अजैव घटकों में सम्बन्ध उत्पन्न करता है, उसको बनाये रखता है तथा जीवन को धारित करता है। इसलिये पर्यावरण को सुरक्षित रखकर जीवन के इन विभिन्न रूपों को सुरक्षित रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

4. पर्यावरण के जीव विज्ञान से सम्बन्धित महत्व के अतिरिक्त, पर्यावरण सौंदर्यकला की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। यह हमें दृष्य तथा दृश्यभूमि प्रदान करता है, जो हमारे लिये अमूल्य हैं तथा प्रायः सारे विश्व में मानवीय संस्कृति में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

## पाठगत प्रश्न 23.1

1. पर्यावरण से क्या अभिप्राय है?
2. पर्यावरण के दो मुख्य घटकों के नाम दीजिये।
3. नवीकरणीय तथा गैर-नवीकरणीय संसाधनों, प्रत्येक के दो उदाहरण दीजिये।

## 23.2 पर्यावरण सम्बन्धी समस्याएं

मानवीय सभ्यता की उन्नति के साथ मानवीय आवश्यकताओं में वृद्धि तथा विविधता उत्पन्न हुई है। इससे प्राकृतिक संसाधनों का तीव्र गति से क्षय हुआ है। अनेक संसाधन तीव्र गति से खर्च किये जा रहे हैं जिससे बहुत से संसाधनों का अत्यधिक प्रयोग और क्षय हुआ है। संसाधनों के अत्यधिक प्रयोग से अनेक पर्यावरण संबंधी समस्याएं उत्पन्न हो गई हैं। इनमें वायु-प्रदूषण, जल प्रदूषण, प्राकृतिक संसाधनों जैसे भूमि तथा वनों का निम्नीकरण तथा गैर-नवीकरणीय संसाधनों जैसे जीवाश्म ईंधन और खनिजों का निम्नीकरण सम्मिलित हैं। निम्न भागों में आप इन पर्यावरण संबंधी समस्याओं का अध्ययन करेंगे और उनके अर्थव्यवस्था तथा पृथ्वी ग्रह पर पड़ने वाले प्रभाव के महत्व को समझ पायेंगे।

### 23.2.1 प्रदूषण

**प्रदूषण शब्द से अभिप्राय प्राकृतिक संसाधनों अथवा प्राकृतिक जैव तंत्र की गुणवत्ता में अवांछनीय परिवर्तन से है।** यह परिवर्तन तत्काल अथवा लम्बी समय अवधि में जीवन के लिये हानिकारक हो सकता है। इस प्रकार प्रदूषण जीवधारियों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

**प्रदूषण किसी प्रदूषक द्वारा होता है। प्रदूषक कोई व्यर्थ पदार्थ अथवा वस्तु होता है जो प्राकृतिक संसाधनों अथवा प्राकृतिक जैवतंत्र में अवांछनीय परिवर्तन लाता है।** धुआं, वातावरण में धूल तथा जहरीली गैसें, जल में औद्योगिक स्राव तथा शहरों से जल में मल पदार्थ प्रदूषकों के कुछ सामान्य उदाहरण हैं। इसके अतिरिक्त मानवीय गतिविधियां भी उष्मा तथा ध्वनि उत्पन्न करती हैं तथा जीवधारियों को अन्य अनेक प्रकार से हानि पहुंचाती हैं।

#### 23.2.1.1 वायु प्रदूषण

वायु प्रदूषण, रासायनिक पदार्थों, पदार्थों के कण अथवा जैव पदार्थों जो मनुष्यों अथवा अन्य जीवधारियों को हानि या असुविधा का कारण बनते हैं अथवा प्राकृतिक या स्थित पर्यावरण

को हानि पहुंचाते है, का वातावरण में आने से है। प्रमुख वायु प्रदूषकों में सल्फर के आक्साइड, नाइट्रोजन आक्साइड, कार्बन मोनोआक्साइड, कार्बन डाइआक्साइड (जो एक प्रमुख ग्रीन हाउस गैस भी है), जहरीले पदार्थ तथा पदार्थों के कणों को सम्मिलित किया जाता है।

### क्या आप जानते है?

विश्व स्वास्थ्य संगठन का कहना है कि प्रत्येक वर्ष 24 लाख लोगों की प्रत्यक्ष रूप से वायु प्रदूषण से संबंधित कारणों से मृत्यु हो जाती है। प्रत्येक वर्ष पूरे विश्व में मोटर गाड़ी दुर्घटनाओं की अपेक्षा अधिक मृत्यु वायु प्रदूषण से जुड़ी होती हैं।

## वायु प्रदूषण के स्रोत

वायु प्रदूषण के कारण स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों में सांस लेने में कठिनाई, घरघराहट के साथ सांस लेना, खांसी तथा विद्यमान श्वसन तथा हृदय संबंधी दशाओं की उग्रता को सम्मिलित किया जा सकता है। इन प्रभावों के परिणामस्वरूप औषधि प्रयोग, चिकित्सकों की संख्या अथवा आपातकालीन विभागों में आगमन में वृद्धि, अस्पतालों में अधिक प्रवेश तथा असामयिक मृत्यु में वृद्धि हो सकती है।

## वायु प्रदूषण के स्रोत

वायु प्रदूषण के प्रमुख कृत्रिम स्रोतों (मानव द्वारा होने वाले) में सम्मिलित हैं :

- ऊर्जा संयत्रों, फैक्ट्रियों, शवदाह गृहों तथा भट्टियों आदि से निकलने वाला धुआं।
- वाहनों तथा मोटर गाड़ियों जैसे कार, बस, बाइक, वायुयान, जलयान आदि से निकली गैस।
- रासायनिक पदार्थ जैसे कीटनाशक और उर्वरक तथा कृषि तथा अन्य कृषि संबंधित क्रियाओं की धूल।
- रंग-रोगन से धुआं, बालों के स्प्रे, वार्निश, एरोसौल स्प्रे तथा अन्य विलायक।
- गड्ढ़ों में व्यर्थ पदार्थों का जमाव जो मीथेन उत्पन्न करता है तथा जो वैश्विक उष्णता में भी योगदान देता है।

## वायु प्रदूषण के प्रमुख प्राकृतिक स्रोतों में सम्मिलित हैं:

- प्राकृतिक स्रोतों आमतौर पर बंजर भूमि से धूल
- जानवरों द्वारा भोजन के पाचन में निकलने वाली मीथेन, उदाहरण के लिये बैलों द्वारा।
- जंगलों की आग से धुआं, पदार्थों के कण तथा कार्बन मोनोआक्साइड।
- ज्वालामुखी गतिविधियां, जो सल्फर, क्लोराइड तथा राख के कण उत्पन्न करती हैं।

### 23.2.1.2 जल प्रदूषण

जल प्रदूषण हानिकारक यौगिकों को हटाये बिना उनका जल स्रोतों (जैसे, झील, नदियां, महासागर तथा भू-जल) में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से निस्सरण है। जल प्रदूषण के प्रमुख स्रोतों में औद्योगिक रासायनिक पदार्थ तथा स्राव, पोषक पदार्थ, व्यर्थ जल, मल पदार्थ आदि सम्मिलित हैं।

#### जल प्रदूषण के प्रभाव

जल से उत्पन्न अनेक बीमारियां जैसे हैजा, टायफाइड, अतिसार आदि प्रदूषित जल में उपस्थित रोगाणुओं द्वारा उत्पन्न होती हैं जो मनुष्यों तथा जन्तुओं को समान रूप से प्रभावित करती हैं। प्रदूषण जल के गुणों को प्रभावित करता है। प्रदूषक, जिसमें जहरीले रसायन शामिल हैं, जल की अम्लीयता संचालकता तथा तापक्रम में परिवर्तन कर सकते हैं। यह जलीय जैवतंत्रों में निवास करने वाले जीवों जैसे मछली, पक्षी, पौधे आदि को भी मार देते हैं और इस प्रकार प्राकृतिक खाद्य श्रृंखला में बाधा उत्पन्न कर देते हें जिसके कारण जैव तंत्रों में अस्थिरता उत्पन्न हो जाती है।

#### जल प्रदूषण के स्रोत

जल प्रदूषण के मुख्य स्रोतों में निम्नलिखित हैं:

- मल उपचार संयंत्रों तथा नगरों और कस्बों से मल पदार्थों के पाइपों से निस्सारण।
- फैक्ट्रियों द्वारा जल स्रोतों में छोड़े जाने वाले औद्योगिक स्राव।
- कृषि भूमि से रसायन जैसे कीटनाशक तथा उर्वरक जो खेतों से बहने वाले पदार्थों का निर्माण करते हैं का निकास।
- नगरों में बरसाती नालों से प्रदूषित वर्षा जल।
- ऊर्जा संयंत्रों द्वारा जल में गर्म अथवा रेडियोधर्मी जल को छोड़ना।
- तेल के जहाजों से तेल का छलकना तथा रिसाव।
- जल स्रोतों में शैवालों की वृद्धि।

### 23.2.1.3 ध्वनि प्रदूषण

ध्वनि प्रदूषण अत्यधिक तथा अप्रिय पर्यावरण संबंधित ध्वनि है जो मानव अथवा जन्तु जीवन की गतिविधियों अथवा संतुलन को अस्त-व्यस्त कर देती है।

#### ध्वनि प्रदूषण के प्रभाव

अवांछनीय ध्वनि के रूप में ध्वनि प्रदूषण शारीरिक तथा मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य को हानि पहुंचा सकता है। ध्वनि प्रदूषण चिड़न तथा आक्रामकता, उच्च रक्तचाप, उच्च तनाव स्तर, बहरापन,

नींद में बाधा तथा अन्य हानिकारक प्रभाव उत्पन्न कर सकता है। दीर्धकाल तक ध्वनि का अपावरण ध्वनि-प्रेरित बहरापन उत्पन्न कर सकता है। वे लोग जो अधिक व्यवसायिक ध्वनि के संपर्क में रहते हैं, ध्वनि के संपर्क में न रहने वालों की तुलना में, श्रवण संवेदनशीलता में अधिक कमी प्रदर्शित करते हैं। उच्च तथा मध्यम श्रेणी की उच्च ध्वनि स्तर हृदय की रक्त वाहिनियों पर प्रभाव, रक्तचाप तथा तनाव में वृद्धि कर सकती है और इस प्रकार लोगों का शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

### ध्वनि प्रदूषण के स्रोत

ध्वनि प्रदूषण के मुख्य स्रोतों में सम्मिलित हैं:

- मोटर गाड़ी यातायात जैसे कार, बसें, हवाई जहाज, रेल गाड़ियां आदि।
- औद्योगिक प्रक्रियाएं जैसे पत्थर का चूरा बनाना, इस्पात पत्तियां बनाना, लकड़ी चीरना, छपाई करना आदि।
- सड़कों, पुलों, इमारतों आदि पर निर्माण कार्य।
- घरों से विभिन्न प्रकार की ध्वनियां जैसे स्टीरियो, टेलीविजन आदि।
- उपभोक्ता उत्पाद जैसे एयर कन्डीशनर, रैफ्रीजरेटर आदि।

उपर्युक्त भाग में आपने विभिन्न प्रकार के प्रदूषण, उनके स्रोत तथा प्रभावों के बारे में पढ़ा है। विभिन्न प्रकार के प्रदूषण पर विचार कीजिये जो आप को और आपके परिवार को प्रभावित करते हैं और उनकी एक सूची तैयार कीजिये। वे कौन से उपाय हैं जो आप, आपका परिवार तथा समाज प्रदूषण के हानिकारक प्रभावों को कम करने के लिये कर सकते हैं?

### पाठगत प्रश्न 23.2

1. प्रदूषक क्या होता है?
2. वायु प्रदूषक के दो स्रोतों के नाम दीजिये।
3. जल प्रदूषण के दो हानिकारक प्रभावों के नाम दीजिये।
4. ध्वनि प्रदूषण से क्या अभिप्राय है?

### 23.2.2 निम्नीकरण

निम्न भाग में आप दो विभिन्न प्रकार के निम्नीकरण - भूमि तथा आवासीय निम्नीकरण का अध्ययन करेंगे।

### 23.2.2.1 भूमि का निम्नीकरण

**भूमि के निम्नीकरण से अभिप्राय भूमि की गुणवत्ता में अवांछनीय अथवा हानिकारक या विघ्न उत्पन्न करने वाले परिवर्तनों से है।** यह किसी क्षेत्र के पौधों और जन्तुओं की प्रजातियों में परिवर्तन लाता है तथा प्रायः उस क्षेत्र की भूमि की गुणवत्ता तथा उत्पादकता में कमी लाता है। भूमि अपने प्राकृतिक पोषक पदार्थ, खनिज पदार्थ तथा जैविक पदार्थ (जिन्हें ह्यूमस कहते हैं) खो देती है जो स्थानीय जैव तंत्र के संतुलन को अस्त-व्यस्त कर देता है। इस प्रकार भूमि पौधों और फसलों को उगाने के लिये अयोग्य अथवा अनुपयुक्त हो जाती है।

### भूमि के निम्नीकरण के कारण

भूमि के निम्नीकरण के प्रमुख कारणों में सम्मिलित हैं :

- रासायनिक उर्वरकों तथा कीटनाशकों का अत्यधिक प्रयोग जो भूमि की अम्लीयता, खारापन तथा क्षारीयता में वृद्धि करता है, जैव पदार्थों में कमी लाता है और जैविक प्रदूषकों, जहरीले पदार्थों तथा भारी धातुओं (जैसे कैडमियम, लेड आदि) में वृद्धि करता है।
- अत्यधिक सिंचाई और इसके बाद खेतों से पानी के निकास की असफलता के कारण भूमि में नमक की मात्रा बढ़ जाती है जिससे यह पौधे उगाने के लिये अनुपयुक्त हो जाती है तथा मच्छरों के प्रजनन के आधार का कार्य करती है।
- जन्तुओं द्वारा खेतों में अत्यधिक चराई, जो पौधों की परत को कम कर देती है तथा भूमि कटाव के लिए उन्मुख करती है।

**क्या आप जानते है?**

सम्पूर्ण विश्व में भूमि के कटाव से प्रतिवर्ष 400 बिलियन डालर की (लगभग 20 लाख करोड़ रुपये प्रतिवर्ष) अनुमानित हानि होती है। पिछले 40 वर्षों में भूमि के कटाव के कारण विश्व की कृषि योग्य भूमि का 30 प्रतिशत भाग अनुत्पादक हो गया है।

### भूमि के कटाव के प्रभाव

भूमि का निम्नीकरण भूमि की फसल उगाने की उत्पादन क्षमता में भारी कमी कर सकता है। भूमि में प्रदूषकों की उपस्थिति भूजल को भी प्रदूषित कर देती है। जिससे पोषक पदार्थों, जैविक जहरीले पदार्थों तथा भारी धातुओं के स्तर में वृद्धि हो जाती है। भूमि के निम्नीकरण से भूमि की हरी परत भी समाप्त हो जाती है और इस प्रकार उस क्षेत्र में जैव विविधता में कमी आती है क्योंकि किसी क्षेत्र में पौधों की वृद्धि जन्तुओं के जीवन के लिए तथा खाद्य श्रृंखला के सामान्य रूप से चलने के लिए अनिवार्य होती है। इससे जन्तुओं तथा पौधों की प्रजातियां लुप्त हो जाती हैं। भूमि निम्नीकरण से मरूभूमि में वृद्धि होती है अर्थात भूमि धीरे-धीरे बंजर भूमि में परिवर्तित हो जाती है जो कृषि अथवा आवास के लिए अनपयुक्त हो जाती है।

### 23.2.2.2 प्राकृतिक आवास का निम्नीकरण

प्राकृतिक आवास के निम्नीकरण से अभिप्राय उस प्रक्रिया से है जिसमें मानवीय गतिविधियों के कारण प्राकृतिक जीवन के पोषण के लिए प्राकृतिक आवास की सामान्य कार्यप्रणाली अथवा गुणवत्ता में कमी आ जाती है। प्राकृतिक आवास के निम्नीकरण से उस क्षेत्र की धारण क्षमता अर्थात विशेष प्रजाति के जन्तुओं और पौधों की संख्या जिनका वह क्षेत्र पोषण कर सकता है, कम हो जाती है। इससे उस क्षेत्र (प्राकृतिक आवास) में विभिन्न प्रजातियों की जनसंख्या में कमी हो जाती है। जिससे प्राकृतिक खाद्य श्रृंखला तथा जैव तंत्र में असंतुलन उत्पन्न हो जाता है। इस असंतुलन के कारण हमारे ग्रह पर अनेक पौधों तथा जन्तुओं का बहुत बड़ी संख्या में लोप हो सकता है।

### प्राकृतिक आवास के निम्नीकरण के कारण

प्राकृतिक आवास के निम्नीकरण के प्रमुख कारण हैं :

- वन कटाई तथा इमारती लकड़ी के उद्योगों के लिये लकड़ी का निष्कर्षण।
- वन्य-भूमि का कृषि भूमि में रूपान्तरण।
- प्राकृतिक आवासों का नगरों में विस्तार।
- भूमि का कटाव तथा बंजरीकरण जिससे सम्पूर्ण वन मरूस्थल में परिवर्तित हो रहे हैं।
- काटना अथवा काट कर जलाना जैसी कृषि विधियां जिनमें वनों को जला कर राख को प्राकृतिक उर्वरक के रूप में प्रयोग कर फसल उगाना।

### प्राकृतिक आवास के निम्नीकरण के प्रभाव

प्राकृतिक आवास का नाश प्राकृतिक आपदाओं जैसे बाढ़ तथा सूखा, फसल नष्ट होना, बीमारी फैलना तथा जल को अशुद्ध करने में क्षेत्र की भेद्यता में विपुलता से वृद्धि करता है। कृषि भूमि को भी आसपास के दृश्य प्रदेश के विनाश के कारण हानि उठानी पड़ती है।

पिछले 50 वर्षों में, कृषि भूमि के चारों ओर प्राकृतिक आवास के विनाश से भूमि कटाव, पोषक पदार्थों का क्षय, प्रदूषण आदि से पूरे विश्व में लगभग 40 प्रतिशत कृषि भूमि का निम्नीकरण हुआ है। प्राकृतिक आवास के निम्नीकरण से अनेक बहुमूल्य जैव तंत्र सेवाओं जैसे नाइट्रोजन, फास्फोरस, सल्फर तथा कार्बन चक्र नष्ट हो गये हैं जिससे अम्लीय वर्षा, शैवालों की पराकाष्ठा तथा नदियों और महासागरों में मछलियों के मरने की आवृति तथा तीव्रता में वृद्धि हुई है तथा विश्व स्तर पर जलवायु में अत्यधिक परिवर्तन हुआ है। इससे जैव-विविधता नष्ट हुई है, प्रजातियां लुप्त हो गई हैं जिससे प्राकृतिक संतुलन बिगड़ जाता है तथा जैव तंत्र में परिवर्तन हो जाता है। प्राकृतिक आवास के निम्नीकरण से सौंदर्य विषयक उपयोग जैसे पक्षियों को निहारना, मनोरंजनात्मक उपयोग जैसे शिकार करना तथा मछली पकड़ना तथा पर्यावरण पर्यटन भी बुरी

तरह प्रभावित होते हैं क्योंकि इनमें से अधिकतर वास्तविक निर्बाधित प्राकृतिक आवास पर ही आश्रित होते हैं।

> **क्या आप जानते हैं?**
>
> यदि वनों का प्रचलित दर पर नाश होता रहा तो 2030 तक विश्व के केवल 10 प्रतिशत उष्णप्रदेशीय वन रह जायेंगे तथा अन्य 10 प्रतिशत निम्नीकृत की स्थिति में होंगे।

### 23.2.3 संसाधनों का क्षय

संसाधनों का क्षय एक आर्थिक शब्द है जिससे अभिप्राय किसी क्षेत्र अथवा प्रदेश में कच्चे माल की समाप्ति से है। संसाधनों का क्षय अधिकतर कृषि, मछली पकड़ना तथा खनन के संदर्भ में प्रयोग किया जाता है। आज की अर्थव्यवस्था जीवाश्म ईंधनों, खनिज पदार्थों तथा तेल पर अधिक निर्भर है। समय के साथ इन संसाधनों के मूल्यों में वृद्धि हुई है क्योंकि उनकी मांग में तेजी से वृद्धि हुई है जबकि साथ ही अतिशोषण के कारण इनकी आपूर्ति में काफी कमी हुई है।

अनेक संसाधनों को जो हमारे जीवन में अति आवश्यक हैं उदाहरणार्थ पैट्रोलियम, प्राकृतिक, गैस, कोयला, यूरेनियम-235 तथा सोना आदि को प्राप्त करना अत्यंत कठिन हो गया है। पिछले 100-150 वर्षों में अनेक प्राकृतिक संसाधनों के भण्डार अत्यंत तेजी से घट रहे हैं क्योंकि मानव जनसंख्या अधिक बढ़ रही है इसलिये संसाधनों की मांग भी बढ़ रही है। इन संसाधनों के नये भण्डारों की खोज अत्यंत खर्चीली है तथा प्रायः कोई नई खाने भी नहीं मिल रही हैं। पृथ्वी के संसाधन बहुत तेजी से समाप्त हो रहे हैं क्योंकि अति जनसंख्या के कारण हम इन पर अत्यधिक बोझ डाल रहे हैं।

संसाधनों के क्षय के साथ-साथ खनिज संसाधनों के अतिशोषण के कारण अनेक पर्यावरण संबंधी प्रभाव भी पड़ रहे हैं। भूमण्डलीय उष्णता, वायु जल तथा भूमि का प्रदूषण, जैव-विविधता का नष्ट होना सभी, इन संसाधनों के लिये खनन तथा ड्रिल द्वारा सुराख करने की युक्तियां तथा निष्कर्षण और शुद्धीकरण की विधियों के साथ-साथ होते हैं।

संसाधनों के क्षय के प्रभावों तथा अन्य पर्यावरण संबंधी समस्याओं को रोकने के लिये हमें संसाधनों के प्रयोग को सावधानीपूर्वक मानीटर कर संसाधनों के क्षय के पर्यावरण संबंधी प्रभावों पर नियंत्रण करना चाहिये। विश्व में अनेक एजेन्सियां जैसे संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP), पर्यावरण सुरक्षा एजेन्सी (EPA), अंतर्राजकीय जलवायु परिवर्तन पर दण्ड विधान (IPCC) तथा सारे विश्व के गैर सरकारी संगठनों के साथ भारत में पर्यावरण तथा वन मंत्रालय (MEF) भी सम्पूर्ण विश्व में सक्रिय रूप से पर्यावरण की सुरक्षा तथा पर्यावरण को सुरक्षित रखने से संबंधित अधिनियमों तथा नियमों को लागू करके संसाधनों के अतिशोषण को रोकने की वकालत करती हैं।

मानव जाति को उपलब्ध सीमित संसाधनों का सावधानीपूर्वक प्रयोग तथा पर्यावरण संकट जो अब पूरे विश्व में हमारे अस्तित्व के लिये खतरा उत्पन्न करता है, के अनिवार्य हल की वकालत की जा रही है, को धारणीय विकास भी कहा जाता है, इसकी इस अध्याय के आने वाले पृष्ठों में उसके महत्व के साथ विस्तृत व्यख्या की गई है।

## पाठगत प्रश्न 23.3

1. भूमि निम्नीकरण से क्या अभिप्राय है?
2. पर्यावरण के निम्नीकरण के दो विभिन्न प्रकार कौन से हैं?

## 23.3 धारणीय विकास

धारणीय विकास संसाधनों के प्रयोग का एक स्वरूप है जिसके उद्देश्य पर्यावरण को सुरक्षित रखते हुए मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति करना है ताकि न केवल वर्तमान में बल्कि आने वाली पीढ़ियों की भी इन आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सके। धारणीय विकास को अनेक तरीकों से परिभाषित किया गया है, परन्तु अधिकतर दी जाने वाली परिभाषा **'अवर कामन फ्यूचर'** जिसे 'ब्रंटलेण्ड रिपोर्ट' भी कहा जाता है, से है। इस परिभाषा के अनुसार **"धारणीय विकास ऐसा विकास है जो कि भावी पीढ़ियों की आवश्यकताओं की पूर्ति की क्षमता से समझौता किये बिना वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति करे।"**

यह परिभाषा दो महत्वपूर्ण बातों पर बल देती है, **प्रथम,** प्राकृतिक संसाधन हम में से प्रत्येक के लिये - यहां तक कि आने वाली अजन्मी पीढ़ी के लिये भी अति आवश्यक हैं। **द्वितीय,** यह एक दीर्घकालीन अवधारणा है। यह संकीर्ण रूप से केवल आर्थिक विकास पर केन्द्रित नहीं है बल्कि यह भविष्य के आर्थिक विकास को भी ध्यान में रखती है।

उपर्युक्त भाग में आप विभिन्न संसाधनों जैसे जल, वायु, खनिज पदार्थ आदि के बारे में पढ़ चुके हैं जो हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये अनिवार्य हैं। यदि हम वायु तथा जल के स्रोतों को प्रदूषित करते हैं तथा गैर नवीकरणीय संसाधनों जैसे कोयला, पैट्रोलियम, प्राकृतिक गैस आदि का क्षय करते हैं तो भावी पीढ़ियों को कष्ट होगा। इसलिये, धारणीय विकास की अवधारणा इस बात पर बल देती है कि हमें भावी पीढ़ियों को जीवन के अधिकार से वंचित करने का कोई अधिकार नहीं है। विश्व के संसाधनों के भण्डार केवल वर्तमान पीढ़ी के लिये ही नहीं है बल्कि भावी पीढ़ियों के लिये भी हैं। यही कारण है कि अपनी वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पर्यावरण का युक्तिसंगत प्रयोग करने का हमारा उत्तरदायित्व है और मरने के पश्चात उसे अपने बच्चों तथा उनके बच्चों (भावी पीढ़ियों) के लिये छोड़ जायें ताकि वे भी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें।

इसलिये, धारणीय विकास एक इस प्रकार का विकास है जो इन दोनों में से किसी पहलू के साथ समझौता किये बिना अर्थव्यवस्था तथा पर्यावरण की आवश्यकताओं को ध्यान में रखता है। यदि आर्थिक विकास धारणीय है तो प्राकृतिक संसाधनों का वर्तमान प्रयोग हमारे लिये उनके भविष्य में प्रयोग को सीमित नहीं करेगा। इस प्रकार, धारणीय विकास हमें बताता है कि विकास इस तरह से होना चाहिये जो हमारी आवश्यकताओं के साथ भावी पीढ़ियों की आवश्यकताओं का भी ध्यान रख सके।

## 23.4 हम धारणीय विकास कैसे प्राप्त कर सकते हैं

इस पाठ में हमने सीखा है कि पिछले दो शतकों में जनसंख्या की वृद्धि तथा आर्थिक विकास तथा जीवन की बेहतर गुणवत्ता के लिये मानव की खोजों ने हमारे पर्यावरण तथा पृथ्वी ग्रह के लिये अनेक समस्याएं कैसे उत्पन्न की हैं। जिन समस्याओं पर हमने ध्यान केन्द्रित किया वे संसाधनों के प्रदूषण, निम्नीकरण तथा क्षय से संबंधित थीं।

हमने धारणीय विकास के अर्थ तथा भावी पीढ़ियों के विकास और हितों को ध्यान में रखना कितना महत्वपूर्ण है, के बारे में भी जाना। परन्तु हम धारणीय विकास कैसे प्राप्त करते हैं? जिस पर्यावरण संकट का हम सामना करते हैं वह गंभीर विषय है और अति आवश्यक है। परन्तु शीघ्र और निर्णायक कार्यवाही करके हम इस संकट पर विजय पा सकते हैं।

धारणीय विकास की सभी परिभाषाएं, समस्त विश्व को एक मान कर चलने की आवश्यकता के बारे में बताती हैं। आप पहले ही जान चुके हैं कि धारणीय विकास की अवधारणा एक दीर्घकालीन अवधारणा है जो भावी पीढ़ियों के विकास को भी समान महत्व देती है। धारणीय विकास इस बात पर भी बल देता है कि विश्व के किसी एक भाग में की गई कार्यवाही और उपायों का विश्व के अन्य भागों में रहने वाले लोगों पर भी प्रभाव पड़ता है। विकास के धारणीय होने के लिये हमें न केवल अपने समाज अथवा गांव अथवा देश बल्कि सारे विश्व के बारे में सोचना चाहिये। उदाहरण के लिये यदि उत्तरी अमरीका में फैक्ट्रियों से धुआं निकलता है तो उत्तरी अमरीका से वह वायु प्रदूषण एशिया में वायु की गुणवत्ता को प्रभावित करता है। इसी प्रकार, बंगला देश में कीटनाशकों का छिड़काव पश्चिमी बंगाल के समुद्र तट से दूर भी मछलियों के स्टाक को हानि पहुंचा सकता है।

इसलिये धारणीय विकास के उपाय उन नीतियों पर ध्यान केन्द्रित करते हैं जिन्हें समस्त विश्व में ग्रहण किया जाना चाहिये। इनमें से कुछ नीतियों को व्यक्तिगत देशों की सरकारों के स्तर पर लागू किया जाता है जबकि अन्य में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर तालमेल की आवश्यकता होती है।

उन विधियों के कुछ उदाहरण जिनके द्वारा हम धारणीय विकास में योगदान दे सकते हैं, नीचे दिये गये हैं :

- **संसाधन :** गैर-नवीकरणीय संसाधनों के स्थानापन्न ढूंढ़ना तथा नवीकरणीय संसाधनों का युक्ति-संगत प्रयोग करना। सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, जल शक्ति, ज्वार ऊर्जा तथा जैविक

ईंधन (गोबर गैस) का प्रयोग अब व्यापक तौर पर ऊर्जा के स्रोतों जैसे कोयला, तेल तथा प्राकृतिक गैस, जिनका तीव्रगति से क्षय हो रहा है, के स्थान पर हो रहा है। भारत के अनेक गांवों में सौर-ऊर्जा के उपकरणों जैसे सौर-कुकर, सौर-लालटेन तथा सौर-हीटर के उपयोग को सरकार द्वारा बढ़ावा तथा प्रोत्साहित किया जा रहा है। समुद्र तटीय क्षेत्रों में बिजली का उत्पादन करने के लिये पवन चक्कियों द्वारा उत्पन्न पवन-ऊर्जा का प्रयोग किया जा रहा है।

- **पुनर्चक्रीकरण :** दोबारा प्रयोग करना, पुनः संसाधित करना। कागज बनाने के लिये हमें लकड़ी के गूदे की आवश्यकता होती है जो हमें पेड़ों से प्राप्त होता है। इसलिये प्रयोग किये कागज के पुनर्चक्रीकरण द्वारा हम पेड़ों को काटने से बचाने में योगदान दे सकते हैं। जल एक दुर्लभ संसाधन है तब भी हम जल का न्यायोचित प्रयोग नहीं करते। हम वर्षा जल को इकट्ठा करके वर्षा जल का पुनः प्रयोग कर सकते हैं।

- **कम करके :** कम प्रयोग करना अथवा अल्प व्यय करना। हमारा उपभोग हमारी मूल आवश्यकताओं की पूर्ति करने तक सीमित होना चाहिये। स्थानीय बाजार तक जाने के लिये वाहन के प्रयोग के स्थान पर हम पैदल जा सकते हैं अथवा लिफ्ट द्वारा ऊपर जाने के स्थान पर सीढ़ियों का प्रयोग कर सकते हैं। जिनकी हमें आवश्यकता न हो उन पंखों तथा रोशनी के उपकरणों को बंद कर सकते हैं।

अभ्यास के रूप में विचार कीजिये कि आप अपने स्थानीय समाज में धारणीय विकास को किस प्रकार प्रोत्साहित कर सकते हैं। आप अपने स्थानीय पर्यावरण में सुधार लाने के लिये क्या कर सकते हैं? लिखिये कि आपके कार्य विश्व के अन्य भागों में रहने वाले लोगों के पर्यावरण तथा जीवन को सुधारने में किस प्रकार सहायता कर सकते हैं।

## पाठगत प्रश्न 23.4

1. धारणीय विकास से आपका क्या अभिप्राय है?
2. पर्यावरण के धारणीय विकास के लिये उत्पादों के पुनर्चक्रीकरण का एक उदाहरण दीजिये।

## आपने क्या सीखा

- पर्यावरण में उन सभी जैविक तथा अजैविक कारकों को सम्मिलित किया जाता है जो प्रकृति में एक दूसरे को प्रभावित करते हैं।
- संसाधन नवीकरणीय जैसे वन और गैर नवीकरणीय जैसे पैट्रोलियम हो सकते हैं।

- प्रदूषण, प्राकृतिक संसाधनों की गुणवत्ता अथवा प्राकृतिक जैव तंत्र में अवांछनीय परिवर्तन है।
- वायु प्रदूषण, सांस लेने में, कठिनाई तथा खांसी उत्पन्न करता है। जल प्रदूषण, जल से उत्पन्न होने वाली बीमारियाँ जैसे हैजा, टाइफाइड, अतिसार आदि उत्पन्न करता है।
- ध्वनि प्रदूषण, उच्च रक्तचाप, बहरापन आदि उत्पन्न करता है।
- भूमि निम्नीकरण, फसल उगाने के लिए भूमि की उत्पादन क्षमता को कम करता है।
- संसाधनों के क्षय से अभिप्राय किसी क्षेत्र अथवा प्रदेश में कच्चे माल की क्षीणता से है।
- धारणीय विकास ऐसा विकास है जो कि भावी पीढ़ियों की आवश्यकताओं की पूर्ति की क्षमता से समझौता किये बिना वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति करे।
- हम धारणीय विकास में योगदान दे सकते हैं:

  (i) गैर-नवीकरणीय संसाधनों के लिये स्थानापन्न ढूंढ़कर और नवीकरणीय संसाधनों का युक्ति संगत प्रयोग करके।

  (ii) प्रयोग किये उत्पादों के पुनर्चक्रीकरण द्वारा

  (iii) अपने उपभोग को सीमित करके।

## पाठांत प्रश्न

1. नवीकरणीय तथा गैर-नवीकरणीय संसाधनों में भेद कीजिये। प्रत्येक के कम से कम दो उदाहरण दीजिये।
2. मानव सभ्यता की उन्नति के साथ पर्यावरण से संबंधित अनेक समस्याएं उत्पन्न हो गई हैं। क्या आप सहमत हैं? अपने उत्तर के लिये कारण दीजिये।
3. वायु प्रदूषण से क्या अभिप्राय है? वायु प्रदूषण के किन्हीं तीन मुख्य स्रोतों के नाम दीजिए। इसके हानिकारक प्रभाव क्या हैं?
4. जल प्रदूषण क्या है? जल प्रदूषण के मुख्य स्रोत बताइए। इसके हानिकारक प्रभाव क्या हैं?
5. ध्वनि प्रदूषण क्या है? इसके मुख्य स्रोतों के नाम दीजिए। इसके मुख्य हानिकारक प्रभावों का वर्णन कीजिये।
6. भूमि निम्नीकरण से क्या अभिप्राय है? इसके प्रमुख कारण क्या हैं? भूमि पतन के दो हानिकारक प्रभाव लिखिए।

7. प्राकृतिक आवास के निम्नीकरण से क्या अभिप्राय है? इसके प्रमुख कारण बताओ। प्राकृतिक आवास के निम्नीकरण के हानिकारक प्रभाव क्या हैं?

8. संसाधनों के क्षय से क्या अभिप्राय है? उन संसाधनों के दो उदाहरण दीजिए जिनके भण्डार में पिछले 100-150 वर्षों में तीव्र गति से कमी हो रही है।

9. धारणीय विकास से क्या अभिप्राय है? ऐसी दो विधियां सुझाइए जिनके द्वारा हम धारणीय विकास में योगदान दे सकते हैं।

## पाठगत प्रश्नों के उत्तर

### पाठगत प्रश्न 23.1

1. पर्यावरण पृथ्वी अथवा इसके किसी भाग पर प्राकृतिक रूप से पाई जाने वाली सभी जीव तथा निर्जीव वस्तुओं को चारों ओर से घेरे रहता है।

2. (i) जैविक तत्व (ii) अजैविक तत्व

3. नवीकरणीय संसाधन : वन, जल

   गैर-नवीकरणीय : पैट्रोलियम, कोयला

### पाठगत प्रश्न 23.2

1. प्रदूषक कोई व्यर्थ पदार्थ अथवा वस्तु होता है जो प्राकृतिक संसाधनों अथवा प्राकृतिक जैवतंत्र में अवांछनीय परिवर्तन लाता है।

2. (i) फैक्ट्रियों से धुआं

   (ii) मोटर गाड़ियों का निकास

3. (i) इसके कारण हैजा, टाइफायड आदि बीमारियां होती हैं।

   (ii) जलीय जीवन को मारता है।

4. ध्वनि प्रदूषण अत्यधिक तथा अप्रिय पर्यावरण संबंधित ध्वनि है जो मानव अथवा जन्तु जीवन की गतिविधियों को अस्त व्यस्त कर देती है।

### पाठगत प्रश्न 23.3

1. भूमि निम्नीकरण से अभिप्राय भूमि की गुणवत्ता में अवांछनीय अथवा हानिकारक या विघ्न उत्पन्न करने वाले परिवर्तन से है।

2. (i) भूमि निम्नीकरण

   (ii) प्राकृतिक आवास का निम्नीकरण

### पाठगत प्रश्न 23.4

1. धारणीय विकास वह विकास है जो कि भावी पीढ़ियों की आवश्यकताओं की पूर्ति की क्षमता से समझौता किये बिना वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति करे।

2. हम वर्षा के जल को इकट्ठा करके वर्षा जल को पुनः प्रयोग कर सकते हैं।

# 24

# उपभोक्ता जागरूकता

विभिन्न आवश्यकताओं को संतुष्ट करने के लिए लोग कीमतों का भुगतान करके वस्तुएं और सेवाएं खरीदते हैं। किन्तु क्या किया जाय यदि खरीदी गई वस्तुएं गुणवत्ता में बुरी, अनुचित मूल्यों वाली और मात्रा में कम माप वाली आदि पाई जाएं। ऐसी सभी स्थितियों में, संतुष्टि प्राप्त करने की बजाय, उपभोक्ता, विक्रेताओं द्वारा जिन्होंने वे वस्तुएं और सेवाएं बेची हैं, ठगा गया महसूस करते हैं। वे, यह भी महसूस करते हैं कि इस हानि का उन्हें उपयुक्त मुआवजा मिलना चाहिए। इसलिए ऐसे मामलों को ठीक करने के लिए कोई पद्धति होनी चाहिए। दूसरी ओर, उपभोक्ताओं को यह महसूस करना चाहिए कि उनके केवल अधिकार ही नहीं, कुछ उत्तरदायित्व भी हैं।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप समझ सकेंगे:

- उपभोक्ता वस्तुओं और सेवाओं और उपभोक्ता जागरूकता का अर्थ;
- उपभोक्ता जागरूकता की आवश्यकता;
- भारत में उपभोक्ता संरक्षण पद्धति की व्याख्या;
- उपभोक्ताओं के अधिकारों और उत्तरदायित्वों का ज्ञान;
- उपभोक्ता न्यायालयों में शिकायत करने की विधियां;
- भारत में उपभोक्ता आन्दोलन की चुनौतियों को जानना।

## 24.1 कुछ परिभाषाएं

पहले हमें एक उपभोक्ता, वस्तुओं और सेवाओं और उपभोक्ता जागरूकता का अर्थ जानना चाहिए।

- **उपभोक्ता कौन है?**

आरम्भ में, हमें उपभोक्ता की परिभाषा जाननी चाहिए। उपभोक्ता, वस्तुओं और सेवाओं का क्रेता है। क्रेता की सहमति से वस्तुओं और सेवाओं का उपयोग करने वाला भी एक उपभोक्ता माना जाता है। किन्तु एक व्यक्ति, जो वस्तुएं और सेवाएं बाजार में पुनः बिक्री के लिए खरीदता है उपभोक्ता नहीं समझा जाता।

- **वस्तुएं और सेवाएं क्या है?**

वस्तुएं वे उत्पाद हैं जिनका विनिर्माण या उत्पादन किया जाता है और उपभोक्ताओं को खुदरा और थोक विक्रेताओं के माध्यम से बेचा जाता है। सेवा से अभिप्राय, किसी भी प्रकार की सेवा से है जो संभावित उपभोक्ता को सुविधाओं के प्रदान करने सहित जैसे बैंकिंग, बीमा, परिवहन, बिजली या दूसरी ऊर्जा की पूर्ति, आवास, निर्माण कार्य, जल आपूर्ति, स्वास्थ्य, उत्सव, मनोविनोद आदि उपलब्ध कराई जाती है। इसमें निःशुल्क उपलब्ध कराई जाने वाली सेवाएं या ठेके के अन्तर्गत की गई व्यक्तिगत सेवाएं शामिल नहीं होतीं।

- **उपभोक्ता जागरूकता**

उपभोक्ता जागरूकता से अभिप्राय निम्न के संयोग से हैः

(i) **उपभोक्ता द्वारा खरीदी गई वस्तु की उसकी गुणवत्ता के विषय में जानकारी :** उदाहरण के लिए, उपभोक्ता को मालूम होना चाहिए कि वस्तु स्वास्थ्य के लिए अच्छी है या नहीं अथवा उत्पाद पर्यावरण जोखिम आदि पैदा करने से मुक्त है या नहीं।

(ii) **विभिन्न प्रकार के जोखिमों और उत्पाद को बेचने से सम्बन्धित समस्याओं की शिक्षा :** उदाहरण के लिए, किसी वस्तु की बिक्री का एक ढंग, समाचार पत्रों, दूरदर्शन आदि के माध्यम से विज्ञापन है। उपभोक्ताओं को विज्ञापनों के बुरे प्रभावों के विषय में उचित शिक्षा मिलनी चाहिए। उन्हें विज्ञापन की अंतर्सूची की भी जांच कर लेनी चाहिए।

(iii) **उपभोक्ता के अधिकारों के विषय में ज्ञान :** पहले उपभोक्ता को यह जान लेना चाहिए कि उसे ठीक प्रकार के उत्पाद प्राप्त करने का अधिकार है। दूसरे, यदि उत्पाद किसी प्रकार दोषपूर्ण पाया जाता है तो उपभोक्ता को देश के कानून के अनुसार, मुआवजे के दावा करने का ज्ञान होना चाहिए।

(iv) **उपभोक्ता को अपने उत्तरदायित्व का ज्ञान :** इससे यह अभिप्राय है कि उपभोक्ता को किसी प्रकार का अपव्ययी और अनावश्यक उपभोग नहीं करना चाहिए।

## 24.2 उपभोक्ता जागरूकता की आवश्यकता

आजकल बाजार बहुत अधिक मात्रा में विभिन्न प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं से भरा पड़ा है। उत्पादकों और वस्तु के अन्तिम विक्रेताओं की संख्या भी कई गुना बढ़ चुकी है। इसलिए

यह जानना बहुत कठिन हो गया है कि यथार्थ उत्पादक या विक्रेता कौन है? उपभोक्ता के लिए व्यवहारिक रूप से यह सम्भव नहीं है कि वह उत्पादक या विक्रेता से व्यक्तिगत संपर्क कर सके। इसके अलावा विकसित सूचना प्रौद्योगिकी के युग में, उपभोक्ता और उत्पादक/विक्रेता के बीच भौतिक दूरी भी बढ़ गई है क्योंकि उपभोक्ता अपनी वस्तुएं टेलीफोन पर आदेश देकर या इन्टरनेट आदि के माध्यम से घर बैठे प्राप्त करते हैं। इसी प्रकार, वस्तुओं में, यह जानना बहुत कठिन हो गया है कि कौन एक असली है। लोग सोचते हैं कि एक उत्पाद जिसका विज्ञापन आया है, अच्छी होनी चाहिए या उत्पादक जिसका नाम विज्ञापन के माध्यम से जाना गया है, अवश्य ही अच्छा उत्पाद बेच रहा होगा। किन्तु यह हमेशा सच नहीं हो सकता। कुछ विज्ञापनों में, उपभोक्ताओं को गुमराह करने के लिए अधिकतर सूचना जान बूझकर छुपा दी जाती है।

पैक किए हुए खाद्य पदार्थ, उत्पाद और दवाइयों पर समाप्ति की तारीख होती है जिसका तात्पर्य यह है कि वह विशिष्ट उत्पाद उस तारीख से पहले उपभोग कर लेना चाहिए और उस तारीख के पश्चात बिल्कुल नहीं। यह सूचना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह उपभोक्ता के स्वास्थ्य से सम्बन्धित है। कभी-कभी ऐसा होता है कि या तो ऐसी सूचना उपलब्ध नहीं कराई जाती या उत्पादक जानबूझकर यह सूचना नहीं देता क्योंकि उपभोक्ता ने इसके विषय में नहीं पूछा या उत्पाद पर लिखे हुए निर्देश पर ध्यान नहीं दिया।

यह भी बहुत बार होता है कि उपभोक्ता वस्तुएं और सेवाएं बिना बिल के खरीदता है या विक्रेता बिल नहीं देता। यह उत्पाद पर सरकार को दिए जाने वाले कर को बचाने के लिए किया जाता है। इस प्रकार का कर मूल्य वृद्धि कर (VAT) कहलाता है। यदि इस कर को शामिल कर लिया जाता है तो उत्पाद की कीमत, कर के कारण अधिक हो जाएगी और उसके अनुसार बिल देने से वह प्रमाणित हो जायेगा। परन्तु उपभोक्ता को उत्पाद को नीची कीमत पर बेचकर, आकर्षित करने के लिए, विक्रेता कर कम कर देता है और बिल नहीं देता। क्योंकि कीमत कम होती है, उपभोक्ता बिल के लिए चिंता नहीं करता। ऐसा करने से दो समस्याएं पैदा होती हैं। एक तो, सरकार कर आगम से वंचित रह जाती है और दूसरे, उपभोक्ता को हानि उठानी पड़ सकती है यदि उत्पाद दोषपूर्ण है। वह न तो उत्पाद को वापस कर सकता है और न ही शिकायत कर सकता है, क्योंकि क्रय को प्रमाणित करने के लिए कोई बिल नहीं है।

दूसरी मुख्य समस्या यह है कि उपभोक्ताओं में एकता नहीं होती। उत्पादक और व्यापारी शक्तिशाली हो गए है क्योंकि उनके हितों की रक्षा के लिए उत्पादकों और व्यापारियों के संघ हैं। किन्तु क्रेता अब भी कमजोर और असंगठित हैं। फलस्वरूप क्रेताओं को छला और धोखा दिया जाता है।

ऊपर दिए गए तर्कों के आधार पर उपभोक्ताओं के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि वे व्यापरियों और सेवा उपलब्ध कराने वालों की अनुचित व्यापार आचरणों से स्वयं को बचाकर रखें। उन्हें अपने अधिकारों की उपभोक्ता के रूप में जानकारी और उनका तुरन्त उपयोग करने की

आवश्यकता है। यह ध्यान देना चाहिए कि उपभोक्ता जागरूकता केवल उपभोक्ताओं के अधिकारों के विषय में नहीं है। यह एक भली प्रकार जानी पहचानी वास्तविकता है कि संसार में बहुत से उपभोक्ता, अपनी मौद्रिक शक्ति के कारण अविचार और अपव्ययी उपभोगों में संलग्न रहते हैं। इसने समाज को धनी उपभोक्ताओं और गरीब उपभोक्ताओं में बांट दिया है। इसी प्रकार, बहुत से उपभोक्ता, उपभोग के पश्चात बचे हुए कुड़ा करकट के सुरक्षित निपटान की चिंता नहीं करते  जिससे पर्यावरण प्रदूषित होता है। उत्पाद की नीची कीमत का भुगतान करने से सहमत होकर, बिना बिल मांगे, बहुत से उपभोक्ता, अप्रत्यक्ष रूप से, सरकार को कर देने से बचने में विक्रेता की सहायता करते हैं। इसलिए उपभोक्ता जागरूकता में, उपभोक्ताओं को उनके उत्तरदायित्वों के बारे में शिक्षित करने की भी आवश्यकता है।

उपभोक्ताओं को भी, अधिक उत्तरदायित्व के साथ सरकार के साथ हाथ मिलाकर कार्य करना चाहिए।

## पाठगत प्रश्न 24.1

1. उपभोक्ता कौन नहीं है?
2. उत्पाद खरीदते समय उपभोक्ता को बिल क्यों लेना चाहिए?
3. मूल्य वृद्धि कर क्या है?

## 24.3 भारत में उपभोक्ता संरक्षण पद्धति

हमारे देश में उपभोक्ता शिक्षा के क्षेत्र में वैधानिक और प्रशासनिक शासन तन्त्र है। आपके लिए इसे समझना महत्वपूर्ण है। उपभोक्ता संरक्षण पद्धति एक ऐसी पद्धति है जिसमें उपभोक्ता, जब उन्हें वस्तुओं और सेवाओं के विक्रेताओं या निर्माताओं द्वारा ठगा जाता है, तो वे उपभोक्ता न्यायालयों में शिकायत कर सकते हैं और न्याय की मांग कर सकते हैं। इसमें उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा के नियम ओर वे संस्थाएं शामिल हैं जो उपभोक्ताओं के अधिकारों की सहायता करने के लिए कानूनों को लागू कर सकती हैं। सरकार को धन्यवाद है कि उपभोक्ता शिक्षा पर विशेष ध्यान देते हुए, हमारे देश में अनेकों कानून बनाए गए हैं। इनका उद्देश्य, लोगों की उपभोक्ता के रूप में उनके अधिकारों और उत्तरदायित्वों को समझने और शोषण से संरक्षण में सहायता करना है। सरकारी विभागों और उपभोक्ता न्यायालयें के रूप में प्रभावित उपभोक्ताओं की शिकायतों का निवारण करने वाली संस्थाओं की भी स्थापना की गई है। चलो, उनकी निम्न प्रकार व्याख्या करते हैं।

### 24.3.1 सरकारी कानून

हमारे देश में, स्वतंत्रता से पहले भी, उपभोक्ताओं के अधिकारों की रक्षा के लिए, बहुत से सरकारी कानून थे। किन्तु उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम (CPA) 1986 सबसे अधिक महत्वपूर्ण

है और आपको उपभोक्ता के रूप में, आपके अधिकारों के उल्लंघन के विपरीत पूरा मार्गदर्शन और सहायता करता है। उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम विशेष रूप से उपभोक्ता के हितों की रक्षा के लिए बनाया गया है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात कुछ अन्य कानून बनाए गए जिनका उद्देश्य उपभोक्ता को संरक्षण प्रदान करना है। जैसे खाद्य पदार्थ मिलावट निरोधक अधिनियम (PFA) 1954, अनिवार्य वस्तु अधिनियम (ECA) 1955, भार और माप मापक अधिनियम (SWMA) 1976।

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, देश में लाखों उपभोक्ताओं को सस्ता, सरल और शीघ्र न्याय दिलाने के उद्देश्य से बनाया गया। यह ऐसे न्याय को सुनिश्चित करता है जो कम औपचारिक, कम कागजी कार्यवाही वाला, देरी को कम करने वाला तथा कम खर्चीला है। उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम सभी वस्तुओं और सेवाओं पर लागू होता है जब तक कि विशेष रूप से छूट न दी गई हो। इसमें सभी निजी सार्वजनिक और सहकारी क्षेत्र शामिल हैं। यह उपभोक्ता को, नगरपालिका के अधिकारियों को, जो सभी सेवाएं जैसे सड़कों पर रोशनी, पीने का पानी, नालियां और स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने में असफल रहते है, उपभोक्ता को न्यायालयों में चुनौती देने की भी शक्ति देता है।

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम में अभी वर्तमान में शामिल किए गए कुछ दूसरे उपाय हैंः

- उपभोक्ताओं को यह निश्चय करने की अनुमति दी जाती है कि वे कहां संरक्षण प्राप्त करना चाहते हैं?
- कोई कम्पनी अपनी पसंद के न्यायालय में न्याय प्राप्त करने के लिए बाध्य नहीं कर सकती।
- उपभोक्ता, कम्पनी के सेवा प्रदाताओं पर, अपनी व्यक्तिगत सूचना को विक्रेताओं जैसे बैंक, बीमा कम्पनी आदि को देने के लिए भी मुकदमा चलाने की अनुमति देता है।
- स्थावर सम्पदा के विकास कर्ताओं को व्यापारी के रूप में वर्गीकृत किया जाता है और उनके विपरीत उपभोक्ता न्यायालयों में मुकदमा चलाया जा सकता है।
- विदेशी एजेंसियां जो इ-कामर्स साइट के माध्यम से इन्टरनेट पर या टेलीफोन पर क्रय-विक्रय करती हैं, अपने उत्पाद को नहीं बेच सकती जब तक कि उनका कार्यालय भारत में न हो। खरीदने से पहले, उन्हें अपने सामान की जांच का प्रबंध करना पड़ेगा या अपनी वस्तुओं को 30 दिन के अन्दर वापस देना पड़ेगा।
- अधिकारियों और हितधारकों जैसे राज्य सरकारों के डाक और टेलीफोन विभाग, पासपोर्ट कार्यालय, नगर निगम सेवाएं, केन्द्रीय सरकार स्वास्थ्य योजना और रेलवे आदि अधिनियम इस अधिनियम से छूट मांग रहे हैं अन्यथा उन्हें भारी मुकदमेबाजी का समाना करना पड़ेगा।

## पाठगत प्रश्न 24.2

1. CPA, ECA और SWMA का पूरा नाम बताओ।
2. कोई विदेशी एजेन्सी, भारत में अपना माल कैसे बेचेगी?

### 24.3.2 उपभोक्ताओं की शिकायतों को निपटाने वाली संस्थाएं

भारत के नागरिकों के लिए, जिला, राज्य और राष्ट्रीय, सभी स्तरों पर कार्य करने के लिए संस्थागत शासन तन्त्र है। दो प्रकार की संस्थाएं है : (i) सरकारी परिषदें और (ii) उपभोक्ता न्यायालय। इसके अलावा बहुत से गैर-सरकारी संगठन (NGO) भी हैं जो सरकारी नियमों के अन्तर्गत पंजीकृत हैं और पीड़ित उपभोक्ताओं को विभिन्न प्रकार की सहायता उपलब्ध कराते हैं।

#### (i) सरकारी परिषद

निम्नलिखित प्रवाह चार्ट को राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर सरकारी परिषदों को जानने के लिए पढ़ो।

**सरकारी स्तर पर उपभोक्ता संरक्षण शासन तंत्र**

केन्द्रीय उपभोक्ता संरक्षण परिषद — राज्य उपभोक्ता सरंक्षण परिषद

जैसा कि चार्ट में दिखाया गया है कि राष्ट्रीय स्तर पर एक केन्द्रीय उपभोक्ता संरक्षण परिषद (CCPC) है जिसका संचालन उपभोक्ता मामलों के प्रभारी केन्द्रीय मंत्री द्वारा किया जाता है जो नई दिल्ली में है। राज्य स्तर पर, एक राज्य उपभेक्मा संरक्षण परिषद (SCPC) हर राज्य में है जिसका संचालन राज्य सरकार में उपभोक्ता मामलों के प्रभारी राज्य मंत्री द्वारा किया जाता है।

#### उपभोक्ता न्यायालय

जिला, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर उपभोक्ता न्यायालयों के प्रकार जानने के लिए निम्न प्रवाह चार्ट को पढ़ो।

**भारत में उपभोक्ता न्यायालय**

राष्ट्रीय उपभोक्ता विवाद संरक्षण आयोग (NCDRC) — राज्य उपभोक्ता विवाद संरक्षण आयोग (SCDRC) — जिला उपभोक्ता फोरम (DCF)

जैसा कि चार्ट में दिया गया है, उपभोक्ता न्यायालयों के भारत में तीन स्तर है। हर राज्य में जिला स्तर पर सबसे नीचे जिला उपभोक्ता फोरम होती हैं। वर्तमान में देश में 604 जिला अदालत हैं। बीच के स्तर पर, राज्य उपभोक्ता विवाद संरक्षण आयोग (SCDRC) है। देश में 35 राज्य आयोग हैं।

अंत में सबसे ऊपर एक सर्वोच्च संस्था है जिसे राष्ट्रीय उपभोक्ता विवाद संरक्षण आयोग (NCDRC) के नाम से जाना जाता है जो साथ-साथ देश में उपभोक्ता विवाद में, सस्ता, शीघ्र

और सरल संरक्षण प्रदान करने का कार्य करता है। उपभोक्ता न्यायालय अर्द्ध-न्यायिक प्रकृति की और लोगों के प्रति प्रत्यक्ष रूप से उत्तरदायी है। केन्द्रीय और राज्य सरकारें, इन अदालतों के कार्य के विषय में नीति बनाने के लिये उत्तरदायी होती हैं।

### 24.3.3 संरक्षण शासन तंत्र

अब प्रश्न उठता है कि एक उपभोक्ता जो अपने आपको ठगा गया समझता है, वह किस प्रकार न्याय अथवा मुआवजे के रूप में सहायता प्राप्त कर सकता है। इसके लिए वह किसी उपभोक्ता अदालत में एक लिखित शिकायत देकर, स्वयं या वकील के माध्यम से जा सकता है। विशेष न्यायालय जिसमें वह जा सकता है, वस्तु के मूल्य पर निर्भर करता है। 20 लाख रु. तक मूल्य की वस्तु या सेवा के मामले में प्रभावित उपभोक्ता, जिला उपभोक्ता अदालत के सामने एक लिखित शिकायत कर सकता है। यदि मूल्य 1 करोड़ रु. तक है तो राज्य आयोग में जा सकता है। अंत में 1 करोड़ से अधिक मूल्य के लिए उसे सहायता की स्वीकृति के लिए उपभोक्ता राष्ट्रीय आयोग में जाना चाहिए। उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम के अनुसार सहायता 90 से 150 दिनों में मिल जानी चाहिए। यदि कोई उपभोक्ता जिला अदालत के फैसले से सन्तुष्ट नहीं है तो वह राज्य आयोग में चुनौती दे सकता है। यदि अब भी राज्य आयोग के निर्णय से वह सन्तुष्ट नहीं है तो वह उपभोक्ता राष्ट्रीय आयोग के पास जा सकता है।

### 24.3.4 आपको क्या करने की आवश्यकता है? शिकायत कैसे की जाय?

शिकायत करने के लिए पीड़ित उपभोक्ता के पास, उसके द्वारा खरीदे गए उत्पाद के नकद भुगतान की रसीद या बिल हमेशा होनी चाहिए। शिकायत का नमूना उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम द्वारा दी गई पुस्तक में दिया होता है। फिर उपभोक्ता को उचित श्रेणी का चुनाव करना चाहिए जिसमें वह शिकायत कर रहा है। ये श्रेणियां हैं, अनुचित व्यापार आचरण, सेवा में कमी आदि। तब शिकायत की प्रकृति का संक्षेप में वर्णन करना चाहिए। उपभोक्ता दोष और इसके निदान के विषय में स्पष्ट होना चाहिए। अर्थात वस्तु को बदलना, कीमत राशि की वापसी या सेवा के विषय में मुआवजा। रसीद या अन्य प्रमाण के दस्तावेज आदि शिकायत के साथ लगा देने चाहिए। पूरे सैट की तीन कापियाँ होनी चाहिए। एक शिकायत करने वाले के लिए, एक दूसरी पार्टी के लिए जिसके विपरीत शिकायत की गई है और तीसरी उपभोक्ता अदालत के लिए। कुछ नाम मात्र की फीस शिकायत करने वाले द्वारा अदालत को बैंक ड्राफ्ट द्वारा भुगतान करनी पड़ती है।

यह बात ध्यान रखें कि जिस तारीख को दोष पाया जाता है उसके दो वर्ष के अन्दर शिकायत कर देनी चाहिए। यह खरीदने की तारीख पर निर्भर नहीं करता। प्रभावित व्यक्ति या तो व्यक्तिगत रूप से पेश हो सकता है, कोई प्रतिनिधि या एक वकील या पत्र भी भेज सकता है। यदि शिकायत करने वाले की मृत्यु हो चुकी है तो उसके कानूनी उत्तराधिकारी अदालत में जा सकते हैं। यदि व्यक्ति नीचे की अदालत के निर्णय से सन्तुष्ट नहीं हैं तो नीचे की अदालत के निर्णय के 30 दिन के अन्दर उच्च अदालत में अपील कर देनी चाहिए। ध्यान रहे कि, किसी प्रकार,

यदि अदालत यह सोचती है कि आपकी शिकायत निरर्थक है तो अदालत आप पर 10000 रु. तक जुर्माना कर सकती है। स्थानीय उपभोक्ता अधिकारी से मिलकर या वैबसाइट ncdrc.nic.in and core.nic.in आदि से अद्यतन नियमों की जांच कर लेनी चाहिए।

आजकल इन्टरनेट के माध्यम से विचारों का आदान प्रदान जीवन का एक ढंग हो चुका है। इसलिए शिकायत के बारे में मेल भी किया जा सकता है। ई-मेल आइ डी/वैबसाइट उत्पाद के कवर पर छपी होती है।

### 24.3.5 गैर-सरकारी संगठनों की भूमिका

यदि उत्पादक/कम्पनी/विक्रेता पीड़ित व्यक्ति को साफ मना कर देता है तो गैर-सरकारी संगठनों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है। कोई भी किसी गैर-सरकारी संगठन (NGOs) जैसे उपभोक्ता पीड़ा (www.consumer.grievance. com), भारत की उपभोक्ता मार्गदर्शक परिषद (www.cgs_india.org), सामान्य उद्देश्य (www.commoncauseindia.org) और उपभोक्ता अदालत (www.consumer.org.in) में शिकायत कर सकता है। गैर-सरकारी संगठन न केवल मुकदमा डालने में सहायता करते हैं बल्कि वे संभारतंत्र, मानव शक्ति और अन्य सहायता भी उपलब्ध कराते हैं। गैर-सरकारी संगठन उपभोक्ताओं को अधिकारों और उत्तरदायित्वों के बारे में शिक्षित करने के बहुत से कार्यक्रम भी आयोजित करते हैं।

कोई भी 'जागो ग्राहक जागो' नाम के उपभोक्ता सहायता संगठन से भी सम्पर्क कर सकता है। यह लगभग प्रत्येक समाचार पत्र विज्ञापन के माध्यम से इसकी संपूर्ण सूचना उपलब्ध कराता है। ऑनलाइन शिकायत फार्म, साइट पर जाकर भी प्राप्त किया जा सकता है।

बैंकिंग, बीमा कर और टेलीफोन संचार से सम्बन्धित समस्याओं की कुछ अन्य वैबसाइट हैं :

- www.banking_ombudsman.rbi.org.in
- www.irdaindia.org
- www.incometaxindia.gov.in
- www.trai.gov.in

### 24.3.6 शिकायत करने के आधार

सेवा में कमी, अधिनियम के अन्तर्गत, शिकायत करने के आधारों में से एक है। शब्द कमी को, कोई दोष, अपूर्णता, गुणवत्ता में कमी या अपर्याप्तता, निष्पादन की प्रकृति और तरीका जिसे बनाये रखना आवश्यक है को किसी व्यक्ति के द्वारा कार्य समझौते के आधार पर करने या किसी प्रकार की सेवा सम्बन्ध में अपर्याप्तता के रूप में परिभाषित किया गया है। किसी गलती करने वाले के द्वारा, अपनी कमी या दोषपूर्ण वस्तुओं और सेवाओं के लिए, मुआवजे का भुगतान करना पड़ता है।

## पाठगत प्रश्न 24.3

1. सरकारी परिषदों के नाम दो जो उपभोक्ताओं की शिकायतों को राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर सुनने का कार्य करती हैं।
2. राष्ट्रीय, राज्य और जिला स्तर पर उपभोक्ता अदालतों के नाम दो।
3. उपभोक्ता अदालत में शिकायत कब की जा सकती है?

## 24.4 उपभोक्ताओं के अधिकार

वस्तुओं और सेवाओं का क्रय, आपको उपभोक्ता के रूप में कुछ अधिकार प्रदान करता है। वे निम्नलिखित हैं।

### 24.4.1 सूचना का अधिकार

यह अधिकार, उल्लेख करता है कि विक्रेताओं और उत्पादकों को, उपभोक्ताओं को, कीमत, वजन, कम्पनी का ब्रांड, वस्तु के निर्माण और समाप्ति तिथियां, गुणवत्ता पहचान चिन्ह, संघटक, कम्पनी से सम्पर्क करने के सूत्र और इसी प्रकार वस्तु के बुद्धिमत्तापूर्ण चुनाव करने के लिए पर्याप्त और उचित सूचना उपलब्ध करानी चाहिए। सेवा क्षेत्र का एक उदाहरण निम्न है :

> जब एक उपभोक्त दिल्ली से बंगलौर की यात्रा का न्यूनतम किराया ज्ञात करने का प्रयास कर रहा था, उसे पता चला कि हवाई जहाज का किराया 1450 रु. और इससे अधिक है। उसने एक उड़ान चुनी जिसकी कीमत 1500 रु. तथा करें अतिरिक्त थी। उसे करों के घटक के विषय में कुछ पता नहीं था। जैसे ही वह बुकिंग के लिए गया, उसे पता चला कि 1500 रु. मौलिक किराया है और उस पर कर और दूसरी फीस की लागत अन्य 3445 रु. है और अन्तिम किराया 4945 रु. होगा।
>
> हवाई और समुद्री जहाज कम्पनियां अधिक ईमानदार और पारदर्शी क्यों नहीं हो सकतीं और आरम्भ में ही वास्तविक किराया क्यों नहीं बताती। वे उपभोक्ताओं को जो उन्होंने पहले बताया उससे तीन गुना से अधिक किराया भुगतान कराके, क्यों भ्रमित करती हैं? आप को सावधान रहना है और ऐसे सेवा प्रदाताओं से पूर्ण सूचना प्राप्त करनी है जो सूचना का एक भाग छुपा लेते हैं जिसके आधार पर बाद में वे उपभोक्ताओं को परेशान करते हैं।

### 24.4.2 चुनाव का अधिकार

उपभोक्ता को, क्या खरीदा जाय और क्या नहीं खरीदा जाए, इस विषय में चुनाव करने का अधिकार है। कभी-कभी, जब आप कोई सेवा प्राप्त करते हो या वस्तु खरीदते हो तो आप

ऐसा नहीं कर सकते क्योंकि आपको उन वस्तुओं का क्रय करने के लिये बाध्य किया जाता है जिन्हें आप खरीदना नहीं चाहते। दुकानदार शर्त रख देता है और आपके पास चुनाव की गुंजाइश नहीं रहती है। आप, उपभोक्ता के रूप में अपना चुनाव का अधिकार खो देते हैं। निम्न केस को पढ़ें :

जब सैंथिल ने एक नए गैस के कनेक्शन के लिए प्रार्थना पत्र भेजा, तो उन्होंने इसकी जरा भी कल्पना नहीं की, कि यह उनकी कष्टमय यात्रा का पहला कदम होगा। वह कुमारन गैस ऐजेन्सी में, भारत गैस सिलैण्डर के लिए, यह सोचकर गए कि उन्हें 1500 रु. का भुगतान करना पड़ेगा बदले में उन्हें 7000 रु. का भुगतान करना पड़ा क्योंकि उन्हें ऐसे उत्पाद खरीदने पड़े जिनकी उन्हें बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं थी जैसे प्रैशर कुकर, गैस लाइटर और एक पैकेट डिटरजैंट पाउडर भी। कारण यह है कि ऐजेन्सी ने इस बात पर दबाव दिया कि एक नये ग्राहक के लिए पूरी किट खरीदना अनिवार्य है। सैन्थिल ने उपभोक्ता ऑनलाइन संसाधन तथा अधिकार केन्द्र [Online Resource and Empowerment Centre (CORE)] को शिकायत की जिसने एजेन्सी को एक ई-मेल भेजा। एक सप्ताह के अन्दर उसे 5000 रु. वापस कर दिए गए। आम विश्वास के विपरीत, यह ग्राहक इस बात का एक साक्षी है कि किसी शिकायत को हल करने के लिए अधिक समय और वित्तीय हानि नहीं होती है। (India infoline News Service, Mumbai, April 2, 2009)

### 24.4.3 सुरक्षा का अधिकार

यह अधिकार, ऐसी वस्तुओं के विक्रय के सम्बन्ध में संरक्षण उपलब्ध कराता है जो स्वास्थ्य और जीवन के लिए असुरक्षित हैं जैसे खाद्यों में मिलावट, दवाइयां, इलैक्ट्रोनिक्स और ऐसी ही वस्तुएं।

### 24.4.4 सुने जाने का अधिकार

यह अधिकार सुनिश्चित करता है कि उपभोक्ताओं के हितों पर उचित अदालतों में ठीक प्रकार से ध्यान दिया जायेगा। यह अधिकार भारतीय उपभोक्ताओं को यह भी शक्ति प्रदान करता है कि वे दोषपूर्ण उत्पाद और गलती करने वाले उत्पादक/कम्पनी/विक्रेता के विपरीत निडरता से आवाज उठा सकें।

### 24.4.5 संरक्षण प्राप्त करने का अधिकार

धोखाधड़ी, छल और किसी अन्य अन्याय जिसकी व्याख्या पहले की जा चुकी है, के विषय में उपभोक्ता को अनुचित और शोषण करने वाली व्यापार नीति के कारण हानि होने पर मुआवजा मिल सकता है। संरक्षण अदालत अपने हस्तक्षेप के द्वारा उपभोक्ताओं को न्याय दिलाने में सहायता कर सकती हैं। आओ कुछ मामलों को देखें जहां खुदरा व्यापारी, उपभोक्ताओं के संरक्षण के अधिकार की विशेष रूप से सेल लगाने पर बेची गई वस्तुओं में, अवहेलना करते हैं।

"एक व्यस्त डाक्टर ने 3 जोड़ी पैंट सेल में कटौती की गई कीमत पर 2000 रु. प्रति पैंट की दर से एक सुप्रसिद्ध ब्रांड वाले किसी विशेष खुदरा व्यापारी से खरीदीं। उसे यह जानकर बहुत आश्चर्य हुआ कि कुछ ही बार पहनने पर, इसके धोने से भी पहले कपड़ा फट गया। उनके शिकायत करने पर कम्पनी के शोरूम के मालिक ने एक जोड़ा वापस ले लिया और कहा कि इसे कम्पनी के गुणवत्ता विभाग को जांच के लिए भेजा जायेगा। एक वर्ष बीत गया है और उसे न तो कम्पनी से कोई उत्तर मिला है और न ही अपनी पैंट वापस मिली है। क्या डाक्टर को खर्च की गई मुद्रा के लिए और पैंटों के खरीदने में हुई असुविधा के लिए मुआवजा नहीं मिलना चाहिए? डाक्टर को एक उपभोक्ता के रूप में संरक्षण प्राप्त करने का अधिकार है।"

### 24.4.6 उपभोक्ता शिक्षा का अधिकार

इसका तात्पर्य यह है कि उपभोक्ताओं की उन योजनाओं और सूचनाओं तक पहुंच होनी चाहिए जिससे कि वे खरीदने से पहले और बाद में बेहतर निर्णय ले सकें। उपभोक्ताओं के निर्देश और मार्गदर्शन सरकारी विभागों और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा जारी किए जाते हैं। इससे उपभोक्ताओं को किसी वस्तु के क्रय के विषय में ठीक निर्णय लेने में सहायता मिलती है। व्यापार चिन्ह और लोगो चिन्हों की सत्यता को प्रमाणित करने के लिए जैसे आई.एस.आई. (ISI), एगमार्क (Agmark), बिस (BIS) और अन्य शिक्षा योजनाएं जनहित में की जाती हैं।

### पाठगत प्रश्न 24.4

निम्नलिखित के विषय में एक शिकायत करने के लिए उपभोक्ता के उचित अधिकार का उल्लेख कीजिए :

1. एक पैकेट बन्द खाद्य पदार्थ को खाने के पश्चात एक व्यक्ति का बीमार पड़ना।
2. एक विक्रेता का क्रेता को वस्तु के किसी विशेष ब्रांड को खरीदने के लिए बाध्य करना और अन्य प्रकार की वस्तुओं को न दिखाना।
3. समीर एक कम्प्यूटर खरीदना चाहता है और विक्रेता से वास्तविक समग्राकृति जानना चाहता है।
4. रेखा को एक विक्रेता द्वारा धोखा दिया गया और वह एक शिकायत करना चाहती है।
5. रेशमा, जिला उपभोक्ता अदालत में, एक स्थानीय अस्पताल से, एक गलत रोग निदान के विपरीत, जिसके लिए उसे अनावश्यक रूप से 2 लाख रुपये व्यय करने पड़े, मुआवजा लेने के लिए गई है।
6. आपने दिल्ली सरकार के सम्बन्धित विभाग को उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम की एक पुस्तिका लेने के लिए प्रार्थना की है।

## 24.5 उपभोक्ताओं के उत्तरदायित्व

उपभोक्ता शिक्षा केवल उपभोक्ताओं के अधिकारों के बारे में ही नहीं है बल्कि उपभोक्ताओं के उत्तरदायित्यों और उन्हें ईमानदारी और गम्भीरता से स्वीकार करने की भी है। आओ, हम यहां कुछ मामलों पर प्रकाश डालते हैं।

### 24.5.1 विज्ञापनों से व्यवहार करना

विज्ञापन हमारे जीवन के अभिन्न अंग बन चुके हैं। यदि हम उनसे बचना चाहें तो बच नहीं सकते। कम्पनियां अपने उत्पादों को, मनलुभाने वाले दृश्य दिखाकर और सुनाकर केवल उन भागों को दिखाकर, जो आंखों को चकाचौंध करते हैं और दूसरी मुख्य सूचनाओं को छुपाकार बेचना चाहते हैं। उपभोक्ताओं को ऐसे धोखे के विज्ञापनों से सावधान रहने की आवश्यकता है। बच्चे इसके सबसे बुरे शिकार बनते हैं। उन्हें ठीक प्रकार से मार्गदर्शन की आवश्यकता है।

### 24.5.2 गुणवत्ता प्रमाणित उत्पाद खरीदना

ऐसे बहुत से उत्पाद हैं जो प्रमाणित ऐजेन्सियों द्वारा अच्छी गुणवत्ता और उपभोग में सुरक्षित, होने के लिए प्रमाणित किये जाते हैं। उदाहरण के लिए भारतीय मानक संस्थान (ISI) बहुत सी उपभोक्ता वस्तुओं की गुणवत्ता की जांच करता है। यदि उचित पाया जाता है तो उत्पाद पर आई.एस.आई. (ISI) चिन्ह लगा दिया जाता है। बहुत से खाद्य उत्पादों के लिए गुणवत्ता को सुनिश्चित करने के लिए एगमार्क (AGMARK) की मुहर लगाई जाती है। उपभोक्ताओं को आई एसआई तथा एगमार्क चिन्हों वाले उत्पादों का चयन करना चाहिए। एक महत्वपूर्ण बात यह है कि खाद्य उत्पाद ओर दवाइयाँ खरीदने से पहले उपभोक्ताओं को उनकी समाप्ति की तिथि अवश्य देखनी चाहिए।

### 24.5.3 खरीद के बिल की मांग करना

प्रत्येक उपभोक्ता को अपनी वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने के पश्चात बिल अवश्य मांगना चाहिए। बिल खरीद का प्रमाण है और यदि उपभोक्ता वस्तु खरीदने के पश्चात अपने को ठगा गया समझता है तो इसका प्रयोग न्याय प्राप्त करने के लिए किया जा सकता है। बिल के माध्यम से उपभोक्ता यह भी सुनिश्चित करता है कि सरकार उत्पाद पर कर प्राप्त करती है क्योंकि विक्रेता के लिए बिल पर टैक्स की राशि दिखानी अनिवार्य है। उपभोक्ता का यह कार्य उसे देश का एक उत्तरदायी नागरिक बनाता है।

### 24.5.4 हरित उपभोक्ता होना

एक उपभोक्ता को उन उत्पादों का उपभोग करना चाहिए जो हमारे पर्यावरण को हानि नहीं पहुंचाती हैं। प्लास्टिक थैली एक ऐसा उदाहरण है जिसने पर्यावरण को गम्भीर हानि पहुंचाई है। हमें जैविक निम्नीकरण उत्पादों को प्रयोग करना चाहिए जो समाप्त होने के पश्चात मिट्टी और पानी में आसानी से मिल सकें। इसी प्रकार, लोगों को बिजली गैस आदि की युक्तिगत

प्रयोग के द्वारा बचत करना चाहिए। उपभोक्ता कस्बों और शहरों में मोटर गाड़ी प्रदूषण के लिए भी उत्तरदायी हैं। उन्हें सार्वजनिक परिवहन प्रणाली और पर्यावरण अनुकूल वाहनों का प्रयोग करना चाहिए।

### 24.5.5 उपभोक्ता प्रबन्धकों के रूप में

उपभोक्ता आपस में, स्वयं के लिए और किसी बस्ती या गांव की मौलिक आवश्यकताओं जैसे पीने के पानी, स्वास्थ्य आदि की पूर्ति उपलब्ध कराने के लिए, संगठित हो सकते हैं। यह सरकार ही है जो सेवाएं प्रदान करने के लिए प्रबन्धक का कार्य करती है। किन्तु सरकारी विभागों को प्रायः ऐसी सेवाओं के अकुशल और अनियमित वितरण के लिए बदनाम किया जाता है। इसलिए ऐसी सेवाओं को उपलब्ध कराने के लिए उपभोक्ता संगठित हो सकते हैं। निम्न कहानी को पढ़िये।

**उपभोक्ता प्रबन्धकों के रूप में**

**(गुजरात से एक सच्ची कहानी)**

गुजरात में 13000 से अधिक 'ग्रामीण पानी समितियां' हैं जो ग्रामीण स्तर पर सेवा प्रदान करने के लिए प्रबन्धक के रूप में कार्य कर रही हैं। ग्रामीण पानी समितियां ग्राम सभाओं में उपभोक्ताओं के माध्यम से बनाई जाती हैं। वे अपने गांवों की प्रणाली में परिवार स्तर पर, एक प्रबल स्वामित्व की भावना से पानी की आपूर्ति का प्रबन्ध करती हैं। वे पानी की गुणवत्ता की जांच भी करती हैं और उपभोक्ता स्तर पर गुणवत्ता का आश्वासन देती हैं।

लोगों को प्रबन्धक बनाने में समाज की संलग्नता से वितरण की लागत घटाने, समय से और पानी के कुशलतापूर्ण वितरण, पानी आपूर्ति प्रणाली की कुशलतापूर्ण मरम्मत, पानी के स्रोतों का कुशलता पूर्ण प्रयोग, नवीनतम शुल्क प्रक्रिया, पानी के स्रोतों की धारणीयता के उपाय, जैसे भूमि के पानी के रीचार्ज के लिए बांध और तालाबों का विकास करना जिससे कि क्षेत्र में पानी के स्रोतों को सुरक्षित रखने के लिए, प्रभाव पूर्ण प्रबन्ध हो सके सम्भव हुआ है।

भारत जैसे विशाल देश में सरकार के साथ उपभोक्ता का उत्तरदायित्व जुड़ा रहता है। आप अपने स्थानीय पानी, बिजली, सफाई बोर्डों, अपनी बस्ती की स्थानीय संस्था या अपने गांव की ग्राम सभा के साथ हाथ मिलाकर एक सृजनात्मक भूमिका अदा कर सकते हैं।

## 24.6 भारत में उपभोक्ता आन्दोलन के प्रमुख विषय

सफल उपभोक्ता आन्दोलन के लिए लोगों के शिक्षित होने की आवश्यकता है। भारत में न केवल जनाधिक्य है किन्तु सांस्कृतिक विभिन्नता तथा बहुत से अशिक्षित व्यक्ति भी हैं। इसलिए उपभोक्ता जागरूकता लाना एक बड़ा कार्य है। यह धीरे-धीरे बढ़ रही है और इस विषय में बहुत कुछ करना है। दो मुख्य विषय हैं (i) भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में उपभोक्ता जागरूकता फैलाना और (ii) समय से न्याय दिलाना। आओ, इनकी संक्षिप्त व्याख्या करें।

### 24.6.1 भारत में ग्रामीण क्षेत्रों में उपभोक्ता जागरूकता

वैश्वीकरण और उदारीकरण के कारण गांवों में मध्य और उच्च आय जनसंख्या में वृद्धि से हमारे ग्रामीण बाजारों का भी विस्तार हो रहा है। इसलिए कम्पनियां अपने उत्पादों के साथ हमारे ग्रामीण बाजारों में भी पहुंच रही हैं। किन्तु भारत में ग्रामीण उपभोक्ता प्रायः अज्ञानी और अशिक्षित हैं। इसलिए, निर्माताओं, व्यापारियों और सेवा प्रदाताओं द्वारा उनका शोषण किया जाता है। ग्रामीण उपभोक्ताओं को नकली ब्रांड, दोगले उत्पाद, कम वारंटी और गारंटी, नकल, अनुपयुक्त कीमत, विभिन्नताओं की कमी और ऐसी ही समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसलिए ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक गंभीरता के साथ उपभोक्ता जागरूकता फैलाने की आवश्यकता है।

### 24.6.2 समय से न्याय दिलाना

आप जानते हैं कि न्याय में देरी न्याय को नकारना है। सिविल अदालतों के विपरीत, उपभोक्ता अदालतें, अर्द्ध-न्यायिक संस्थायें हैं जिन्हें शिकायतों के शीघ्र निपटान की एक सरल एवं संक्षिप्त प्रक्रिया अपनाने की आवश्यकता है। परन्तु बार-बार स्थगन राज्य सरकारों की ओर से जजों के पदों को भरने में देरी और अनावश्यक तकनीकियाँ उपभोक्ताओं की न्याय की प्रक्रिया को धीमा कर देती है। देरियां आमतौर पर कानून के तत्व को ही समाप्त कर देती हैं। निम्न केस को पढ़ो जो इन बिन्दुओं की व्याख्या करता है।

> 1993 के बीज रोपण मौसम में, अच्छी फसल देने वाले, संकर बीजों से, फसल का नुकसान होने के कारण महाराष्ट्र के 130 किसानों ने सामूहिक कार्यवाही के लिए मुआवजे का एक मुकदमा डाला। अंततः वे मुकदमा जीत गये। किन्तु इसमें 14 वर्ष लग गये जिस अवधि में 10 किसान मर गये थे।

सरकार ने 2003 में उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम में ऐसी देरियों को समाप्त करने के लिए संशोधन किया जिसके अनुसार उपभोक्ता अदालतें कोई भी स्थगन नहीं दे सकतीं। किन्हीं विशेष परिस्थितियों में जहां ये करना पड़ जाता है अदालत को लिखित रूप में इसका कारण देना पड़ता है और उसे उचित सिद्ध करना पड़ता है।

### पाठगत प्रश्न 24.5

1. एक उत्तरदायी उपभोक्ता के रूप में निम्न मामलों में आपको क्या करना चाहिए :
   (अ) बहुत सी उपलब्ध ब्राण्डों में से एक बिजली की प्रेस खरीदना
   (ब) आप ब्रेड तथा फ्रूट जैम खरीद रहे हैं
   (स) विक्रेता आपको चीजें पोलीथिन पैकेट में देता है
2. एक उपभोक्ता की शिकायत के सम्बन्ध में न्याय में देरी के दो कारण दो।

## आपने क्या सीखा

- उपभोक्ता जागरूकता में खरीदे गये उत्पाद उनके स्वास्थ्य और पर्यावरण पर प्रभाव के साथ जानकारी और उपभोक्ता के अधिकार और उत्तरदायित्व शामिल हैं।
- उपभोक्ता जागरूकता की आवश्यकता बहुत से कारणों से पैदा होती है जैसे बेची गई वस्तुओं और सेवाओं की त्रुटिपूर्ण गुणवत्ता, बिना बिल के बेचना, भ्रमित करने वाले विज्ञापन, उत्पाद और उत्पादक/विक्रेता के विषय में पूर्ण जानकारी का अभाव, बिना सोचे समझे और अपव्ययी उपभोग के कारण पर्यावरण प्रदूषण आदि।
- उपभोक्ता संरक्षण व्यवस्था में उपभोक्ता के हितों की रक्षा के कानून और संस्थान जो उपभोक्ता के अधिकारों की सहायता के लिए काननू को लागू करते हैं, सम्मिलित हैं।
- उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 1986 (CPA) उपभोक्ता के हितों की रक्षा करने का सबसे महत्वपूर्ण अधिनियम है।
- केन्द्रीय उपभोक्ता संरक्षण परिषद (CCPC) राष्ट्रीय स्तर पर और राज्य उपभोक्ता संरक्षण परिषद (SCPC) राज्य स्तर पर सरकारी संस्थायें हैं जो उपभोक्ता के मामले में काम करते हैं। गैर-सरकारी संगठन भी सहायता करते हैं।
- भारत में उपभोक्ताओं की शिकायतों से संरक्षण के लिए उपभोक्ता अदालतों के तीन स्तर हैं। जिला उपभोक्ता अदालत सबसे नीची, राज्य उपभोक्ता (विवाद) संरक्षण आयोग (SCDRC) मध्य स्तर पर और सबसे ऊपर राष्ट्रीय उपभोक्ता (विवाद) संरक्षण आयोग (NCDRC)
- प्रभावित उपभोक्ता द्वारा या उसके प्रतिनिधि द्वारा या निश्चित फॉर्म द्वारा शिकायत की प्रकृति और बिल के साथ क्रय के दो वर्ष के अन्दर पत्र के माध्यम से शिकायत की जा सकती है। नाम मात्र की फीस का भी अदालत में भुगतान कर देना चाहिये।
- भारत में उपभोक्ता के अधिकारें में, सूचना का अधिकार, सुरक्षा का अधिकार, चुनाव का अधिकार, सुने जाने का अधिकार, संरक्षण का अधिकार ओर उपभोक्ता की शिक्षा का अधिकार शामिल हैं।
- उपभोक्ता के उत्तरदायित्वों में विज्ञापनों से भ्रमित न होना, सशक्तिकरण के लिये पूर्ण सूचना प्राप्त करना, समाप्ति की तिथि चैक करना, गुणवत्ता की सुनिश्चितता की मोहर, बिल मांगना, अपव्ययी तथा बिना सोचे समझे उपभोग से बचना, पर्यावरण की सुरक्षा आदि शामिल हैं।

## पाठान्त प्रश्न

1. उपभोक्ता जागरूकता की आवश्यकता क्यों है?
2. एक पीड़ित उपभोक्ता के रूप में शिकायत करने के लिए आपको क्या करना चाहिये।

3. भारत में उपभोक्ता संरक्षण व्यवस्था का वर्णन करो।
4. उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम के प्रावधान दो।
5. भारत में उपभोक्ता के अधिकारों की संक्षिप्त व्याख्या कीजिये।
6. एक उत्तरदायी उपभोक्ता के रूप में आपको क्या करना चाहिए?
7. भारत में उपभोक्ता आंदोलन के सम्मुख दो मुख्य चुनौतियों की व्याख्या करो।

## पाठगत प्रश्नों के उत्तर

### पाठगत प्रश्न 24.1

1. एक व्यक्ति यदि वह वस्तुएं और सेवाएं पुनः बिक्री के उद्देश्य से खरीदता है, उपभोक्ता नहीं होता है।
2. यदि उपभोक्ता उत्पाद को जिसकी वह शिकायत करता है दोषपूर्ण पाता है तो उसे बिल उपभोक्ता अदालत में प्रस्तुत करना पड़ता है। बिल यह भी सुनिश्चित करता है कि सरकार को कर का भुगतान कर दिया गया है।
3. मूल्य वृद्धि कर

### पाठगत प्रश्न 24.2

1. CPA- उपभोक्ता सरंक्षण अधिनियम

   ECA- अनिवार्य वस्तु अधिनियम

   SWMA- वजन और माप के मान का अधिनियम
2. भारत में एक कार्यालय खोलकर

### पाठगत प्रश्न 24.3

1. केन्द्रीय उपभोक्ता संरक्षण परिषद (CCPC) राष्ट्रीय स्तर पर और राज्य उपभोक्ता संरक्षण परिषद, राज्य स्तर पर।
2. राष्ट्रीय उपभोक्ता विवाद संरक्षण आयोग (NCDRC) राष्ट्रीय स्तर पर, राज्य उपभोक्ता विवाद संरक्षण आयेग (SCDRC) राज्य स्तर पर जिला उपभोक्ता फोरम (DCF) जिला स्तर पर
3. वस्तु के क्रय की तिथि के दो वर्ष के अन्दर

### पाठगत प्रश्न 24.4

1. सुरक्षा का अधिकार
2. चुनाव का अधिकार
3. सूचना का अधिकार
4. सुने जाने का अधिकार
5. उपभोक्ता शिक्षा का अधिकार

### पाठगत प्रश्न 24.5

1. (अ) गुणवत्ता आश्वासन मोहर जैसे आई.एस.आई मार्क को देखिये।

   (ब) क्रय करने से पहले समाप्ति की तारीख की जांच करो।

   (स) प्लास्टिक की थैली को मना करो और एक कपड़े या जूट की थैली की मांग करो।
2. बार-बार स्थगन और सरकार द्वारा जजों की नियुक्ति में देरी।